

ओ३म्

# सामगानम्

( सामवेदसंहिताया गानप्रकारम् )

( विक्रमसंवत् १५३१=सन् १४७४ की मूलप्रति के आधार पर प्रकाशित )

सम्पादक

विरजानन्द दैवकरणि

( संस्कृतव्याकरण-दर्शन-इतिहासाचार्य, सिद्धान्तवाचस्पति )

निदेशक

हरयाणाप्रान्तीय पुरातत्त्व संग्रहालय

गुरुकुल झज्जर ( हरयाणा )

प्रकाशक

प्राचीन भारतीय इतिहास शोध परिषद्

११९, गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली-४९

## शुभाशंसा

प्रस्तुत ग्रन्थ में सामवेद की कौथुम शाखा का साम-पाठ दिया गया है। सामान्यतः सामवेद के संस्करणों में ऋक्पाठ ही उपलब्ध होता है। सामगान में स्तोभ आदि से अलंकृत, स्वरों से ध्वनि के शिखरों को छूते हुए, पावन मन्त्रों में अनुपम शक्ति-संचार होता है। आज से १३३ वर्ष पूर्व सत्यव्रत सामश्रमी ने कलकत्ता से सामपाठ प्रथम बार प्रकाशित किया था। यह कलान्तर में पत्र जीर्ण होने के कारण अप्रयोज्य होता गया, और अप्राप्य भी। १९४२ और १९४५ में श्रीपाद दामोदर सातवलेकर जी ने औंध (महाराष्ट्र) से इसका अक्षरयोजन करके नया संस्करण निकाला। आधी शताब्दी हो गई और आज सामवेद का सामगान रूप अतिदुर्लभ हो गया है।

श्री विरजानन्द दैवकरणि जी ने इस ऐतिहासिक न्यूनता की पूर्ति करने के लिए प्रस्तुत सामगान सम्पादित और प्रकाशित किया है। आप एक भव्य आचार्य-परम्परा के शिरोमणि हैं। परमपूज्य परमहंस स्वामी ओ३मानन्द जी सरस्वती से व्याकरण, दर्शन, इतिहास और वैदिक वाङ्मय की शिक्षा और दीक्षा पाकर, आप उनकी विलक्षण सरस्वती-साधना को आगे बढ़ा रहे हैं। उसी की अनुवृत्ति में सिद्धान्त-वाचस्पति श्री विरजानन्द जी का यह वैज्ञानिक संस्करण, वैदिक अनुसन्धान और गायन के लिए अनोखी देन है। पहिली बार आपने मूल हस्तलिखित ग्रन्थ से साम-पाठ प्रस्तुत किया है। हस्तलिपि ५३० वर्ष पुरानी है (सन् १४७४) और इसमें शुद्धता का ऊँचा स्तर है। इस समय वैदिक परम्परा पूर्णतः जीवित थी और इसके ज्ञान से आलोकित यह हस्तलिपि स्वयं में राष्ट्रीय धरोहर है। पहली बार एक ऋचा के अनेक गान-रूप प्रस्तुत किए गये हैं—जैसेकि प्रथम मन्त्र “अग्र आ याहि...” की तीन गायन विधाएँ दी गई हैं। कई बार एक ही मन्त्र के १६ ढंग से गायन के रूप लिखे गये हैं।

श्री दैवकरणि जी ने मूल हस्तलिपि को पूर्णतः यथावत् मुद्रित किया है। हस्तलिपि की छोटी-से-छोटी विशेषता सुरक्षित रखी है। यह असाध्य कार्य उन्होंने संगणक (कम्प्यूटर) पर स्वयं करवाया है—घोर अध्यवसाय, सूक्ष्मेक्षिका और गहन निष्ठा-भक्ति का परिणाम है। मुद्रण इतना स्पष्ट है, अक्षरों का परिमाण इतना नयन-सुख है, और पृष्ठ-विन्यास इतना आकर्षक है कि सामगान का अध्ययन और सप्तस्वरीय गायन अब सुविधा से हो सकेगा। इस वैज्ञानिक संस्करण से सामपाठी विद्यार्थियों को समस्त सामवेद सुलभ हो जाएगा। सामवेद भारतीय संगीत का सर्वप्राचीन ग्रन्थ है, जिसमें गायन के लिए स्वरों का विधिवत् संकेत है, और उसमें जोड़े जानेवाले स्तोभ भी पूर्णतः निर्दिष्ट हैं। भारतीय संगीत के इतिहास के लिए भी यह संस्करण-रत्न विशिष्ट महत्त्व का है।

श्री दैवकरणि जी ने सामगान के इस शुद्ध, वैज्ञानिक और सुस्पष्ट मुद्रित, सम्पादन से वैदिक साहित्य के संरक्षण और संवर्धन में ऐतिहासिक योगदान दिया है। अपने गुरुवर्य स्वामी ओ३मानन्द जी की त्यागमयी परम्परा को अक्षुण्ण ही नहीं रखा, अपितु संवर्धित किया है। भारतीय संस्कृति के अध्ययन-परायण, अन्वेषक, मननशील विद्वानों के लिए यह ग्रन्थ चिन्तामणि के समान अक्षय जाज्वल्यमान ज्योति-स्तम्भ है।

२१/११/२०१६

पूर्व-सासंद १९७४-१९८६

अध्यक्ष,

सरस्वतीविहार, जे २१-२२, हौजखास,

नई दिल्ली - ११० ०१६



## प्रकाशकीय

महर्षि दयानन्द के संस्कार विधि आदि ग्रंथों में सामवेदोक्त वामदेव्यगान अथवा महावामदेव्यगान की चर्चा पढ़ते रहे, लेकिन इससे सम्बन्धित कहीं भी कोई विस्तृत जानकारी ग्रंथ के रूप में प्राप्त नहीं हो सकी। आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के संस्थापक एवं मेरे पूज्य पिता श्री स्वर्गीय दीपचन्द आर्य जी ऋषिकृत ग्रंथों का अधिकाधिक प्रचार-प्रसार करने के लिए सदैव तत्पर एवं प्रयासरत रहते थे। एक दिन दैवयोग से सामगान की कागज पर हस्तलिखित अति प्राचीन प्रति दृष्टिगत हो ही गई। अतीव उत्साह के साथ प्रयास करके वह दुर्लभ प्रति हस्तगत की गई। इस प्रति में पृष्ठ आगे पीछे लगे हुए थे और एक तरफ से पढ़ सकने की स्थिति में नहीं थी। इसी बीच एक दिन सढ़ौरा वाले डॉ० सुरेन्द्र जी आयुर्वेदाचार्य से भेंट हो गई। मैंने उनसे उस प्रति का जिक्र किया तो उन्होंने उसको देखने की तीव्र इच्छा व्यक्त की। अन्ततः मेरी प्रार्थना पर उन्होंने पूरे मनोयोग से अत्यन्त परिश्रम करके उस दुर्लभ प्रति को सुव्यवस्थित किया।

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट का उद्देश्य ही आर्ष-ग्रंथों का प्रचार-प्रसार करना है, ऐसा स्मरण दिलाते हुए श्री डॉ० सुरेन्द्रकुमार द्वारा इसे प्रकाशित करने की प्रेरणा एवं ट्रस्ट के यशस्वी प्रधान श्री आचार्य राजवीर जी शास्त्री के आशीर्वाद से सामगान की यह अलभ्य पुस्तक पाठकों को सुलभ हो सकी है। इस ग्रंथ के प्रकाशन में मेरे अग्रज भ्राता श्री विरजानन्द दैवकरणि ने यदि सहयोग न किया होता तो यह महत्त्वपूर्ण कार्य न जाने कब हो पाता। एतदर्थ मैं भ्राता श्री दैवकरणि जी का आभार व्यक्त करता हूँ। मेरी पूजनीया माता श्रीमती बुद्धिमती जी आर्या ट्रस्ट के कार्यों में मुझे हमेशा प्रेरणा करके मेरा उत्साहवर्धन करती रहती है। इस महती-कृपा के लिए मैं उन मातृचरणों को नमन करता हुआ इस अमूल्य कृति को पाठकों की सेवा में समर्पित करता हूँ।

महर्षि-अनुचर

धर्मपाल आर्य

दिल्ली

दिनांक २८ अप्रैल, २००४

मंत्री-आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट

४५५, खारी बावली, दिल्ली-६

## ओ३म् प्राक्कथन

सर्वज्ञाननिधान परमकारुणिक परमेश्वर ने सृष्टि के प्रारम्भ में मानवों के उत्कर्ष हेतु अपने ज्ञान का एकांशमात्र वेदरूप में देकर मनुष्यमात्र पर अत्यन्त कृपा की है। यह सारा ज्ञान ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद के नाम से प्रसिद्ध है। चारों वेदों में पढ़े हुए पुरुषसूक्त में कहा है कि ये वेद भगवान् की ओर से अवतरित हुए हैं। जैसे—

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दाश्चसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥  
—यजुर्वेद ३१.७

यस्मादृचो अपातक्षन्यजुर्यस्मादपाकषन्।

सामानि यस्य लोमान्यथर्वाङ्गिरसो मुखं स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्वित्देव सः।

—अथर्ववेद १०.७.२०

इन चारों वेदों के प्रमुख विषय निम्न प्रकार से हैं—

ऋग्वेद=ज्ञानकाण्ड, यजुर्वेद=कर्मकाण्ड, सामवेद=उपासनाकाण्ड, अथर्ववेद=विज्ञानकाण्ड  
परमात्मा की ओर से आदित्य (सूर्य) ऋषि के हृदय में प्रगट सामवेद में परमेश्वर कैसा है, उसकी उपासना कैसे की जाये, उसकी उपासना करने से क्या लाभ हैं इत्यादि का वर्णन है।

सामवेद का उपवेद गान्धर्ववेद है। इसमें गानविद्या का वर्णन करते हुए सामगान के कितने भेद हैं, उसके गाने की पद्धति क्या है इत्यादि का विस्तार से कथन किया गया है।

गीतिषु सामाख्या — जैमिनीय मीमांसादर्शन २.१.३६

जिन मन्त्रों का गान किया जाता है उन गीतिविशिष्ट मन्त्रों को साम कहते हैं।

सहस्रवर्त्मा सामवेदः — महाभाष्य (१.१.१)। सामवेद की एक सहस्र शाखायें हैं।

सामगान करने में प्राण की=दीर्घप्राण की आवश्यकता होती है। इसीलिए यजुर्वेद में कहा है—साम प्राणं प्रपद्ये (यजुर्वेद ३६.१)।

उद्गातेव शकुने साम गायसि (ऋग्वेद २.८.१२.२)

सामगान करनेवाला उद्गाता कहलाता है।

वेदानां सामवेदोऽस्मि—वेदों में सामवेद की सर्वाधिक गरिमा है, यह कहकर योगिराज श्री कृष्ण ने भी गीता में सामवेद की महत्ता स्वीकार की है।

उत्तर ऋक्पद १८.२ में लिखा है—सामगः सर्वत्र देवगुरुः—सामगान करनेवाला सर्वत्र देवगुरु होता है।

पुराकाल में ऋषियों ने सामवेद के मूल मन्त्रों के आधार पर अनेक प्रकार के गानों का निर्माण किया था। ये गान ग्रामे गेय (वेय प्रकृति) गान और आरण्यक गान नाम से प्रसिद्ध हैं। इनका प्रारम्भ महर्षि वामदेव ने किया था, इसलिए ये गान वामदेव्यगान अथवा महावामदेव्यगान

नाम से भी प्रसिद्ध हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने संस्कारविधि के सामान्य प्रकरण में लिखा है—मंगलकार्य अर्थात् गर्भाधानादि संन्यास संस्कारपर्यन्त पूर्वोक्त और निम्नलिखित सामवेदोक्त वामदेव्यगान अवश्य करें। इसी प्रकार पूरे संस्कारविधि ग्रन्थ में १२ बार यह लिखा है कि—संस्कारों की समाप्ति पर सामवेद के वामदेव्यगान अथवा महावामदेव्य का गान करना चाहिए। इस गान का निदर्शन ग्रन्थान्त में परिशिष्ट ३ में देखिए।

सामवेद के पढ़ने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने संस्कारविधि के वेदारम्भ प्रकरण में लिखा है—सामब्राह्मण और पदादि तथा गानसहित सामवेद को दो वर्ष...के भीतर पढ़ें.....पुनः सामवेद का उपवेद गान्धर्ववेद, जिसमें नारदसंहितादि ग्रन्थ हैं, उनको पढ़के स्वर, राग, रागिणी, समय, वादित्र, ग्राम, ताल, मूर्च्छना आदि का अभ्यास यथावत् तीन वर्ष के भीतर करें।

सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास में महर्षि दयानन्द जी लिखते हैं—

...गान्धर्ववेद कि जिसको गानविद्या कहते हैं, उसमें स्वर, राग, रागिणी, समय, ताल, ग्राम, तान, वादित्र, नृत्य, गीत आदि को यथावत् सीखें, परन्तु मुख्य करके सामवेद का गान वादित्र-वादनपूर्वक सीखें और नारदसंहिता आदि जो-जो आर्षग्रन्थ हैं, उनको पढ़ें, परन्तु भडुवे, वेश्या और विषयासक्तिकारक वैरागियों के गर्दभशब्दवत् व्यर्थ आलाप कभी न करें।

इस प्रकार सामवेद और उसके ब्राह्मण ग्रन्थसहित पाँच वर्षों में सामगान सीखने का विधान किया है।

छान्दोग्य उपनिषद् में कहा है—**का साम्नो गतिरिति ? स्वर इति होवाच (१.८.४)**

शिलक शालावत्य ने चैकितायन दाल्भ्य से पूछा—साम की गति क्या है ? दाल्भ्य ने कहा—स्वर=षड्जादि सातस्वर। स्वर की गति प्राण है, प्राण की गति अन्न है, अन्न के बिना प्राण बलवान् नहीं होता, प्राण की न्यूनता में स्वर नहीं निकलता, अतः सामगान की गति=आश्रय=आधार प्राण है। प्राण, अपान, व्यान, समान, उदान, नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त और धनञ्जय ये दस प्राण हैं।

बृहदारण्यक उपनिषद् में कहा है—

**तस्य हैतस्य साम्नो यः स्वं वेद भवति हास्य स्वं तस्य वै स्वर एव स्वम् (१.३.२५)**

निश्चय से जो उस इस साम के स्व=सामत्व को जानता है उस वेत्ता का वही सामत्व है, (मधुर कण्ठ) स्वर ही साम का सामत्व है।

छान्दोग्योपनिषद् के द्वितीय प्रपाठक में अनेकविध सामोपासना करने की चर्चा मिलती है। यथा—**समस्तस्य खलु साम्न उपासनं साधु.....**। सम्पूर्ण सामवेद के तत्त्व का विचारना सामोपासना कहाती है। साम पाँच प्रकार का है, तीन उद्गाताओं द्वारा गाया जानेवाला साम **हिंकार**, प्रस्तोता द्वारा गेय गान **प्रस्ताव**, एक उद्गाता द्वारा बोला गया साम **उद्गीथ**, प्रतिहर्त्ता द्वारा गेय साम **प्रतिहार** और सब मिलकर जिस सामगान को गाये, वह **निधन** कहाता है। इसी प्रकार वृष्टि, जल, ऋतु, पशु, प्राण, वाक्, आदित्य, मृत्युजय, प्राण में गायत्र, अग्नि में रथन्तर, मिथुन में वामदेव्य, आदित्य में बृहत्, पर्जन्य में वैरूप, ऋतु में वैराज, पृथिव्यादि में शक्वरी, पशुओं में रेवती, अंगों में यज्ञायज्ञिय, अग्न्यादि देवों में राजन, त्रयीविद्या में पाँच और सात प्रकार की सामोपासना का विधान है। सामगान के विनर्दादि गुण और अग्नि, प्रजापति, सोम, वायु, इन्द्र,

## ओ३म् प्राक्कथन

सर्वज्ञाननिधान परमकारुणिक परमेश्वर ने सृष्टि के प्रारम्भ में मानवों के उत्कर्ष हेतु अपने ज्ञान का एकांशमात्र वेदरूप में देकर मनुष्यमात्र पर अत्यन्त कृपा की है। यह सारा ज्ञान ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद के नाम से प्रसिद्ध है। चारों वेदों में पढ़े हुए पुरुषसूक्त में कहा है कि ये वेद भगवान् की ओर से अवतरित हुए हैं। जैसे—

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे । छन्दाश्चसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥

—यजुर्वेद ३१.७

यस्मादृचो अपातक्षन्यजुर्यस्मादुपाकषन् ।

सामानि यस्य लोमान्यथर्वाङ्गिरसो मुखं स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः ।

—अथर्ववेद १०.७.२०

इन चारों वेदों के प्रमुख विषय निम्न प्रकार से हैं—

ऋग्वेद=ज्ञानकाण्ड, यजुर्वेद=कर्मकाण्ड, सामवेद=उपासनाकाण्ड, अथर्ववेद=विज्ञानकाण्ड परमात्मा की ओर से आदित्य (सूर्य) ऋषि के हृदय में प्रगट सामवेद में परमेश्वर कैसा है, उसकी उपासना कैसे की जाये, उसकी उपासना करने से क्या लाभ हैं इत्यादि का वर्णन है।

सामवेद का उपवेद गान्धर्ववेद है। इसमें गानविद्या का वर्णन करते हुए सामगान के कितने भेद हैं, उसके गाने की पद्धति क्या है इत्यादि का विस्तार से कथन किया गया है।

गीतिषु सामाख्या —जैमिनीय मीमांसादर्शन २.१.३६

जिन मन्त्रों का गान किया जाता है उन गीतिविशिष्ट मन्त्रों को साम कहते हैं।

सहस्रवर्त्मा सामवेदः —महाभाष्य (१.१.१)। सामवेद की एक सहस्र शाखायें हैं।

सामगान करने में प्राण की=दीर्घप्राण की आवश्यकता होती है। इसीलिए यजुर्वेद में कहा है—साम प्राणं प्रपद्ये (यजुर्वेद ३६.१)।

उद्गातेव शकुने साम गायसि (ऋग्वेद २.८.१२.२)

सामगान करनेवाला उद्गाता कहलाता है।

वेदानां सामवेदोऽस्मि—वेदों में सामवेद की सर्वाधिक गरिमा है, यह कहकर योगिराज श्री कृष्ण ने भी गीता में सामवेद की महत्ता स्वीकार की है।

उत्तर ऋक्पद १८.२ में लिखा है—सामगः सर्वत्र देवगुरुः—सामगान करनेवाला सर्वत्र देवगुरु होता है।

पुराकाल में ऋषियों ने सामवेद के मूल मन्त्रों के आधार पर अनेक प्रकार के गानों का निर्माण किया था। ये गान ग्रामे गेय (वेय प्रकृति) गान और आरण्यक गान नाम से प्रसिद्ध हैं। इनका प्रारम्भ महर्षि वामदेव ने किया था, इसलिए ये गान वामदेव्यगान अथवा महावामदेव्यगान

नाम से भी प्रसिद्ध हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने संस्कारविधि के सामान्य प्रकरण में लिखा है—मंगलकार्य अर्थात् गर्भाधानादि संन्यास संस्कारपर्यन्त पूर्वोक्त और निम्नलिखित सामवेदोक्त वामदेव्यगान अवश्य करें। इसी प्रकार पूरे संस्कारविधि ग्रन्थ में १२ बार यह लिखा है कि—संस्कारों की समाप्ति पर सामवेद के वामदेव्यगान अथवा महावामदेव्य का गान करना चाहिए। इस गान का निदर्शन ग्रन्थान्त में परिशिष्ट ३ में देखिए।

सामवेद के पढ़ने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने संस्कारविधि के वेदारम्भ प्रकरण में लिखा है—सामब्राह्मण और पदादि तथा गानसहित सामवेद को दो वर्ष...के भीतर पढ़ें.....पुनः सामवेद का उपवेद गान्धर्ववेद, जिसमें नारदसंहितादि ग्रन्थ हैं, उनको पढ़के स्वर, राग, रागिणी, समय, वादित्र, ग्राम, ताल, मूर्च्छना आदि का अभ्यास यथावत् तीन वर्ष के भीतर करें।

सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास में महर्षि दयानन्द जी लिखते हैं—

...गान्धर्ववेद कि जिसको गानविद्या कहते हैं, उसमें स्वर, राग, रागिणी, समय, ताल, ग्राम, तान, वादित्र, नृत्य, गीत आदि को यथावत् सीखें, परन्तु मुख्य करके सामवेद का गान वादित्र-वादनपूर्वक सीखें और नारदसंहिता आदि जो-जो आर्षग्रन्थ हैं, उनको पढ़ें, परन्तु भडुवे, वेश्या और विषयासक्तिकारक वैरागियों के गर्दभशब्दवत् व्यर्थ आलाप कभी न करें।

इस प्रकार सामवेद और उसके ब्राह्मण ग्रन्थसहित पाँच वर्षों में सामगान सीखने का विधान किया है।

छान्दोग्य उपनिषद् में कहा है—**का साम्नो गतिरिति ? स्वर इति होवाच (१.८.४)**

शिलक शालावत्य ने चैकितायन दाल्भ्य से पूछा—साम की गति क्या है ? दाल्भ्य ने कहा—स्वर=षड्जादि सातस्वर। स्वर की गति प्राण है, प्राण की गति अन्न है, अन्न के विना प्राण बलवान् नहीं होता, प्राण की न्यूनता में स्वर नहीं निकलता, अतः सामगान की गति=आश्रय=आधार प्राण है। प्राण, अपान, व्यान, समान, उदान, नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त और धनञ्जय ये दस प्राण हैं।

बृहदारण्यक उपनिषद् में कहा है—

**तस्य हैतस्य साम्नो यः स्वं वेद भवति हास्य स्वं तस्य वै स्वर एव स्वम् (१.३.२५)**

निश्चय से जो उस इस साम के स्व=सामत्व को जानता है उस वेत्ता का वही सामत्व है, (मधुर कण्ठ) स्वर ही साम का सामत्व है।

छान्दोग्योपनिषद् के द्वितीय प्रपाठक में अनेकविध सामोपासना करने की चर्चा मिलती है। यथा—**समस्तस्य खलु साम्न उपासनं साधु.....**। सम्पूर्ण सामवेद के तत्त्व का विचारना सामोपासना कहाती है। साम पाँच प्रकार का है, तीन उद्गाताओं द्वारा गाया जानेवाला साम **हिंकार**, प्रस्तोता द्वारा गेय गान **प्रस्ताव**, एक उद्गाता द्वारा बोला गया साम **उद्गीथ**, प्रतिहर्त्ता द्वारा गेय साम **प्रतिहार** और सब मिलकर जिस सामगान को गाये, वह **निधन** कहाता है। इसी प्रकार वृष्टि, जल, ऋतु, पशु, प्राण, वाक्, आदित्य, मृत्युजय, प्राण में गायत्र, अग्नि में रथन्तर, मिथुन में वामदेव्य, आदित्य में बृहत्, पर्जन्य में वैरूप, ऋतु में वैराज, पृथिव्यादि में शक्वरी, पशुओं में रेवती, अंगों में यज्ञायज्ञिय, अग्न्यादि देवों में राजन, त्रयीविद्या में पाँच और सात प्रकार की सामोपासना का विधान है। सामगान के विनर्दादि गुण और अग्नि, प्रजापति, सोम, वायु, इन्द्र,



बृहस्पति और वरुण इन आचार्यों द्वारा गाये सामगान और इनके कर्तव्यादि का वर्णन इस उपनिषद् में प्राप्त होता है। इससे ज्ञात होता है कि पुराकाल में सामवेद गान के सहस्रों भेदों का प्रचलन था। अर्थात् प्रत्येक मन्त्र एक-एक सहस्र प्रकार से गाया जाता था।

सामविधान ब्राह्मण में लिखा है—स्वरो वाव साम्नः स्वम् (१.१.३)

निश्चय से साम का स्वत्व=सामत्व स्वर ही है।

स्वर क्या है? सामवेद के गायन समय में सात स्वर प्रयुक्त होते हैं—**कृष्ट, प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, मन्द्र और अतिस्वार्य**। उच्चारण में ये स्वर क्रमशः नीची-नीची आवाज में होते जाते हैं। ऋक्प्रातिशाख्य (१३.४२) में इन स्वरों को **यम** नाम से अभिहित किया गया है। इसी प्रकार तैत्तिरीयप्रातिशाख्य (२३.११-१२) में भी इन सात स्वरों को **यम** कहा है।

उपर्युक्त सात स्वरों में पाँच स्वरों के द्वारा अधिकतर साम गाये जाते हैं। छह स्वरों से गाये जानेवाले साम स्वल्प हैं तथा सातों स्वरों से गान योग्य साम अत्यल्प ही हैं।

इन्हीं सात स्वरों के अवान्तर स्वर भी होते हैं। जैसे—**प्रत्युत्क्रम, अतिक्रम, कर्षण, स्वार, विनत, प्रणत, उत्त्वरित, अभिगीत**। इन सात स्वरों में प्रत्येक स्वर की पाँच-पाँच श्रुतियाँ होती हैं। जैसे—**मृदु, मध्या, आयता, दीप्ता और करुणा**।

इन्हीं के भेदोपभेद भी होते हैं। जैसे—

**ऊता, प्रहूयसा, त्सिबा, वारा, मही।**

इनका विशद व्याख्यान नारदीय शिक्षा और लोमशिनी शिक्षा आदि ग्रन्थों में किया है, वहाँ से जान लेना चाहिए।

अन्य तीन वेदों की अपेक्षा सामवेद में उदात्तादि स्वरों का अंकन सीधी=(।) और लेटी हुई=(—) रेखाओं के द्वारा न होकर एकादि संख्याओं के द्वारा किया जाता है। जैसे—**उदात्त का चिह्न=१, स्वरित का चिह्न=२, अनुदात्त का चिह्न=३**। पाणिनीय अष्टाध्यायी में इनके लक्षण इस प्रकार दिए हैं—**उच्चैरुदात्तः, नीचैरनुदात्तः, समाहारः स्वरितः।** (१.२.२९-३१)। **उदात्तस्वरितपरस्य सन्नतरः—**अष्टाध्यायी १.२.४०। **सन्नतर और प्रचय** ये दो स्वर इनसे अतिरिक्त हैं।

सामवेद के मन्त्रों पर १.२.३ से अतिरिक्त २ क, उ, र ये चिह्न भी मिलते हैं। इनका अभिप्राय है—

जहाँ दो उदात्त अक्षर एकसाथ आ जायें वहाँ प्रथम उदात्त अक्षर पर '१' लिखते हैं। दूसरा उदात्त अक्षर विना चिह्नवाला ही रहता है। उससे परे वाले स्वरित पर '२ र' लिखा रहता है। अनुदात्त से परे वाले स्वरित को भी '२ र' से चिह्नित करते हैं। इससे पूर्व के अनुदात्त अक्षर पर '३ क' यह संकेत होता है। यदि दो उदात्त अक्षर साथ-साथ हों और उनसे परे अनुदात्त अक्षर हो तो प्रथम उदात्त अक्षर पर '२ उ' चिह्न मिलता है। दूसरा उदात्त अक्षर विना चिह्न के रहता है।

इस विषय का भी विस्तृत वर्णन नारदीय शिक्षा में देखा जा सकता है।

**त्रिमात्रं सामसु—**(ऋक्तन्त्रम् २.४.९) सामवेद के उच्चारण में अक्षरों को तीन मात्रा के समान लम्बित करना चाहिए। हाथ की नाड़ी का एक स्पन्दन एक मात्रा के बराबर होता है, अतः नाड़ी के तीन वार स्पन्दन करने के समान साम मन्त्रों के उच्चारण में समय लगाना चाहिए।

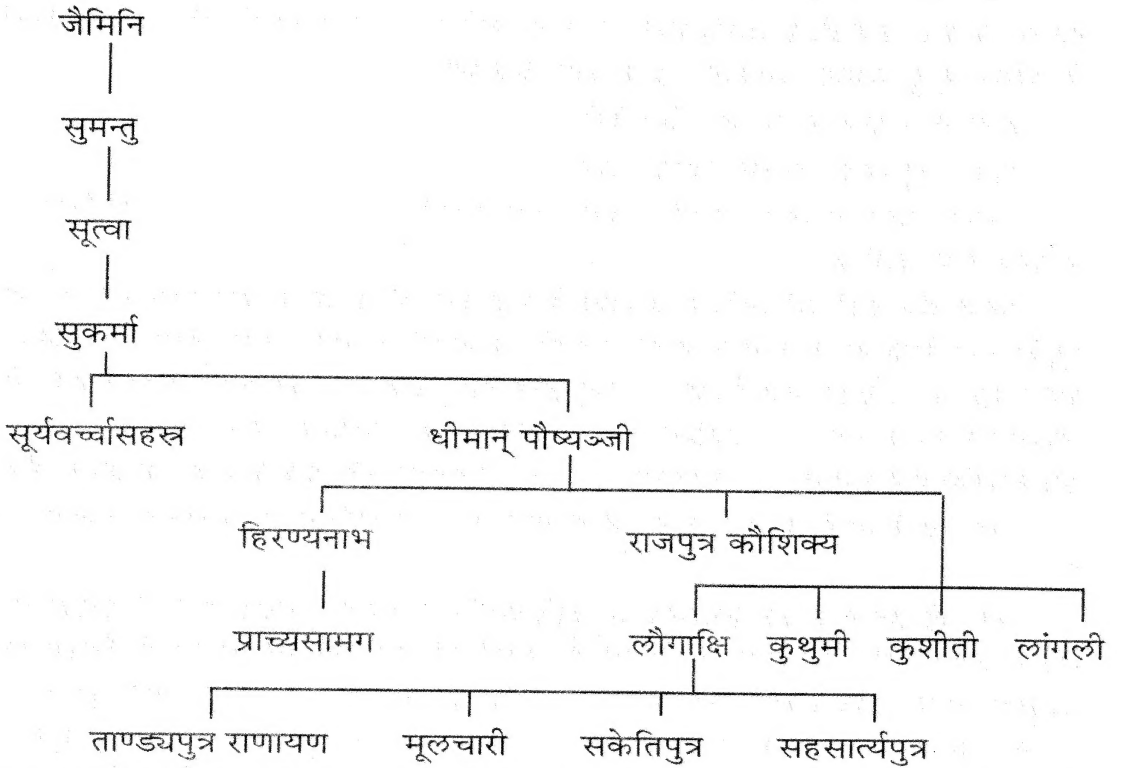
वेदमन्त्रों के गायन में विभिन्न छन्दों के अनुसार सात स्वर और भी होते हैं। जैसे—षड्ज,



ऋषभ, गान्धार, मध्यम, पंचम, धैवत और निषाद। इन्हीं सात स्वरों के आदिम अक्षरों को लेकर लोक में 'सा, रे, गा, मा, पा, धा, नि' ये सात स्वर प्रसिद्धि पाए हुए हैं। ये स्वर क्रमशः गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप् और जगती छन्दों के गान में प्रयुक्त होते हैं। इन छन्दों के सहस्रों भेदोपभेद महर्षि पिंगलाचार्यकृत छन्दः शास्त्र से जान लेने चाहिए। छन्दः शास्त्र के मेरे द्वारा किए गए हिन्दी अनुवाद में इन सभी भेदों का परिशिष्ट में अतिविस्तृत वर्णन दिया है। इन भेदोपभेदों को यदि गणित की दृष्टि से लिखें तो ३३ अंकों की लम्बाई में ये भेद लिखे जायेंगे।

सामवेदसंहिता के तीन संस्करण इस समय प्राप्त हैं। कौथुमी शाखा गुजरात में, जैमिनीय शाखा कर्णाटक में तथा राणायणीय शाखा महाराष्ट्र में प्रसिद्ध है। राणायणीय शाखा के भी नौ प्रकार मिलते हैं। जैसे—राणायणीय, शाक्षयणीय, सत्यमुद्गल, मुद्गल, भरास्वन्व, याङ्गन, कौथुम, गौतम और जैमिनीय।

सामवेद की शाखा परम्परा अति प्राचीन है। यह गुरु परम्परा प्राचीन ग्रन्थों में यत्र-तत्र उपलब्ध होती है। जैसे—



इस राणायण ऋषि की राणायणीय संहिता में पूर्वार्चिक और उत्तरार्चिक दो विभाग हैं। पूर्वार्चिक में ग्रामगेय गान और आरण्य गान हैं। उत्तरार्चिक में ऊहगान और ऊह्यगान हैं।

### प्रस्तुत सामगानग्रन्थ की प्राप्ति

सन् १९९७ में मैं आर्यसमाज नयाबास (खारीबावली) दिल्ली में ठहरा हुआ था। वहाँ एक सज्जन श्री अशोककुमार वर्मा ३०/१२९ नारियल बाजार, मेस्टर्न रोड, कानपुर (उत्तर प्रदेश) वाले भी रुके हुए थे। वार्तालाप प्रसंग में उन्होंने अष्टाध्यायी (मूल), यास्कीय निघण्टु मूल और

निरुक्त की प्राचीन पाण्डुलिपियाँ दिखाई। इन तीनों ग्रन्थों के १२० पत्रे थे। अतः वर्तमान प्रचलित भाव के अनुसार उनका मूल्य १२०० रुपये था। मैं इन पाण्डुलिपियों को लेना चाहता था, परन्तु मेरे पास उस समय केवल ४०० रुपये थे। इतनी न्यून राशि लेकर वह व्यक्ति पुस्तक देने में असमर्थता दिखा रहा था। अस्तु! आर्यसमाजस्थ अनेक सज्जनों के विनम्र आग्रह करने पर उस महानुभाव ने ४०० रुपये लेकर तीनों पाण्डुलिपियाँ मुझे दे दीं। मैंने उनसे पूछा कि क्या आपके पास ऐसे हस्तलेख और भी हैं? तो उन्होंने सामगान से सम्बद्ध एक पाण्डुलिपि दिखाई और इसका मूल्य ५००० रुपये बताया। उसी समय खारीबावली में स्थित श्री धर्मपाल आर्य, संचालक आर्षसाहित्य प्रचार ट्रस्ट से मैंने इसकी चर्चा की तो उन्होंने कहा इसके निवास पर जाकर देखो, यदि और भी ग्रन्थ हों तो मैं ट्रस्ट के लिये अन्य पुस्तक भी क्रय कर लूँगा और उन्होंने मुझे तथा डॉक्टर सुरेन्द्रकुमार (आर्यनगर झज्जर) को सभी पुस्तकें देखने का आग्रह किया। हम दोनों ने श्री अशोककुमार वर्मा पुस्तक विक्रेता के निवास उत्तमनगर (दिल्ली) में जाकर अनेक पाण्डुलिपियाँ छॉट लीं। उनका मूल्य २५ हजार रुपये के लगभग था, सो श्री धर्मपाल आर्य ने सब पुस्तक क्रय कर लिये। उन पाण्डुलिपियों का विक्रय करने पर मुझे ४०० रुपये में दी गई पाण्डुलिपियों का खेद पुस्तक विक्रेता को नहीं रहा तथा वह अति प्रसन्न हो गया। इस सामगान पुस्तक की मूलप्रति अब 'आर्षसाहित्यप्रचारट्रस्ट खारीबावली (दिल्ली)' के पुस्तकालय में सुरक्षित है। दिदृक्षुजन वहाँ जाकर पुस्तक देख सकते हैं। इसकी फोटोस्टेट प्रति मेरे पास तथा पण्डित सुरेन्द्र शास्त्री शिमला के पास भी है।

### प्रस्तुत सामगान पुस्तक का विवरण

यह सामगान ग्रन्थ जो आपके हाथ में है, इसकी उपलब्ध मूल पाण्डुलिपि ३×१० ईंच आकार के हस्तनिर्मित कागज पर विक्रमसंवत् १५३१ में पौष बदि पञ्चमी (सन् १४७४ ईसवी) को लिखी थी। ज्ञात हो कि यह प्रति भी ताडपत्र पर लिखित प्राचीन पुस्तक से लिपिबद्ध की गई थी। ताडपत्रों पर लिखे ग्रन्थ के प्रत्येक पत्रे के मध्य एक छिद्र होता है, जिससे उस छिद्र के भीतर डोरी डालकर ग्रन्थ के पत्रे इधर-उधर होने से बचाए जा सकें। इस छिद्र के चारों ओर थोड़ा-थोड़ा स्थान छोड़कर अक्षर लिखे जाते हैं जिससे डोरी के हिलने-डुलने से निकट के अक्षर विकृत न हो जाएँ। धार्मिक ग्रन्थ की प्रतिलिपि सर्वथा तदनुरूप ही की जाती थी। इसीलिए कागज पर की गई इस प्रति में भी प्रत्येक पत्रे के मध्य चतुष्कोण स्थान छोड़ा गया है। पुस्तक के आरम्भ में मूलग्रन्थ के पत्रों के चित्र देखकर यह स्पष्ट ही समझा जा सकता है। विक्रमसंवत् १५३१ (सन् १४७४ ईसवी) में लिखे इस ग्रन्थ में २०७ पत्रे हैं। प्रत्येक पत्रा पतले-पतले दो पत्रों को जोड़कर तैयार किया गया है, अर्थात् एक ही पत्रे पर दोनों ओर न लिखकर दो पत्रों पर एक-एक ओर लिखकर उनके खाली पृष्ठभाग को जोड़कर एक पत्रा बनाया है। ग्रन्थ का आरम्भ ओं श्रीगणेशाय नमः लिख कर किया है।

इसमें सामवेद पूर्वार्चिक षष्ठप्रपाठक के द्वितीय अर्द्ध तक के ५८५ मन्त्रों के ११९७ गान लिखे हैं और तीन पर्व तथा १७ प्रपाठक हैं। साममन्त्र ११४ तक आग्नेयपर्व है, इसमें १८० गानभेद हैं। साममन्त्र ११५ से ४६६ तक ऐन्द्रपर्व है, इसमें ६३३ प्रकार के गान हैं। साममन्त्र ४६७ से ५८५ तक पावमानकाण्ड है, इसमें ३८४ गान हैं। इस प्रकार कुल गान ११९७ हैं। सामगान ग्रन्थ में लिखा हुआ संख्या २५७ (क) स त्वा० इत्यादि मन्त्र आजकल सामवेद में नहीं

मिलता। यह मन्त्र सामवेद की किस शाखा का है, यह अन्वेषण करना चाहिए। पुनरपि 'मेडिं न त्वा०' (मन्त्र ३२७) तथा 'आ त्वा गिरो०' (मन्त्र ३४९) से पूर्व लिखे 'अर्द्धवेय' और 'वेयगान' पदों से गान का नाम ज्ञात किया जा सकता है। मूलग्रन्थ में आरम्भ के २७ पत्रों में तथा ७६ से ८४, १४१ से १५७ और १७३ से १७७ तक प्रति पृष्ठ ६-६ पंक्तियाँ तथा शेष पत्रों में प्रति पृष्ठ ७-७ पंक्तियाँ लिखी हैं। अति प्राचीन पुस्तक होने से कुछ पृष्ठ फट गये थे, अतः उनकी प्रतिलिपि किसी अस्पष्ट लेखवाले दूसरे लेखक ने की है। इनमें पत्रे के बीच में छिद्र के लिए रिक्त स्थान नहीं छोड़ा है। ऐसे १४ पृष्ठ हैं (देखिये पृष्ठ ५)। इस सामगान ग्रन्थ के अन्तिम पृष्ठ पर एक सूचना संस्कृत में लिखी है। उसका अनुवाद इस प्रकार है—“यह पाण्डुलिपि संग्राम कायस्थ ने भाद्रपद बदि षष्ठी सम्वत् १६६८ (सन् १६११ ईसवी) में एक रुपये में केशवहरि से क्रय की थी। इसके लिए भटभीम और जोशीराम, भलापुरा वासी साक्षी थे।” भलापुरा ग्राम किस प्रदेश में स्थित था यह भी अन्वेषण का विषय है। मेरे विचार से यह ग्राम राजस्थान में हो सकता है।

इस गानग्रन्थ में प्रारम्भ से ६८वें मन्त्र तक तथा मन्त्र संख्या ३७२ से लेकर अन्तपर्यंत गानविशेषों के नामों का संकेत नहीं किया है। बीच में वैश्वज्योतिष, याम, श्यैत, शुक्र, काश्यप आदि सामगानों के २८० नामों का निर्देश किया हुआ है। मूलग्रन्थ में लिखते समय प्रतिलिपिकर्ता द्वारा जहाँ अशुद्ध अक्षर लिखा गया था, उसे काटा नहीं गया, अपितु उसके ऊपर (॥) ऐसी दो खड़ी रेखायें लगाकर उसे निषिद्ध किया गया है। जहाँ पूरी पंक्ति भूल से दुबारा लिखी गई, उसपर हरताल फेरकर पीला किया गया है। अनुदात्त चिह्न तथा अन्य चिह्न विशेषों को लालस्याही से लिखा गया है। शेष सारा ग्रन्थ काली स्याही और मोटी कलम से लिखा हुआ है। प्रतिलिपि करते समय छूटे हुए पदों को लिखित पृष्ठ के ऊपर, बराबर अथवा नीचे लिखकर उसके अन्त में पंक्ति की संख्या १-२-३ आदि लिखी हैं, जिससे इसे उसी पंक्ति का भाग मानकर वहीं लिखा-पढ़ा जाये।

मूलगान ग्रन्थ में केवल गान के प्रकार लिखे हैं। इस गान के ऊपर ऋषि, छन्द, देवता और स्वरयुक्त साममन्त्र हमने जोड़े हैं, जिससे पाठकों को यह सुविधा हो सके कि यह गान किस मूलमन्त्र का है। यह गान महावामदेव्य है अथवा वामदेव्य, इसका निर्णय सामगायक ही कर सकते हैं।

### मन्त्रों में पाठाधिक्य

इस सामगान में अनेक ऐसे स्थल हैं जिनमें कुछ अंश मूलमन्त्रों में नहीं हैं, वे बाहर से जोड़े गए हैं। इसका विस्तृत विवरण परिशिष्ट संख्या १ में देख सकते हैं।

विक्रमसंवत् १५३१ (सन् १४७४ ईसवी) में देवनागरी लिपि का जो रूप भारतवर्ष में प्रचलित था, उसके अनुसार इस सामगान ग्रन्थ में कुछ ऐसे रूप मिलते हैं जो आज की लिपि से भिन्न हैं। जैसे—आज की लिपि में—**प्ला**, पुरालिपि में—**पणा**। **उ=ऊ**। **स्त=स्तु**। **दृ=द्यु**। **नु=रु**। **दिाव=दिवे**। **रा=रो**। **तो=तौ**। **योनो=योनौ**।

प्रदेश विशेष की उच्चारण परम्परा भिन्न होने से कहीं-कहीं शकार को 'स' तथा यकार को 'ज' लिखा है। कहीं-कहीं लकार को 'ल' इस प्रकार भी बनाया है। अनेक अक्षरों को चिह्न विशेष से चिह्नित किया गया है। जैसे—'यिं' 'शाँ' इत्यादि। एक चिह्न 'रु' यह भी है। इनका अभिप्राय और उच्चारण प्रकार परम्परागत सामग विद्वान् जान सकते हैं। बर्हि और पिबन्तु जैसे

बकार युक्त कुछ पदों में बकार को प्रायः वकार लिखा है।

यद्यपि सन् १९६१ में गुरुकुल झज्जर में अध्ययन करते समय पण्डित सत्यदेव जी वाशिष्ठ भिषगाचार्य ने हमें कुछ सामगान सिखाया था। पुनरपि सामगान के विषय में मैं अज्ञबालवत् हूँ। तथापि सामगान ग्रन्थ प्रकाशन सम्बन्धी यह प्रयास इसलिए किया है कि प्राचीन भारतीय ऋषियों का अद्भुत और गहन ज्ञान सुरक्षित रह सके और इस कार्य से मैं ऋषि ऋण से कुछ सीमा तक अनृण हो सकूँगा, ऐसा विश्वास है। इस प्रकार का गानग्रन्थ प्रकाशित वा अप्रकाशित अभी तक मेरी दृष्टि में नहीं आया था। सामवेद की कौथुमीशाखा से सम्बद्ध ग्रामेगेय (वेय प्रकृति) गानात्मक प्रथमभाग विक्रम सम्वत् १९९९ (सन् १९४२) में तथा आरण्य गानात्मक द्वितीयभाग सन् १९४५ ईसवी में स्वाध्याय मण्डल औंध (सतारा, महाराष्ट्र) से प्रकाशित हुआ था, परन्तु उसकी शैली इस सामगान ग्रन्थ से मेल नहीं खाती, अतः इस दुर्लभ ग्रन्थ का प्रकाशन किया है। उस ग्रन्थ में १७ प्रपाठक तथा ११९८ गान प्रकार हैं। इस ग्रन्थ में ११९७ गानभेद हैं। स्वाध्याय मण्डल से प्रकाशित ग्रन्थ में प्रथम प्रपाठक के द्वितीय अर्ध में ३७ गान हैं, जबकि हमारे इस ग्रन्थ में ३६ गान लिखे हैं। इसके उदाहरण परिशिष्ट ४ में देखिए।

### धन्यवाद

इस ग्रन्थ की प्राप्ति हेतु प्रथम धन्यवाद श्री धर्मपाल आर्य, वर्तमान प्रधान आर्यकेन्द्रीयसभा, दिल्ली (संचालक आर्षसाहित्य प्रचार ट्रस्ट दिल्ली) को है जिनके कारण यह दुर्लभ ग्रन्थ उपलब्ध हो सका। भारत सरकार के राष्ट्रीय अभिलेखागार जनपथ नई दिल्ली को भी धन्यवाद है, जिसकी कृपा से इस ग्रन्थ के प्रकाशन हेतु आर्थिक अनुदान मिला है। ग्रन्थ के कम्प्यूटरीकरण हेतु मैंने अनेक स्थानों पर यत्न किया, किन्तु लिपि की अनभिज्ञता और दुरुहता के कारण किसी ने भी स्वीकृति नहीं दी। अन्त में श्री विजयकुमार झा, अधिपति-भगवती लेजर प्रिंटर्स, नई दिल्ली ने इस गुरुतर भार को इस अनुबन्ध से स्वीकार किया कि कम्प्यूटर पर आपको साथ बैठकर मुद्रण कराना होगा, सो कई मास तक पुराने अक्षरों का अभ्यास कराकर इस कठिन कार्य को पूर्ण किया। आचार्य श्री हरिदेव जी गुरुकुल गौतमनगर (दिल्ली) का भी मैं अत्यन्त अभारी हूँ जिनके द्वारा प्रदत्त सुविधा से यह दुष्कर कार्य सु-सम्पन्न हो सका। इस ग्रन्थ के आवरण की साज-सज्जा और सुन्दर चित्रण हेतु श्री कुलदीप जी खोखर कनिष्ठ अभियन्ता विकासनगर, रोहतक ने बहुमूल्य सुझाव देकर अनुगृहीत किया है, एतदर्थ वे भी धन्यवादार्ह हैं। इसका प्रूफ देखना भी अति दुष्कर कार्य था। एक भी अक्षर अनुमान से नहीं देखा जा सकता। प्रत्येक अक्षर मूलप्रति को सामने रखकर देखा गया है। प्रतिलिपिकर्ता द्वारा अनवधानतावश की गई भूलों को यथामति सुधार कर नीचे टिप्पणी दे दी है। इस बात पर भी पूरा ध्यान दिया है कि एक भी अशुद्धि न रहने पाये। पुनरपि सामगान के विशेषज्ञ ही इसकी त्रुटियों से अवगत करा सकते हैं। यदि इस ग्रन्थ में कोई व्यतिक्रम हो गया हो अथवा कोई अशुद्धि रह गई हो तो अवगत कराने पर उसे अगले संस्करण में शुद्ध कर दिया जाएगा।

पुरातत्त्वसंग्रहालय

गुरुकुल झज्जर (हरयाणा)

१४.२.२००४

विदुषां वशंवद

—विरजानन्द दैवकरणि

## विषय-सूची

### प्रपाठकानुसार गानसंख्या आग्नेयपर्व

प्रपाठक	साममन्त्र	कुलमन्त्र	गानभेद
प्रथम अर्द्ध प्रपाठक	२० तक	२०	३४
प्रथम प्रपाठक	४१ तक	२१	३६
द्वितीय अर्द्ध प्रपाठक	६७ तक	२६	४०
द्वितीय प्रपाठक	९० तक	२३	३१
तृतीय अर्द्ध प्रपाठक	११४ तक	२४	३९
योग :			१८० गानभेद

### ऐन्द्रपर्व

तृतीय प्रपाठक	१२८ तक	१४	३१
चतुर्थ अर्द्ध प्रपाठक	१४४ तक	१६	३४
चतुर्थ प्रपाठक	१६० तक	१६	३६
पञ्चम अर्द्ध प्रपाठक	१७८ तक	१८	३५
पञ्चम प्रपाठक	२०८ तक	३०	३५
षष्ठ अर्द्ध प्रपाठक	२३६ तक	२८	३७
षष्ठ प्रपाठक	२४८ तक	१२	३५
सप्तम अर्द्ध प्रपाठक	२६३ तक	१५	३३
सप्तम प्रपाठक	२८४ तक	२१	३६
अष्टम अर्द्ध प्रपाठक	३१३ तक	२९	३६
अष्टम प्रपाठक	३३१ तक	२९	३६
नवम अर्द्ध प्रपाठक	३४५ तक	१४	३१
नवम प्रपाठक	३७० तक	२५	३५
दशम अर्द्ध प्रपाठक	३८३ तक	१३	३४
दशम प्रपाठक	४०० तक	१७	३५
एकादश अर्द्ध प्रपाठक	४१८ तक	१८	३६
एकादश प्रपाठक	४३८ तक	२०	३८
द्वादश अर्द्ध प्रपाठक	४६६ तक	२८	४२
योग :			६३३ गानभेद

## पावमानकाण्डम्

द्वादश प्रपाठक	४६९ तक	३	३१
त्रयोदश अर्द्ध प्रपाठक	४७६ तक	७	३८
त्रयोदश प्रपाठक	४९६ तक	२०	३५
चतुर्दश अर्द्ध प्रपाठक	५११ तक	१५	३६
चतुर्दश प्रपाठक	५१५ तक	४	३०
पञ्चदश अर्द्ध प्रपाठक	५२४ तक	९	३६
पञ्चदश प्रपाठक	५४० तक	१६	३०
षोडश अर्द्ध प्रपाठक	५५३ तक	१३	३९
षोडश प्रपाठक	५६५ तक	१२	३५
सप्तदश अर्द्ध प्रपाठक	५७७ तक	१२	३९
सप्तदश प्रपाठक	५८५ तक	८	३५
योग :			३८४ गानभेद

अग्नेयपर्व	११४ मन्त्र	१८० गानभेद
ऐन्द्रपर्व	३५२ मन्त्र	६३३ गानभेद
पावमानकाण्ड	११९ मन्त्र	३८४ गानभेद
कुलयोग :	५८५ मन्त्र	११९७ गानभेद



[illegible]

॥ सामगान की पाण्डुलिपि का प्रथम पत्रा ॥

[illegible]

॥ सामगान की पाण्डुलिपि का द्वितीय पत्रा ॥





## ओ३म्

## [ सामवेदसंहिताया गानम् ]

[ ऋषिः — भरद्वाजः ॥ देवता — अग्निः ॥ छन्दः — गायत्री ॥ स्वरः — षड्जः ॥ ]

[ १. <sup>२ ३</sup> अग्र <sup>१ २</sup> आ याहि <sup>३ १ २</sup> वीतये <sup>३ २ ३</sup> गृणानो <sup>१ २</sup> हव्यदातये । <sup>१</sup> नि होता <sup>२ २</sup> सत्सि <sup>३ १ २</sup> बर्हिषि ॥ ]

[ १ ] ओ४ग्ना४यि४ । आ२या२ही२३वोयितोया४रुयि२ । तो या ४रु  
यि२ । गृणा॒नो॒२ह२ । व्य२दातोया४रुयि२ । तो या ४रु यि २ ।  
ना यि हो२ता साऽ२३ । त्साऽरुयिरुबा३२३४अ॒प॒हो॒प॒वा॒प ।  
ही३२३४ षी॒प ॥ १ ॥

[ २ ] अ४ग्न॒प॒आ॒४या॒प॒हि॒प॒वी॒४ । त या यि । गृणा॒नो॒ हव्यदा॒ताऽ२३  
या२यि२ । नि होता॒ सत्सि२ । बर्हाऽ२३यि३षी२ । बर्हाऽरु३यिरु  
षा३२३४अ॒प॒हो॒प॒वा॒प । ब२र्ही२३षीऽ२३४प ॥ २ ॥

[ ३ ] अ४ग्न॒प॒आ॒४या॒प॒हि॒प॒ । वा४ऽप॒यि॒प॒त॒प॒या॒४यि॒४ । गृणा॒नो  
हव्या दा२ऽता२३ये२ । नि२हो२रु ता३२३४ सा॒प । त्साऽ२३  
यि३ । बा२३ । हाऽ२३४यि४षो॒प॒द्हा॒प॒इ॒प ॥ ३ ॥

[ ऋषिः — भरद्वाजः ॥ देवता — अग्निः ॥ छन्दः — शङ्खुमती  
पिपीलिकामध्यागायत्री ॥ स्वरः — षड्जः ॥ ]

[ २. <sup>१ २</sup> त्वमग्ने <sup>३ २ ३</sup> यज्ञानां <sup>१ २</sup> होता <sup>३ २</sup> विश्वेषां <sup>३ २ ३</sup> हितः । <sup>१ २</sup> देवेभिर्मानुषे <sup>१ २</sup> जने ॥ ]





ऋषिः—उशनाः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

५. <sup>१ २</sup>प्रेष्ठं <sup>३</sup>वो <sup>१ २</sup>अतिथिं <sup>३ २</sup>स्तुषे <sup>३ १ २</sup>मित्रमिव <sup>३ २</sup>प्रियम् । <sup>२ ३ २ ३ १ २ २</sup>अग्रे रथं न वेद्यम् ॥

१. प्रेष्ठं५वा४ः । अता२३यि३थी२म् । स्तौषेमि२त्र२म् । इ२  
वप्राऽ२३या२म् । अग्नायिरा२३था२३म् । नावाऽ२३हा२३  
४ऽ३यि३ । दाऽ२३४यो५६हा५यि५ ॥ ९ ॥

२. प्रेष्ठं५म्ब५ः । ओ४हा४यि४ । अताऽ२३यि३थी२म् । स्तु२  
षा२यि२मि२त्रा२३म् । इवाऽ२प्रा३२३४या५म् । अ२हो२ऽ  
यि । अग्ने२राथाऽ२३म् । नाऽ२३वे४ऽ३ । दा२३४५यो५६हा५  
यि५ ॥ १० ॥

३. प्रेष्ठं५म्बो५हा५उ५ । अतिथायिम् । स्तुषे मित्रमिवप्राऽ२३या२  
म् । अग्नाये२३ । राऽ२था३२३४अ५हो५वा५ । न२वे॒दिया३२  
३४५म् ॥ ११ ॥

ऋषिः—सुदीतिपुरुमीढौ तयोर्वान्यतरः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥  
स्वरः—षड्जः ॥

६. <sup>१ २</sup>त्वं नो <sup>३ १ २</sup>अग्रे महोभिः <sup>३ १ २</sup>पाहि विश्वस्या <sup>३ २ ३ १ २</sup>अरातेः । <sup>३ २ ३ १ २ २</sup>उत द्विषो मर्त्यस्य ॥

१. त्व५न्नो५या५ । ग्ने२महो२भिः । पा॒होयि॒वी२३श्वा२ । स्या  
अरा॒ते२ः । उताद्वा२ऽयिषा४२ुः । मर्त्य२स्य२ । इडाऽ२३भा२३  
४ऽ३ । ओंऽ२३४५यि५डा । ५ ॥ १२ ॥

२. त्वा४न्त्व४न्नो५अ५ग्ने५म४ । हो५६भा५यि५ः । पा॒रहि॒विश्वा  
अ२३हो२ । स्या अ२३हो२ । आ रा॒ते२ः । उताद्वा२ऽयिषा४२ुः ।  
मर्त्ताऽ२ु या३२३४अ५हो५वा५ । स्या३२३४५ ॥ १३ ॥



ऋषिः—भरद्वाजः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

७. एह्यु<sup>२ ३ १</sup> षु<sup>२२ ३ १</sup> ब्रवाणि<sup>२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २</sup> तेऽ<sup>३ १ २</sup> ग्र<sup>३ १ २</sup> इत्येतरा<sup>३ १ २</sup> गिरः । एभिर्वर्धास<sup>३ १ २</sup> इन्दुभिः ॥

१. ए॒ह्यु॒षू॒र३ब्र॒वा॒णि॒ता॒प॒यि॒प॒ । अ॒ग्र॒इ॒त्ये॒तरा॒गा॒रु॒  
यि॒राः । ए॒र॒भा॒रु॒यि॒र्वर्॒धा । स॒याऽ॒र॒हा॒र॒रु॒यि॒रु॒ ।  
दू॒ऽ॒र॒भो॒प॒हा॒यि॒प॒ ॥ १४ ॥

२. ए॒ह्यु॒षू॒ब्र॒वौ॒हो॒णा॒यि॒ता॒प॒यि॒प॒ । अ॒ग्र॒इ॒त्ये॒तरा॒रु॒  
गी॒र॒राः । ए॒र॒भि॒रु॒र्वा॒रु॒यि॒रु॒ । स॒याऽ॒र॒हा॒र॒रु॒यि॒रु॒ ।  
यि॒रु॒ । दू॒ऽ॒र॒भो॒प॒हा॒यि॒प॒ ॥ १५ ॥

ऋषिः—वत्सः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

८. आ<sup>१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २</sup> ते<sup>३ १ २</sup> वत्सो<sup>३ १ २</sup> मनो<sup>३ १ २</sup> यमत्<sup>३ १ २</sup> परमाच्चित्<sup>३ १ २</sup> सधस्थात् ।  
अ॒ग्ने॒ त्वां॒ का॒म॒ये॒ गि॒रा ॥

१. आ॒प॒ते॒व॒त्सा॒पः । म॒नो॒य॒म॒रु॒त् । प॒र॒मा॒रु॒त् । चि॒र॒त्स॒धाऽ॒  
र॒रु॒त् । अ॒ग्रा॒यि॒त्वा॒रु॒ङ्गा॒रु॒ ॥ म॒यो॒वा॒प॒ । गा॒रु॒यि॒  
प॒रो॒प॒हा॒यि॒प॒ ॥ १६ ॥

२. आ॒रु॒ते॒व॒त्सो॒म॒नो॒य॒म॒त् । ऐ॒या॒हा॒यि॒प॒ । प॒र॒रु॒  
मा॒च्चि॒त्स॒ध॒स्था॒दै॒याऽ॒रु॒हो॒यि॒या । अ॒ग्ने॒त्वा॒ङ्गा॒म॒ये॒याऽ॒रु॒  
हो॒यि॒या । गि॒र॒रा॒रु॒ । इ॒डाऽ॒रु॒भा॒रु॒यि॒रु॒ । ओ॒ऽ॒रु॒यि॒प॒ ।  
डा॒प॒ ॥ १७ ॥

ऋषिः—भरद्वाजः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

९. त्वामग्ने<sup>१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २</sup> पुष्करादध्यथर्वा<sup>३ १ २</sup> निरमन्थत । मू॒र्ध्नो॒ वि॒श्व॒स्य॒ वा॒घतः ॥

१. त्वा॒पम॒प॒ग्रे॒प॒पू॒प॒ष्का॒प॒द॒रा॒प॒द॒प॒धि॒प । आ॒थ॒र॒व्वा॒र । ना । यिः ।  
 अ॒माऽरु॒न्था॒३२३४ता॒प । मू॒३२३४ध्नो॒॑प । वा॒३२३४यि॒४  
 श्वा॒प । स्य॒४वो॒४वा॒प । घा॒४ऽप॒तो॒प॒द॒हा॒प॒यि॒प ॥ १८ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१०. अ॒ग्रे॒ वि॒व॒स्व॒दा॒ भ॒रा॒स्म॒भ्य॒मू॒तये॒ महे॒ । दे॒वो॒ ह्य॒सि॒ नो॒ दृ॒शे ॥

१. अ॒४ग्रे॒प॒वि॒४व॒प॒स्व॒प॒दा॒४भ॒प॒रो॒४ । वा॒४हा॒प॒यि॒प । अ॒र॒स्म॒र  
 भ्य॒र॒मू॒र॒ता॒३या॒यि॒महे॒र । ओं । वा॒३र॒३हा॒र॒यि॒र । २ । दा॒यि॒वो॒र॒ऽ  
 हि॒या॒४रु॒ । ओं वा॒३र॒३हा॒र॒यि॒र । ओं । वा॒३र॒३हा॒र॒३यि॒३ । साऽशु॒यि  
 रु॒ना॒३२३४ओ॒प॒हो॒प॒वा॒प । दृ॒र॒शे॒र॒ऽऽ ॥ १९ ॥ द॒श॒ति [ : ] ॥

ऋषिः—आयुङ्क्ष्वाहिः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

११. न॒म॒स्ते॒ अ॒ग्र॒ ओ॒ज॒से॒ गृ॒ण॒न्ति॒ दे॒व॒ कृ॒ष्ट॒यः । अ॒मै॒र॒मि॒त्र॒म॒र्द॒य ॥

१. न॒४म॒प॒स्तौ॒प । हो॒४ग्रा॒प॒यि॒प । ओ॒ज॒सा॒र॒३यि॒३ । गृ॒णाऽरु॒न्ता॒३२  
 ३४यि॒४दे॒प । वा॒कृ॒ष्ट॒या॒ ४रुः । अ॒मा॒ये॒र॒३ः । आऽरु॒मा॒३२३४  
 अ॒प॒हो॒प॒वा॒प । त्र॒र॒म॒र॒र्द॒र॒या॒३२३४प ॥ २० ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१२. दू॒तं॒ वो॒ वि॒श्व॒वे॒द॒सं॒ ह॒व्य॒वा॒ह॒म॒म॒र्त्य॒म् । य॒जि॒ष्ठ॒मृ॒ज्ज॒से॒ गि॒रा ॥

१. दू॒प॒ता॒४ऽ३म्॒३वो॒३वि॒४श्व॒४वे॒प॒द॒प॒सा॒प॒म्प । ह॒र॒व्य॒र॒वा॒  
 हा॒म् । अ॒माऽरु॒त्ता॒३२३४या॒प॒म्प । या॒जि॒ष्ठ॒र॒म् । ऋ । ज॒से॒र॒३  
 हा॒र॒यि॒र । गि॒रा । अ॒र॒३हो॒४वा॒प । हो॒४ऽप॒यि॒प । डा॒प ॥ २१ ॥

ऋषिः — प्रयोगः ॥ देवता — अग्निः ॥ छन्दः — गायत्री ॥ स्वरः — षड्जः ॥

१३. उप त्वा<sup>१ २</sup> जामयो<sup>३ २ ३</sup> गिरो<sup>२ ३ १ २</sup> देदिशतीर्हविष्कृतः<sup>३ १ २</sup> । वायो<sup>३ १ २ २</sup>रनीके<sup>३ १ २ २</sup> अस्थिरन् ॥

१. उपपत्वा<sup>१ २</sup>जा<sup>३ २ ३</sup>प । मयो<sup>२ ३ १ २</sup>रंगि । रर<sup>३ १ २</sup>ओयियँदू<sup>३ १ २ २</sup>४२ुः ॥ दायिदिश<sup>३ १ २ २</sup>२  
ती<sup>३ १ २ २</sup>२ ऋ<sup>३ १ २ २</sup>२हरवि<sup>३ १ २ २</sup>२कृ । त२ । ओयियँदू<sup>३ १ २ २</sup>४२ुः । वा<sup>३ १ २ २</sup>२यो<sup>३ १ २ २</sup>रा<sup>३ १ २ २</sup>ऽ२३नी<sup>३ १ २ २</sup>२ु ।  
क<sup>३ १ २ २</sup>३या<sup>३ १ २ २</sup> २३स्था<sup>३ १ २ २</sup>४ऽ५यि<sup>३ १ २ २</sup>परा<sup>३ १ २ २</sup>५६५६न्द् । अश्वा<sup>३ १ २ २</sup>२३गा<sup>३ १ २ २</sup>वा<sup>३ १ २ २</sup>ऽ२३  
४५ः ॥ २२ ॥

२. उपपत्वा<sup>१ २</sup>जा<sup>३ २ ३</sup>पमा<sup>२ ३ १ २</sup>५६यो<sup>३ १ २</sup>५गि<sup>३ १ २</sup>परा<sup>३ १ २</sup>५ः । दायिदिश<sup>३ १ २ २</sup>२तायिः ।  
हँवी<sup>३ १ २ २</sup>ऽ२ुष्का<sup>३ १ २ २</sup>३२३४त्ता<sup>३ १ २ २</sup>५ः । वा<sup>३ १ २ २</sup>५यो<sup>३ १ २ २</sup>पर<sup>३ १ २ २</sup>पना<sup>३ १ २ २</sup>५हा<sup>३ १ २ २</sup>५यि<sup>३ १ २ २</sup>का<sup>३ १ २ २</sup>४या<sup>३ १ २ २</sup>५ ।  
स्था<sup>३ १ २ २</sup>यिरा<sup>३ १ २ २</sup>२ु । अ<sup>३ १ २ २</sup>३हो<sup>३ १ २ २</sup>३२३४वा<sup>३ १ २ २</sup> ५ई<sup>३ १ २ २</sup>४डा<sup>३ १ २ २</sup>५ ॥ २३ ॥

ऋषिः — मधुच्छन्दाः ॥ देवता — अग्निः ॥ छन्दः — गायत्री ॥ स्वरः — षड्जः ॥

१४. उप त्वाग्ने<sup>१ २</sup> दिवेदिवे<sup>३ १ २ ३</sup> दोषावस्तर्धिया<sup>३ १ २</sup> वयम् । नमो<sup>३ १ २</sup> भरन्त<sup>३ १ २</sup> एमसि<sup>३ १ २</sup> ॥

१. उ२पात्वा<sup>१ २</sup>ऽ२३ग्ने<sup>३ १ २ ३</sup>४दि<sup>३ १ २</sup>४वे<sup>३ १ २</sup>५दि<sup>३ १ २</sup>५वा<sup>३ १ २</sup>५यि<sup>३ १ २</sup>५ । दोषा<sup>३ १ २</sup>४२ुवास्ता<sup>३ १ २</sup>४२ुः ।  
धि२या<sup>३ १ २</sup> वयम् । नामो<sup>३ १ २</sup>४२ुभारा<sup>३ १ २</sup>४२ु । त२ये<sup>३ १ २</sup>मा<sup>३ १ २</sup>ऽ२३सा<sup>३ १ २</sup>२३४ऽ३  
यि३ । ओ<sup>३ १ २</sup>ऽ२३४५यि<sup>३ १ २</sup>५ । डा<sup>३ १ २</sup>५ ॥ २४ ॥

ऋषिः — शुनःशेषः ॥ देवता — अग्निः ॥ छन्दः — गायत्री ॥ स्वरः — षड्जः ॥

१५. जराबोध<sup>१ २</sup> तद्विविद्धि<sup>३ १ २ ३</sup> विशेविशे<sup>३ १ २</sup> यज्ञियाय<sup>३ १ २</sup> । स्तोमं<sup>३ १ २</sup> रुद्राय<sup>३ १ २</sup> दृशीकम्<sup>३ १ २</sup> ॥

१. जा<sup>३ १ २</sup>४रा<sup>३ १ २</sup>५बो<sup>३ १ २</sup>धा<sup>३ १ २</sup>४२ुबो<sup>३ १ २</sup>धा<sup>३ १ २</sup>४२ु । तद्विविद्धायि । वि२शे२वायि<sup>३ १ २</sup>शे<sup>३ १ २</sup>४२ु ।  
यज्ञा<sup>३ १ २</sup>ऽ२३ । या<sup>३ १ २</sup>३या<sup>३ १ २</sup>२३४ओ<sup>३ १ २</sup>५हो<sup>३ १ २</sup>५वा<sup>३ १ २</sup>५ । स्तोमं<sup>३ १ २</sup>रुद्राय<sup>३ १ २</sup> दृ२शी<sup>३ १ २</sup>२  
काम् ॥ २५ ॥

२. ज५रा<sup>३ १ २</sup>५बो<sup>३ १ २</sup>५धो<sup>३ १ २</sup>४वा<sup>३ १ २</sup>५ । ताद्विवि२ह्वायि । वि२शा५यिवा<sup>३ १ २</sup>ऽ२३यि३  
शे२ । य२ज्ञि२याय । स्तोमां<sup>३ १ २</sup>रुद्रा<sup>३ १ २</sup>ऽ२३या<sup>३ १ २</sup>४ । दृ५ । शी३को२३  
४५यि<sup>३ १ २</sup>५ । डा<sup>३ १ २</sup>५ ॥ २६ ॥

ऋषिः—मेधातिथिः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१६. <sup>२ ३ १ २२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २</sup> प्रति त्यं चारुमध्वरं गोपीथाय प्र हूयसे । मरुद्भिरग्रं आ गहि ॥

१. प्ररतित्याऽ२३ज्वा४रु४म५ध्व५रा५म् । गो२पी२था । या । प्राहू२  
या३२३४सा५यि५ । म२रुद्भिः२ः । आ । ग्रा । आ२ग२ही ।  
अ२३हो४वा५ । हो४ऽ५यि५ । डा५ ॥ २७ ॥

ऋषिः—शुनःशेषः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१७. <sup>२ ३ २ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २२</sup> अश्वं न त्वा वारवन्तं वन्दध्या अग्निं नमोभिः ।  
<sup>३ १ २ ३ १ २</sup> सम्राजन्तमध्वराणाम् ॥

१. आश्वारु । अ३हो३२३४वा५ । ना त्वारु । अ३हो३२३४वा५ ।  
वा४र५ वं५तं५वं५द४ध्या४ । आग्रा२ । अ३हो३२३४वा५ ।  
न४मो५भि५स्सं५म्रा४जं५ता४म् । आध्वरा२णाम् । अऽ२३  
हो४वा५ । हो४ऽ५यि५ डा५ ॥ २८ ॥

२. अ४श्वं५न४त्वा५वा४र५वं५ता४म् । व२न्दध्या५अग्नि२-  
मो॒भायिः । सं२म्रा॒ज२ । त२माध्वरा२३४ । अ३हो४वा५ । इहा३२  
३४हा५यि५ । अ३हो२३ऽ२ । या३२३४अ५हो५वा५ । णा३२३  
४५म् ॥ २९ ॥

३. अ५श्व५न५त्वा५अ५हो४हा५यि५ । वार२रारुवा३२३४ता५  
म् । वं२दाध्याऽ२३४हा५यि५ । अग्रायि२नमा२३४ । अ३हो४  
वा५ । इहा३२३४हा५यि५ । उ२हुरवा३२३४भिः । स२म्रा॒ज२  
तामैध्वरा२३४ । अ३हो४वा५ । इहा३२३४हा५यि५ । अ३हो२३  
ऽ२३४ । णा४म् । ए५हि५या५दहा५ । हो४ऽ५यि५ डा५ ॥ ३० ॥

ऋषिः—प्रयोगः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१८. और्वभृगुवच्छुचिमप्रवानवदा हुवे । अग्निं समुद्रवाससम् ॥

१. अ॒प॒र्व्व॒प॒भृ॒प॒गु॒प॒व॒त्त॒ । ओ॒हा॒यि॒ । शू॒३२३४ची॒प॒म्प॒ ।  
आ॒प्र॒वा॒र॒न॒ । व॒र॒दा॒रु॒हु॒वा॒रु॒यि॒ । हु॒व॒र॒ओ॒यि॒ । अ॒ग्रा॒रु॒  
यि॒र॒स॒मू॒रु॒ । स॒मु॒र॒ओ॒ । द्रा॒र॒वा॒स॒सा॒र॒३५उ॒वा॒र॒३४५ ॥ ३१ ॥

२. अ॒प॒र्व्व॒प॒भृ॒प॒गु॒प॒व॒त्त॒छु॒चि॒प॒म्प॒ । ए॒र॒५५ । शु॒र॒ची॒र॒म्प॒ ।  
आ॒प्र॒वा॒र॒न॒ । व॒र॒दा॒र॒३हु॒३वा॒र॒यि॒ । हु॒र॒वा॒र॒३यि॒३ ।  
हु॒र॒व॒३ए॒ । अ॒ग्रा॒यि॒र॒सा॒र॒३मू॒र॒ । स॒र॒मू॒र॒३ । स॒र॒मु॒३ए॒र॒३ ।  
द्रा॒र॒वा॒३२३४ अ॒प॒हो॒प॒वा॒प॒ । स॒र॒सा॒र॒३मे॒र॒३४५ ॥ ३२ ॥

ऋषिः—प्रयोगः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१९. अग्निमिन्धानो मनसा धियं सचेत मर्त्यः । अग्निमिन्धे विवस्वभिः ॥

१. अ॒प॒ग्नि॒र॒मि॒प॒धा॒नो॒र॒म॒न॒प॒सौ॒प॒ । हो॒र॒हो॒वा॒हा॒प॒यि॒प॒धि॒३  
य॒र॒३स॒प॒चे॒त॒प॒मौ॒प॒ । हो॒र॒हा॒र॒३ । हो॒र॒३र॒त्ति॒र॒या॒ः । अ॒ग्रा॒  
ये॒र॒३म्प॒३ । आ॒र॒यि॒रु॒धा॒३२३४अ॒प॒हो॒प॒वा॒प॒ । वि॒र॒स्व॒भी  
३२३४५ः ॥ ३३ ॥

ऋषिः—वत्सः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२०. आदित्प्रत्नस्य रेतसो ज्योतिः पश्यन्ति वासरम् । परो यदिध्यते दिवि ॥

१. आ॒र॒दि॒त्प्र॒त्ना॒र॒५५स्प॒प॒रे॒प॒त॒सा॒ः । ज्यो॒ति॒ष्य॒श॒न्ति॒वा॒  
सा॒र॒म॒ । प॒रो॒या॒रु॒दि॒ध्य॒ता॒यि॒ । दि॒र॒वि॒ । हो॒यि॒ । २ । अ॒र॒हो॒  
अ॒र॒हो॒वा॒र॒३४५हा॒प॒उ॒प॒वा॒प॒ ॥ ३४ ॥

[ इति ] अर्द्धप्रपाठकः ॥

ऋषिः — प्रयोगः ॥ देवता — अग्निः ॥ छन्दः — विराङ्गायत्री ॥ स्वरः — षड्जः ॥

२१. अग्निं<sup>३ १ २</sup> वो<sup>३ १ २</sup> वृधन्तमध्वराणां<sup>३ १ २</sup> पुरुतमम्<sup>३ १ २</sup> । अच्छा<sup>२</sup> नष्ट्रे<sup>३ २ ३</sup> सहस्वते<sup>३ १ २</sup> ॥

१. अपग्निं<sup>३ १ २</sup>पवो<sup>३ १ २</sup>पवृ<sup>३ १ २</sup>धा<sup>३ १ २</sup>न्ता<sup>३ १ २</sup>पम्<sup>३ १ २</sup> । आध्वरा<sup>२</sup>णा<sup>२</sup>म्<sup>२</sup> । पुररूता-  
मौ<sup>२</sup> । हो<sup>२</sup>रवा<sup>२</sup>र<sup>३</sup>हारयि<sup>२</sup> । आछा<sup>४</sup>रुनाष्ट्रे<sup>५ २ ३</sup> । सरहो<sup>५ २ ३ ४</sup>  
वा<sup>५</sup> । स्वा<sup>४ ५ ५</sup>तो<sup>५ ६</sup>हा<sup>५ ५</sup>यि<sup>५ ५</sup> ॥ १ ॥

२. अपग्निं<sup>३ १ २</sup>पवा<sup>५ ६</sup>ए<sup>५</sup> । वृ<sup>२</sup>धन्ताम्<sup>५</sup> । अध्वरा<sup>५</sup>णाम्पुरु<sup>५</sup>तममच्छा<sup>४ २</sup>  
हो<sup>२ ५</sup>यि<sup>५</sup> । ना<sup>५ २ ३</sup>ष्ट्रे<sup>२</sup> । सरहास्वा<sup>५ २ ३ ४ ५</sup>ता<sup>५ ६ ५ ६</sup>यि<sup>६ ६</sup> ॥  
ई<sup>३ २ ३ ४</sup>ति<sup>५ ५</sup> ॥ २ ॥

३. अपग्निं<sup>४ ५</sup>वः<sup>५</sup> । ओं<sup>४</sup>हा<sup>४</sup> । यि<sup>४</sup>वृ<sup>५ २</sup>धा<sup>५ २</sup>न्ता<sup>५ २</sup>म्<sup>५ २</sup> । अध्वरा<sup>५</sup>णां-  
पुरु<sup>२ ५</sup>ता<sup>२ ३</sup>मा<sup>२ ३</sup>म्<sup>५ २</sup> । २ । अरच्छा<sup>२ २</sup>न<sup>२ ३</sup>त्रो<sup>३ २ ३ ४</sup>हा<sup>५ ५</sup>यि<sup>५ ५</sup> । साहा  
२<sup>३</sup>हार<sup>५</sup> । स्वरता<sup>५</sup> । अर<sup>३</sup>हो<sup>४ ५</sup>वा<sup>५ ५</sup> । डा<sup>५ ५</sup> ॥ ३ ॥

ऋषिः — भरद्वाजः ॥ देवता — अग्निः ॥ छन्दः — गायत्री ॥ स्वरः — षड्जः ॥

२२. अग्निस्तिग्मेन<sup>३ २</sup> शोचिषा<sup>३ १ २</sup> यंसद्विष्व<sup>३ २ ३ २ ३ २</sup>न्या<sup>३ २</sup>त्रिणम्<sup>३ १ २</sup> । अग्निर्नो<sup>३ १ २</sup> वंसते<sup>३ २</sup> रयिम्<sup>३ २</sup> ॥

१. आग्ना<sup>२</sup>ओं<sup>३ २ ३ ४</sup>वा<sup>५ ५</sup> । ति<sup>२</sup>ग्मे<sup>२</sup>ना<sup>२ ३</sup>शो<sup>५ ५</sup> ॥ चायिषा<sup>२</sup>ओं<sup>३ २ ३ ४</sup>  
वा<sup>५ ५</sup> । या<sup>५</sup>सा<sup>२</sup>ओं<sup>३ २ ३ ४</sup>वा<sup>५ ५</sup> । वायि<sup>५</sup>श्वान्न्या<sup>५</sup> । त्रायिणा<sup>२</sup>  
ओं<sup>३ २ ३ ४</sup>वा<sup>५ ५</sup> । अरग्निर्नो<sup>२ ५</sup>र<sup>५</sup>स<sup>२ ५</sup>ते<sup>२ ५</sup>रु<sup>३ ५</sup>यी<sup>२ ५</sup> ॥ ४ ॥

२. ओ<sup>४</sup>हा<sup>५</sup> । ओं<sup>४</sup>ग्री<sup>५</sup>ः<sup>५</sup> । ता<sup>३ २ ३ ४</sup>यि<sup>४ ५</sup>ग्मे<sup>५ ५</sup> । ना<sup>२</sup>शो<sup>२</sup>चा<sup>३ २ ३ ४</sup>  
यि<sup>४ ५</sup>षा<sup>५ ५</sup> । य<sup>५</sup>सा<sup>५ २ ३ ४</sup>यि<sup>४ ५</sup>श्व<sup>५ ५</sup>म्<sup>५ ५</sup> । नि<sup>२ ५</sup>य<sup>२ ५</sup>त्रा<sup>३ २ ३ ४</sup>  
यि<sup>४ ५</sup>णा<sup>५ ५</sup>म्<sup>५ ५</sup> । अरग्निर्नो<sup>२ ५</sup>र<sup>५</sup>सा<sup>२ ५</sup>ता<sup>३ २ ३ ४</sup>अ<sup>५</sup>हो<sup>५ ५</sup>वा<sup>५ ५</sup>रा<sup>३ २ ३ ४</sup>  
यी<sup>५ ५</sup>म्<sup>५ ५</sup> ॥ ५ ॥



१. अ॒प॒ग्रे॒प॒यू॒र॒३॒ज्ज॒वा॒४॒हि॒प॒ये॒४॒ता॒४॒वा॒५ । आ॒श्व॒ा॒सो॒दे॒व॒र॒सा॒धा॒ऽ  
२॒३॒वा॒२ः । अ॒र॒म्वा॒ऽ२॒३॒हा॒२ । ति॒र॒या॒शा॒ऽ२॒३॒वा॒२॒३॒४॒ऽ३ः ।  
ओ॒ऽ२॒३॒४॒५॒यि॒५ । डा॒५ ॥ १० ॥

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२६. नि<sup>१</sup> त्वा<sup>२</sup> नक्ष्य<sup>३</sup> वि<sup>१</sup>शपते<sup>२</sup> द्यु<sup>३</sup>मन्तं<sup>१</sup> धी<sup>२</sup>महे<sup>३</sup> वयम् । सु<sup>३</sup>वीर<sup>१</sup>मग्र<sup>२</sup> आहुत ॥

१. नि<sup>१</sup>त्वा<sup>२</sup>पा<sup>३</sup> । हो<sup>३</sup>२३<sup>१</sup>यि<sup>२</sup>३ । न४ । क्षि<sup>३</sup>४या<sup>१</sup>पा<sup>२</sup> । वा<sup>३</sup>यि<sup>१</sup>शप<sup>२</sup>२ता<sup>३</sup>यि । द्यु<sup>३</sup>२  
मन्त<sup>३</sup>२म<sup>१</sup>२ । धा<sup>३</sup>यि । मा<sup>३</sup>हे<sup>१</sup>रु<sup>२</sup>वा<sup>३</sup>३२३४या<sup>१</sup>पा<sup>२</sup>म् । सु<sup>३</sup>पा<sup>१</sup>वो<sup>२</sup>४हा<sup>३</sup>४यि<sup>१</sup>४ ।  
रा<sup>३</sup>२म<sup>१</sup>ग्रा<sup>२</sup>२ओ<sup>३</sup>२३४वा<sup>१</sup>पा<sup>२</sup> । हो<sup>३</sup>४२५तो<sup>१</sup>५६हा<sup>२</sup>पा<sup>३</sup>यि<sup>१</sup>५ ॥ ११ ॥

ऋषिः—विरूपः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२७. अ<sup>३</sup>ग्नि<sup>२</sup>र्मूर्धा<sup>३</sup> दिवः<sup>३</sup> ककु<sup>३</sup>त्पतिः<sup>२</sup> पृथि<sup>३</sup>व्या<sup>१</sup> अयम् । अ<sup>३</sup>पां<sup>१</sup> रेतांसि<sup>२</sup> जिन्वति ॥

१. अ<sup>३</sup>पा<sup>१</sup>ग्नि<sup>२</sup>र्मूर्धा<sup>३</sup>पा<sup>१</sup>दी<sup>२</sup>५६व<sup>३</sup>पा<sup>१</sup>ष्क<sup>२</sup>पा<sup>३</sup>कू<sup>१</sup>पा<sup>२</sup>त्पा<sup>३</sup> । पा<sup>३</sup>ती<sup>१</sup>४रु<sup>२</sup>ष्या<sup>३</sup>र्थी<sup>१</sup>४२ ।  
वि<sup>३</sup>२या<sup>१</sup>अ<sup>२</sup>याम् । आ<sup>३</sup>पा<sup>१</sup>४२र<sup>२</sup>रा<sup>३</sup>यिता<sup>१</sup>४२ । सि<sup>३</sup>२जिन्वा<sup>१</sup>२३ता<sup>२</sup>  
२३४२३यि<sup>३</sup>३ । ओं<sup>३</sup>२३४५यि<sup>१</sup>५ । डा<sup>३</sup>पा<sup>१</sup> ॥ १२ ॥

ऋषिः—शुनःशेषः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२८. इ<sup>३</sup>म<sup>२</sup>मू<sup>३</sup>षु<sup>१</sup> त्वम<sup>३</sup>स्माकं<sup>२</sup> सनिं<sup>३</sup> गायत्रं<sup>१</sup> नव्यांसम् । अ<sup>३</sup>ग्ने<sup>१</sup> देवेषु<sup>२</sup> प्र<sup>३</sup> वोचः ॥

१. इ<sup>३</sup>पा<sup>१</sup>म<sup>२</sup>मू<sup>३</sup>षू<sup>१</sup>पा<sup>२</sup> । त्व<sup>३</sup>२मा<sup>१</sup>स्मा<sup>२</sup>२३४का<sup>३</sup>पा<sup>१</sup>म्पा<sup>२</sup>सानी<sup>३</sup> ४२र<sup>१</sup>हो<sup>२</sup>यि ।  
गा<sup>३</sup>या<sup>१</sup>४२हो । त्र<sup>३</sup>२न्न<sup>१</sup>व्या<sup>२</sup>२३३सा<sup>३</sup>२म<sup>१</sup>२ । आ<sup>३</sup>ग्ने<sup>१</sup>४२हो<sup>२</sup>यि ।  
दा<sup>३</sup>यिवा<sup>१</sup>४२हो । षु<sup>३</sup>२प्रा<sup>१</sup>वो<sup>२</sup>२३चा<sup>३</sup>२३४२३ । ओ<sup>३</sup>२३४५यि<sup>१</sup>५ ।  
डा<sup>३</sup>पा<sup>१</sup> ॥ १३ ॥

ऋषिः—गोपवनः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२९. तं<sup>१</sup> त्वा<sup>२</sup> गो<sup>३</sup>पवनो<sup>१</sup> गिरा<sup>२</sup> जनिष्ठ<sup>३</sup>दग्ने<sup>१</sup> अ<sup>३</sup>ङ्गिरः । स<sup>३</sup> पा<sup>१</sup>वक<sup>२</sup> श्रु<sup>३</sup>धी<sup>१</sup> हवम् ॥

१. तं<sup>१</sup>त्वा<sup>२</sup>पा<sup>३</sup>गो<sup>१</sup>पा<sup>२</sup>पा<sup>३</sup> । वा<sup>३</sup>नो<sup>१</sup>२गु<sup>२</sup>गा<sup>३</sup>३२३४यि<sup>१</sup>४रा<sup>२</sup>पा<sup>३</sup> । ज<sup>३</sup>२ना<sup>१</sup>यि<sup>२</sup>ष्ठ<sup>३</sup>२  
दा<sup>३</sup>ग्न्या<sup>१</sup>२गु<sup>२</sup>गा<sup>३</sup>३२३४यि<sup>१</sup>४रा<sup>२</sup>पा<sup>३</sup> । स<sup>३</sup>२पौ<sup>१</sup>२वा<sup>२</sup>२ओ<sup>३</sup>३२३४वा<sup>१</sup>पा<sup>२</sup> ।  
कौ<sup>३</sup>२वा<sup>१</sup>ओ<sup>२</sup>३२३४वा<sup>३</sup>पा<sup>१</sup> । श्रु<sup>३</sup>४धी<sup>१</sup>४२५ह<sup>२</sup>पा<sup>३</sup>पा<sup>१</sup>म्पा<sup>२</sup> । हो<sup>३</sup>४२५यि<sup>१</sup>५ ।  
डा<sup>३</sup>पा<sup>१</sup> ॥ १४ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

३०. परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् । दधद्रत्नानि दाशुषे ॥

१. प४यौ५ । हो४यि४वा४जा५ । प२तायिष्का२ऽवी४रुः । आग्निऋ  
ह२व्या२ । नायैक्रमी४रुत्२ । दधाऽ२३त्३ । राऽ२नुत्ना  
३२३४अ५हो५वा५ । नि२दा२शुषे३२३४५ ॥ १५ ॥

ऋषिः—प्रस्कण्वः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

३१. उदु त्य जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः । दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥

१. उ४दु५त्य४म्४ । ओ४हा४यि४ । जा२तवेऽ२रुदा३२३४सा५म्५ ।  
दे२वं वहा । ती के२रुता३२३४वा५ः । दाऽ२३४ऋ४शे४हा५  
यि५ । वायिश्वा२य२सू । र्याम् । अ५२३हो४वा५ । हो४ऽ५यि५ ।  
डा५ ॥ १६ ॥

ऋषिः—मेधातिथिः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

३२. कविमग्निमुप स्तुहि सत्यधर्माणमध्वरे । देवममीवचातनम् ॥

१. क५वि५म५ग्री५म्५ । उ२पाऽ२३ । स्तूऽ२रुहा३२३४अ५हो५  
वा५ । स२त्यध२र्मा२ण२म२ध्व२रे । दे२वा२मू२ । अ२मी२व२  
चा२ताऽ२३ना२३४ऽ३म्३ओऽ२३४५यि५ डा५ ॥ १७ ॥

ऋषिः—सिन्धुद्वीप आम्बरीषः, त्रित आप्त्यो वा ॥ देवता—अग्निः ॥

छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

३३. शं नो देवीरभिष्टये शं नो भवन्तु पीतये । शं योरभि स्रवन्तु नः ॥

१. श५न्नो५दे५वी५ः । अ२भिष्टाऽ२३या२३४यि४ । श५न्नो५भ५  
वा५ । न्तु२पी२ताऽ२३या२३४यि४ । शं५यो५र५भि५ । स्र२व ।  
तूऽ२रुना३२३४ । अ५हो५वा५ । ऊ३२३४पा५ ॥ १८ ॥

२. हु३वा२३होऽ२३४यि४ । श४न्नो४दे५वी५ः । अ४भि४ष्ट५या५  
यि५ । हु३वा२३होऽ२३४यि४ । श४न्नो४भ५व५ । न्तु४पी४त५  
या५यि५ । हु३वा२३होऽ२३४यि४ । शं४यो४र५भि५ । स्त्र४वं४  
तु५ना५ः । हु३वा२३होऽ२३४यि४ । वा३२३४अ५हो५वा५ । ऊ३२३४  
पा५ ॥ १९ ॥

ऋषिः — उशनाः ॥ देवता — अग्निः ॥ छन्दः — गायत्री ॥ स्वरः — षड्जः ॥

३४. <sup>१ २ ३ १ २ ३</sup> कस्य नूनं <sup>३ १ २</sup> परीणसि <sup>१ २ ३ १ २ ३</sup> धियो जिन्वसि सत्पते । गोषाता यस्य ते गिरः ॥

१. कस्यानूर५नां५ऽ२३ । प३री५णा३२३४सी५ । धियो५ जिन्वा५ऽ२३  
सि३स२त्पा३२३४ता५यि५ । गोषा५रता५या५ऽ२३ । स्या५ऽ२३ता  
३२३४अ५हो५वा५ । उ२पूर । गी३२३४रा५ः ॥ २० ॥

२. ओ२हो२यि२हूर३वा५ऽ२३यि३ । हु२व३ए२ । क२स्य२नूर२नार  
३म्३पा४ऽ३री२ण३सि५ । ओ२हो२यि२हूर३वा५ऽ२३यि३ ।  
हु२व३ए२ । धि२यो२जि२न्वा२३सी४ऽ३स२त्प३ता५यि५ ।  
ओ२हो२यि२हूर३वा५ऽ२३वा५ऽ२३यि३ । हु२व३ए२ । गो२षा२  
ता२य२ । स्य३ता२३यि३गा४ऽ५यि५रा५६५६ ॥ २१ ॥

[ इति ] दशतिः ॥

ऋषिः — शंयुः ॥ देवता — अग्निः ॥ छन्दः — बृहती ॥ स्वरः — मध्यमः ॥

३५. <sup>३ १ २</sup> यज्ञायज्ञा वो <sup>३ १ २</sup> अग्रये <sup>३ १ २</sup> गिरागिरा <sup>३ १ २</sup> च दक्षसे ।

<sup>१ २ ३ २ ३ १ २</sup> प्रप्र वयममृतं <sup>३ १ २</sup> जातवेदसं <sup>३ २</sup> प्रियं <sup>३ १</sup> मित्रं <sup>२ २</sup> न शंसिषम् ॥

१. य५ज्ञा५य५ज्ञा५ । वो२अ२ग्र२या२३यि३ । गिरा५ऽ२३गि३रा  
२३४ । हा३हो२३यि३ । चा२द२क्षा३२३४सा५यि५ । प्रप्रा२व२

यममृतं जा२ । ता वे२ऽदासा४२ुम् । प्रि२यम्मित्राम् । न२शः  
सिषाम् । ए३हि३या२ु । अ३हौ३हो३२३४५यि५ । डा५ ॥ २२ ॥

२. य४ज्ञा३य४ज्ञा५ । हो२यि२ । वो२३ग्र२य३ए२३४ । हि५या५ ।  
गि३ रा३गि२रा । चा३ऽद३क्ष२सायि । प्र२प्रा३व२याम् । अ२  
मृतं जा२३ । तवे३ऽद३२३४सा५म् । प्रि२यम्मित्राम् । न२शः  
सिषाम् । ए३हि३या२ु । औ३हो३२३४५यि५ । डा५ ॥ २३ ॥

३. या३ज्ञा॒या३ज्ञा४२ु । वोअ॒ग्राया४२ुयि२ । गा॒यिरा॒गा॒यिरा४२ु ।  
चा॒दैक्षासा४२ुयि२ । प्र॒प्रावाया४२ुम् । अ॒मृतं जा२३ ।  
तवे३ऽद३२३४सा५म् । प्राय॒म्मायि॒त्रा४२ुम् । ना॒शःसा३  
२३यि३षा२३४३म् । ओ३२३४५यि५ । डा५ ॥ २४ ॥

४. य४ज्ञा३ऽ५य५ । ज्ञा४३३वो२३ग्रा४या५यि५ । गा॒यिरा॒गिरा ।  
चा॒२३दा॒क्षार३सार॒यि२ । प्र॒प्रा॒व॒२यममृतम् । जा॒ता३२३  
वा२ । हुंमायि । दा॒२३सार॒म् । प्राय॒म्मित्र॒न्न॒रशा३ऽ२ुः॒२ुसि३  
षा॒२उ॒२ । वा॒२३४५ ॥ २५ ॥

ऋषिः — भर्गः ॥ देवता — अग्निः ॥ छन्दः — बृहती ॥ स्वरः — मध्यमः ॥

३६. <sup>३ १ २</sup>पाहि नो अग्र <sup>३ १ २</sup>एकया <sup>३ १ २</sup>पाह्यु३त <sup>३ १ २</sup>द्वितीयया ।

<sup>३ २</sup>पाहि <sup>३ २</sup>गीर्भिस्ति॒सृभि॒रूर्जा पते <sup>३ १ २</sup>पाहि <sup>३ १ २</sup>चत॒सृभि॒र्वसो ॥

१. पा॒५हि५नो२३अ४ग्र५ए४क४या५ । पाहि यु२त२ । द्वि२  
ताया२ऽया४२ु । पाहि गी२ । भि॒२स्ति॒२सृ॒२भि॒२ः । ऊ॒२  
र्जा॒म्पा॒२ऽता४२ुयि२ । पाहिच॒रतौ३ । हो२३वा२ । सृ॒२भि॒व्वा३  
२३सा २३४३ । ओ३२३४५यि५ । डा५ ॥ २६ ॥

२. पा५हि५नो५अ५ग्र५ए५क५या५६ए५ । पा२ । होचिउ२ । ता ।  
द्वि२ता३उ३ । या२३या२ । पा५होऽरुयिरुगा३२३४यि४भी५ः ।  
तायिसृभि२ः । ऊ२र्जाम्पाता२ु । अ३हौ३हो३२३४वा५ । पाऽ  
२३४ । हि४हा५ यि५ । च२तासृभा२ु । औ३हौ३हो३२३४वा५ ।  
वाऽ२३४सा४उ४ए५हि५या५६हा५ । हो४ऽ५यि५ ।  
डा५ ॥ २७ ॥

३. पा५हि३नो४अ५ग्र५ए५ । क३या२३ । पाऽ२३४ । हि४यु५  
त५द्वि५ती५ । या४या५ । पा५हि३गी४भि३स्ति४सृ३भि४  
रू५ज्जा५म् । पा२३ता२यि२ । पा५होयिचा२३ता२३४ ।  
हा५ओ४वा५ । सृभि२र्व्व२सो२ । उपा३२३४५ ॥ २८ ॥

ऋषिः — शंयुः ॥ देवता — अग्निः ॥ छन्दः — बृहती ॥ स्वरः — मध्यमः ॥

३७. बृहद्भि३रग्रे अ३र्चि३भिः शु३क्रेण देव शो३चि३षा ।  
भर३द्वाजे समि३धानो यवि३ष्ठ्य रेवत् पावक दीदिहि ॥

१. बृ२हाद्भि३ऽ२३४ग्रे४अ४र्चि४भि४ऋ४हा५उ५ । शु२क्रायि-  
णदे२वरशो२रचि३षा । २ । भरा३द्वा२जेऽ२३ । होवा२३हा२यि२ ।  
समि३धा२न२ःया वि३ष्ठीयाऽ२३ । होवा२३हा२यि२ । रे२वात्पा  
२ऽवाऽ२३ । होवा२३हा२यि२ । कादीदि२हि२ । इ । डाऽ२३-  
भा२३४ऽ३ । ओंऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ २९ ॥

२. बृ५ह५द्भि५र५ग्रे५अ५र्चि५भी५दरे५ । शु२क्रायिण दे२वर  
शो२रचि३षा२ । भरा३द्वा२जेऽ२३ । ओ३ँवा२ । समि३धा२न२ः ।  
यावि३ष्ठियाऽ२३ । ओ३ँवा२ । रे२वात्पा२ऽवाऽ२३ । ओ३ँवा२ ।  
का दीदि२हि२ । इडाऽ२३भा२३४ऽ३ । ओऽ२३४५यि५ ।  
डा५ ॥ ३० ॥



ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

३८. त्वे<sup>१ २</sup> अग्ने<sup>३ १ २</sup> स्वाहुत<sup>३ १ २</sup> प्रियासः<sup>३ १ २</sup> सन्तु<sup>३ १ २</sup> सूरयः ।

यन्तारो<sup>३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २</sup> ये मघवानो जनानामूर्व<sup>२ २ ३ १ २</sup> दयन्त गोनाम् ॥

१. त्वेआऽ२३ । ग्रेऽस्वाऽहुऽतऽहा५उ५ । प्रि२या॒सस्स२तु२सू२  
रय२ः । यन्तारो२ऽयाऽ२३४यि४ । म४घ३वा॒ऽनो५ज४ना॒५ ।  
ना२३ म३ । ऊ॒र्व्व॑ दयाऽ२३हा२ । त२गो॒ना॒र्म् २ । इडाऽ२३भा  
२३४ऽ३ । ओऽ२३४५ । यि५ । डा५ ॥ ३१ ॥

ऋषिः—भर्गः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

३९. अग्ने<sup>२ ३ १ २</sup> जरितर्वि<sup>३ १ २</sup> शपतिस्तपानो<sup>३ १ २</sup> देव रक्षसः<sup>३ १ २</sup> ।

अप्रोषिवान्<sup>१ २</sup> गृहपते<sup>३ १ २</sup> महो<sup>३ १ २</sup> असि<sup>३ १ २</sup> दिवस्यायुर्दुरोणयुः<sup>३ २</sup> ॥

१. अ४ग्ने५ज४रि५त५र्व्वि५श५प४तिः । अ५हो४वा४ । ए४हि५  
या५ । हा५उ५ । त२पा॒रनो॒ दे२व२र२क्ष२सः । अ॒प्रोषा२ऽ  
यिवा४रुनू२ । गा॒र्हप॒ता२३यि३ । माहा॑रुआ३२३४सी५ ।  
दिवाः । पा॒यौ२वा॒रुओं३२३४वा५ । हा२३हा२यि२ । दु४रो४ऽ५  
ण५यु५ः । हो४ऽ५यि५ । डा५ ॥ ३२ ॥

२. अ३ग्ने४ज३रि४त५र्व्वि५ । श५प३ती२३ः । ताऽ२३४पा॒ऽनो॒ऽद्रे५  
व५ र५ । क्ष४सा५ः । तापा॒नो दे॒वरक्ष॒सो । अ॒प्रोषी२३वा२नू२ ।  
गृह२ प२तायि । माहा॑रुआ३२३४सी५ । ओ३ऽ४हा५ । ह३हा॒रु  
यि॒रुदि३व३स्पा॒रयू२३४५ः । ओ३ऽ४हा५ । ह३हा॒रुयि॒रु ।  
दु३रो॒ऽण॒रयू२३४५ः । ओ३ऽ४हा५ । ह३हा॒र३४ऽ३यि३ ।  
ओऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ ३३ ॥

ऋषिः—प्रस्कण्वः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

४०. अग्ने<sup>२ ३</sup> विवस्वदु<sup>१ २</sup>षसा<sup>३ १ २</sup>श्चित्रं<sup>३ १</sup> राधो<sup>२ २</sup> अमर्त्य ।

आ<sup>२ ३ १ २</sup> दाशुषे<sup>३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २</sup> जातवेदो<sup>३</sup> वह्ना<sup>२ ३</sup> त्वमद्या<sup>१ २</sup> देवा<sup>३ १ २</sup> उषर्बुधः ॥

१. अ॒प॒ग्रे॒प॒वि॒प॒वा॒प॒हा॒प॒उ॒प॒ । स्वा॒र॒३दू॒षा॒र॒३सा॒रः । चा॒यि॒त्रा॒र॒३ः  
३हा॒र॒यि॒र । रा॒धो॒र॒३हा॒र॒३यि॒३ । अ॒मा॒ऽरु॒त्ता॒३२३४या॒प॒ ।  
आ॒दा॒र॒ऽशु॒षे॒४२॒ । जा॒तवे॒रदः॒२ । व॒रहा॒तू॒र॒ऽवा॒४२मु॒२ ।  
अ॒रद्या॒हो॒यि । दा॒ऽर॒३यि॒३वा॒ः॒२ । उ॒रषः । बू॒ऽरु॒धा॒३२३४  
औ॒प॒हो॒प॒वा॒प॒ । हु॒र वे॒रव॒सू॒३२३४५ ॥ ३४ ॥

२. अ॒प॒ग्रे॒प॒वि॒प॒व॒प॒स्व॒प॒दु॒षा॒४सा॒पः । चि॒रत्रं॒रो॒धो॒र॒अ॒मा॒र॒र्त्ति॒र  
य॒र । आ॒दा॒र॒ऽशु॒षे॒४२॒ । जा॒तवे॒रदः॒२ । व॒रहा॒तू॒र॒ऽवा॒४२मु॒२ ।  
अ॒रद्या॒दा॒ऽर॒३यि॒३वा॒ः॒२ । उ॒रषः । बू॒ऽरु॒धा॒३२३४औ॒प॒हो॒प  
वा॒प॒ । वि॒रदा॒रव॒सू॒३२३४५ ॥ ३५ ॥

ऋषिः—तृणपाणिः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

४१. त्वं<sup>१ २ ३</sup> नश्चित्रं<sup>२ ३ २ ३ २ ३</sup> ऊत्या<sup>३ १ २</sup> वसो<sup>३ १ २</sup> राधांसि<sup>३ २ ३ १ २</sup> चोदय ।

अस्य<sup>३ २ ३ १ २ २ ३ १ २</sup> रायस्त्वमग्ने<sup>३ २ ३ २ ३ १ २ २</sup> रथीरसि<sup>३ १ २</sup> विदा<sup>३ २ ३ १ २ २</sup> गाधं<sup>३ १ २</sup> तुचे<sup>३ १ २</sup> तु नः ॥

१. त्व॒न्ना॒ऽर॒३श्चि॒त्र॒४ऊ॒त्या॒प॒ । व॒रसो॒ रा॒धा॒॒२ । सि॒रचो॒दा॒र॒ऽ  
या॒ऽर॒३ । आ॒स्या॒रु॒गा॒३२३४या॒पः । त्व॒मग्ने॒२ । र॒रथा॒यि॒रासा॒र॒३  
यि॒३ । वी॒दा॒रु॒गा॒३२३४धा॒प॒म्प॒ । तु॒रचा॒ऽर॒३हा॒र॒यि॒र । तु॒रना॒ ।  
अ॒र॒३हो॒४वा॒प॒ । हो॒४ऽप॒यि॒प॒ । डा॒प॒ ॥ ३६ ॥

[ इति ] प्रथमः प्रपाठकः ॥

ऋषिः — भर्गः ॥ देवता — अग्निः ॥ छन्दः — बृहती ॥ स्वरः — मध्यमः ॥

४२. त्वमित् सप्रथा अस्यग्रे त्रातर्कृतः कविः ।

त्वा विप्रासः समिधान दीदिव आ विवासन्ति वेधसः ॥

१. हा५उ५त्व५मि५त्स५प्र५था५अ५सि५हा५उ५ । आग्नेत्रा२त२ः ।  
ऋ२ता५र्क५वाऽ२३४यि४ः । हा३हो२यि२ । त्वा५म्वि५प्रा२स२  
स्समिधा२ । ना दीदिवार३४ः । हा३हो२यि२ । आविवासा२३४ ।  
हा३हो२३ । ति२वोऽ२३४वा५ । धा४ऽ५सो५६हा५यि५ ॥ १ ॥

२. त्वं५त्वा५६मे५ । इ२त्स२प्रा२३थायासा२यि२ । आ३२३४  
सी५ । आग्नेत्रा२त२ःऋ२ता५र्क५वाऽ२यि२ः । का३२३४वी५ः ।  
त्वा५म्वि५प्रा२स२स्समिधा२ । ना दीदिवो२ । दा३२३४यि४वा५ः ।  
आविवा२साऽ२३हार । ति२वे५धाऽ२३सा२३४ऽ३ः । ओऽ२  
३४५यि५ । डा५ ॥ २ ॥

ऋषिः — भर्गः ॥ देवता — अग्निः ॥ छन्दः — बृहती ॥ स्वरः — मध्यमः ॥

४३. आ नो अग्रे वयोवृधं रयिं पावकं शंस्यम् ।

रास्वा च न उपमाते पुरुस्पृहं सुनीती सुयशस्तरम् ॥

१. आ३नो४अ५ग्ने५व५यो५वृ४ध५म् । ए२३४ । र३या२३४५  
यि५म् । पा२वा२३का३ःसाऽ२३या२म् । रा५स्वा२च२न२  
उपमा२ ते२ ॥ पू५रु५स्पृ५हा४२ुम् । सुनायितायिसू२३हा२यि२ः ।  
य३श३ स्त२राम् । औऽ२३हो४वा५ । हो४ऽ५यि५ । डा५ ॥ ३ ॥

ऋषिः — सोभरिः ॥ देवता — अग्निः ॥ छन्दः — बृहती ॥ स्वरः — मध्यमः ॥

४४. यो विश्वा दयते वसु होता मन्द्रो जनानाम् ।

मधोर्न पात्रा प्रथमान्यस्मै प्र स्तोमा यन्त्वग्रये ॥

१. यो॒पवि॒पश्वा॒र॒३दा॒य॒प॒ते॒४व॒४सू॒प । होता॒४रु॒मान्द्रो॒४रु ।  
जना॒नाम् । मा॒धो॒४रु॒र्त्ना॒पा॒४रु । त्रा॒प्रथ॒मा॒न्यस्मै । प्रा॒स्तो॒४रु॒मा  
या॒४२३ । न्तु॒रवो॒४२३४वा॒प । ग्रा॒४४५यो॒५६ही॒५यि॒५ ॥ ४ ॥
२. यो॒पवि॒पश्वा॒प॒द॒य॒प॒ते॒५व॒पसु॒५हा॒५उ॒५ । होता॒४रु॒मान्द्रो॒४रु ।  
जना॒नाम् । ओ॒वा॒र । २ । मा॒धो॒४रु॒र्त्ना॒पा॒४रु । त्रा॒प्रथ॒मा॒न्यस्मै ॥  
ओ वा॒र । २ । प्रा॒स्तो॒४रु॒मा या॒४२३ । न्तु॒रवो॒४२३४वा॒प । ग्रा  
४४५यो॒५६हा॒५यि॒५ ॥ ५ ॥
३. यो॒पवि॒पश्वा॒प॒द॒य॒प॒ते॒५व॒पस्वो॒५हा॒५ । ओ॒५हा॒५६ए॒५ ।  
होता॒२ । मं॒२द्रो॒जना॒२ना॒२म् । ओ॒३हा॒२ । ओ॒३हा॒२ । ओ॒३हा  
२३ए॒२३४ । म॒३धो॒२३४र्त्ना॒३पा॒२ । त्रा प्र॒थ॒२ । मा॒२ना॒यस्मा॒२  
यि॒२ । ओ॒३हा॒२ । ओ॒३हा॒२३ए॒२३४ । प्र॒३स्तो॒२३४मा॒३या॒२३ ।  
तु॒रवो॒४२३४वा॒प । ग्रा॒४४५यो॒५६हा॒५पि॒वै॒५ ॥ ६ ॥
४. यो॒पवि॒पश्वा॒प॒द॒य॒प॒ते॒५व॒पसू॒५६ए॒५ । होता॒ मं॒द्रो जना॒नाम् ।  
मा॒धो॒२४र्त्ना॒पौ॒२ । वा॒र३२ । त्रा प्र॒थ॒मा॒न्यस्मै । प्रा॒स्तो॒२४मा॒यौ॒२ ।  
वा॒र३२ । त्व॒२ग्र॒ये॒२ । इ॒डा॒४२३भा॒२३४४३ । ओ॒४२३४५यि॒५ ।  
डा॒५ ॥ ७ ॥ [ इति ] दशतिः ॥

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

४५. ए॒ना वो॒ अ॒ग्निं॒ नम॒सो॒र्जो॒ नपा॒तमा॒ हुवे॒ ।  
प्रि॒यं चे॒तिष्ठ॒मर॒तिं स्व॒ध्वरं॒ वि॒श्वस्य॒ दूत॒ममृ॒तम् ॥

१. ए॒नं॒५ना॒५वो॒५अ॒५ग्नि॒५त्ता॒४म॒४सा॒५ऊ॒र्जो॒न॒२पा॒२ । ता॒मा॒२४  
हुवे॒४रु । प्रा॒यंज्चे॒रति॒र॒ष्ट॒२म॒२र॒ति॒२म् । सु॒रवा॒ध्वा॒२४  
रा॒४रु । मू॒रवि॒र॒श्वा॒स्या॒२४दू॒४रु । ता॒ममृ॒२त॒२म् । इ॒डा॒४२३  
भा॒२३४४३ । ओं॒४२३४५यि॒५ । डा॒५ ॥ ८ ॥

२. ए॒प॒वै॒प॒ना॒प॒वो॒प॒अ॒ग्नि॒प॒न्न॒प॒म॒प॒सा॒प॒हा॒प॒उ॒प॒ । ऊ॒र्जो॒न॒र॒पा॒ २ ।  
ता॒मा॒र॒हु॒वे॒ऽ२३ । हा॒र॒उ॒२ । प्रा॒यं॒ज्वे॒र॒ति॒र॒ष्ठ॒र॒म॒र॒र॒ति॒र॒मृ॒२ ।  
सु॒र॒वा॒ध्वा॒र॒ऽरा॒ऽ२३॒मृ॒३ । हा॒र॒उ॒२ । वि॒र॒श्वा॒स्या॒र॒ऽदु॒ऽ२३ ।  
हा॒र॒उ॒२ । ता॒म॒मृ॒र॒त॒र॒मृ॒२ । इ॒डा॒ऽ२३॒भा॒र॒३॒ऽ२३ । ओं॒ऽ२३॒ऽ२५  
यि॒प॒ । डा॒प॒ ॥ ९ ॥

३. ए॒प॒ना॒ऽवो॒प॒अ॒ग्नि॒ऽमे॒ऽऽप॒न॒ऽम॒प॒सा॒ऽ ४ । ऊ॒र॒जो॒न॒पा॒र॒त॒र॒  
मा॒हु॒र॒वे॒२ । प्रा॒ऽ२३॒या॒र॒मृ॒२ । चा॒यि॒ति॒ष्ठ॒र॒मृ॒२ । आ॒र॒ति॒र॒मृ॒२ ।  
सु॒र॒वा॒ध्वा॒र॒ऽरा॒ऽ२३॒मृ॒२ । वि॒र॒श्वा॒स्या॒र॒ऽदू॒ऽ२३ । ता॒म॒मृ॒र॒त॒र॒  
मृ॒२ । इ॒डा॒ऽ२३॒भा॒र॒३॒ऽ२३ । ओं॒ऽ२३॒ऽ२५॒यि॒प॒ । डा॒प॒ ॥ १० ॥

४. ए॒प॒ना॒ऽवो॒प॒अ॒ग्नि॒ऽन्न॒ऽम॒प॒सो॒प॒ । जो॒प॒न॒प॒पो॒ऽवा॒प॒ । ता॒मा॒हु॒र॒  
वे॒२ । प्रा॒ऽ२३॒या॒र॒मृ॒२ । चा॒यि॒ति॒ष्ठ॒र॒म॒२ । रा॒ऽ२३॒ती॒र॒मृ॒२ ।  
स्व॒र॒ध्व॒र॒मृ॒२ । वि॒श्व॒स्या॒ऽ२३॒दू॒२ । ता॒म॒मृ॒र॒त॒र॒मृ॒२ । इ॒डा॒ऽ२३॒  
भा॒र॒३॒ऽ२३ । ओ॒ऽ२३॒ऽ२५॒यि॒प॒ । डा॒प॒ ॥ ११ ॥

ऋषिः — भर्गः ॥ देवता — अग्निः ॥ छन्दः — बृहती ॥ स्वरः — मध्यमः ॥

४६. शो॒षे॒ वने॒षु मा॒तृषु॒ सं त्वा॒ मर्ता॒सि इ॒न्धते॒ ।  
अ॒त॒न्द्रो॒ ह॒व्यं व॒हसि॒ ह॒विष्कृ॒त आ॒दि॒दे॒वेषु॒ राज॒सि ॥

१. शो॒ऽषे॒ऽव॒ऽना॒ऽऽपि॒प॒षु॒प॒मा॒प॒तृ॒ऽषू॒४ । सा॒न्त्वा॒र॒म॒र्ता॒र॒स॒ः ।  
इ॒न्धा॒ऽ२३॒ता॒र॒यि॒२ । आ॒त॒न्द्रो॒र॒ह॒र॒व्यं॒वा॒ह॒२ । सा॒यि॒ । हे॒वी॒ऽ२३-  
ष्का॒३२३॒ऽर्ता॒पि॒ः । आ॒दि॒दे॒र॒वा॒यि॒ । षु॒र॒रा॒जा॒ऽ२३॒सा॒र॒३॒ऽ२३  
यि॒३ । ओ॒ऽ२३॒ऽ२५॒यि॒प॒ । डा॒प॒ । णै॒ ॥ १२ ॥

ऋषिः—सोभरिः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

४७. अद॑र्शि॒ गा॒तु॒वि॒त्त॒मो॒ यस्मि॒न् ब्र॒तान्या॒दधुः॑ ।

उ॒पो षु॒ जा॒तमा॒र्यस्य॑ वर्ध॒नम॒ग्निं नक्ष॑न्तु नो गिरः ॥

१. अ॒प॒द॒प॒र्शि॒प॒गा॒तु॒प॒वि॒त्त॒प॒मा॒प॒द॒ए॒प॒ । या॒स्मि॒न् । ब्र॒त॒ता॒  
नि॒या॒र॒द॒र॒धुः । उ॒पो षु॒ जा॒र॒३हा॒र॒३हा॒र॒यि॒र॒ । त॒र॒मा॒रि॒र॒य॒र॒  
स्य॒र॒व॒र्द्ध॒र॒न॒र॒म॒र॒ । अ॒ग्रा॒यि॒त्र॒क्षा॒र॒३ । हा॒र॒३हा॒र॒ । तु॒र॒नो॒र॒  
गि॒र॒र॒ । इ॒डा॒ऽर॒३ भा॒र॒३४॒ऽ३ । ओ॒ऽर॒३४॒प॒यि॒प॒ । डा॒प॒ ॥  
कौ ॥ १३ ॥

ऋषिः—मनुः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

४८. अ॒ग्निरु॒क्थे॒ पुरो॒हितो॒ ग्रा॒वा॒णो ब॒र्हि॒र॒ध्वरे॑ ।

ऋ॒चा या॒मि मरु॒तो ब्र॒ह्म॒णस्प॑ते दे॒वा अ॒वो व॑रेण्यम् ॥

१. अ॒प॒ग्नि॒रु॒क्था॒प॒यि॒रे॒ । पु॒३रो॒र॒३हा॒४यि॒४ता॒प॒ । ग्रा॒र॒वा॒णो॒र॒  
बा । हि॒३रा॒र॒३ध्वा॒४रा॒प॒यि॒प॒ । रे॒चा या॒मि मरु॒तो ब्र॒ह्म॒ण-  
स्पा॒ता॒४रु॒यि॒र॒ । दा॒यि॒वा॒४रु॒आ॒वा॒ऽर॒३ । व॒र॒रो॒ऽर॒३४॒वा॒प॒ ।  
णा॒४ऽप॒यो॒प॒द॒हा॒प॒यि॒प॒ ॥ गो ॥ १४ ॥

२. अ॒प॒ग्नि॒रु॒क्था॒प॒औ॒प॒हो॒४हो॒४हा॒प॒यि॒प॒ । पु॒३रौ॒र॒वा॒रु॒ओ ३२  
३४॒वा॒प॒ । हि॒४ता॒४ः । ग्रा॒र॒वा॒णो॒र॒ब॒ । हि॒३रौ॒र॒वा॒रु॒ओ ३२३४  
वा॒प॒ । ध्व॒४रा॒४ यि॒४ । ऋ॒र॒चौ॒३हो॒र॒ । या॒मि मरु॒तो ब्र॒ह्म॒ण-  
स्पा॒ता॒४रु॒यि॒र॒ । दा॒यि॒वा॒४रु॒आ॒वा॒ऽर॒३ । व॒र॒रो॒ऽर॒३४॒वा॒प॒ ।  
णा॒४ऽप॒यो॒प॒द॒हा॒प॒ यि॒प॒ ॥ १५ ॥



ऋषिः — सुदीतिपुरुमीढौ ॥ देवता — अग्निः ॥ छन्दः — बृहती ॥ स्वरः — मध्यमः ॥

४९. अग्निमीडिष्वावसे गाथाभिः शीरशोचिषम् ।

अग्निं राये पुरुमीढ श्रुतं नरोऽग्निः सुदीतये छर्दिः ॥

१. अ५ग्नि४मी५ । डि३ष्वा२३४औ३हो४वा५ । आवसे२ । गा॒था॒२  
भि२श्शी२ । २२शौचाऽ२३यि३षा२म् । अ२ग्निःरा॒यायि ।  
पुरुमाऽ२३यि३ढा२ । श्रु२तन्नरो । अग्निस्सूऽ२३दी२ । त२यायि  
छाऽ२३४५र्द्दी५६५६ः । दक्षा२३याऽ२३४५ ॥ १६ ॥

ऋषिः — प्रस्कण्वः ॥ देवता — अग्निः ॥ छन्दः — बृहती ॥ स्वरः — मध्यमः ॥

५०. श्रुधि श्रुत्कर्णं वह्निभिर्देवैरग्रे सयावभिः ।

आ सीदतु बर्हिषि मित्रो अर्यमा प्रातर्यावभिरध्वरे ॥

१. श्रु३धी२३ । श्रूऽ२३४ । धि४श्रु४त्कर्ण५व४ । ह्नि४भा५यि५ः ।  
दे२वैर॒ग्रेस२ । यावाऽ२३भी२ः । आसी॒दतु व॒ऋहि॒षि मि॒त्रो  
अ॒र्याऽ२३मा२ । प्रा॒रत॒र्याऽ२३वा२३ । भाऽ२ुयि॒रुरा३२३४अ॒प  
हो५वा५ । ए२३ । ध्व२र३आ२ ॥ मै ॥ १७ ॥

ऋषिः — सोभरिः ॥ देवता — अग्निः ॥ छन्दः — बृहती ॥ स्वरः — मध्यमः ॥

५१. प्र दैवोदासो अग्निर्देव इन्द्रो न मज्मना ।

अनु मातरं पृथिवीं वि वावृते तस्थौ नाकस्य शर्मणि ॥

१. प्र५दै॒वो॒५दा॒५सो॒४ग्री॒५ः । दे॒व इन्द्रो न२म॒ज्मना । अनुमाऽ२३  
ता२ । रं पृथि॒वीम्वि॒रवा॒वृता॒यि । तस्थौ॒नाऽ२३ । का२ । र्या  
शा॒र्म॒रणि२ । इडाऽ२३भा२३४ऽ३ । ओऽ२३४५यि५ । डा५ ॥  
पी ॥ १८ ॥

ऋषिः — मेधातिथिर्मेध्यातिथिश्च ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — बृहती ॥ स्वरः — मध्यमः ॥

५२. अध ज्मो अध वा दिवो बृहतो रोचनादधि ।

अया वर्धस्व तन्वा गिरा ममा जाता सुक्रतो पूण ॥

१. अ५ध५ज्मा५ओ४वा५ । धवादा२ऽयिवा४२ुः । बृ२ह२तो  
रो॒चाना२ऽदाधी४२ु । आ । यौ । हौ२हो२३वा२ । वा॒र्द्धा स्वर२त२  
न्वा॒२ । गा॒यिरा२ऽममा४२ु । आ जाता सौ॒२ । हौ२हो२३वा२  
३४ । हा५ । हा२उ२वा२३ । क्रा२तो॒२पृ२णा३२३४५ ॥ १९ ॥

ऋषिः — विश्वामित्रः ॥ देवता — अग्निः ॥ छन्दः — बृहती ॥ स्वरः — मध्यमः ॥

५३. कायमानो वना त्वं यन्मातृरजगन्नपः ।

न तत्ते अग्रे प्रमृषे निवर्तनं यद् दूरे सन्निहाभुवः ॥

१. का४या४मा४नो४ऽ५व५ना५तु४वा४म्४ । य२न्मा॒त्रे२रा ।  
जाग२न्ना३२३४पा५ः । न२त२त्ते२अ२ग्रे२३ । प्र॒मृषे२३हा२३  
यि३नि॒वाऽरु॒र्त्ता३२३४ना५म्५ । य२हू॒राऽ२३यि३सा२ुन्२ु ।  
इ३हा३भू२वा । अ२३हो४वा५हो४ऽ५यि५ । डा५ ॥ २० ॥

२. ए४का४या५ । मा॒नो । व३ना२ुतू३२३४वा५म्५ । ओ२ुयि२ु ।  
तू३२३४वा५म्५ । उ४हु४वा४हा५यि५ । अ३हो२३ऽयि य२  
न्मा॒त्रे२रा । जाग२न्ना३२३४पा५ः । आ३२३४पा५ः । उ४हु४वा४  
हा५यि५ । अ३हो२३ऽयि । न२त२त्त२आ । ग्ना२३ यि३प्र॒मृषा२३  
यि३ । नि॒वाऽरु॒र्त्ता३२३४ना५म्५ । ता३२३४ना५म्५ । उ४हु४  
वा४हा५यि५ । अ३हो२३ऽयि । य२हू॒रे२सान् । इहा२ुभू२३४  
वा५ः । भू३२३४वा५ः । उ४हु४वा४हा५यि५ । अ३हो२३ऽयि३  
२३४अ॒प॒हो५वा५ । ऊ३२३४पा५ ॥ २१ ॥

ऋषिः — कण्वः ॥ देवता — अग्निः ॥ छन्दः — बृहती ॥ स्वरः — मध्यमः ॥

५४. नि त्वामग्ने मनुर्दधे ज्योतिर्जनाय शश्वते ।

दीदेथ कण्व ऋतजात उक्षितो यं नमस्यन्ति कृष्टयः ॥

१. नि॒प्त॒वा॒प॒म॒ग्रा॒प॒यि॒प॒ । म॒र॒नु॒र॒द्वा॒३२३४धा॒प॒यि॒प॒ । ज्यो॒ति॒र्ज॒र॒  
ना॒२ । या शै॒श्वा॒ता॒४रु॒यि॒२ । दी॒२ । दा॒यि॒ । थ क॒२ । ण्वाऽऋ॒  
त॒जा॒२३ । तऊऽरु॒क्षा॒३२३४ । यि॒४ता॒प॒ः ॥ यन्न॒२म॒स्याऽ२३ ।  
ताऽरु॒यि॒रु॒क्रे॒३२३४ । अ॒प॒हो॒प॒वा॒प॒ । ष्टा॒३२३४ । या॒प॒ः ॥ २२ ॥
२. हो॒४वा॒४यि॒४ । नि॒४त्वा॒४म॒प॒ग्रे॒प॒म॒नु॒प॒र्द॒प॒धे॒प॒ । हो॒४वा॒४यि॒४ ।  
ज्यो॒ति॒र्ज॒ना॒य श॒श्व॒ते दा॒यि॒दे॒२ऽथ॒क॒२ । ण्वाऽऋ॒तं॑ जा॒२३४ ।  
ते ऊऽरु॒क्षा॒३२३४यि॒४ता॒प॒ः । य॒२न्ना॒माऽ२३स्या॒२३ । ताऽरु॒यि॒रु॒  
क्रे॒३२३४अ॒प॒हो॒प॒वा॒प॒ । ष्टा॒३२३४या॒प॒ः ॥ २३ ॥

[ इति ] दशतिः ॥

ऋषिः — वसिष्ठः ॥ देवता — अग्निः ॥ छन्दः — बृहती ॥ स्वरः — मध्यमः ॥

५५. देवो वो द्रविणोदाः पूर्णा विवध्वासिचम् ।

उद्धा सिञ्चध्वमुप वा पृणध्वमादिद् वो देव ओहते ॥

१. दे॒॒प॒वो॒४ऽ३वो॒२३द्र॒४वि॒४णो॒५दा॒प॒ः । पू॒२र्णा॒म्बि॒व॒२ष्ट्वा॒२  
सि॒च॒२म् । ऊ॒द्धा॒२ऽसि॒चा॒४रु॒ । ध्व॒२मु॒प॒वा॒२पृ॒२ण॒२ध्व॒२म् ।  
आ॒दि॒द्वो॒दे॒४रु॒ । व ओ॒॒ह॒२ते॒२ । इ॒डाऽ२३भा॒२३४ऽ३ । ओं॒ऽ२३  
४५यि॒प॒ । डा॒प॒ ॥ २४ ॥

ऋषिः—कण्वः ॥ देवता—ब्रह्मणस्पतिः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

५६. प्रैतु ब्रह्मणस्पतिः प्र देव्येतु सूनृता ।

अच्छा वीरं नर्यं पङ्क्तिराधसं देवा यज्ञं नयन्तु नः ॥

१. प्रै५तू२३ब्र४ह्म५ण४स्प४ । ती५ः । प्र२दायिविये२ । तु२सूनृता  
२३ । अछा५रुवा३२३४यि४रा५म्प । नर्यम्प२ । ङ्कि२राधा२५  
सा५२ ३म्३ । देवा५रुया३२३४ज्ञा५म्प । ना५रुया३२३४अ५  
हो५वा५ । तू३२ ३४ना५ः ॥ २५ ॥

ऋषिः—कण्वः ॥ देवता—यूपः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

५७. ऊर्ध्व ऊ षु ण ऊतये तिष्ठा देवो न सविता ।

ऊर्ध्वो वाजस्य सनिता यदज्जिभिर्वाघिद्विर्विह्वयामहे ॥

१. ऊ२र्ध्व२ऊ२षु२णा२३ऊता५२३४या५यि५ । तिष्ठा देवो न  
सविता । ऊ२र्ध्वो॒वा५२३जा२ । स्या सनि२ता२ । यादैज्जिभी४रुः ।  
वा२रघाद्भी४रुः । वीवी४रु । ह्व२या॒मा५२३हा२३४५३यि३ ।  
ओ५२३४५यि५ । डा५ ॥ २६ ॥

ऋषिः—सोभरिः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

५८. प्र यो राये निनीषति मर्तो यस्ते वसो दाशत् ।

स वीरं धत्ते अग्र उक्थशंसिनं त्मना सहस्रपोषिणम् ॥

१. प्र४यो॒रा॒या४५यि५नि५नी५ष४ता४यि४ । मर्तो यस्ते व२  
सो दा॒शत् । सवी॒रा५२३धा२ ॥ ता अग्र२उ२ । उक्थ२श२२  
सिनम् । त्मना सा५२३हा२ । स्त्र२पो॒षा५२३यि३णा२३४५३  
म्३ । ओ५२३४५यि५ । डा५ ॥ २७ ॥

ऋषिः—कण्वः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

५९. प्र वो य॒ह्वं पु॒रू॒णां वि॒शां दे॒वय॒तीनाम् ।

अ॒ग्निं सू॒क्तेभि॒र्वचो॑भि॒र्वृणी॑महे यं स॒मिद॑न्य इ॒न्धते ॥

१. प्र॒प॒वा॒ऽऽ॒ । य॒र॒ह्वं पु॒रू॒ऽऽ॒ २३॒णा॒ २ । म॒ २ । वि॒र॒शा॒ न्दे॒व॒र॒य॒ता॒ऽ॒ २३  
यि॒ऽ॒ना॒ २ म॒ २ । अ॒र॒ग्निः सू॒क्ते भि॒र्वचो॑भि॒र्वृ॒णी॒मा॒ऽ॒ २३हा॒ २  
यि॒ २ । या॒थ॒सा॒ऽ॒ ४२॒मा॒यि॒दा॒ऽ॒ ४२॒नु॒ २ । य इ॒न्ध॒र॒ते॒ २ । इ॒डा॒ऽ॒ २३भा  
२३४५३ । ओ॒ऽ॒ २३४५यि॒ ५ । डा॒ ५ ॥ २८ ॥

ऋषिः—उत्कीलः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

६०. अ॒यम॒ग्निः सु॒वीर्य॑स्येशो हि सौ॒भग॑स्य ।

रा॒य ई॒शे स्व॑प॒त्यस्य॑ गो॒मत ई॒शे वृ॒त्रह॑थानाम् ॥

१. अ॒प॒य॒प॒म॒प॒ग्नि॒प॒स्सु॒प॒वी॒प॒र्य॒प॒स्य॒प॒हा॒प॒उ॒प॒ । आ॒यि॒शे॒ २हि॒ २  
सौ॒भा॒ग॒र॒स्या॒ २ । हो॒वा॒र॒३हा॒र॒यि॒ २ । रा॒र॒य॒ई॒शे॒ २स्व॑प॒त्य॒ २ । स्या  
गो॒र॒ऽमा॒ता॒ऽ॒ २३ः । हो॒वा॒र॒३हा॒र॒यि॒ २ । ई॒र॒शे॒हा॒ऽ॒ २३यि॒३व्रे॒ २३ ।  
हो॒वा॒र॒३हा॒ २ । त्रा॒हा॒था॒ २ना॒ २म॒ २ । इ॒डा॒ऽ॒ २३भा॒ २३४५३ ।  
ओ॒ऽ॒ २३४५यि॒ ५डा॒ ५ ॥ २९ ॥

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

६१. त्वम॒ग्ने गृ॒हप॑तिस्त्वं होता नो अ॒ध्वरे॑ ।

त्वं पो॒ता वि॒श्ववा॑र प्र॒चेता॑ यक्षि या॒सि च॑ वा॒र्यम् ॥

१. त्व॒ऽम॒प॒ग्ने॒प॒गृ॒ह॒प॒ता॒ऽ॒ ४यि॒ऽ॒ ४ः । त्वं॒हो॒ता नो॒ २अ॒ध्व॒रा॒यि॒ ।  
त्व॒म्पो॒ऽ॒ २३ता॒ २ । वा॒यि॒श्ववा॒ २ । र॒ २ प्र॒चा॒यि॒ता॒ २ः । अ॒३हो॒र॒३४  
वा॒३हा॒र॒यि॒ २ । या॒क्षा॒यि॒ या॒ऽ॒ २३सी॒ २३ । हो॒वा॒र॒३हा॒र॒यि॒ २ । च॒ २  
वा॒रा॒ऽ॒ २३या॒ २३४५३म् ३ । ओ॒ऽ॒ २३४५यि॒ ५ । डा॒ ५ ॥ ८ ॥ ३० ॥

२. त्व४म५ग्रे५गृ५ । हा४ऽ५प५ती४ः । त्व४रुहो३२३४ता५ । नो२  
अ२ध्वा३२३४रा५यि५ । त्वा४ऽरुम्पो३२३४ता५ । वि२श्वा२रुवा  
३२३४रा५ । प्र२चे२ता२३ः । यक्षाये२३ । या२रुसा३२३४औ५  
हो५वा५ । च२वा॒रिया३२३४५म् ॥ ३१ ॥

३. त्व५मा२३ग्रे४गृ५हा४प४ती५ः । त्व४रुहो३ता२नो२अध्व२रे२ ।  
त्वा४ऽ२३म्पो३ता२रु । अ३हो२३४यि४ । अ४हौ । ५ । वा३हा२  
यि२ । वायिश्चवा॒र । र२प्रचा । येता॒रुः । अ॒हो२३४यि४ । अ॒४  
होवा॒३हा२यि२ । यक्षा॒यियासा२रु । अ॒३हो२३४यि४ । अ॒४हो५ ।  
वा॒३हा२यि२ । व२वा॒राऽ२३या२३४ऽ३म् ३ । ओ४ऽ२३४५यि५ ।  
डा५ ॥ ३२ ॥

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

६२. स१खा२यस्त्वा ववृ३महे दे३व१ म२र्त्ता३सि ऊ३तये१ ।  
अ३पां न३पातं सु३भगं सु३दंसं सु३प्रतू३र्तिम३नेह३सम् ॥

१. स५ । खा५य५स्त्वा५अ५हो४हो४हा५यि५ । व२रवृ२रु । मा३२३४  
हा५यि५ । दे२वंम॒र्त्ता२३हा२३ । स ऊ४ऽरुता३२३४या५यि५ ।  
अ२पा॒न्नपा१२३ । त४२४सु५ । भा३गौ२ । वा२३हा२३यि३ ।  
सूद२रुसा३२३४सा५म् ५ । सु२प्रतू४ऽ२३र्त्ती२म् २ । अ२ने॒हाऽ२३  
सा२३४ऽ३म् ३ । ओ४ऽ२३४५यि५डा५ ॥ छै ॥ ३३ ॥

ऋषिः—श्यावाश्ववामदेवौ ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

६३. आ जु१होता ह३विषा म३र्जय३ध्वं नि हो३तारं गृ३हप३तिं द३धिध्वम् ।  
इ३डस्प३दे न३मसा रा३तह३व्यं स३पर्य३ता य३जतं प३स्त्यानाम् ॥ १ ॥



१. आ४जु५हो५ता४। हरविषा॒ मर्ज्या४रु॒ध्वा उ वा४रु॒। नि  
होता॒रंगृहपतिं दधा४रु॒यि२ध्वा उ वा४२३४। इ३डा२३४स्प३  
दा२यि२। नमसा॒ रा॒त२हाव्या४रु॒म्। सापर्य२ता। याजातं२  
पा४२३। स्ति४यो४वा५। आ४ऽ५नो५६हा५यि५। दू॥ ३४॥

ऋषिः—उपस्तुतो वार्ष्णिहव्यः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—जगती ॥  
स्वरः—निषादः ॥

६४. चि३त्र इ३च्छि३शो३स्तरु३णस्य वक्षथो न यो मा३त३रा३वन्वेति धा३त३वे।  
अ३नू३धा यदजी३जनदधा चिदा ववक्षत्सद्यो म३हि दूत्यां३ चरन् ॥

१. ओयि। चि३त्रइ३छायि३शो३र३स्तरु३ण३२३। स्या३४३व३रक्ष३थ५ः।  
ओयि। न यो मा३त३रा३र३वन्नुवा३२३यि३। ती३४३धा३रु३त३वे५।  
ओयि। अ३नू३धा यादजी३जना३२३त्३। आ३४३धा३रु३चि३दा५।  
ओयि। ववक्षत्साद्यो३र३म३हिदू३२३। ति३या३र३ज्वा३४३प३रा५६  
५६न्६। दूर३त्यज्च३रन्महे३२३४५॥ भ्रौ॥ ३५॥
२. चि५त्रा५६ए५। ए२३३२३४। शि३शो३प३स्त३रु३ण५स्य५व५  
क्ष३थ५ः। क्ष३थ५ः। हि५हि५हि५या५६हा५उ५। ए२३३२३४।  
न३यो३मा३त३रा५व५न्वे३ति५धा३त३वे५। त३वे५। हि५हि५  
हि५या५६हा५उ५। ए२३३२३४। आ३नू३धा३य३द३जी३ज५  
न५द३धा३चि५दा३चि३दा५। हि५हि५हि५या५६हा५उ५।  
ए२३३२३४। व३व३क्ष५त्स५द्यो३म३हि५दू५ति३य५ज्च३र५  
न्५। च३र५न्५। हि५हि५हि५या५६। हा५उ५। वा५। ए२३३।  
ऋ३र३तून्॥ डो॥ ३६॥

ऋषिः—बृहदुक्थः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

६५. इदं त एकं परं ऊ त एकं तृतीयेन ज्योतिषा सं विशस्व ।  
संवेशनस्तन्वे चारुरेधि प्रियो देवानां परमे जनित्रे ॥

१. ओ३ऽ४हा५ । ह३हा२३२ । इ२दन्तए । का२३म्परः । ऊ२त३ए४  
का५म् । तृ२तीये॒ना । ज्यो॒तिषा२३ । स२मु॒म्वि३श४स्वा५ ।  
संवेशनाः । त२नुवे चारु२रु३रे४धी५ । ओ३ऽ४हा५ । ह३हा२  
यि२ । प्रि२यो दे॒वा । न२३म्परा । मा२३४ऽ३यि३ । जा२३  
ना४ऽ५यि५त्रा५६यि५ ॥ ३७ ॥

ऋषिः—कुत्सः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

६६. इमं स्तोममर्हते जातवेदसे रथमिव सं महेमा मनीषया ।  
भद्रा हि नः प्रमतिरस्य संसद्यग्रे सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥

१. इ३मा२ु२स्तो३२३४मा५म् । अ२ऋ२हा२ुते३२३४जा५ ।  
तावे॒दसे२३ । हो॒यि । र३था२ुमी३२३४वा५ । स२म्मा२ुहे३२३४  
मा५ । मा॒नी॒षया२३ । हो॒यि । भ३द्रा२ुही३२३४ना५ः । प्र२मा२ु  
ती३२३४ रा५ । स्य । स२२२सदे२३ । हो॒यि । अ३ग्रा२ुयि२ु  
सा३२३ख्या५ । यि५ । मा२रा२ुयि२ुषा३२३४मा५ । वा॒य२न्त॒वा  
२३ । हो॒ऽ२३४५ यि५ । डा५ ॥ ३८ ॥

ऋषिः—भरद्वाजः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

६७. मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आ जातमग्निम् ।  
कविं सम्राजमतिथिं जनानामासन्नः पात्रं जनयन्त देवाः ॥

१. मू॒प॒र्द्धो॒४हो॒४हा५यि५ । न२नु॒न्दा३२३४यि४वा५ः । अ॒रता॒यिम् ।  
पृथी२३व्या२ः । वै॒श्वा॒नरा॒म् । ऋ॒त॒आ । जा॒रु॒त३म४ग्री५म् ।

- करवीःसम्राजमतिथायिम् । जेनाऽर३ना२ । म२ । आ२सन्नष्पा ।  
 त्रा२३ञ्जनाया२३४ऽ३ । तार३दा४ऽ५यि५वा५६५६ः ॥ ३९ ॥
२. हो४वा५यि५ । मू५र्द्धो४हो५यि५ । नं२दायि । वार३अराति२  
 मृ३थी४व्या५ः । इ२हो२इ२या२३ । इ३या२ । वै२श्चानराम् ।  
 क्रे२तआ । जा२रुत३म४ग्री५म् । इ२हो२इ२या२३ । इ३या२ ।  
 करविःसंम्रा । जा२३मति । थि२रुञ्ज३ना४ना५म् । इ२हो२इ२  
 या२३ । इ३या२ । आ२सन्नष्पा । त्रा२३ञ्जनाय२रुन्त३दे४वा५ः ।  
 इ२ हो२इ२या२३ । इ३ऽ२ । या३२३४ । अ५हो५वा५ । ई३२३  
 ४५ ॥ ४० ॥

इत्यर्द्धः प्रपाठकः ॥

ऋषिः — भरद्वाजः ॥ देवता — अग्निः ॥ छन्दः — त्रिष्टुप् ॥ स्वरः — धैवतः ॥

६८. वि<sup>२३</sup> त्वदापो<sup>३ १ २२</sup> न पर्वतस्य<sup>३ २ ३ १ २</sup> पृष्ठादुक्थेभिरग्रे<sup>३ २</sup> जनयन्त देवाः ।  
 तं<sup>२ ३</sup> त्वा गिरः<sup>३ १ २</sup> सुष्टुतयो<sup>३ १</sup> वाजयन्त्याजिं<sup>३ १</sup> न गिर्ववाहो<sup>२ ३ १ २</sup> जिग्युरश्वाः<sup>३ १ २</sup> ॥

१. वि४त्व४त४ । ओ४हा४यि४ । आपो न पर्वतस्य२पाऽर३र्ष्टा२  
 त्२ । ऊ२क्थे२भिरग्रे जनयन्त२दाऽर३यि३वा२ः । तन्त्वा  
 गिरस्सुष्टुतयो वाज२याऽर३न्ती२ । आ२जिन्न गायिर्व्वेवाऽर३  
 हा२३ः । जाये२३ । ग्यूऽरुरा३ २३४अ५हो५वा५ । अ२श्वाऽर३  
 ४५ः ॥ १ ॥

२. हा५ । य३यारुयिरुदि३वो४हा५यि५ । वि४त्व५त् ५ । आपो ।  
 न२पर्व । त२स्य३पृ४ष्ठा५त् ५ । हा५ । य३यारुयिरुदि३वो४हा५  
 यि५ । उ४क्था५यि५ । भिरा । ग्रे२३जन । यं२रुत३दे४वा५ः ।

हा५ । य३या२ुदि३वो४हा५यि५ । तं४त्वा५ । गिराः । सु२ष्टु२  
तयः । वा२ु ज३यं४ती५ । हा५ । य३या२ुयि२ुदि३वो४हा५यि५ ।  
आ४जी५म् । न गायि॒र्ववाऽ२३हा२३ः । जाये२३ । ग्यूऽशुरा  
३२३४अ॒हो॒५वा५ । अ२श्वाऽ२३४५ः ॥ २ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

६९. आ<sup>२ ३ १ २</sup>वो<sup>३१ २ ३ १</sup>राजानमध्वरस्य<sup>२२ ३ २ ३ १ २</sup> रुद्रं<sup>३ २ ३ १ २</sup> होतारं सत्ययजं<sup>३ १ २</sup> रोदस्योः ।  
अग्निं<sup>३ २ ३ १ २</sup> पुरा<sup>३ २ ३ १ २</sup> तनयित्त्वरचित्ताद्धिरण्यरूपमवसे<sup>३ १ २</sup> कृणुध्वम् ॥

वामदेव्यम्—

१. आ॒४वो॒५रा॒५जा४ । न३म२ध्व३ । र२स्य३रु४द्रा५म् । हो ।  
ता॒२ । रा॒म् । स२ । त्ययजा२३म् । रो२ुद३सी४यो५ः । अ२ग्निं  
पु । रा । त२न२यि३ । त्त्वे२ुर३चि४त्ता५त् । हिरण्य२ । रू ।  
पा२३मवा । सा२३४ऽ३यि३ । का२३र्णू४ऽ५ध्वा५६म् ॥  
दे ॥ ३ ॥

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

७०. इन्धे<sup>३ २ ३</sup> राजा<sup>३ २ ३ १</sup> समयो<sup>२२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २</sup> नमोभिर्यस्य<sup>३ १ २</sup> प्रतीकमाहुतं<sup>३ १ २</sup> घृतेन ।  
नरो<sup>१ २ ३ १ २</sup> हव्येभिरीडते<sup>३ २ ३ १</sup> सबाध आग्रिरग्रमुषसामशोचि ॥

वैश्वज्योतिषे द्वे—

१. इं३धा२३ऽ२३४यि४ । हा॒५उ॒५ । ३ । रा॒४जा॒५स४म॒प॒र्यो॒४न४ ।  
मो४भि॒प॒रो४भी॒५ःओ४भी॒५ः । हा॒५उ॒५ । ३ । य३स्या२३ऽ२३४ ।  
हा॒५उ॒५ । ३ । प्र४ती॒५का॒५मा४हु॒५तं॒५घृ॒५ । ता४यि४ना॒५ ।  
आ४यि४ ना॒५ । आ४यि४ना॒५ । न३रा२३ऽ२३४ः । हा॒५उ॒५ । ३ ।

ह॒प॒व्ये॒ऽभि॒प॒ री॒प॒डा॒प॒ते॒प॒स॒प॒ । बा॒४धा॒प॒बा॒४धा॒प॒ः । बा॒४धा॒ ।  
 आ॒३ग्रा॒२३॒ऽर॒३४यि॒४ । हा॒प॒उ॒प॒ । ३ । अ॒२ग्र॒२मु॒षसा॒ऽर॒३ म॒३  
 शा॒२उ॒२ । वा॒२३ ची॒३२३४५ ॥ री ॥ ४ ॥

२. हौ॒हो॒४२ु । २ । हौ॒हो॒यि । इं॒२धे॒२रा॒२जा॒२स॒२म॒२र्यो॒२ना॒२३  
 मो॒भी॒४२ुः । ओ॒भी॒४२ुः । २ । य॒२स्य॒२प्र॒२ती॒२क॒२मा॒२हु॒२तं॒२  
 घे॒२३ ता॒यि॒ना । ४२ु । आ॒यि॒ना॒४२ु । २ । न॒२रो॒२ह॒२व्ये॒२भी॒२री॒२  
 ड॒२ते॒२सा॒२३बा॒धा॒४२ु । बा॒धा॒४२ुः । हौ॒हो॒४२ु । २ । हौ॒हो॒यि ।  
 आ॒२ग्नि॒२र॒२ग्र॒२मु॒षसा॒ऽर॒३म॒३शा॒२उ॒२ । वा॒२३ची॒३२३  
 ४५ः ॥ ५ ॥

ऋषिः—त्रिशिरास्त्वाष्ट्रः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

७१. प्र<sup>२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २२ ३ १ २</sup>केतुना बृहता यात्यग्निरा रोदसी वृषभो रोरवीति ।  
 दिवश्चिदन्तादुपमामुदानडपामुपस्थे महिषो ववर्ध ॥<sup>३ २ ३ १ २ ३ १ २२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २</sup>

याम द्वे—

१. प्र॒२के॒२तु॒ना । बृ॒२ह॒२ता॒ या । ति॒२य॒ग्रा॒यिः । हो॒इ॒हो॒वा॒२३हो॒इ ।  
 आ॒२रो॒२द॒सा॒यि । वृ॒२ष॒२भो॒ रो । र॒२वी॒ता॒यि । हो॒यि॒हो॒वा॒२३  
 हो॒यि । दि॒२व॒२श्चि॒दा । ता॒२दु॒प॒मा॒म् उ॒२दा॒ना॒ट् । हो॒इ॒हो॒वा॒२३  
 हो॒यि । अ॒२पा॒२मु॒पा । स्था॒२म॒हि॒षो । व॒२व॒र्द्धा । हो॒यि॒हो॒बा॒२  
 हा॒२३ऽउ । बा॒२३ । दे॒२३ । दि॒वा॒ऽर॒३४५म् ॥ ६ ॥
२. हा॒प॒ । हा॒२अ॒२हो॒रु॒यि॒२ु । प्रा॒३२३४के॒५ । तु॒ना । बृ॒२ह॒३ता॒२३ ।  
 या॒रु॒ति॒३य॒४ग्री॒५ः । हा॒प॒ । हा॒२अ॒२हो॒रु॒यि॒२ु । आ॒३२३४रो॒५ ।  
 द॒सा॒यि । वृ॒२ष॒३भो॒२३ । रो॒२र॒३वी॒४ती॒५ । हा॒प॒ । हा॒२अ॒२हो॒रु॒

यिरु । दी३२३४वा५ः । चिदा । तार३दुप । मारुमु३दा४न५ट्प ।  
हा५ । हार२अ२हो२रुयिरु । आ३२३४पा५ । म्पउपा । स्थे२३  
महिषो२व३व४था५ । हा५हार२अ२हो२रु । वा३२३४अ५ । हो५  
वा५ । ए२३ । दिवाऽ २३४५म्प ॥ ७ ॥

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—त्रिपाद्विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

७२. अ३ग्निं२ न३रो१ दी३धिति२भिर३रण्यो२र्ह३स्त३च्युतं२ जन३यत२ प्र३शस्तम् ।  
दू३रे१ दृ३शं२ गृ३हप३तिम३थव्युम् ॥

इन्द्रस्य वैराजे द्वे—

१. हा५उ५ । ३ । आ४ग्री५म्प । न२राः । ३ । दी२३धिति । भिर२३  
र४ण्यो५ः । हा५उ५३ । हा४स्ता५ । च्यु२ताम् । ३ । ज२नयात२  
प्र३श४स्त५म्प । हा५उ५३ । दू४रा५यि५ । दृ२शाम् । ३ ।  
गृ२हपति२म३थ४व्यु५म्प । हा५उ५३ । वा५ । ई३२३४५ ॥ ८ ॥

२. हा५उ५३ । आ४ग्री५म्प । न२राःदी२३धिति । भिर२३र४  
ण्यो५ । ण्यो५ । ण्यो५ः । हा५उ५३ । हा४स्ता५ । च्यु२ताम् ।  
ज२नय । त२प्र३श४स्त५म्प । स्त५म् । २ । हा५ । उ५३ । दू४रा५  
यि५ । दृ२शाम् । गृ२हपाति२म३थ४व्यु५म्प । व्यु५म्प । २ ।  
हा५उ५३ । वा५ । ई३२३४५ ॥ ९ ॥

[ इति ] दशतिः ॥

ऋषिः—बुधगविष्टिरौ ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

७३. अ३बो३ध्य३ग्निः२ स३मि३धा२ ज३ना३नां२ प्र३ति२ धे३नु३मि३वा३य३ती२मु३षा३सम् ।  
य३ह्वा३इ३व२ प्र३व३यामु३जि३ह्ना३नाः२ प्र३भान३वः२ स३स्र३ते२ ना३क३म३च्छ ॥



श्यैतम्—

१. अ४बो५धि५या४ । ग्रायिस्स२मि । धा२जना२र॑ना२म२ । प्रता-  
यिधे२३नूर२म२ । इ२वा२रय२तीमुषा॒सा२म२ । य॒ह्वाई२३वा२ ।  
प्रवा॒ यामु२ । जिहा॒रना॒ः । प्रभा॒नाऽ२३वा२ः । स२स्त्र२ते२  
ना॒क२मच्छ२ । इडाऽ२३भा२३४ऽ३ । ओऽ२३४५यि५ ।  
डा५ ॥ १० ॥

ऋषिः—वत्सप्रीः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

७४. <sup>२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ २ ३ २ ३ १ २</sup> प्र भूर्जयन्तं महां विपोधां मूरैरमूरं पुरां दर्माणम् ।  
<sup>१ २ ३ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ २</sup> नयन्तं गीर्भिर्वना धियं धा हरिश्मश्रुं न वर्मणा धनर्चिम् ॥

शुक्रम्—

१. प्र४भू५र्जा४यं५ना४म्४ । म३हा२३४ऽ३म३वि२पो३धा५म्५ ।  
मूरैर॑मूरं पुरान्द॑र्माऽ२३णा२मु२ । न३या२३४ऽ३न्त२ङ्गी३  
भि५ः । व३ना२३४ऽ३धि२यं३धा५ः । ह४रि५श्म५श्रु५न्न४व४  
र्म५णा५६ । हा५उ५वा५ । ध२ना२३र्चीऽ२३४५म् ॥ ११ ॥

ऋषिः—भरद्वाजः ॥ देवता—पूषा ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

७५. <sup>३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ ३ १ २ ३ १ २</sup> शुक्रं ते अन्यद्यजतं ते अन्यद् विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि ।  
<sup>२ ३ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २</sup> विश्वा हि माया अवसि स्वधावन्भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्तु ॥

१. शु५क्रं४ते५अ५न्य४द्य५ज५त४म्४ । त५आ५६न्या५त्५ ।  
विषु॒रूपे॒ अहनी॒ द्यौः । ई॒वाऽ२३सी२ । वायिश्वा॒हिमा॒या॒अव-  
सायि । स्वधा२३वा२न२ । भ२द्रा॒ ते२ । पू । षा२३निह । रा॒ति३  
र४स्तु५ । ति४ रा४ऽ५स्तु५हा५उ५वा५ ॥ १२ ॥

ऋषिः — विश्वामित्रः ॥ देवता — अग्निः ॥ छन्दः — त्रिष्टुप् ॥ स्वरः — धैवतः ॥

७६. इडा<sup>१ २</sup>मग्रे<sup>३ १ २ ३</sup> पुरुदंसं<sup>१ २</sup> सनिं<sup>३ १ २ ३</sup> गोः<sup>२ २</sup> शश्वत्तमं<sup>३ १ २ ३</sup> हवमानाय साध ।  
स्यान्नः<sup>१ २</sup> सूनुस्तनयो<sup>३ १ २ ३</sup> विजावाग्रे<sup>२ २</sup> सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे ॥

कौत्सम्—

१. इ५डा५म५ग्रा५यि५ । पुररु२दा२३ । स२रुस३नि४गो५ ।  
श४श्व४त्त४म२३ह३व४मा५ना५ । य३सा३२३४धा५ । स्यान्न  
स्सूनुस्तनयः । विजा२३वा२३ । आ४ग्रे५सा४ता५यि५ । सु३मा  
२३४५३ । ती२३ः । भू४तु४हा५उ५वा५ । स्मा३२३४५  
यि५ ॥ १३ ॥

ऋषिः — वत्सप्रीः ॥ देवता — अग्निः ॥ छन्दः — त्रिष्टुप् ॥ स्वरः — धैवतः ॥

७७. प्र होता जातो महान्नभोविनृषद्या सीददपां विवर्ते ।  
दधद्यो धायी सुते वयांसि यन्ता वसूनि विधते तनूपाः ॥

काश्यपे द्वे—

१. प्र४हो४ता५जा५ता४ः । म२हा२न्नभो५विनृषद्या५२३सी३दा२त्त२ ।  
अ२पां विवर्त्तायि । दधद्यो५२३ धा२ । या२यि२ । सु२ते२वर  
या२सियं३ता२उ२ । वा२ । वासूनि२वि२ध२ । ता५२ु । या३२  
३४अ५हो५वा५ । त२नू२३पा५२३४५ः ॥ १४ ॥

२. प्र४हो४ता५जा५त४ः । उ५हु४वा४हा५यि५ । माहा४रु२न्ना  
भो५२ु । वायि५नृषद्या५सीददपाम्बिवा५२३र्त्ता२यि२ । आअ२३  
हो२ । इहा२ । दाधा४रु२द्योधा४२ु । यायिसुते॒वयांसि॒यता॒-  
वसू५२३नी२ । आअ२ ३हो२ । इहा२ । वि२ध२ताये२३ । तनू५२ु  
पा३२३४अ५हो५वा५ह२ विष्मते३२३४५ ॥ १५ ॥

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

७८. <sup>२ ३ २ ३ १ २</sup> प्र <sup>३ २ ३ १ २</sup> स <sup>३ १ २ ३ १ २</sup> म <sup>१ २ ३ २ ३ १ २</sup> सुरस्य <sup>३ १ २ ३ १ २</sup> प्रशस्तं <sup>१ २ ३ २ ३ १ २</sup> पुंसः <sup>३ १ २ ३ १ २</sup> कृष्टीनामनुमाद्यस्य ।  
इन्द्रस्येव प्र तवसस्कृतानि वन्दद्वारा वन्दमाना विवष्टु ॥

घृताचेरांगिरसस्य सामम्—

१. प्र५सं५म्रा५जा५म् । अ२सु२रा२३ । स्या२ुप्र३ श४स्तां५म् ।  
पु२रस५कृष्टायि । ना२३मनु । मा२ुदि३य४स्या५ । इं२द्र२स्ये२  
वा२३४ऽ३प्र२त२व३ । स२स्कृ३त०नी५ । वं२दद्वारा२ वंदमा२  
ना२ । विवा२ुष्टू३२३४अ५हो५वा५ । वी३२३४ शा५ः ॥ १६ ॥

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

७९. <sup>३ २ ३ १ २</sup> अरण्योर्निहितो <sup>३ १ २ ३ १ २ ३ १</sup> जातवेदा <sup>२ २ ३ १ २</sup> गर्भइवेत् <sup>३ १ २ ३ १ २</sup> सुभृतो <sup>३ १ २ ३ १ २</sup> गर्भिणीभिः ।  
<sup>३ १ २ ३ १ २</sup> दिवेदिव <sup>३ १ २ ३ १ २</sup> ईड्यो <sup>३ १ २ ३ १ २</sup> जागृवद्भिर्हविष्मद्भिर्मनुष्येभिरग्निः ॥

भरद्वाजस्य प्रासहम्—

१. अ५र५ण्यो५ः । नि२हि२तो२जा२३४ऽ३त२वे३दा५ः । ग३र्भ४  
इ४वे३त्सु३भृ४तो५ । ग५र्भि३णा३२३४यि४भी५ः । दि२  
वे॒दि॒वई॒ड्यो॒जागृ॒वाऽ२३द्भी॒रुः । हा३२३४वि५ । ष्मा३२३४  
द्भी५ः । म५नु५ ष्ये४ऽ५भि५र५ग्नि४ः । ए५हि५या५६हा५ ।  
हो४ऽ५ । यी५ । डा५ ॥ १७ ॥

ऋषिः—पायुः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

८०. <sup>३ १ २</sup> सनादग्रे <sup>३ २ ३ २</sup> मृणसि <sup>३ १ २ ३ १ २</sup> यातुधानान्न त्वा रक्षांसि <sup>३ १ २ ३ १ २</sup> पृतनासु <sup>३ १ २ ३ १ २</sup> जिग्युः ।  
<sup>३ १ २ ३ १ २</sup> अनु दह <sup>३ १ २ ३ १ २</sup> सहमूरान् <sup>३ १ २ ३ १ २</sup> कयादो <sup>३ १ २ ३ १ २</sup> मा ते हेत्या <sup>३ १ २ ३ १ २</sup> मुक्षत <sup>३ १ २ ३ १ २</sup> दैव्यायाः ॥

राक्षोघ्नम्—

१. अ३हार । वो२३हार । वो३२हार । सरनादग्रायि । मृ२णसि ।  
 या२तु३धा४ना५न् । न२त्वारक्षा । सी२३पृत । ना२सु३जि४  
 ग्यूपः । अ२नुदहा । स२हमू । रा२न्क३या४दाः५ । अ३हार ।  
 वो२३हार । २ । म२तायिहे२त्याः । मु२क्षतदा२३४५३यि३ ।  
 वी२३या४५या५६५६ः ॥ १८ ॥

[ इति ] दशतिः ॥

ऋषिः—गय आत्रेयः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

८१. अ२ग्र ओ३जिष्ठमा भर द्यु२म॒म॒स्म॒भ्य॒म॒ध्रि॒गो ।  
 प्र नो रा॒ये पनी॒यसे रत्सि वाजा॒य पन्था॒म् ॥

१. आ॒ग्रा॒नुओ३२३४वा॒ओ॒रजि॒र॒ष्ठा॒र३मा । भा॒रा॒नुओ३२३४  
 वा॒प । द्यु॒र॒म॒म॒स्म॒भ्य॒र॒म॒ध्रि॒र॒गो॒र३ । ओ॒यि । प्रा॒ना॒नुओ३२३४  
 वा॒प । रा॒र॒ये॒पनी॒र॒य॒से॒र३ । ओ॒यि । रा॒त्सा॒नुओ३२३४वा॒प ।  
 वा॒जा॒र॒य॒र पन्था॒३२३४५म् ॥ १९ ॥

२. अ॒ग्रे॒हा॒उ॒प । ओ॒जि । ष्ठा॒मा॒र॒भा॒रा॒नु । अ॒हो३२३४वा॒प ।  
 द्यु॒र॒म॒म॒स्म । भ्या॒मै॒ध्री॒गा॒नु । अ॒हो३२३४वा॒प । प्र॒नो रा॒ये ।  
 पा॒नी॒र॒या॒सा॒नु । अ॒हो३२३४वा॒प । रा॒त्सी॒र॒वा॒जा॒र॒नु ।  
 य॒रपो॒वा॒र॒ओ॒र॒३४वा॒प । था॒५५वो॒५६हा॒प॒यि॒प ॥ २० ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

८२. यदि वी॒रो अनु॒ष्याद॒ग्निमि॒न्धीत॒ मर्त्यः॑ ।  
 आजु॒ह्व॒द्व्यमा॒नुष॒क् शर्म॑ भक्षीत दै॒व्यम् ॥

आ[ १ ]ग्नेयम्—

१. य३दि४वी४रो३अ३नु४ष्य५त् । ऐ२या२३४ऽ३ई२३४या५ ।  
अ४ग्रि३मिं४धी५त५मौ । ५ । हो३ँहा२३ । होऽ२३४ । ति३या  
४ः । आजू४रु॒ह्वाब्दाऽ२३ । व्यमाऽ२नू३२३४षा५क् । शर्म  
भ२ । क्षायि । त दा२३हा२३यि३ । वा२३ओऽ२३४वा५ । व्या  
३२३४म् ॥ २१ ॥

ऋषिः—भरद्वाजः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

८३. त्वे३षस्ते३ धू३म३ ऋ३ण्वति३ दि३वि३ सं३च्छु३क्र३ आ३ततः३ ।  
सू३रो३ न३ हि३ द्यु३ता३ त्वं३ कृ३पा३ पा३वक३ रो३चसे३ ॥

यामम्—

१. त्वे३रषास्तेऽ२३ धू३म३ ऋ३ण्वति३ हा३प३उ३ । दि३रवि३रसं३  
शु३रक्रा३र३ आ३ताता३र३ः । सू३रो३ न३ ही३ हा३प३उ३ । द्यु३ता-  
तू३वा३र३म् ३ । कृ३पा३प३वा३ हा३प३उ३ । क३रो३चाऽ२३ सा३  
३४ऽ३यि३ । ओ३र३ ४५यि५ । डा५ ॥ २२ ॥

ऋषिः—भरद्वाजः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

८४. त्वं३ हि३ क्षै३तवद्३ य३शोऽ३ ग्रे३ मि३त्रो३ न३ प३त्यसे३ ।  
त्वं३ वि३चर्ष३णे३ श्र३वो३ व३सो३ पु३ष्टिं३ न३ पु३ष्यसि३ ॥

आग्नेयं बृहत्—

१. त्व३ह३हि३क्षै३त३व३प३द्य३श३ः । ई३प३इ३या३ हा३प३यि५ ।  
अ३ग्रायि३मि३र३ । त्रो३ । ना३प३र३त्य३र३३ सा३प३यि५ । आ३अ३र३४५हो५ ।  
इ३या३ हा३प३यि५ । त्वं३वि३ । चा३ । ष३णेऽ३श्रा३र३३ वा३ः ।

आअ२३४हो५ । इ४या४हा५यि५ । वासा२३उ३वा२ । पुर ।  
ष्टायिम् । नापुरष्या३२ ३४सी५ । आअ२३४हो५ । इ४या४  
हा५ । हो४ऽ५यि५ । डा५ ॥ २३ ॥

ऋषिः—मृक्तवाहा द्वितः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

८५. <sup>३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २</sup> प्रातरग्निः पुरुप्रियो विश स्तवेतातिथिः ।  
<sup>२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २</sup> विश्वे यस्मिन्नमर्त्ये हव्यं मर्तास इन्धते ॥

कौमुदस्य स [ १ ] मम्—

१. प्रा५त५र५ग्रा५यि५षू५६रु५प्रि५या५ः । वि२शास्त२वे२ताऽ  
२३ । अ२ति३था२यि२ः । वायिश्चे यास्मी२३न्३ । अमाऽरु  
त्ता३२३४या५यि५ । हव्याऽ२३३३होयि । मर्त्ता२३हो । स२  
इन्धाऽ२३ता२३४ऽ३ यि३ । ओ२३४५यि५ । डा५ ॥ २४ ॥

ऋषिः—वसूयव आत्रेयः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

८६. <sup>१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २</sup> यद् वाहिष्ठं तदग्रये बृहदर्चं विभावसो ।  
<sup>१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २</sup> महिषीव त्वद् रयिस्त्वद् वाजा उदीरते ॥

यद्वाहिष्ठीये द्वे—

१. य४द्वा४हि५ष्ठं५त४दा४ । ग्रायायि । बृहदर्चं वि२भा॒वाऽ२३  
सा२ उ२ । माही४रुषायिवा४रु । त्वद्रयिः । त्वद्वाऽ२३जा२ः ।  
उ२दी॒राऽ२३ता२३४ऽ३यि । ओऽ२३४५यि५ डा५ ॥ २५ ॥

२. य४द्वा४हि५ष्ठं५त४द५ग्र४ये५ । य५द्वा५हि५ष्ठो४वा५ । त२  
द५ग्रायि । बृहदा२३र्चा२ु । वि२भा॒वसा॒उ । महिषाऽ२३  
यि३वा२ । त्वद्रयिः । त्वद्वाऽ२३जा२ः । उ२दी॒राऽ२३ता२३४  
यि३ । ओऽ२३४५ यि५ । डा ॥ २६ ॥

ऋषिः—गोपवनः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

८७. विशोविशो वो अतिथिं वाजयन्तः पुरुप्रियम् ।  
अग्निं वो दुर्य वचः स्तुषे शूषस्य मन्मभिः ॥

विशोविशीयम्—

१. वि॒प॒शो॒५वि॒प॒शो॒५हुं॒५ । वो॒५६अ॒प॒ति॒५था॒५यि॒५म्॒५ ।  
वा॒ज॒य॒न्ताः । पू॒२३रू॒प्री॒२३या॒२म्॒२ । अ॒२ग्निं॒२वो॒२ । दू॒रा॒५२३  
या॒२म्॒२ । हुं॒मा॒यि । वा॒२३चा॒२३ः । स्तू॒५२३४षे॒४हा॒५यि॒५ ।  
ओ॒हु३वा॒रु॒यि॒रु । शू॒३२३४ षा॒५ । हु॒म्मा । स्या॒२३मा॒२३ ।  
न्मा॒५२३४भा॒४यि॒४ । ए॒५हि॒५या॒५६ हा॒५ । हो॒४५यि॒५ ।  
डा॒५ ॥ २७ ॥

ऋषिः—पूरुरात्रेयः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

८८. बृहद् वयो हि भानवेऽर्चा देवायाग्रये ।  
यं मित्रं न प्रशस्तये मर्तासो दधिरे पुरः ॥

प्रजापतेश्च कनिनीके द्वे—

१. बृ॒५ह॒५द्व॒५या॒५ः । हि॒२भा॒ना॒५२३वा॒२यि॒२ । आ॒र्चा॒दि॒२वा॒२ ।  
य॒२अ॒ग्रा॒५२३या॒२यि॒२ । य॒म्मि॒त्र॒न्न । प्रा॒श॒स्ता या॒४रु॒यि॒२ ।  
म॒र्ता॒सो॒२३दा॒२३ । धि॒४रो॒वा॒५ । पू॒४५॒रो॒५६हा॒५ यि॒५ ॥ २८ ॥

२. बृ॒५ह॒५द्व॒५यो॒५हि॒५भा॒५ना॒५६वा॒५यि॒५ । आ॒र्चा॒दि॒२वा॒२ । य॒२  
अ॒ग्रा॒५२३या॒२यि॒२ । य॒म्मि॒त्र॒२न्न॒२ । प्रा॒श॒स्ताया॒४रु॒यि । म॒र्ता॒२  
सो॒२द॒२ । धा॒यि॒रे॒५पू॒रा॒रु । अ॒३हो॒३वा॒३हा॒३४ अ॒५हो॒५वा॒५ ।  
वा॒२३हा॒५२३४५ः ॥ २९ ॥



ऋषिः—गोपवनः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

८९. अगन्म वृत्रहन्तमं ज्येष्ठमग्निमानवम् ।

यः स्म श्रुतर्वन्नाक्षं बृहदनीक इध्यते ॥

श्रौतर्वणम्—

१. अ॒ग॒न्म॒वृ॒त्र॒ह॒न्त॒मं॒ ज्ये॒ष्ठ॒म॒ग्नि॒मा॒न॒व॒म् । ज्य॒यि॒ष्ठ॒र॒म॒र ।  
ग्नि॒मा॒ना॒र॒३ वा॒र॒म् । य॒स्मा॒ऽर॒३हो॒यि । श्रु॒त॒र्व॒न्ना॒क्ष॒यि ।  
बृ॒हा॒ऽर॒३द्वो॒यि । आ॒नी॒क॒र॒या॒र॒३ऽउ॒वा॒ये॒र॒३ । ध्या॒३र॒३४  
ते॒५ ॥ ३० ॥

ऋषिः—वामदेवः, कश्यपो वा मारीचो मनुर्वा वैवस्वतः; उभौ वा ॥  
देवता—अग्निः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

९०. जा॒तः॒ परे॒ण॒ धर्म॑णा॒ यत् स॒वृ॒द्धिः॒ सहा॑भुवः ।

पि॒ता॒ यत्क॑श्य॒प॒स्या॒ग्निः॒ श्र॒द्धा॒ मा॒ता॒ म॒नुः॒ क॒विः॒ ॥

१. जा॒॒र॒त॒र॒ष्प॒र॒रे॒र॒णा॒र॒३धा॒ । इ॒३हा॒र । म॒र॒णा । इ॒३हा॒रु ।  
यो॒३र॒३४ नी॒५म् । यो॒नि॒मि॒न्द्रश्च॒र॒ग॒र॒च्छ॒र॒थ॒रः । य॒र॒त्स॒र॒वृ॒र  
द्भि॒र॒स्सा॒र॒३हा । इ॒३हा॒र । भु॒र॒वाः । इ॒३हा॒रु । यो॒३र॒३४नी॒५  
म् । यो॒नि॒मि॒न्द्रश्च॒र॒ग॒र॒च्छ॒र॒थ॒रः । पि॒र॒ता॒र॒य॒र॒त्क॑र॒श्या॒र॒३  
पा । इ॒३हा॒र । स्या॒र॒ग्रा॒यि । इ॒३हा॒रु । यो॒३र॒३४नी॒५म् ।  
यो॒नि॒मि॒न्द्रश्च॒र॒ग॒र॒च्छ॒र॒थ॒रः । श्र॒र॒द्धा॒र मा॒र॒ता॒र॒मा॒र॒३नूः ।  
इ॒३हा॒र । क॒र॒वा॒यि । इ॒३हा॒रु । यो॒३र॒३४नी॒५म् । यो॒नि॒मि॒न्द्रश्च॒र  
ग॒र॒च्छ॒र॒था॒३र॒३४५ः ॥ ३१ ॥

[ इति ] द्वितीयः प्रपाठकः ॥

ऋषिः—अग्निस्तापसः ॥ देवता—विश्वेदेवाः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

११. सोमं राजानं वरुणमग्निमन्वारभामहे ।  
आदित्यं विष्णुं सूर्यं ब्रह्माणं च बृहस्पतिम् ॥

बार्हस्पत्यम्—

१. सो॒ऽम॒प॒ः॒प॒रा॒ऽज॒पा॒नं॒प॒व॒ऽरु॒प॒णा॒ऽम् ४ । अ॒ग्नि॒म॒न्वा॒र॒भा॒र॒म॒र॒  
हे॒र॒३ । हो॒वा॒र॒३हा॒र॒यि॒र॒ आ॒र॒दि॒र॒त्यं॒वि॒ष्णु॒र॒२॒ । सूर्य॒र॒म् २ ।  
हो॒वा॒र॒३हा॒र॒यि॒र॒ । ब्र॒ह्मा॒णा॒ऽर॒३ज्वा॒र॒३ । हो॒वा॒र॒३हा॒र॒यि॒र॒ ।  
ब्रेहा॒र॒३उ॒३वा॒र॒३ । पा॒३र॒३४ती॒प॒म् ५ ॥ १ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—अङ्गिराः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

१२. इ॒त ए॒त उ॒दा॒रु॒हन् दि॒वः पृ॒ष्ठान्या रु॒हन् ।  
प्र भूर्ज॒यो यथा पथो॒द् द्याम॒ङ्गिर॒सो ययुः ॥

यामम्—

१. आ॒रो॒३हा॒र॒न् २ । ३ । इ॒र॒त॒र॒ए॒र॒त॒र॒ऊ॒र॒३दा॒रु॒र॒ऽहा॒ऽरु॒न् २ ।  
दि॒र॒व॒र॒ष्पृ॒र॒ष्ठा॒र॒नी॒र॒३या॒रु॒र॒ऽहा॒ऽरु॒न् २ । प्र॒र॒भूर्ज॒र्ज॒यो॒र॒  
या॒र॒३था पा॒र॒ऽथा॒ऽरु॒ । उ॒र॒द्या॒र॒म॒र॒ङ्गि॒र॒रा॒र॒३सो या॒र॒यू॒ऽरुः ।  
आ॒रो॒३हा॒र॒न् २ । २ । आ॒ऽर॒३रो॒ऽरु॒ । हा॒३र॒३४ । औ॒प॒हो॒प॒वा॒प॒ ।  
ऊ॒३र॒३४प॒ ५ ॥ २ ॥

ऋषिः—काश्यपोऽसितो देवलो वा ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥  
स्वरः—गान्धारः ॥

१३. रा॒ये अ॒ग्ने म॒हे त्वा दा॒नाय॒ स॒मि॒धी॒महि॒ ।  
ई॒डि॒ष्वा हि म॒हे वृ॒षं द्या॒वा हो॒त्राय॒ पृथि॒वी ॥

१. रा॒प॒ये॒प॒अ॒प॒ग्रे॒प॒म॒प॒हा॒यि॒४ त्वा । दा॒ना॒य॒ स॒मि॒धी॒मा॒ऽ२३ही॒२ ।  
आ॒यि॒डी॒४२ु॒ष्वा॒ही॒४२ु । म॒२हे॒ वृ॒षन् । द्या॒वा॒४२ु॒हो॒त्रा॒४२ु । य॒२  
पो॒वा॒२३ओ॒ऽ२३४वा॒प । था॒४ऽ॒प॒यि॒प॒वा॒प॒६हा॒प॒यि॒प । ५ ॥ ३ ॥
२. रा॒२या॒या॒ऽ२३ग्रे॒४म॒४हे॒४त्वा॒४हा॒प॒उ॒प । दा॒ना॒य॒ स॒मि॒धी॒मा॒ऽ२३  
हा॒२यि॒२ । आ॒इ॒डा॒यि॒ष्वा॒२३हा॒२३यि॒३ । मा॒हे॒२ु॒वा॒३२३४॒ऋ॒४  
षा॒प॒न्प । द्या॒वा॒ हो॒२३॒त्रा॒२३ । य॒२पो॒ऽ२३४वा॒प । था॒४ऽ॒प॒यि॒प  
वो॒प॒६हा॒प॒यि॒प ॥ ४ ॥

ऋषिः—सोमाहुतिर्भागवः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

१४. <sup>३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २</sup> द॒ध॒न्वे॒ वा॒ य॒दी॒म॒नु॒ वो॒च॒द् ब्र॒ह्मे॒ति॒ वे॒रु॒ तत् ।  
<sup>२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २</sup> प॒रि॒ वि॒श्वानि॒ का॒व्या॒ ने॒मि॒श्च॒क्र॒मि॒वा॒भुव॒त् ॥

त्वाष्ट्री साम—

१. द॒ऽ४ध॒४न्वे॒४वा॒४ऽ॒प॒य॒प॒दी॒प॒म॒४नू॒४ । वो॒च॒द् ब्र॒ह्मे॒ति॒वे॒रु॒तत् ।  
पौ॒रि॒वि॒श्वा॒४२ु । नि॒२क्का॒ व्या॒ । ना॒यि॒मि॒श्च॒क्रौ॒२वा॒२ु । ई॒३२३४  
वा॒प । भु॒२वा॒त् । अ॒ऽ२३हो॒४वा॒प । हो॒४ऽ॒प॒यि॒प । डा॒प ॥ ५ ॥

ऋषिः—पायुः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

१५. <sup>१ २ ३ १२ ३ १२ ३ २ ३ २ ३ १ २</sup> प्र॒त्य॒ग्रे॒ हर॒सा॒ हरः॒ शृ॒णा॒हि॒ वि॒श्व॒त॒स्प॒रि ।  
<sup>३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २</sup> या॒तु॒धा॒न॒स्य॒ र॒क्ष॒सो॒ ब॒लं॒ न्यु॒ब्ज॒ वी॒र्य॒म् ॥

अगस्त्यम्—

१. प्र॒३त्य॒४ग्रे॒प । हो॒२ु॒यि॒२ु । ह॒३२४सा॒४ह॒४रा॒प॒६ए॒प । शृ॒२णा॒हि॒२  
वा॒ऽ२ु॒यि॒२ु । श्व॒३ता॒२३४पः । पा॒३२३४री॒प । या॒२तु॒२धा॒न॒स्य॒२  
र॒२क्ष॒सो॒३ । बा॒ऽ२३ला॒२मू॒२ । नि॒यु॒ब्ज॒२वो॒ऽ२३४वा॒प । री॒३२  
३४या॒प॒म्प ॥ ६ ॥

ऋषिः—प्रस्कण्वः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

१६. त्वमग्ने वसूरिह रुद्रा आदित्या उत ।  
यजा स्वध्वरं जनं मनुजातं घृतप्रुषम् ॥

मानवम्—

१. त्व४म५ग्ने५ । त्व४म५ग्ना४यि४ । व२सूःरिहा । रुद्राः२आऽ२३  
दी२ । ति२याः२उता । यजाःसूऽ२३वा२ । ध्व२रं जनम् ।  
मनुजाऽ२३ता२म् । घृ२त२प्रुष२म् । इडाऽ२३भा२३४ऽ३ ।  
ओऽ२३४५यि५ डा५ ॥ ७ ॥

ऋषिः—दीर्घतमाः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

१७. पुरु त्वा दाशिवा वोचेऽरिग्ने तव स्विदा ।  
तोदस्येव शरण आ महस्य ॥

तौदे द्वे—

१. पु५रु४ । त्वा२दाशिवा॒ङ्॒वो॒चाये२३ । आ४री५रा४ग्ना५यि५ ।  
ता२वस्विदा । तो२दस्ये॒व शरण आऽ२३होयि । महाऽ२३  
होये२३ । स्यो२ । या३२३४अ॒प॒हो॒प॒वा॒प । ई३२३४५ ॥ ८ ॥  
२. पु५रु४त्वा॒प॒दा॒प॒शि॒वा॒ङ्॒वो॒चे॒प । आ२री२रा३२३४ग्ना५  
यि५ । ता२व२स्वा३२३४यि४दा५ । तो४द३स्ये॒व॒प॒श॒प॒र॒प ।  
ण३यो३२३४हा५यि५ । मा३हा२ऽ३ । हुंमाये२३ । स्योऽ२३ ।  
या३२३४ अ॒प॒हो॒प॒वा॒प । ई३२३४५ ॥ ९ ॥

दैर्घतसानि त्रीणि—

३. पु५रु४त्वा॒प॒दा॒प॒शि॒वा॒ङ्॒वो॒प । चे॒प॒चे॒प<sup>१</sup> । अ२रायिराऽ२३४  
ग्ना५यि५ । ता२व२स्वा३२३४यि४दा५ । तो२दास्याऽ२३४यि४

१. अत्र 'चेप' इत्यधिकं प्रतीयते मूलगानग्रन्थे । —सम्पादकः

वा५ । शाररा२३णा३२३४या५ । मार३हा४ऽ५स्या५६५६ ।  
ए२३ऽ ॥ १० ॥

४. पु५रु५त्वार३दा४शि५वा४ङ्॒वो४चे५ । अ२रिर । ग्रायि ।  
त॑वाऽरु॒स्वा३२३४यि४दा५ । तो३२३४दा५ । स्या३२३४यि४वा५ ।  
शाररा२३णा३२३४या५ । मार३हा४ऽ५स्या५६५६ ॥ ११ ॥

५. पु५रुत्वाऽ२३दा४शि४वा४ङ्॒वो४चे४हा५उ५ । हा२ु । अ३हो३  
हा२ु । ओ३२३४वा५ । अ२रिरग्रे२तवस्वि२दा । हा२ु । अ३हो३  
हा२ु । ओ३२३४वा५ । तो२दस्ये२वरश२र२णआ । हा२ु । अ३  
हो३हा२ु । ओ३२३४वा५ । ए२३ । म२हस्या३२३ ४५ ॥ १२ ॥

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

१८. प्र<sup>१</sup> होत्रे<sup>२२ ३ २३</sup> पूर्व्यं<sup>३</sup> वचोऽ<sup>१ २</sup> ग्रये<sup>३ २</sup> भरता<sup>३ २</sup> बृहत् ।  
विपां<sup>३ १</sup> ज्योतींषि<sup>२२ ३</sup> बिभ्रते<sup>१ २ ३ २ ३ १ २</sup> न वेधसे ॥

१. प्र५हो५त्रे५पू५ । वि॒रयं वचो । अ॒ग्रयाऽ२३यि३भा२ । र२ता-  
बृहत् । विपा॒ज्योऽ२३ती२ । षि२बाये२३ । भ्राऽरुता३२३४  
अ॒५हो५वा५ । न वे॒रधसे३२३४५ ॥ १३ ॥

२. प्र५हो५त्रा२३यि३पू४वि॒रयं४व४चा५ः । अ॒ग्रये॒रभरता॒इ  
बृ२ । हाऽ२३त्३ । वि॒रपा॒ज्यो॒इता॒रुयि॒रु । षी३२३४<sup>१</sup>बि५ ।  
भ्र३ता२३यि३ । नाऽ२३वे४ऽ३ । धा२३४५सो५६हा५  
यि५ ॥ १४ ॥

१. मूलपाठेऽत्र 'वा' इति लिखितम् ।

२. मूलपाठेऽत्र 'वि' इति लिखितम् । —सम्पादकः

ऋषिः — गोतमः ॥ देवता — अग्निः ॥ छन्दः — उष्णिक् ॥ स्वरः — ऋषभः ॥

९९. अग्ने<sup>२ ३</sup> वाजस्य<sup>१ २ ३</sup> गोमत<sup>१ २ ३</sup> ईशानः<sup>१ २</sup> सहसो यहो ।  
अस्मे<sup>३ १ २</sup> देहि जातवेदो<sup>३ २ ३</sup> महि श्रवः<sup>१ २</sup> ॥

प्रजापतेः श्रुधीये द्वे—

१. अ४ग्ने४वा४जा४ऽपस्य५ । गो५म५तो४वा४ । ई२शा५ । न२स्सा  
ह२ सो३य२हो । अ२स्मायिदे२हि२जा॒तवे॒रदो॒रम । हा५२३  
यि३ । श्र३वार२उ२वार । श्रू॒धिया४रु । ए५२३हि३या२३४ऽ३ ।  
ओ५२३४५यि५ । डा५ ॥ १५ ॥

२. अ५ग्ने५वा५ज५स्य५गो५हुं५ । म५तो४हो४हा५यि५ । ई२शान२  
स्सा । हासो२रुया३२३४हो५ । आस्मे२ऽदायिही२३ । जा॒त५ ।  
वे॒रदा२३ः । मा५२३ही४ऽ३ । श्रा२३४५वो५६हा५यि५ ॥ १६ ॥

ऋषिः — विश्वामित्रः ॥ देवता — अग्निः ॥ छन्दः — उष्णिक् ॥ स्वरः — ऋषभः ॥

१००. अग्ने<sup>२ ३</sup> यजिष्ठो<sup>१ २</sup> अध्वरे<sup>३ २ ३</sup> देवां<sup>१ २</sup> देवयते<sup>३ १ २</sup> यज ।  
होता<sup>१ २ ३</sup> मन्द्रो<sup>१</sup> वि राजस्यति<sup>२ २ ३</sup> स्त्रिधः<sup>१ २</sup> ॥

प्रजतेः सदो हविर्धानानि त्रीणि—

१. अ५ग्ने५य५जि५ष्ठो५अ५ध्व५रा५६ए५ । दे॒रवा॒रन्दे॒रवर ।  
या२३तायिया२ऽजा५रु । हु३वार३ । हो३वार । हो॒तामं॒रद्रः ।  
वि॒रराजा२ऽसी५रु । हु३वार३हो३वार । अ॒रति॒स्त्रा५२३यि३  
धा२३४ऽ३ । ओ५२३४५यि५ । डा५ ॥ १७ ॥

२. अ५ग्ने५ । इ॒रया२३४ऽ३ई॒र३४या५यजिष्ठो५ अध्वरायि ।  
दे॒वान्दे॒वयते४रु । हो॒हो४रु । याजा४रु । हो॒ता४रु मा॒न्द्रो४रु ।

विराजा२३सी२ । आऽ२ । ति३या२३४अ॒प॒हो॒प॒वा॒प । स्त्री३२  
३४धा॒पः ॥ १८ ॥

३. अप॒ग्र॒प॒ई॒४या॒प । ओ॒४वा॒प । यजिष्ठो॒अध्व॒रायि । दे॒वा॒न्दाऽ२३  
यि३वा॒२ । या॒ते॒ऽया॒जा॒४२ । हो॒ता॒३उ॒३वा॒२ । मं॒२द्रो॒२वी॒२३  
राऽ२३ । जाऽ२सा३२३४अ॒प॒हो॒प॒वा॒प । अति॒२स्त्रि॒धा३२३  
४५ः ॥ १९ ॥

ऋषिः—त्रितः ॥ देवता—पवमानः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

१०१. ज॒ज्ञानः सप्त मा॒तृभिर्मे॒धामा॒शास॒त श्रिये ।

अयं ध्रु॒वो रयी॑णां चिकेतदा ॥

१. ज॒प॒ज्ञा॒प॒न॒प॒स्सा॒प । स॒२मा॒२ । तृ॒भा॒यिः । मे॒धा॒२मा३२३४शा॒प ।  
स॒२त॒२श्रा॒या॒यि । अ॒याऽ२ । ध्रू३२३४वा॒पः । र॒याऽ२३यि३  
णा॒२म् । चि॒का॒ये॒२३ । ताऽ२दा३२३४अ॒प॒हो॒प॒वा॒प । ऊ३२३४  
पा॒प ॥ २० ॥

ऋषिः—इरिम्बिठिः ॥ देवता—अदितिः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

१०२. उ॒त स्या नो दि॒वा मति॑रदि॒तिरू॒त्याग॑मत् ।

सा श॒न्ता॒ता म॒यस्कर॑दप॒ स्त्रि॒धः ॥

अर्कजभम्—

१. उ॒प॒त॒प॒स्या॒२३नो॒४प॒दि॒प॒वा॒४म॒४ती॒पः । आ॒दि॒ति॒२रू॒२ । ति॒२  
या॒गा॒२ऽमा॒४२ु॒२ । सा॒शं॒ता॒२३ता॒२३ । मा॒४ । य॒पः । क३  
रा॒२ओ३२३४वा॒प । अ॒४प॒४ऽप॒स्त्रि॒प॒धा॒पः । हो॒४ऽप॒यि॒प ।  
डा॒प ॥ २१ ॥



ऋषिः — विश्वमना वैयश्वः ॥ देवता — अग्निः ॥ छन्दः — उष्णिक् ॥ स्वरः — ऋषभः ॥

१०३. ई<sup>१</sup>डि<sup>२</sup>ष्वा<sup>३</sup> हि<sup>१</sup> प्र<sup>२</sup>ती<sup>३</sup>व्यां<sup>२</sup> यज<sup>१</sup>स्व जा<sup>२</sup>तवे<sup>३</sup>दसम् ।  
च<sup>३</sup>रि<sup>१</sup>ष्णु<sup>२</sup>धू<sup>३</sup>मम<sup>१</sup>गृ<sup>२</sup>भी<sup>३</sup>तशो<sup>१</sup>चि<sup>२</sup>षम् ॥

अगस्त्यस्य च राक्षोघ्नम्—

१. ई<sup>१</sup>र<sup>२</sup>डा<sup>३</sup>यि<sup>१</sup>ष्वा<sup>२</sup>ऽर<sup>३</sup>हि<sup>१</sup>ऽप्र<sup>२</sup>ती<sup>३</sup>प<sup>१</sup>वि<sup>२</sup>प<sup>३</sup>या<sup>१</sup>प<sup>२</sup>म् । याज<sup>१</sup>स्व<sup>२</sup> जा ।  
त<sup>२</sup>र<sup>३</sup>वे<sup>१</sup>द<sup>२</sup>सा<sup>३</sup>ऽर<sup>१</sup>म् । च<sup>२</sup>रि<sup>३</sup>ष्णु<sup>१</sup>धू<sup>२</sup>रु । मा<sup>३</sup>र<sup>१</sup>र<sup>२</sup>र<sup>३</sup>म<sup>१</sup>प । गृ<sup>२</sup>  
भा<sup>३</sup>र<sup>१</sup>यि<sup>२</sup> । ता<sup>३</sup>रु<sup>१</sup>शो<sup>२</sup>र<sup>३</sup>र<sup>१</sup>र<sup>२</sup>र<sup>३</sup>अ<sup>१</sup>प<sup>२</sup>हो<sup>३</sup>प<sup>१</sup>वा<sup>२</sup>प । ची<sup>३</sup>र<sup>१</sup>र<sup>२</sup>र<sup>३</sup>  
षा<sup>१</sup>प<sup>२</sup>म् ॥ २२ ॥

ऋषिः — विश्वमना वैयश्वः ॥ देवता — अग्निः ॥ छन्दः — उष्णिक् ॥ स्वरः — ऋषभः ॥

१०४. न<sup>१</sup> तस्य<sup>२</sup> मा<sup>३</sup>यया<sup>१</sup> च न<sup>२</sup> रि<sup>३</sup>पु<sup>१</sup>री<sup>२</sup>शी<sup>३</sup>त म<sup>१</sup>र्त्यः । यो अ<sup>२</sup>ग्रये<sup>३</sup> द<sup>१</sup>दा<sup>२</sup>श ह<sup>३</sup>व्य<sup>१</sup>दा<sup>२</sup>तये ॥  
१. न<sup>१</sup>प<sup>२</sup>तो<sup>३</sup>र<sup>१</sup>वा<sup>२</sup> । स्या<sup>३</sup>र<sup>१</sup>र<sup>२</sup>र<sup>३</sup>मा<sup>१</sup>प । य<sup>२</sup>र<sup>३</sup>या<sup>१</sup> चा<sup>२</sup>ऽर<sup>३</sup>ना<sup>१</sup>र । रि<sup>२</sup>  
पु<sup>३</sup>री<sup>१</sup>शी<sup>२</sup>त<sup>३</sup>मा<sup>१</sup>र<sup>२</sup>र<sup>३</sup>उ<sup>१</sup>वा<sup>२</sup>ऽर<sup>३</sup> । ती<sup>३</sup>र<sup>१</sup>र<sup>२</sup>र<sup>३</sup>या<sup>१</sup>प । यो अ<sup>२</sup>ग्रये<sup>३</sup> र<sup>१</sup>द<sup>२</sup>  
दा । श ह<sup>३</sup>व्य<sup>१</sup>दो<sup>२</sup>ऽर<sup>३</sup>र<sup>१</sup>वा<sup>२</sup>प । ता<sup>३</sup>र<sup>१</sup>र<sup>२</sup>र<sup>३</sup>ये<sup>१</sup>प ॥ २३ ॥

ऋषिः — ऋजिष्वा भरद्वाजः ॥ देवता — अग्निः ॥ छन्दः — उष्णिक् ॥ स्वरः — ऋषभः ॥

१०५. अ<sup>२</sup>प<sup>३</sup> त्यं<sup>१</sup> वृ<sup>२</sup>जिनं<sup>३</sup> रि<sup>१</sup>पुं स्ते<sup>२</sup>नम<sup>३</sup>ग्रे दुरा<sup>१</sup>ध्यम् ।  
द<sup>१</sup>वि<sup>२</sup>ष्टम<sup>३</sup>स्य स<sup>१</sup>त्पते<sup>२</sup> कृ<sup>३</sup>धी सु<sup>१</sup>गम् ॥

अगस्त्यस्य च राक्षोघ्नम्—

१. अ<sup>१</sup>र<sup>२</sup>प<sup>३</sup>र<sup>१</sup>त्यं<sup>२</sup>र<sup>३</sup>वृ<sup>१</sup>जि<sup>२</sup>प<sup>३</sup>न<sup>१</sup>प<sup>२</sup>म् । रि<sup>३</sup>पू<sup>१</sup>र<sup>२</sup>म<sup>३</sup>र । स्ते<sup>३</sup>र<sup>१</sup>ना<sup>२</sup>र<sup>३</sup>र<sup>१</sup>र<sup>२</sup>र<sup>३</sup>प<sup>१</sup>म् ।  
अ<sup>२</sup>र<sup>३</sup>ग्रा<sup>१</sup>र<sup>२</sup>यि<sup>३</sup>र । दुरा<sup>३</sup>धा<sup>१</sup>ऽर<sup>२</sup>र<sup>३</sup>या<sup>१</sup>र<sup>२</sup>र<sup>३</sup>म<sup>१</sup> । द<sup>२</sup>र<sup>३</sup>वि<sup>१</sup>ष्ट<sup>२</sup>प<sup>३</sup>म<sup>१</sup>प<sup>२</sup>स्य<sup>३</sup>  
स<sup>१</sup>प<sup>२</sup>त्प । प<sup>३</sup>र<sup>१</sup>ता<sup>२</sup>र<sup>३</sup>यि<sup>१</sup> । का<sup>३</sup>ऽर<sup>१</sup>र<sup>२</sup>र्द्धी<sup>३</sup>ऽर<sup>१</sup> । सू<sup>३</sup>र<sup>१</sup>र<sup>२</sup>र<sup>३</sup>प<sup>१</sup>र<sup>२</sup>गो<sup>३</sup>प<sup>१</sup>  
हा<sup>२</sup>प<sup>३</sup>यि<sup>१</sup>प ॥ २४ ॥

ऋषिः—विश्वमना वैयश्वः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

१०६. <sup>३क २२ ३ १ २ ३ १ २</sup>श्रुष्ट्यग्रे नवस्य मे स्तोमस्य वीर विशपते ।

<sup>२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २</sup>नि मायिनस्तपसा रक्षसो दह ॥

१. हा॒पउ॒पश्रु॒पष्ट्य॒पग्रे॒पन॒पव॒पस्य॒पमे॒पहा॒पउ॒प । स्तो॒रमा॒स्य॒र  
वा॒यि । र॒रवि॒रश॒पता॒ये॒र३४ । ऐ॒पही॒पहा॒पउ॒पहो॒४वा॒प । नि॒र  
मा॒रयि॒नाः । त॒रप॒सा॒ररा॒ऽर३४ । ऐ॒पही॒पहा॒पउ॒पहो॒४वा॒प ।  
आ॒सा॒ऽर३४ः । ऐ॒पही॒पहा॒पउ॒पहो॒४वा॒प । द॒रह॒रए॒र३४ ।  
हि॒पया॒प६हा॒प । हो॒४ऽप॒यि॒प । डा । प ॥ २५ ॥

ऋषिः—प्रयोगो भार्गवः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—ककुबुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

१०७. <sup>१ २२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २</sup>प्र मंहिष्ठाय गायत ऋताव्रे बृहते शुक्रशोचिषे । उपस्तुतासो अग्रये ॥

इन्द्रस्य प्रमाहिष्ठीयानि चत्वारि—

१. प्र॒पम॒पः॒पहा॒र३यि॒ऽष्टा॒य॒४गा॒पय॒पता॒प । ऋ॒रता॒न्ने॒४२ु ।  
बृ॒हते॒ शुक्रा॒र३शो॒४ऽ३ । चा॒३२३४यि॒४षा॒पयि॒प । उ॒रपा॒अ॒र३  
हो॒र । स्तो॒तासो॒र३आ॒४ऽ३ । ग्रा॒र३४प॒यो॒प६हा॒पयि॒प ॥ २६ ॥

२. प्र॒४मः॒४हि॒पष्टा॒पय॒प । गा॒४ऽप॒य॒पता॒४ । ऋ॒रता॒४२ु॒ऽर३ ।  
न्ने॒४२ु । बृ॒रहा॒ता॒र३यि॒शू॒४२ु । क्र॒र । शो॒चा॒ऽर३यि॒३षा॒रयि॒र ।  
उ॒रप॒र । स्तु॒तौ॒४२ु । हु॒वायि॒ । हो॒ई॒वा॒र३ । स॒रओ॒ऽर३४वा॒प ।  
ग्रा॒४ऽप॒यो॒प६हा॒पयि॒प ॥ २७ ॥

३. प्र॒३म॒३ः॒३हि॒४ष्टा॒पय॒पगा॒प । इ॒रया॒र३४ऽ३ई॒र३४या॒प । यत॒ऽ  
ऋ॒ता॒न्ने॒बृ॒हते॒ शुक्रा॒र३शौ॒४२ु । हौ॒४२ु । हु॒वा॒४२ुयि॒र । चा॒यि॒षा॒४२ु  
यि॒र । उ॒पा॒र३हो॒यि । स्तु॒ता॒र३हो॒सो॒रअ॒ग्रा॒ऽर३या॒र३४ऽ३  
यि॒३ । ओ॒ऽर३४ऽप॒यि॒प । डा॒प ॥ २८ ॥

४. प्र४म४ः४हि५ष्ठा५य५गा५य५त५ । प्र५म५ः४हि५ष्ठो४वा५ । या  
गा५य५त५ । ऋ५ता५ऽ२३५ना५ऽ३४ । यि४ । बृ४ह४ते३शु४क्र४ शो५ ।  
चा५र३यि३षा५यि५ । उ५र५पौ५र५हो५र५वा५र३हा५यि५ । स्तु५र५तौ५र  
हो५र५वा५र३हा५र३ । स५र५ओ५ऽ२३४वा५ । ग्रा४ऽ५यो५६हा५  
यि५ ॥ २९ ॥

ऋषिः—सोभरिः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—ककुबुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

१०८. प्र सो अग्ने तवोतिभिः सुर्वीराभिस्तरति वाजकर्मभिः ।  
यस्य त्वं सख्यमाविथ ॥

भरद्वाजस्य वा—

१. प्रा५सो५र३हा५यि५ । आ५ग्ने५र३हा५यि५ । त५र५वा५र३ऽउ५वा५ऽ२३ ।  
ती३५र३४भि५ः । सु५र५वी५रा५भि५र५स्त५र५र५ति५र५वा५ज५क५र५र्म५र५भि५रः ।  
या५स्या५र३हा५यि५ । त्वा५सा५ऽ२३ । ख्य४मो४वा५ । वा४ऽ५  
यि५थो५६हा५यि५ ॥ ३० ॥

ऋषिः—सोभरिः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—ककुबुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

१०९. तं गूर्धया स्वर्णरं देवासो देवमरतिं दधन्विरे । देवत्रा हव्यमूहिषे ॥

सौभराणि त्रीणि—

१. तं५गू४ऽ३ब्दा५र३या४सु४व५र्ण५रो४वा५ । दे५र५वा५सो५दे५व५म५रा४  
रु५ता५यि५र्दे५धा५ऽ२३ । हो । न्वा३५र३४यि४रा५यि५ । दे५र५व५र५त्रा५हा ।  
व्य५मू३हा५र३ । हा५ऽरु५यि५रु५षा३५र३४अ५हो५वा५ । ऊ३५र३  
४५ ॥ ३१ ॥

२. तं॒प॒गू॒प॒र्द्ध॒प॒या॒प॒सु॒प॒व॒र्णा॒रा॒प॒म्प॒ । दे॒र॒वा॒सो॒र॒दा॒यि॒ । व॒र॒म॒३  
र॒र॒ता॒ऽर॒३यि॒३म्॒३ । द॒र॒ध॒३न्वि॒३रा॒२ । उ॒र॒वा॒२३ । दे॒३२॒३४  
वा॒प॒ । त्रा॒२हा॒ऽर॒३ । व्य॒४मो॒४वा॒प॒ । हा॒४ऽप॒यि॒प॒षो॒५६हा॒प॒  
यि॒प॒ ॥ ३२ ॥

३. तं॒प॒गू॒प॒र्द्ध॒प॒या॒प॒स्वो॒५हो॒४र्णा॒रा॒प॒म्प॒ । दे॒वा॒ऽरु॒सो॒३२॒३४दे॒प॒ ।  
व॒म॒र॒ता॒ऽरु॒यि॒रु॒म्रु॒ । दा॒३२॒३४धा॒प॒ । न्वा॒३२॒३४यि॒४रा॒प॒ ।  
यि॒प॒ । हा॒रु॒हो॒३२॒३४हा॒प॒ । दे॒वा॒ऽरु॒त्रा॒३२॒३४हा॒प॒ । व्य॒३मू॒२३  
हा॒४ऽप॒यि॒प॒ । षा॒३२॒३४प॒यि॒प॒ ॥ ३३ ॥

ऋषिः—प्रयोगो भार्गवः; सौभरिः काण्वो वा ॥ देवता—अग्निः ॥

छन्दः—ककुबुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

११०. मा॑ नो॒ हृ॒णी॒था॑ अ॒ति॒थिं॑ व॒सु॒र॒ग्निः॑ पु॒रु॒प्र॒श॒स्त ए॒षः॑ ।

यः॑ सु॒हो॒ता स्व॒ध्वरः॑ ॥

सौभरस्य सामनी द्वे—

१. मा॒४ । ना॒४ः । ह॒र॒णी॒३था॒३ति॒थी॒२३म्॒३ । वा॒सू॒रु॒रा॒३२॒३४  
ग॒नी॒पः॑ । पु॒र॒रौ॒२हो॒२वा॒३हा॒२यि॒२ । प्र॒२शौ॒२हो॒२वा॒३हा॒२३ ।  
स्त॒२ओ॒ऽ२३४वा॒प॒ । आ॒४ऽप॒यि॒प॒षो॒५६हा॒प॒यि॒प॒ ॥ ३४ ॥<sup>१</sup>

२. मा॒४नो॒४हा॒प॒उ॒प॒ । हा॒ऽ२॒३४ । णी॒४था॒४अ॒३ति॒४थि॒प॒म्प॒ । वा॒२  
सू॒रु॒रा॒३२॒३४ग्रा॒प॒यि॒पः॑ । पु॒र॒रौ॒ह॒र॒हो॒यि॒ । प्र॒२शौ॒ह॒र॒हो॒ । स्ता॒ऽ२  
३४ए॒४षा॒४ः । ए॒प॒हि॒प॒या॒५६हा॒४ । हौ॒४ऽप॒यि॒प॒ । डा॒प॒ ॥ ३५ ॥<sup>१</sup>

१. मन्त्रोक्तस्य 'यः सुहोता स्वध्वरः' इत्यस्य पादस्य गानं मूलपाठे न विद्यते । —सम्पादकः

ऋषिः—सोभरिः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—ककुबुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

१११. भद्रो नो अग्निराहुतो भद्रा रातिः सुभग भद्रो अध्वरः ।  
भद्रा उत प्रशस्तयः ॥

दैवानीकम्—

१. भ४द्रो३ऽ४न५ः । हो२रुयि२ । अ३ग्नि४रा५हु४ता५६ए५ । भ३  
द्रा३रा२तायिः । सु२भगाभा२३ । द्रोऽ२ध्वा३२३४रा५ः । भ२  
द्रा५ऽ२३ता२३ । प्रा५ऽ२३शा४ऽ३ । स्ता२३४५यो५६हा५  
यि५ ॥ ३६ ॥

ऋषिः—सोभरिः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—ककुबुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

११२. यजिष्ठं त्वा ववृमहे देवं देवत्रा होता रममर्त्यम् ।  
अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ॥

गौतामम्—

१. या३ऽ५जि५ । ष्ठं५त्वा४ऽ३वा२३वृ४म४हा५यि५ । दे२वंदेवत्रा  
हो॒ताऽ२३रा२म् । आ॒मर्त्ति२य२म् । आ॒स्यै या॒ज्ञाऽ२३ ।  
स्याऽ२३ सू४ऽ३क्रा२३४५तो५६हा५यि५ ॥ ३७ ॥

ऋषिः—सोभरिः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—ककुबुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

११३. तदग्रे द्युम्नमा भर यत्सासाहा सद्ने कं चिदत्रिणम् ।  
मन्युं जनस्य दूढ्यम् ॥

जमदग्नेः सांवर्गम्—

१. त४द४ग्रे४द्यू४ऽ५म्रं५ । आ५भ५रो४वा४ । य२त्सा॒साऽ२३हा२ ।  
सदाऽ२३ना२यि२ । कं२चि२दत्राऽ२३यि३णा२म् । मान्यु॒ञ्ज-

नस्य दूऽ२३हो५ । ढाऽ२३४या४म्४ । ए५हि५या५६हा५ ।  
हो४ऽ५यि५ । डा५ ॥ ३८ ॥

ऋषिः—विश्वमनाः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—ककुबुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

११४. यद्वा उ वि॒श॒पतिः शि॒तः सु॒प्री॒तो म॒नु॒षो वि॒शे ।

वि॒श्वेद॒ग्निः प्र॒ति र॒क्षांसि से॒धति ॥

१. य२द्व॒ाऊऽ२३वि॒४श॒प॒ति॒५शि॒५ता॒५ । सु॒प्री॒तो॒२म॒नु॒षो॒२वि॒२  
शे । वि॒श्वायि॒दाऽ२३ग्री॒२ः । प्र॒ति॒२र॒क्षाऽ२३ । सि॒३से॒३ध॒२ता ॥  
अ॒२३ इ॒हो॒४वा॒५ । हो॒४ऽ५यि॒५ । डा॒५ ॥ ३९ ॥

[ इति ] आग्नेयं पर्व्व, अर्द्धप्रपाठकः ॥

[ इति प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ द्वादशः खण्डश्च ॥ १२ ॥ ]

## [ अथ ] ऐन्द्रं पर्व

ऋषिः—शंयुर्बार्हस्पत्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

११५. तद्वी<sup>१ २</sup> गाय सुते<sup>३ १</sup> सचा<sup>२२</sup> पुरुहूताय<sup>३ २ ३ १ २</sup> सत्वने । शं यद्ववे<sup>२३</sup> न शाकिने<sup>३ २ ३ १ २</sup> ॥

रौद्रे द्वे—

१. तपद्वी<sup>१ २</sup>पहो<sup>३ १</sup>वाप । गायाऽ<sup>२२</sup>रु । सु<sup>३ २ ३ १ २</sup>तारुयिरुसा<sup>२३</sup>२३४चाप । पुरुहू<sup>३ १</sup>रता<sup>२२</sup>२ । य<sup>३ २ ३ १ २</sup>रसात्वार<sup>२३</sup>ना<sup>३ २ ३ १ २</sup>रुयिर । शंयत् । हा । अ<sup>२३</sup>२३ होरुयिरु । गा<sup>३ २ ३ १ २</sup>२३४वापयिप । ना<sup>२३</sup>रुशा<sup>३ २ ३ १ २</sup>२३४अ<sup>३ १ २</sup>पहो<sup>३ १ २</sup>पवाप । ए<sup>२३</sup>२३ । किने<sup>२३</sup>२३४प ॥ १ ॥

२. तपद्वी<sup>१ २</sup>पगा<sup>३ १</sup>पयाप । सु<sup>२२</sup>तारुयिरुस<sup>३ २ ३ १ २</sup>रचार<sup>२३</sup>३ । पूरु<sup>२३</sup>२३हू<sup>३ १</sup>३ तार<sup>२३</sup>३४ । हा<sup>३ १</sup>३होर<sup>२३</sup>३ । या<sup>३ २ ३ १ २</sup>सरत्वा<sup>२३</sup>३२३४ना<sup>३ १ २</sup>पयिप । शं<sup>२३</sup>यद्गा<sup>२३</sup>२३वे<sup>२३</sup>२ । न<sup>२३</sup>रशौ<sup>२३</sup>४रु । हौ<sup>२३</sup>४रु । हु<sup>२३</sup>वो<sup>२३</sup>२३४वाप । का<sup>२३</sup>४पयिप नो<sup>२३</sup>पदहाप यिप ॥ २ ॥

मार्गीयवे द्वे—

३. तपद्वी<sup>१ २</sup>पगा<sup>३ १</sup>पयपसु<sup>२२</sup>पते<sup>३ २ ३ १ २</sup>पसपचा<sup>२३</sup>पदएप । पुररु<sup>२३</sup>२हू<sup>३ १</sup>३रता<sup>२३</sup>य सत्वने<sup>२३</sup>२ । पुरुहू<sup>३ १</sup>रता<sup>२३</sup>२ । या<sup>३ २ ३ १ २</sup>सैत्वा<sup>२३</sup>२३नार<sup>३ १ २</sup>३४यि<sup>२३</sup>४ । शं<sup>२३</sup>४यपत्प । गौ<sup>२३</sup>२वारुओं<sup>२३</sup>३२३४वाप । ना<sup>२३</sup>२३शा<sup>२३</sup>४ऽ३ । का<sup>२३</sup>२३४पयिप नो<sup>२३</sup>पदहाप यिप ॥ ३ ॥

४. तपद्वी<sup>१ २</sup>पगा<sup>३ १</sup>पयपसु<sup>२२</sup>पते<sup>३ २ ३ १ २</sup>पसपचा<sup>२३</sup>पदएप । पुररु<sup>२३</sup>२हू<sup>३ १</sup>३रता<sup>२३</sup>य सत्वनायि । शं<sup>२३</sup>यद्गा<sup>२३</sup>२३वे<sup>२३</sup>२ । ऐ<sup>२३</sup>४रुहोर<sup>२३</sup>२आ<sup>२३</sup>२३यि<sup>२३</sup>३ही<sup>२३</sup>२ । न<sup>२३</sup>२शा<sup>२३</sup>२३ । का<sup>२३</sup>२रुयिरुना<sup>३ २ ३ १ २</sup>३२३४अ<sup>३ १ २</sup>पहो<sup>३ १ २</sup>पवाप । इ<sup>२३</sup>३२३ ४प ॥ ४ ॥



ऋषिः—श्रुतकक्षः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

११६. यस्ते<sup>१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २</sup> नूनं शतक्रतविन्द्र द्युम्नितमो मदः । तेन नूनं मदे मदे ॥

१. य॒ष्ठस्ते॒ष्ठनू॒ष्ठना॒ष्ठऽ५२५॒श॒ष्ठत॒ष्ठक्र॒ष्ठता॒ष्ठउ॒ष्ठ । इन्द्र॒द्युम्नितमो॑  
मा॒ष्ठरु॒दाः । ते॒२न॒नूना॒ऽ२३॒म्मा॒२ । दा॒यिमो॑३उ॒३वा॒२३ । दे॒३२  
३४५ः ॥ ५ ॥

ऋषिः—हर्यतः प्रागाथः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

११७. गाव उप वदावटे मही यज्ञस्य रप्सुदा । उभा कर्णा हिरण्यया ॥

मैटते द्वे—

१. गा॒व॒ऽ५ । ए॒गा॒व॒ऽ५ । उ॒२प॒२व॒२ । दा॒२३ । वा॒ऽरु॒दा॒३२३४  
अ॒५हो॒५वा॒५ । वा॒३२३४टे॒५ । म॒२ही॒रु॒या॒३२३४ज्ञा॒५ । स्य॒३  
रा॒२३ । स्या॒ऽरु॒रा॒३२३४अ॒५हो॒५वा॒५ । प्सू॒३२३४दा॒५ । उ॒२भा॒रु  
का॒३२३४र्णा॒५ । हि॒३रा॒३हा॒ऽरु॒यि॒रु॒रा॒३२३४अ॒५हो॒५वा॒५ ।  
ण्या॒३२३४ या॒५ ॥ ६ ॥

२. ओ॒रु॒यि॒रु॒गा॒३२३४वा॒५ । उ॒२प॒२वा॒३दा । वा॒दा॒रु॒ओ॒३२३४  
वा॒५ । म॒२ही॒य॒ज्ञस्य॒२२२प्सु॒दा॒२३ । ओ॒रु॒ऊ॒३२३४भा॒५ ।  
का॒र्णा॒रु॒ओ॒३४वा॒५ । हि॒२२२ण्यया॒ऽ२३४५ ॥ ७ ॥

ऋषिः—श्रुतकक्षः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

११८. अरमश्चाय गायत श्रुतकक्षारं गवे । अरमिन्द्रस्य धाम्ने ॥

श्रौतकक्षे द्वे—

१. अ॒३रा॒३४म्॒४ । अ॒४श्वा॒४य॒४ । गा॒५या॒५६ता॒५ । श्रू॒तक॒२  
क्षा॒३ । रा॒ज्ञावा॒रु॒यि॒रु । आ॒३२३४रा॒५म्॒५ । हा॒२३हा॒२यि॒२ । इ॒॥

द्रास्याऽ२३धार । हुम्माये२३ । म्नो२ । या३२३४अ॒प॒हो॒प॒वा॒प ।  
ई३२३४ति॒प ॥ ८ ॥

२. अ॒र॒प॒म॒श॒वा॒प॒य॒प॒गा॒प॒य॒प॒ता॒प । र॒प॒म॒प॒श्वो॒ठ॒वा॒प । या गा॒य॒र  
त॒र । श्रु॒त॒र॒क॒र । क्षाऽ२३ । हा॒र३हा॒र३यि३ । आ॒राऽ२३ङ्गा३२  
३४वा॒प । यि । आ॒रमि॑न्द्रा२३ । हा॒र३हा॒र । स्या॒धा॒र॒म्ना ।  
अ॒र३हो॒ठ॒वा॒प । हो॒ठ॒प॒यि॒प । डा॒प ॥ ९ ॥

ऋषिः — श्रुतकक्षः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — गायत्री ॥ स्वरः — षड्जः ॥

११९. तमिन्द्रं<sup>१</sup> वाजयामसि<sup>२</sup> महे<sup>३</sup> वृत्राय<sup>४</sup> हन्तवे<sup>५</sup> । स<sup>६</sup> वृषा<sup>७</sup> वृषभो<sup>८</sup> भुवत्<sup>९</sup> ॥

तन्वस्य पार्थस्य सामनी द्वे—

१. त॒रमि॑न्द्राऽ२३म्वा॒ठज॑ठया॒प॒म॒सि॒प । माहे॒वृ॒त्रा॒र । य॒र॒हान्ता॒र  
ऽवे॒ठ॒रु । स॒र॒वा॒ऋ॒षा॒र॒ऽवा॒ऽ२३ । ष॒र॒भो॒ऽ२३४वा॒प । भू॒ठ॒प॒  
वो॒प॒द॒हा॒प॒यि॒प ॥ १० ॥
२. त॒रमि॑न्द्राऽ२३म्वा॒ठज॑ठया॒ठम॑ठसि॒ठहा॑प॒उ॒प । माहे॒वृ॒त्रा॒र । य॒र  
हान्ता॒र॒ऽवे॒ऽ२३ । हो॒वा॒र३हा॒र॒यि॒र । स॒र॒वा॒ऋ॒षा॒र॒ऽवा॒ऽ२३ ।  
हो॒वा॒र३हा॒र । ष॒र॒भो॒ऽ२३ । भू॒ऽ२३वा॒३२३४अ॒प॒हो॒प॒वा॒प ।  
ए॒र३ । द्वा॒र॒व॒सू॒३२३४प ॥ ११ ॥

वासिष्ठम्—

३. त॒पमि॑प॒द्रं॒प॒वा॒प॒ज॒प॒या॒प॒म॒प॒सी॒प॒द॒ए॒प । म॒र॒हा॒र३हा॒र॒यि॒र ।  
वृ॒त्रा॒र॒य्या॑हन्तवे॒ठ॒रु । ओ॒ठ॒रु । ई॒ठ॒रु॒इ॒या॒र । ओ॒मो॒वा॒र । स॒र  
हे॒र वा॒रि॒षा॒ठ॒रु । ओ॒ठ॒रु । ई॒ठ॒रु । इ॒या॒र । ओ॒मो॒वा॒र । वृ॒ष॒र ।  
भो॒ऽ२३ । या॒३२३४अ॒प॒हो॒प॒वा॒प । भू॒३२३४वा॒प॒त्प ॥ १२ ॥

इडानाःसंक्षारः—

४. अ॒रहो॑रयिरहु॒रवार॑३होयि । त॒रमि॑रदं॒रवार॑३जा॒४५३या॒२ुम॑३  
सि॒५ । अ॒रहो॑रयिरहु॒रवार॑३होयि । म॒रहे॑रवृ॒रत्रा॑३या॒४५३  
हं॒रुत॑३वे॒५ । अ॒रहो॑रयिरहु॒रवार॑३होयि । स॒३वा॒रु॒क्र॒रुषा॑३२  
३४वे॒५ । ष॒२भो॑भु॒रवर॑त् । इडा॒५२३भा॑३ । ए॒४ही॒४डा॑५ ।  
हो॒४५ यि॑५ । डा॒५ ॥ १३ ॥

ऋषिः—इन्द्रमातरो देवजामयः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१२०. त्वमिन्द्र बलादधि सहसो जात ओजसः । त्वं सन्वृषन्वृषेदसि ॥

सार्यात्तानि त्रीणि—

१. हा॒५उ॒५त्व॒॑५मि॒॑५द्रा॒॑५ । ब॒रला॑दधि॒२ । हा॒२३उ॒३हा॒२उ॒२ ।  
सह॑सो॒२जा॒२ । ताओ॒२५ज॑सा॒२३ः । हा॒२३उ॒३हा॒२उ॒२ । त्वाः  
सन्वृ॑षा॒२३न्॒३ । हा॒२३उ॒३हा॒२उ॒२ । वृ॒रषा॑ये॒२३त्॒३ । आ॒५२ु  
सा॒३२३४अ॒५हो॒॑५वा॒॑५ । वृ॒रधे॒॑२५५ ॥ १४ ॥
२. त्व॒॑५मि॒॑५द्रा॒॑५ब॒५ला॒॑५द॒५धी॒॑५६ए॒॑५ । सह॑सो॒२जा॒२ । ताओ॒२५  
ज॑स॒२ुः । इ॒३या॒२३हो॑यि । इ॒३या॒२ुयो॒॑३२३४वा॒॑५ । त्वाःसन्वृ॑ष॒२  
न् । इ॒३या॒२३हो॑यि । इ॒३या॒२ु३यो॒॑३२३४वा॒॑५ । वृ॒रषा॑ये॒२३त्॒३ ।  
आ॒५२ु सा॒३२३४अ॒५हो॒॑५वा॒॑५ । म॒रहे॒॑२५५ ॥ १५ ॥
३. त्व॒॑५मि॒॑५द्रा॒॑५ब॒५ला॒॑५द॒५धि॒॑५स॒५ह॒॑५सा॒५ । जा॒ता॒४२ुः । ओ॒ज  
सा॒५२३४ः । इ॒४हो॒॑५इ॒५हा॒४ । त्वाःसन्वृ॑षा॒२३न्॒४ । इ॒४हो॒॑५  
इ॒५हा॒४ । वृ॒रषा॑ये॒२३त्॒३ । आ॒५२ुसा॒३२३४अ॒५हो॒॑५वा॒॑५ । ई॒३२  
३४हा॒॑५ ॥ १६ ॥

ऋषिः—गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१२१. य॒ज्ञ इन्द्र॑मवर्धयद् य॒द्धूमिं॑ व्यवर्तयत् । चक्रा॑ण ओप॒शं दिवि॑ ॥

इन्द्राण्याः साम—

१. य॒प॒ज्ञ॒प॒इ॒प॒द्र॒प॒म॒प॒व॒प॒र्द्धा॒प॒द॒या॒प॒त्प॑ । य॒र॒द्भूमि॑म् । व्या॒प॒ ।  
व्य॑वाऽ॒रु॒र्त्ता॒र॒३४या॑प॒त्प॑ । चा॒३॒र॒३४क्रा॑प॒ । णा॒३॒र॒३४ओ॑प॒ ।  
पा॒शं॒र॒दि॒र॒वि॑ । च॒र॒क्रा॒३ण॒र॒ओऽ॒र॒३ । पाऽ॒रु॒शा<sup>m</sup>॒॑३॒र॒३४अ॒प॒  
हो॑प॒वा॒प॒ । दी॒३॒र॒३४वि॑प॒ ॥ १७ ॥

ऋषिः—गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१२२. यदिन्द्रा॑हं यथा त्वमीशी॒य वस्व॑ एक इत् । स्तोता॑ मे गो॒सखा॑ स्यात् ॥

गौसूक्तम्—

१. य॒४दि॑प॒द्रा॒प॒हं॒४य॒४थौ॑प॒ । हौ॒४हो॒४वा॒४हा॒प॒यि॑प॒ । तु॒प॒वा॒४म्॒४ ।  
ई॒२शी॒यव॑स्व॒रअ॒४रु॑ । हुवा॒यि॑ । हुवा॒ये॒२ । का॒ई॒४रु॑ । त्॒२ ।  
स्तो॒२ता॒ मे गो॒स॒खौ॒४रु॑ । हुवा॒यि॑ । हुवा॒ये॒२ । सा॒याऽ॒र॒३त्॒३ ।  
होऽ॒रु॒३॒२॒३४अ॒प॒हो॒२वा॑प॒ । अ॒र॒गि॒रा॒हु॒रता॒॑३॒२॒३४प॑ः ॥ १८ ॥

आश्वसूक्तम्—

२. आ॒रु॒अ॒३हो॒४वा॒४ । हा॒प॒यि॑प॒ । य॒प॒दि॑प॒द्रा॒प॒हा॒प॒म्प॑ । य॒र॒था ।  
त्वम् । ऐ॒२ही॒२यै॒॑३ही॒२ऽ । आ॒यि॒शी॒य॒रव॑स्व॒र<sup>२</sup>आ॒यि॒कई॑त् ।  
ऐ॒२ही॒२यै॒॑३ही॒२ऽ । आ॒४रु॒यि॒२ । स्तो॒ता॒४रु॒मा॒यि॒गो॒४रु॑ । स॒२  
खाऽ॒र॒३ । साऽ॒रु॒या॒३॒२॒३४अ॒प॒हो॒प॒वा॑प॒ । <sup>३</sup>शु॒रक्रा॒हु॒रता॒॑३॒२  
३४प॑ः ॥ १९ ॥

१. मूलग्रन्थेऽत्र 'सौ' इति लिखितम् ।

२. मूलग्रन्थेऽत्र 'श्वर' इति लिखितम् ।

३. 'शुक्र आहुत' इत्यधिकः पाठः ।

—सम्पादकः

ऋषिः—मेधातिथिराङ्गिरसः प्रियमेधः काण्वश्च ॥ देवता—इन्द्रः ॥

छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१२३. प<sup>१</sup>न्यं<sup>२</sup>प<sup>३</sup>न्यमि<sup>४</sup>त् सो<sup>५</sup>तार आ<sup>६</sup> धा<sup>७</sup>वत म<sup>८</sup>द्याय । सोमं<sup>९</sup> वी<sup>१०</sup>राय शू<sup>११</sup>राय ॥

गौवितम्—

१. प<sup>१</sup>न्यं<sup>२</sup>प<sup>३</sup>न्यमि<sup>४</sup>त् ४ । सो<sup>५</sup>ता<sup>६</sup>प<sup>७</sup>द<sup>८</sup>रा<sup>९</sup>पः । प<sup>१०</sup>न्यं प<sup>११</sup>न्यमित्सो<sup>१२</sup> ५  
ता<sup>१३</sup>र<sup>१४</sup>३राः<sup>१५</sup> २ । आ । धा<sup>१६</sup>र<sup>१७</sup>व<sup>१८</sup>र<sup>१९</sup>त<sup>२०</sup>३ । म<sup>२१</sup>र<sup>२२</sup>दि<sup>२३</sup>३या<sup>२४</sup>४या<sup>२५</sup>प । सोमं<sup>२६</sup> वी<sup>२७</sup>र ।  
रा<sup>२८</sup>५र<sup>२९</sup>३ । य<sup>३०</sup>३शू<sup>३१</sup>र<sup>३२</sup>३रा<sup>३३</sup>४५या<sup>३४</sup>प<sup>३५</sup>६प<sup>३६</sup>६ ॥ २० ॥

ऋषिः—मेधातिथिराङ्गिरसः प्रियमेधः काण्वश्च ॥ देवता—इन्द्रः ॥

छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१२४. इ<sup>१</sup>दं<sup>२</sup> व<sup>३</sup>सो सु<sup>४</sup>तम<sup>५</sup>न्धः पि<sup>६</sup>बा सु<sup>७</sup>पू<sup>८</sup>र्णमु<sup>९</sup>दरम् । अना<sup>१०</sup>भयि<sup>११</sup>न् ररि<sup>१२</sup>मा ते ॥

गाराणि त्रीणि—

१. इ<sup>१</sup>प<sup>२</sup>दं<sup>३</sup>प<sup>४</sup>व<sup>५</sup>सा<sup>६</sup>प<sup>७</sup>उ<sup>८</sup>प । सु<sup>९</sup>र<sup>१०</sup>त<sup>११</sup>४ । मा<sup>१२</sup>५र<sup>१३</sup>३न्धा<sup>१४</sup>रः । पि<sup>१५</sup>बा<sup>१६</sup>र<sup>१७</sup>सु<sup>१८</sup>र<sup>१९</sup>पू<sup>२०</sup>र ।  
ण<sup>२१</sup>र मु<sup>२२</sup>दा<sup>२३</sup>५र<sup>२४</sup>३रा<sup>२५</sup>३४म् ४ । अ<sup>२६</sup>३ना<sup>२७</sup>३४भ<sup>२८</sup>३या<sup>२९</sup>३यि<sup>३०</sup>३न् ५३ ।  
र<sup>३१</sup>४रो<sup>३२</sup>४ वा<sup>३३</sup>प । मा<sup>३४</sup>४५प<sup>३५</sup>तो<sup>३६</sup>प<sup>३७</sup>६हा<sup>३८</sup>प<sup>३९</sup>यि<sup>४०</sup>प ॥ २१ ॥

२. इ<sup>१</sup>प<sup>२</sup>दा<sup>३</sup>४५३म् ३व<sup>४</sup>र<sup>५</sup>सो<sup>६</sup>३सु<sup>७</sup>४त<sup>८</sup>४मं<sup>९</sup>४धाः<sup>१०</sup>प । पि<sup>११</sup>र<sup>१२</sup>बा<sup>१३</sup>सू<sup>१४</sup>५र<sup>१५</sup>३पू<sup>१६</sup>र ३ ।  
ण<sup>१७</sup>मू<sup>१८</sup>५रु<sup>१९</sup>दा<sup>२०</sup>३२३४रा<sup>२१</sup>प<sup>२२</sup>म् ५ । आ<sup>२३</sup>५र<sup>२४</sup>३ना<sup>२५</sup>२ । भा<sup>२६</sup>४रु<sup>२७</sup>या<sup>२८</sup>यि<sup>२९</sup>न् । र<sup>३०</sup>रौ<sup>३१</sup>५  
२३ । हा<sup>३२</sup>र<sup>३३</sup>उ<sup>३४</sup>र<sup>३५</sup>वा<sup>३६</sup>र ३ । मा<sup>३७</sup>ते<sup>३८</sup>३२३४प ॥ २२ ॥

३. इ<sup>१</sup>प<sup>२</sup>दं<sup>३</sup>प<sup>४</sup>व<sup>५</sup>सो<sup>६</sup>प<sup>७</sup>सु<sup>८</sup>प<sup>९</sup>त<sup>१०</sup>प<sup>११</sup>मं<sup>१२</sup>प<sup>१३</sup>धा<sup>१४</sup>प<sup>१५</sup>६ए<sup>१६</sup>प । पि<sup>१७</sup>र<sup>१८</sup>बा<sup>१९</sup>र<sup>२०</sup>सु<sup>२१</sup>र<sup>२२</sup>पू<sup>२३</sup>३र्णामि<sup>२४</sup>दरौ<sup>२५</sup>  
२ । हो<sup>२६</sup>र<sup>२७</sup>३वा<sup>२८</sup>र । पि<sup>२९</sup>बा<sup>३०</sup>सु<sup>३१</sup>पू<sup>३२</sup>र्णामि<sup>३३</sup>दरौ<sup>३४</sup>२ । हो<sup>३५</sup>र<sup>३६</sup>३वा<sup>३७</sup>र । आ<sup>३८</sup>ना<sup>३९</sup>भा<sup>४०</sup>र<sup>४१</sup>३  
यी<sup>४२</sup>२न् २ । र<sup>४३</sup>रि<sup>४४</sup>मा<sup>४५</sup>र<sup>४६</sup>ता<sup>४७</sup>अ<sup>४८</sup>३हो<sup>४९</sup>४वा<sup>५०</sup>प । हो<sup>५१</sup>४५प<sup>५२</sup>यि<sup>५३</sup>प । डा<sup>५४</sup>प ॥ २३ ॥

ऋषिः—सुकक्षश्रुतकक्षौ ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१२५. उ<sup>१</sup>द्<sup>२</sup> घे<sup>३</sup>दभि<sup>४</sup> श्रु<sup>५</sup>ताम<sup>६</sup>घं वृ<sup>७</sup>षभं<sup>८</sup> न<sup>९</sup>र्या<sup>१०</sup>प<sup>११</sup>सम् । अ<sup>१२</sup>स्तार<sup>१३</sup>मे<sup>१४</sup>षि<sup>१५</sup> सूर्य ॥

## सौपर्णानि त्रीणि—

१. उपद्घेपदपभ्योऽवाप । श्रूताऽरुमा३२३४घापम्प । वृ२षाभ२  
न्ना । रियाऽरुपा३२३४सापम्प । आ४रुस्ताराऽ२३मे२ । षायिसू  
२रिरया । अ२३हो४वाप । हो४ऽपयिप । डाप ॥ २४ ॥
२. उपद्घेपदपभिपश्रुपतापमापदघापमपम्प । वृ४ष४भ३न्न४  
र्यापि । हुं । पा३२३४सापम्प । आस्ता२३उ३वार । रा२मायि ।  
षिरसूऽ२३४वाप । रा४ऽपयोपदहापयिप ॥ २५ ॥

## विलम्बसौपर्णम्—

३. उ४दघे४दपभि४श्रुपता४मपघपम्प । ई४यपइ४या४हापयिप ।  
वृ४ष४भ३न्न४र्यापि । हा२३हा२३यि३ । पऽ२३४सापम्प ।  
आस्ता२३उ३वार३ । राऽरुमा३२३४अ॒पहो॒पवाप । षिरसू२  
रिरया३२३४प ॥ २६ ॥

ऋषिः—सुकक्षश्रुतकक्षौ ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१२६. यदद्य कच्च वृत्रहन्नुदगा अभि सूर्य । सर्वं तदिन्द्र ते वशे ॥

## साकालम्—

१. ध४द४द्य४का४ऽपच्चपवृपत्र४हा४नृ४ । उ२दगाअभि२सूराऽ२  
३या२ । साव्वा४रुम्प । तादिन्द्र२ताये२३ । हुं । वा२३४पशोपद  
हाप यिप ॥ २७ ॥

ऋषिः—भरद्वाजः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१२७. य आनयत् परावतः सुनीती तुर्वशं यदुम् । इन्द्रः स नो युवा सखा ॥

भारद्वसवे द्वे—

१. य४आ४हा५उ५ । आनाया४रुत्२ । आनायाऽ२३त्३ । पाराऽ२  
वा३२३४ता५ः । सुनीतीतू४२ । सुनीतीतूऽ२३ । वर्वाशं२या३२  
३४ दू५म् । इन्द्रस्साना४२ः । इन्द्रस्सानाऽ२३ः । यूऽ२३वा३२  
३४ अ५हो५वा५ । सा३२३४खा५ ॥ २८ ॥

२. य४आ४न५य४त्४ । प५रा५वा५६ता५ः । सुनीतीतुर्व्वशा२ऽ  
या२३दूर२म् । इन्द्रस्स नो युवा२ऽसा२३खा२ । इं२द्रो३२३४  
ग्रा५यि५ । इं२द्राअ२३हो३२३४ । ग्रा५यि५ । आयिंद्रो२अ२ ।  
ग्राऽ२ । या३२३४अ५हो५वा५ । ई३२३४न्द्रा५ः ॥ २९ ॥

ऋषिः—श्रुतकक्षः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१२८. मा न इन्द्राभ्याऽऽ३दिशः सूरौ अक्तुष्वा यमत् ।

त्वा युजा वनेम तत् ॥

तान्वे द्वे—

१. मा५न५इं५द्रा५भि५या५दा४यि४शा५ः । सूरौअ२क्तु२ ।  
षु२वा५याऽ२३मा२३४३४त्४ । तु३वा२३४यु३जा२ । व२ना-  
यिमाऽ२३ ता२३४ऽ३त्३ । ओऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ ३० ॥

२. मा५ना४ऽ३आ२३यिं३द्रा४भि४या५दि५शा५ः । सूरौ२आ३२  
३४क्तू५ । षू२आ२ुया३२३४मा५त्५ । त्वा५युजा५वनौ३हो२ ।  
म२तौ४२ । हुवायि । अ३हो३२३४५वा५६५६ । ए२३ । ययुऽ२  
३४५ः ॥ ३१ ॥

॥ [ इति ] तृतीयः प्रपाठकः ॥



ऋषिः—मधुच्छन्दाः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१२९. ऐन्द्रं सानसिं रयिं सजित्वानं सदासहम् । वर्षिष्ठमूतये भर ॥

रोहितकुलीये द्वे—

१. ए०न्द्र५सा४ । न२सिंरयिम् । सजित्वानं२स२दासा२३हारम् ।  
वा०२३ऋ३षी२ । ष्टामूत२या२३उवाये२३ । भा३२३४  
रा५ ॥ १ ॥

२. ए०न्द्र५सा५न५सा४यि४म् । र२या४रुयि२म् । स२जित्वानं२  
स२दासा०२३हारम् । वा०ऋषी४रुष्टामू०२३ । त२यो०२३४  
वा५ । भा०५५रो५६हा५यि५ ॥ २ ॥

ऋषिः—मधुच्छन्दाः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१३०. इन्द्रं वयं महाधनं इन्द्रमर्भे हवामहे । युजं वृत्रेषु वज्रिणम् ॥

१. इन्द्राम् । इन्द्रम्वाया४रुम् । महा । मैहाधाना४रुयि२ । इन्द्राम् ।  
इन्द्रमर्भा४रुयि२ । हवा । हवामाहा४रुयि२ । युजाम् । युञ्जम्वृत्रा  
४रुयि२ । षुवा । षुवज्रिणा०२३४०३म् । ओ२३४५यि५ ।  
डा ॥ ३ ॥

२. इ०न्द्रं५व५या५म् । महा । मैहाधाना०२३यि३ । आअ२३हो२ ।  
इह२ । इ२हिवाला२ु । ओ३२३४वा५ । इ०द्र५म५र्भा५इ५ ।  
हवा । हवामाहा०२३यि३ । आअ२३हो२ । इह२ । इ२हिवाला२ु ।  
ओ३२३४वा५ । यु५जं५वृ५त्रा५यि५ । षुवा । षुवज्रिणा०२३  
म् । आअ२३हो२ । इह२ । इ२हिवाला२ु । ओ३२३४वा५ ।  
ई३२३४हा५ ॥ ४ ॥

ऋषिः—त्रिशोकः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१३१. <sup>१ २</sup>अपिबत् <sup>३ १ २</sup>कद्रुवः <sup>३ १</sup>सुतमिन्द्रः <sup>२२</sup>सहस्रबाह्वे । <sup>१ २</sup>तत्राददिष्ट <sup>३ १ २</sup>पौंस्यम् ॥

सहस्रबाहवीयधृषतः—

१. अपिपिबत्कापद्रूपवस्सुपतापम्प । इन्द्राहोऽरुयिर ।  
सहाहोऽरु । स्राबारऽहुवेऽरु । तत्रादाऽरुदि । ष्टरपौऽरु ।  
हौऽरु । हुवाऽरु यिर । ईँयार । सिरयाम् । अऽरुहोऽवाप ।  
होऽपयिप । डाप ॥ ५ ॥

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१३२. <sup>३ १ २</sup>वयमिन्द्र <sup>३ २ ३</sup>त्वायवोऽभि <sup>१</sup>प्र <sup>२२</sup>नोनुमो <sup>३</sup>वृषन् । <sup>३ २</sup>विद्धी <sup>१</sup>त्वा <sup>२</sup>इस्य <sup>१</sup>नो <sup>२</sup>वसो ॥

मारुतम्—

१. वरयमाऽरुऽयिंऽद्रापत्वाऽरुयाऽरुवाऽरुऽअहोप वाप ।  
अरुभिप्रनोनुमोऽरुवृषन् । २ । विरद्धारुयिरुतुऽवारुऽ ।  
स्याऽरुनाऽरुऽअहोप वाप । वाऽरुऽसोप ॥ ६ ॥
२. हापउपवपयपमिन्द्राप । त्वाऽरुयावाऽरुऽ । अभिप्रनोनुमोऽरु  
वारिषाऽरुनृ । विरद्धाऽरुयिरुतूवाऽरु । स्यरनोऽरुऽवाऽरु  
साऽरुऽअहोप वाप अरुस्म भ्यंरगाऽरुतुऽवित्तरमाऽरुऽ  
म्प ॥ ७ ॥

दिवोदासम्—

३. वपयपमिन्द्राप । त्वायाऽरुवारुऽ । अभिप्रनोनुमोऽरुवारुऽऽरु  
षारनृ । विरद्धीरुतूऽरुऽवाप । ओऽरुऽहापयिप । स्यऽ  
नोऽवाप । वाऽपसोपहापयिप ॥ ८ ॥

४. व॒प॒या॒प॒मौ॒४हो॒प । इ॒ं४द्रा॒प । त्वा॒या॒२३वा॒२ः । अ॒भि॒प्र॒नो॒नु॒मो॒२५  
वा॒२३ऋ॒३षा॒२न्॒२ । वि॒र॒द्धी॒रु॒त्वो॒३२३४हा॒प॒यि॒प । स्या॒नो॒२३  
हा॒२यि॒२ । व॒२सा । अ॒२३हो॒४वा॒प । हो॒४ऽप॒यि॒प । डा॒प ॥ ९ ॥
५. व॒३या॒२मौ॒३हो॒४वा॒४हा॒प॒यि॒प । इ॒ं४द्रा॒प । त्वा॒२अ॒३हो॒४वा॒४हा॒प  
यि॒प । या॒४वा॒पः । आ॒ऽ२३भि॒२ । प्रा॒ऽ२३नो॒२ । ओ॒इ॒नु॒मो  
वा॒ऽ२३ऋ॒३षा॒२न्॒२ । वा॒ऽ२३यि॒३द्धी॒२ । तू॒ऽ२३वा॒२३ । स्या॒ऽ२  
ना॒३२३४ अ॒॒प॒हो॒॒प॒वा॒प । वा॒३२३४सो॒प ॥ १० ॥

ऋषिः—त्रिशोकः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१३३. आ॒<sup>२</sup> घा॒<sup>३</sup> ये॒<sup>२</sup> अ॒ग्रि॒मि॒न्ध॒ते॒<sup>३</sup> स्तृ॒ण॒न्ति॒<sup>३</sup> ब॒र्हि॒रा॒नु॒षक् ।  
ये॒षा॒मि॒न्द्रो॒<sup>२</sup> यु॒वा॒<sup>३</sup> स॒खा ॥

एध्मवाहानि त्रीणि—

१. आ॒॒प॒घा॒॒प॒ये॒॒प॒अ॒ग्रि॒मि॒॒प॒धा॒॒ता॒॒प॒यि॒प । स्तृ॒ण॒न्ति॒ब॒र्हि॒रा॒नु  
षा॒क् । ये॒॒र॒षा॒मि॒न्द्रो॒ यु॒वा॒इ॒हा । ऊ॒वा॒इ । ऊ॒वो॒ऽ२३४ । वा॒प ।  
सा॒४ऽप॒खो॒॒प॒॒६ हा॒प॒यि॒प ॥ ११ ॥
२. आ॒॒प॒घा॒॒प॒य॒॒इ॒हा॒४ । गि॒॒र॒मा॒यि । धा॒ता॒॒२ओ॒३२३४वा॒प । ई॒३२  
३४हा॒प । स्तृ॒णं॒२ति॒॒र॒ब॒॒२ऋ॒२ही॒२३रा । नू॒षा॒॒२ओ॒३२३४वा॒प ।  
ई॒३२३४हा॒प । ये॒॒र॒षा॒ऽम् । आ॒यि॒न्द्रा॒॒२ओ॒३२३४वा॒प । ई॒३२३४  
हा॒प । यु॒वा । ये॒॒वा॒ऽ॒२सा॒३२३४प॒खा॒॒६६ । ई॒३२३४  
हा॒प ॥ १२ ॥
३. अ॒॒प॒हो॒॒प॒आ॒॒प॒घा॒॒प॒या॒॒६ए॒प । गि॒॒र॒मा॒यि॒धा॒ता॒॒२ । अ॒॒३हो॒३२३४  
वा॒प । स्तृ॒णै॒॒२ति॒॒र॒ब॒॒२ऋ॒२ही॒२३रा॒नू॒षा॒॒२ । अ॒॒३हो॒३२३४

वा५ । ये२षामायिंद्रा२ । अ३हो३२३४वा५ । यु३वार३ ।

सा२२३४खा४ । उ५हु५वा५६हा५उ५ । वा५ ॥ १३ ॥

ऋषिः—त्रिशोकः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१३४.भिन्धि वि३श्वा अप३ द्वि३षः परि बा३धो ज३ही मृ३धः ।

व३सु स्पा३र्ह तदा भ३र ॥

१. भि५ । ध्यो४हा४यि४ । वायिश्वाअपा । द्वायिषा२ओ३२३४  
वा५ । पारा२ओ३२३४वा५ । बा॒धो॒जहायि । मा॒र्धा॒२ओ३२३४  
वा५ । वसु२स्पा२ऋ२हन्तदाभ२रा३२३४५ ॥ १४ ॥

ऋषिः—कण्वो घौरः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१३५.इ३हेव शृ३ण्व ए३षां क३शा ह३स्तेषु य३द्वदा३न् । नि३ यामं चि३त्रमृ३ज्जते ॥

१. इ२हेवा२२३शृ४ण्व४ए५षा५म् । क३शाह३स्तेषुया२ऽद्वा२३दा२  
नृ२ । नि२या॒२मं॒२ची॒२३त्रा४ऽ३मृं॒२ज३ता५यि५ । नि२या॒मं॒२  
चायि । त्र॑मा२रुं॒२जा३२३४ता५यि५ । ए३हि३या२३४ । अ॒३  
हो४वा५ । ए२हि२यौ॒होयि । ए२हि२यौ॒होऽ२३यि३ । ए३२३४  
हि५ ॥ १५ ॥

ऋषिः—त्रिशोकः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१३६.इ३म उ३ त्वा वि चक्षते सखाय इन्द्र सोमिनः । पु३ष्टाव३न्तो यथा प३शुम् ॥

पौषम्—

१. इ४म३उ४त्वा४वि३च४क्ष५ते५ । ए२३ । स४खा४या५ । इंद्र  
सो॒मा२३यि३ना२ः । होयिहोवा२ । पु२ष्टा॒वा२३न्ता२ः ।  
होयिहोवा२३ । य२थो२३४वा५ । पा४ऽ५शो५६हा५  
यि५ ॥ १६ ॥

ऋषिः—वत्सः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१३७. <sup>१ २</sup>समस्य <sup>३ २ ३</sup>मन्यवे <sup>२ ३</sup>विशो <sup>१ २</sup>विश्वा <sup>३ १ २</sup>नमन्त <sup>३</sup>कृष्टयः । <sup>१ २ ३</sup>समुद्रायेव <sup>१ २</sup>सिन्धवः ॥

सिन्धुसामम्—

१. समस्यामा४२ । न्या२वेविशाः । विश्वानामा४२ । ता२कृष्टयाः ।  
समुद्राये४२ । वरसिंधाऽ२३वा२३४ऽ३ । ओऽ२३४५यि५  
डा ॥ १७ ॥

ऋषिः—कुसीदी काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१३८. <sup>३ २ ३</sup>देवानामिदवो <sup>३ १</sup>महत्तदा <sup>२ २</sup>वृणीमहे <sup>३ २</sup>वयम् । <sup>१ २ ३</sup>वृष्णामस्मभ्यमूतये ॥

हाविष्मते द्वे—

१. दे५वा५ । ना५म् । इ३दा२ओ३२३४वा५ । ओवा२ओ३२३४  
वा५ । मा३२३४हा५त् । त२दावृणायि । माहा२ओ३२३४  
वा५ । वा३२३४या५म् । वृ२ष्णामस्मा । भ्यामा२ओ३२३४  
वा५ । ता३२३४ये५ ॥ १८ ॥
२. हा५उ५दे५वा५ना५मि५द५वो५म५ह५द्धा५उ५ । त२दा-  
वृणा२३यि३ । माहे२वा३२३४या५म् । ऐ४रुहो२ऽआऽ२३  
यि३ही२ । वृष्णामाऽ२३स्मा२ । भ्य२मूऽ२३ । ताऽरुया३२३४  
अ५हो५वा२ । ह२विष्मते३२३४५ ॥ १९ ॥

हाविष्कृते द्वे—

३. दे५वा५ना५मि५द५वे५हा५उ५मा४हा५त् । त२दावृणायि ।  
महायिवाऽ२३यारमृ२ । वृष्णा४रुहो२ऽयि । आऽ२३स्मा२ ।  
भ्य२मूऽ२३ । ताऽरुया३२३४अ५हो५वा५ । ह२विष्कृते३२-  
३४५ ॥ २० ॥

४. दे॒प॒वा॒प॒ना॒प॒मि॒प॒द॒प॒वो॒प॒मा॒ऽहा॒प॒त्प॒ । तादा॒वृ॒रणी॒ २ । म॒रहा॒-  
यि॒वाऽ॒र॒३या॒र॒मू॒ २ । वृ॒ष्णा॒माऽ॒र॒३स्मा॒र॒३ । भ्य॒र॒मू॒२३४ऽ-  
वा॒प॒ । ता॒ऽप॒यो॒प॒६हा॒प॒यि॒प॒ ॥ २१ ॥

ऋषिः—मेधातिथिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१३९. सो॒मा॒नां॑ स्वर॒णं॑ कृ॒णु॒हि ब्र॒ह्म॒णस्प॑ते । क॒क्षी॒वन्तं॑ य औ॒शिजः॑ ॥

काक्षीवतम्—

१. सो॒प॒मा॒र॒३ना॒ऽऽस्व॒ऽर॒णा॒प॒म्प॒ । कृ॒र॒णू॒हि॒र॒ब्र॒ । ह्य॒रण॒र  
स्प॒ताये॒२३ । ओ॒र॒३४ । हा॒३हो॒र॒यि॒ २ । क॒क्षायि॒वाऽ॒र॒३न्ता॒र  
मू॒ २ । य॒र॒अ॒३हो॒रु॒यि॒ २ । अ॒३हो॒ऽर॒३४वा॒प॒ । शा॒ऽप॒यि॒प॒जो॒प॒६  
हा॒प॒ यि॒प॒ ॥ २२ ॥

ऋषिः—श्रुतकक्षः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१४०. बो॒ध॒न्म॒ना॒ इद॑स्तु नो वृ॒त्रहा॑ भू॒र्यासु॑तिः । शृ॒णो॑तु श॒क्र आ॑शिषम् ॥

औषसम्—

१. बो॒प॒ध॒प॒न्म॒ना॒प॒ः । इ॒दा॒ऽरु॒ स्तू॒ना॒ऽरु॒ । वृ॒र॒त्रहा॒र॒भू॒ । रिया॒ऽरु॒  
सू॒२३३४ति॒प॒ः । शृ॒णा॒र॒३४अ॒४हो॒प॒ । तु॒३श॒३क्र॒२आ॒ । शि॒ ।  
षाम् । अ॒ऽर॒३हो॒४वा॒प॒ । हो॒४ऽप॒यि॒ । डा॒प॒ ॥ २३ ॥

ऋषिः—श्यावाश्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१४१. अ॒द्या नो॑ दे॒व स॒वितः॑ प्र॒जाव॑त्सा॒वीः सौ॒भ॒गम् । प॒रा दुः॒ष्व॒प्य॒ सु॒व ॥

भरद्वाजस्य मौक्षे द्वे—

१. अ॒प॒द्य॒ऽनो॒प॒दे॒प॒व॒प॒स॒प॒वि॒प॒त॒प॒ः । अ॒४हो॒प॒वा॒४ । इ॒र॒ह॒श्रु॒

१. अत्र प्रकृतवत् 'सू२३४' अथवा 'सू ३२३४' एवं पाठः स्यात् ।

२. 'इह श्रुधि', 'दक्षाय' तथा 'अस्मभ्यं गातु वित्तमः' पदानीमानि मन्त्रे न सन्ति । --सम्पादकः

धायि । प्रजावाऽ२३त्सार । वी२स्सौभगाम् । परादूऽ२३ष्वा२३ ।  
होवा२३हार । जिरयःसूऽ२३४५वा५६५६ । १दक्षार३याऽ२३  
४५ ॥ २४ ॥

२. अ३द्या२३४ । नो४दे४व५सा५ । वि४ता५ः । प्र२जा२वत्सा ।  
वी२ स्सौभगाम् । पारा२३दू४ष्वा५ । जिरय२ः२सुवोवा२३ ।  
ओऽ२ । वा३२३४अ५हो५वा५ । १अ२स्मभ्यं२गा२तु२वित्त२  
मा३२३४ ५म् ॥ २५ ॥

ऋषिः—प्रगाथः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१४२. क्वा<sup>२</sup>३स्य<sup>१</sup> वृष<sup>२</sup>भो<sup>३</sup> युवा<sup>२</sup> तुवि<sup>२</sup>ग्रीवो<sup>१</sup> अनानतः<sup>२</sup> । ब्रह्मा<sup>३</sup> कस्तं<sup>१</sup> सपर्यति<sup>२</sup> ॥

भारद्वाजानि त्रीणि—

१. कुऽ२३४व४स्य४वा४ऽ५वा४ऽ५ऋ५ष५भो५यु४वा४ ।  
तु२वि२ ग्रीवो४२ । अ२नानताः । ब्रह्माकाऽ२३स्ता२म् २ ।  
ऐ४२ । हो२ऽआऽ२३ यि३ही२ । स२पर्या२३ता२३४ऽ३यि३ ।  
ओऽ२३४५यि५ डा५ ॥ २६ ॥

२. कु४वा५कु४वा५ । स्य२वृ२षा२३भोयु॑वा३ । ओ२३४ । हा३  
हो२यि२ । तु२वि२ग्री२वो२आ२३नानैर्ता३ः । ओ२३४ ।  
हा३हो२यि२ । ब्रह्माऽ२३ । काऽ२स्ता३२३४अ५हो५वा५ ।  
स२पर्य२ती३२३४५ ॥ २७ ॥

३. ऐ५ही५यै५ही५ । क्वा५स्य५वृ५ष५भो५यु४वा४ । ऐ५ही५यै५  
ही५ । तु५वि५ग्री५वो५अ५ना५न४ता४ः । ऐ५ही५यै५ही५ ।

१. 'इह श्रुधि', 'दक्षाय' तथा 'अस्मभ्यं गातु वित्तमः' पदानीमानि मन्त्रे न सन्ति । — सम्पादकः



ब्र॒ह्मा॒प॒क॒स्त॒प॒स॒प॒प॒र्य॒ष्टी॒ष्ट । ऐ॒प॒ही॒प॒यै॒प॒ही॒प । अ॒ऽरु  
यि॒रु । हि॒र॒या॒र॒३४अ॒प॒हो॒प॒वा॒प । आ॒३२३४यि॒ष्टही॒प ॥ २८ ॥

ऋषिः — वत्सः काण्वः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — गायत्री ॥ स्वरः — षड्जः ॥

१४३. उप॒ह्वरे॑ गिरीणां सङ्गमे च नदीनाम् । धिया विप्रो अजायत ॥

शाक्त्यसामनी द्वे—

१. उप॒ह्व॒र॒रा॒यि । गि॒रा॒४रु॒यि॒र॒णा॒म् । स॒ङ्गा॒मे॒र॒चा । न॒दा॒४रु॒यि॒र  
ना॒म् । धि॒या॒ऽवि॒र॒प्रो । अ॒जा॒य॒र॒ता । अ॒या॒म् । अ॒र॒या॒र॒३ऽउ ।  
वा॒ऽर॒३ । ऊ॒र॒३४पा॒प ॥ २९ ॥

२. इ॒र॒दा॒रु॒मी॒३२३४दा॒प॒म् । इ॒र॒दा॒मि॒र॒द॒३क॒रु॒म् । इ॒र॒दा॒रु॒-  
मी॒३२३४दा॒प॒म् ।<sup>१</sup> उ॒प॒प॒ह्व॒र॒रे॒र॒गी॒र॒३रा॒यि॒णा॒रु॒म् । इ॒र॒दा॒रु॒-  
मी॒३२३४दा॒प॒म् । इ॒र॒दा॒मि॒र॒द॒३क॒रु॒म् । इ॒र॒दा॒रु॒मी॒३२३४  
दा॒प॒म् । सं॒र॒ग॒र॒मे॒र॒च॒र॒ना॒र॒३दा॒यि॒ना॒रु॒म् । इ॒र॒दा॒रु॒मी॒३२३४  
दा॒प॒म् । इ॒र॒दा॒मि॒र॒द॒३क॒रु॒म् । इ॒र॒दा॒रु॒मी॒३२३४दा॒प॒म् ।  
धि॒र॒या॒र॒वि॒र॒प्रो॒र॒आ॒र॒३जा॒या॒ता॒रु । इ॒र॒दा॒रु॒मी॒३२३४दा॒प॒म् ।  
इ॒र॒दा॒मि॒र॒द॒३क॒रु॒म् । इ॒र॒दा॒र॒३मा॒४ऽप॒यि॒प॒दा॒प॒६५६म् ।  
गो॒ष्प॒र॒दे॒पृट् ॥ ३० ॥

ऋषिः — इरिम्बिठिः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — गायत्री ॥ स्वरः — षड्जः ॥

१४४. प्र॒ स॒म्राजं॑ च॒र्षणी॑नामिन्द्रं स्तोता नव्यं गीर्भिः । नरं नृषाहं महिष्ठम् ॥

१. प्र॒प॒सं॒प॒म्रा॒प॒जा॒प॒म् । चा॒ऋ॒षा॒४रु॒णा॒यि॒ना॒४रु॒म् । आ॒यि॒न्द्रा  
४रु॒ं॒र॒स्तो॒ता॒ऽर॒३ । न॒व्या॒ऽरु॒ङ्गा॒३२३४यि॒ष्टभी॒पः । ना॒रा॒४रु॒न्ना  
ऋ॒षा॒ऽर॒३ । ह॒४म्मो॒४वा॒प । हा॒४ऽप॒यि॒प॒ष्ठो॒प॒६हा॒प॒यि॒प ॥ ३१ ॥

१. मूलपाठेऽत्र 'उप॒प॒प॒' एवं लिखितम् ।

२. 'प्र' अस्मादग्रे २, ४, ५ एतासु काचित्संख्या विद्यतेऽस्पष्टत्वात् ज्ञायते । — सम्पादकः

२. प्र४सं५म्रा५जो४हा४यि४ । चा३रु५षाणि२३ना२म्२ । आ३यि३द्राः  
स्तो२३ता२३ । न॒व्याऽ२ङ्गा३२३४यि४भी५ः । ना५र३मो२  
यि२ । नृ३ । षा५ । ह३मो२३यि२ । म४ः४हा४ऽ५यि५ष्ठा५म्५ ।  
हो४ऽ५यि५ । डा५ ॥ ३२ ॥

प्रस्तोको द्वौ—

३. प्र३सं४म्रा३जं४च५ । ष३णा२३ऽ२३४यि४ना५म्५ । इं२द्राः  
स्तो२३ता२३ । न॒व्याऽ२ङ्गा३२३४यि४भी५ः । न४रं५नृ५षा४हं५  
मा४ऽ५ः५हि५ । आ५द॒हा५उ५वा५ । ष्ठा३२३४५ म्५ ॥ ३३ ॥
४. प्र४सं५म्रा४जं५च५ऋ५ष५णी५ना४मिं४द्र५ः५स्तो५ता५ न४ ।  
व्य५ङ्गा५द॒यि५भी५ः । इं॒द्रःस्तो॒ता न॒व्यङ्गाऽ२३यि२भी२३४ः ।  
न४रं५नृ५षा४ह५म्५ । मा४ऽ५ः५हि५ष्ठा४म्४ । स२ह२मै२है३  
हे । ऽ२ । या३२३४अ५हो५वा५ । मः२ही२३ष्ठाऽ२३४५  
म्५ ॥ ३४ ॥

[ इति ] अर्द्धप्रपाठकः ॥

ऋषिः—श्रुतकक्षः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१४५. अ॒पा॒दु॒ शि॒ष्य॒न्ध॒सः सु॒दक्ष॒स्य प्र॒हो॒षि॒णः । इ॒न्द्रो॒रि॒न्द्रो॒ यवा॒शिरः ॥

औपगवे द्वे—

१. अ॒पा॒दु॒सि॒षि॒ । प्रि॒यन्ध॒साः । सु॒दक्षाऽ२३स्या२ । प्र॒हो॒र  
षि॒णः । इ॒न्द्रो॒ राऽ२३यिं३द्रा२ः । य॒वा॒शाऽ२३यि३रा२ः । ऐ॒र ।  
हि॒याऽ२३यि२ । हि॒या२३४अ५हो५वा५ । ए॒र३ । उ॒प॒र३ऽ२३  
४५ ॥ १ ॥

२. अ॒प॒पा॒प॒दू॒र॒३शि॒प्रि॒४यं॒५ध॒५सा॒पः । सु॒र॒दक्ष॒स्य॒प्र॒हो॒षिणाः । इं॒र  
दौ॒४रु । हौ॒४रु । हु॒वाऽ॒र॒३यि॒३ । आ॒र॒३४यिं॒४द्रो॒५ । य॒५वा॒५  
शा॒४ यि॒४रा॒५ः । ऐ॒र । हा॒४रु॒एऽ॒र॒३ । हि॒३या॒र॒३४अ॒५हो॒५वा॒५ ।  
ए॒र॒३ । उ॒पा॒र॒३ऽ॒र॒३४५ ॥ २ ॥

ऋषिः—मेधातिथिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१४६. इ॒मा उ॒ त्वा पु॒रू॒व॒सोऽ॒भि प्र॒ नो॒नु॒वु॒र्गि॒रः । गा॒वो व॒त्सं न॒ धे॒नवः ॥

त्वाष्ट्रीसामम्—

१. इ॒मा॒५उ॒५त्वा॒५ । पु॒रू॒४रु॒वा॒सा॒४रु॒उ॒र । अ॒भि<sup>१</sup>प्र॒नो॒न॒वू॒४रु॒र्गा॒यि  
राऽ॒रु । अ॒३हो॒र॒५यि । गा॒॒र॒वो॒॒र॒वा॒त्साऽ॒र॒३म्॒३ । नाऽ॒र॒३धे॒४ऽ॒३ ।  
ना॒र॒३४५॒वो॒५६हा॒५यि॒५ ॥ ३ ॥

ऋषिः—गोतमः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१४७. अ॒त्रा॒ह गो॒रम॒न्व॒त॒ नाम॒ त्व॒ष्टु॒रपी॒च्यम् । इ॒त्था च॒न्द्र॒म॒सो गृ॒हे ॥

त्वष्टुरातिथ्ये द्वे—

१. आ॒४त्रा॒५ । <sup>२</sup>हा॒रगो॒रम॒न्व॒ता उ॒ वाऽ॒र॒३ । हो॒वाऽ॒र॒३हो॒यि । ना॒म  
त्व॒ष्टु॒रपी॒ चि॒या उ॒ वाऽ॒र॒३ । हो॒वाऽ॒र॒३हो॒यि । इ॒र॒त्था च॒न्द्र॒म॒सो  
गृ॒हा उ॒ वाऽ॒र॒३ । हो॒वाऽ॒र॒३हो॒ऽ॒रु । वा॒३॒र॒३४अ॒५हो॒५वा॒५ ।  
ऊ॒३॒र॒३४पा॒५ ॥ ४ ॥
२. हा॒४वा॒४त्रा॒५ । हा॒रगो॒रम॒न्व॒ता उ॒ वाऽ॒र॒३ । हो॒यि॒याऽ॒र॒३ । हा॒४रु  
ऊ॒ वा । यि । ना॒म त्व॒ष्टु॒रपी॒चि॒या॒मि॒या उ॒ वाऽ॒र॒३हो॒वाऽ॒र॒३  
हा॒४रु॒२ इ॒या । इ॒र॒त्था च॒न्द्र॒म॒सो गृ॒हा उ॒ वाऽ॒र॒३ । हो॒इ॒याऽ॒र॒३ ।  
हा॒४रु॒ ऊ॒ वाऽ॒रु । या॒३॒र॒३४अ॒५हो॒५वा॒५ । ऊ॒३॒र॒३४पा॒ ॥ ५ ॥

१. मूलवेदेऽत्र 'प्र नोनुवुः' इति पाठः ।

२. मूलग्रन्थेऽत्र 'तार' इति लिखितम् । 'हार' इत्युचितः पाठः । —सम्पादकः

ऋषिः—भरद्वाजः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१४८. यदिन्द्रो<sup>२३</sup> अनयद्रितो<sup>३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ २</sup> महीरपो<sup>१ २ ३ १ २ ३ १ २</sup> वृषन्तमः । तत्र पूषाभुवत् सचा ॥

१. य॒पदि॑प॒द्रो॒पया॑प । नायाऽ२३त्३ । ओमो२३म्३ । ओ४वा॑प ।  
रितो॒मही॒रापाऽ२३ः । ओमो२३म्३ । ओ४वा॑प । वृषावृषाऽ२ ।  
त३मा२३४अ॒पहो॑पवा॑प । तत्र२पूर॑षाभु॒रवर॑त्सचा३२३४प ॥ ६ ॥
२. य॒पदि॑प॒द्रो॒पअ॑पन॒पय॑प॒द्रि॒पता॑प॒दए॑प । मही॒रापा॑४२ुः । मही॒रा  
पाऽ२३ः । वा॒ऋषं॑२ता३२३४मा॑पः । तत्रा॒पूषा॑२३ । पूऽ२ुषा३२  
३४अ॒प हो॑पवा॑प । भु॒रवर॑त्सचा३२३४प ॥ ७ ॥

ऋषिः—बिन्दुः पूतदक्षो वा ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१४९. गौर्ध॑यति मरुतां<sup>३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २३ ३ १ २</sup> श्रव॑स्युर्माता मघो॒नाम् । युक्ता॑ व॒ह्नी र॑थानाम् ॥

श्यावाश्वे द्वे—

१. गौ॒प॒र्द्ध॑प॒याप॑दए॒प । ति॒रम॑र॒रु॒रता॑२३म्३ । श्रि॒वा॒स्यु॒र्मा॒ता॑ ।  
ता॒रम॑रु॒घो३२३४ना॑प॒म्प । युक्ता॑व॒ह्नायिः । र३था॑२३ । नाऽ२  
मा३२३४अ॒पहो॑पवा॑प । ऊ३२३४पा॑प ॥ ८ ॥
२. गौ॒प॒र्द्ध॑प॒य॒पति॑प॒मप॑रु॒पता॑प॒दमे॑प । श्र॒रवर॑स्युर्मा॒र॑ता मघो॒  
ना॒र॑म् । उ॒रहु॑वाऽ२३हा॒रयि॑र । यु॒रक्ता॑वाऽ२३ह्नि॒रः । उ॒र  
हू॒वा॒र३ । हा॒रुयि॑रु । र३था॒रना॑म् । अऽ२३हो॒वा॑प । हो॒वा॑प  
यि॑प । डा॑प ॥ ९ ॥

ऋषिः—श्रुतकक्षः सुकक्षो वा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१५०. उप॑ नो ह॒रिभिः॑ सु॒तं या॑हि म॒दानां॑ प॒ते । उप॑ नो ह॒रिभिः॑ सु॒तम् ॥

प्रजापतेः सुतः रयिष्ठीये द्वे—

१. उ२पनोऽ२३ह४रि४भि५स्सु५तो४वा५ । या२रहि मदा२३ना३  
म्प२ । ताऽ२३ । यि३ । उ२प३नो२३ । हा२३ओऽ२३४वा५ ।  
रा३२३४यि४भी५ः । सु२ताम् । अऽ२३हो४वा५ । हो४ऽ५यि५ ।  
डा ॥ १० ॥
२. उ५प५नो५हा५हो४हा५ । रा४यि४भी५ः । सूऽ२३ता२म् ।  
याहिम२दा२ । ना॒म्पाऽ२३ता२यि२ । उ३पा२नो३२३४हा५ ।  
राऽ२यि२भा३२३४अ५हो५वा५ । सु२तः रयि२ष्ठाऽ२३  
४५ः ॥ ११ ॥

ऋषिः—श्रुतकक्षः सुकक्षो वा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥

स्वरः—षड्जः ॥

१५१. <sup>३ १ २२</sup>इष्टा होत्रा <sup>३ १ २ ३ १ २</sup>असृक्षतेन्द्रं <sup>३ २ १ २ ३ १ २२</sup>वृधन्तो अध्वरे । <sup>३ १ २२</sup>अच्छावभृथमोजसा ॥

इष्टाहोत्रीयम्—

१. इ५ष्टा५हो४त्रा५ः । आसृ२क्षा३२३४ता५ । इं२द्रम्बृ४धा । तौऽ२  
ध्वा३२३४रा५यि५ । आच्छा२३वो४भृ५<sup>१</sup> । थ३मो२३जा४ऽ५  
सा५६५६ । ए२३ । उ२द२धि२न्नि२धी२ऽः ॥ १२ ॥

ऋषिः—वत्सः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१५२. <sup>३ २ ३</sup>अहमिद्धि <sup>३ १ २२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २</sup>पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रह । <sup>३ १ २२</sup>अहं सूर्यइवाजनि ॥

निधनकामम्—

१. अ४ह४मि४द्धा४ऽ५यि५ । पि५तु५ष्प४रा४यि४ । मे२धा॒मृतस्य  
जग्रहा । अ२हः सूर्याः । इ॒वाऽ२३४ । हा॒इहो२यि२ । जनि । होयि ।  
२ । अ॒रहो॒अ॒रहो॒वाऽ२३४५हा५उ५ । वा५ ॥ १३ ॥

ऋषिः—शुनःशेषः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१५३. रेवतीर्नः सधमाद इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः । क्षुमन्तो याभिर्मदेम ॥

वाजदावर्यम्—

१. रे५व५ती५र्त्ता५ः । सधाऽरुमा३२३४दा५यि५ । इंद्राऽरुयि२  
सा३२३४न्तू५ । तुरविवा४रुजाः । क्षूऽर३मा२ । तो४रुया ।  
भिरम्मोऽ२३४वा५ । दा४ऽ५यि५मो५६हा५यि५ ॥ १४ ॥

ऋषिः—शुनःशेषो वामदेवो वा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥  
स्वरः—षड्जः ॥

१५४. सोमः पूषा च चेततुर्विश्वासां सुक्षितीनाम् । देवत्रा रथ्योर्हिता ॥

सोमाः पौषम्—

१. सो५म५ष्पू५षा५ । च२चायिततु२ः । अ३या२यो३२३४वा५ ।  
वायिश्वासां२सु२क्षि२ती२ । ऽ३नाम् । अ३या२यो३२३४  
वा५ । दायिर्वत्रा राऽ२३ । थि३यो२३ऋ३हा४ऽ५यि५ता५६  
५६ । गा॒वो॒रँअश्वा३२३४५ः ॥ १५ ॥

[ इति ] दशतिः ॥

ऋषिः—श्रुतकक्षः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

१५५. पान्तमा वो अन्धस इन्द्रमभि प्र गायत ।

विश्वासाहं शतक्रतुं मंहिष्ठं चर्षणीनाम् ॥

वैतहव्यानि त्रीणि—

१. पा४न्त५मा४वो५अं४न्ध५सा४ः । इं२द्रा॒माभी२ । प्र२गा॒या  
ता२३ । हा२३हा२यि२ । वि२श्वासाह२मृ२ । श२ताक्रातू२३

१. हस्तलेखेऽस्पष्टत्वात्त्रैव ज्ञायतेऽत्र 'ती२ । ३ नाम्' एवं पाठोऽथवोपरि दर्शित इवास्ति ।

—सम्पादकः

म३ । हार३ हारयिर । म२रहाइष्ठंचार३ । हार३हार । षर  
णाऽरुयिरु । ना३२३४अ५हो५वा५ । ऊर३ऽर३४ पा५ ॥ १६ ॥

२. पा४न्त५मा४वो५अं४ध५स५ः । इ४हा४ । इं२द्र२मभायि ।  
प्र२गा२ यता४रु । इहार । विश्वा॒सा॒हः॒शता४रुक्र२तूम् । इहार ।  
म२रुहा४रुयिरष्ठं२चा । इहार । षरणा४रुयिरनाम् । इहा३२  
३४५ ॥ १७ ॥

ओकोनिधनम्—

३. पा३ऽ५न्त५म्५ । आ४ऽ३वो२३अं४ध४सा५ः । आयिंद्रा-  
मभायि । प्र॑गाऽरुया३२३४ता५ । विश्वाऽरुसा३२३४हा५म्५ ।  
शा२३ ताक्रा२३तूरम्२ । म२हिरष्ठं२चक्रष२ । णाये२३ ।  
नाऽरुमा३२३४५अ५हो५वा५ । ओ२३का३२३४५ः ॥ १८ ॥

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१५६. प्र व इन्द्राय मादनं हयश्वाय गायत । सखायः सोमपात्रे ॥

शाक्त्यसामानि षट्—

१. प्रवइंद्राऽरु । य३मारुदा३२३४ना५म्५ । प्र२वा४रुइन्द्रा । अ२३  
होरु । या३२३४मा५ । हा२३नारम्२ । ह२रा४रुअश्वा । अ२३  
होरु । या३२३४गा५ । या२३तार । स२खा४रुयास्सो । अ२३  
होर३ । मापोऽ२३४वा५ । आ४ऽ५व्नो५६हा५ यि५ ॥ १९ ॥
२. प्रवा४रुइंद्रा । अ२३होरु । या३२३४मा५ । दा२३नारम्२ ।  
ह२रा४रु । अश्वा । अ२३होरु । या३२३४गा५ । या२३तार ।  
स२खा४रुयास्सो । अ२३होर३ । मापोऽ२३४वा५ । आ४ऽ५  
व्नो५६हा५यि५ ॥ २० ॥



३. प्र२व२ई३या२ । ई३या२ । इंद्रोई३या२ । ई३या२ । या३२३४  
मा५ । दा२३ना२म् । ह२र२ई३या२ई३या२ । आश्चोई३या२ ।  
ई३या२ । या३२३४गा५ । या२३ता२ । स२ख२ई३या२ । ई३या२ ।  
यास्सोई३या२ । ई३या२३ । मापोऽ२३४वा५ । आ४ऽ५व्नो५६  
हा५यि५ ॥ २१ ॥

४. प्र२वौ२होवा४२ । इंद्रौहोवा४२ । या३२३४मा५ । दा२३ना२म् ।  
ह२रौ२होवा४२ । आश्चौहोवा४२ । या३२३४गा५ । या२३ता२ ।  
स२खौ२होवा४२ । यास्सौहोवा२३ । मापोऽ२३४वा५ । आ४ऽ५  
व्नो५६हा५यि५ ॥ २२ ॥

५. प्र२वो२दा२३दा । अ२३हो२ । इंद्रोददा । अ२३हो२ । या३२३४  
मा५ । दा२३ना२म् । ह२रि२दा२३दा । अ२३हो२ । आश्चोददा ।  
अ२३हो२ । या३२३४गा५ । या२३ता२ । स२खि२दा२३दा ।  
अ२३ हो२ । यास्सोददा । अ२३हो२३ । मापोऽ२३४वा५ ।  
आ४ऽ५व्नो५६हा५ । यि५ ॥ २३ ॥

६. प्र४व५ः । प्र५वा४ः । इं२द्रा२र्ये२द्रा२ । यमादा२ऽना४२म् ।  
ह२रा२यि२ह२र्य२श्वा२ । यगाया२ऽरता४२ । सखाया२३  
स्सो२३ । मापोऽ२३४वा५ । आ४ऽ५व्नो५६हा५यि५ ॥ २४ ॥

ऋषिः — मेधातिथिप्रियमेधौ ॥ छन्दः — गायत्री ॥ स्वरः — षड्जः ॥

१५७. वयमु३१२ त्वा३१२ तदि३१२ द३१२ र्था३२३ इं३न्द्र३ त्वा३यन्तः३ स३खा३यः३ । क३ण३वा३ उ३क्थे३भि३र्ज३रन्ते३ ॥

काण्वे द्वे—

१. व५यं५वा४या५म्५ । ऊ३२३४त्वा५ । ता२दी२दा३२३४  
र्था५ः । इं३द्र३त्वा५यं४त५ः । स३खा३२३४या५ः । २ । क३ ।

ण्वार३ऽर३४ः । उ४क्थे४भि५र्ज्ज५रं५ते५ । ए५हि५या५६  
हा५ । हो४ऽ५यि५ । डा५ ॥ २५ ॥

२. व५य५मूर३त्वा४त४दि४द४र्था५ः । ऐ॒हीहा४रु॒यि२ । व२  
यमु॒त्वा॒तदि॒दार्था॒ इन्द्र त्वायं॑तस्स२खाऽ२३याऽ२ः ।  
का३२३४ण्वा५ः । ऊ । कथा॒यि । भि२र्ज्जाऽ२३४वा५ ।  
रं२ता२३या३२३४५ ॥ २६ ॥

ऋषिः — श्रुतकक्षः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — गायत्री ॥ स्वरः — षड्जः ॥

१५८. <sup>१ २ ३ १ २ ३ १ २ २</sup>इन्द्राय म॒द्वने सु॒तं परि॒ष्टोभ॑न्तु नो गिरः । <sup>३ १ २ ३ १ २ ३ १ २</sup>अ॒र्कम॑र्चन्तु कारवः ॥

गौरीवीते द्वे—

१. इ॒न्द्रा५य५म४द्व५ना४यि४ । सु॒रता॑म् । इ॒न्द्राय॑म॒द्वने॒ सु॒रता॑म् ।  
प॒रायि॑ष्टोऽ२३भा॒र । तु॒रनो॑गि॒रो । अ॒र्कमा॑ऽ२३र्च्चा॒र ।  
तु॒रका॒राऽ२३वा॒र३४ऽ३ः । ओऽ२३४यि५ । डा५ ॥ २७ ॥
२. इ॒न्द्रा५य५म४द्व५ने५हा५उ५ । ओ॒यिसू॒र३ता॒रम् । परि॑ष्टो॒र ।  
भा । तुँनो॑ऽ२३हा॒रयि॒र । गा॒यिरा४रुः । परि॑ष्टो॒भातु॒ । ओ॒नोऽ२३  
हा॒रयि॒र । गा॒इरा४ रुः । अ॒र्काऽ२३म् । आऽरु॑र्चा॒र३३४  
अ॒हो५-वा५ । ए॒र३ । तु॒रका॒र३रवा॑ऽ२३४५ः ॥ २८ ॥

श्रौतकक्षम्—

३. इ॒न्द्रा५य५म४द्व५ने५सु५त४म् । इ॒न्द्रा५य५मो४वा५ । द्वा॒र३  
ना॒यिसू॒र३ता॒रम् । परि॑ष्टो॒र । भाऽ२३ । हा॒र३हा॒र३ । तू  
नोऽरु॑गा॒र३३४यि॒रा५ः । आ॒र्कम॑र्च्चा॒र३ । हो॒र३हा॒र ।  
तु॒रका॒राऽ२३ वा॒र३४ऽ३ः । ओऽ२३४यि५ । डा५ ॥ २९ ॥

ऋषिः—इरिम्बिठिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१५९. अयं त इन्द्र सोमो निपूतो अधि बर्हिषि । एहीमस्य द्रवा पिब ॥

सौमित्रे द्वे—

१. अ५यं५त५आ५<sup>१</sup> । द्र२सो॒मो । हो॒वा२३हो॒यि । नि॒र॒पू॒तो॒आ२३ ।  
धी॒ब२ऋ२हा३२३४यि४षी५ । आ॒यि॒ही॒र॒म॒र॒स्याऽ२३ । द्राऽ२  
वा३२३४अ॒प॒हो॒प॒वा५ । पी३२३४बा५ ॥ ३० ॥
२. अ५यं५त५इं५द्र५सो५ऽ४मा५ः । नि॒पू॒तो॒अ॒धि॒बा४२ुऋ२हा॒यि॒षी  
४२ु । ऐ॒र॒हो४२ुयि॒र॒मा॒स्या । द्र॒वा॒पा॒यि॒बा४२ु । आ॒यि॒ही॒म  
स्या॒द्र॒वा॒३ऽउ॒वाऽ२३ । पी३२३४बा५ ॥ ३१ ॥

इहवद्वैवोदासम्—

३. अ४यं३त४इं४द्र४सो३ऽ४म५ः । नाऽ२३४यि४ । पू॒ठ॒तो॒प॒अ४  
धि५ब५ऋ५हि४षि५ । नि॒पू॒तो॒अ॒धि॒र॒ब॒ऋ॒ह॒ऽ२३यि३षी२ । ऐ॒र  
हो॒यि॒माऽ२३स्या२ । द्र॒वा॒पाऽ२३४प॒यि॒बा५६५६ । ई३२३४  
हा५ ॥ ३२ ॥

ऋषिः—मधुच्छन्दाः ॥ देवता—प्रजापतिः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१६०. सुरूपकृत्तुमूतये सुदुधामिव गोदुहे । जुहूमसि द्यविद्यवि ॥

रैणवे द्वे—

१. सू॒रूप५ । प॒र॒कृ॒त्तु॒मू॒त॒र॒या॒यि । सु॒र॒दु॒धा॒र॒म् । इ॒व गो४२ु ।  
दु॒ह॒र॒या॒३ऽउ॒वाऽ२३ । ऊ॒र३४पा५ । जु॒र॒हू॒माऽ२३सी॒र॒द्य॒वि  
द्य॒वि॒र॒या॒३ऽउ॒वाऽ२३ । ऊ॒र३४पा५ ॥ ३३ ॥

१. मन्त्रानुकूलमत्र 'आ' इत्यस्य स्थाने 'आयि' अथवा 'इ' इति स्यात् । —सम्पादकः

२. सु॒प॒रू॒प॒हा॒प॒उ॒प । प॒र॒कृ॒त॒मू॒४॒रु॒ता॒या॒४॒रु॒यि॒र । सु॒र॒दु॒घा॒२॒म॒२ ।  
 इ॒व॒गो॒४॒रु । दु॒हे॒२ । ऐ॒र॒ही॒२॒यै॒३॒ही॒२॒ऽ । जु॒र॒हौ॒४॒रु । हौ॒४॒रु ।  
 हु॒वा॒४॒रु॒यि॒र । मा॒सी॒४॒रु । द्य॒वि॒द्य॒वि । ऐ॒र॒ही॒२॒यै॒३॒ही॒२॒ऽ ॥ ३४ ॥
३. सु॒र॒रू॒२॒प॒र॒कृ॒२॒तू॒२॒३॒मू॒ता॒ऽ॒२॒३॒४॒या॒प॒यि॒प । ओ॒यि॒सु॒रू॒प  
 कृ॒त॒मू॒२॒ऽ॒ता॒या॒४॒रु॒यि॒र । ओ॒यि॒सु॒दु॒घा॒मि॒वा॒गो॒२॒ऽ॒दु॒हा॒४॒रु ।  
 यि॒र । जु॒हू॒म॒सा॒ऽ॒रु॒यि॒रु । द्य॒३॒वि॒र॒द्या॒३॒२॒३॒४॒वी॒प । ऐ॒४॒ही॒प ।  
 जू॒हू॒४॒रु॒मा॒सी॒४॒रु । द्य॒२॒वि॒द्या । वी॒वी॒ऽ॒२॒३ । आ॒४॒अ॒प॒हो॒प॒यि॒प ।  
 आ॒४॒अ॒प॒हो॒प॒६॒वा॒प । ए॒२॒३ । द्य॒२॒वी॒२॒३ई॒ऽ॒२॒३॒४॒प ॥ ३५ ॥
४. सु॒४॒रू॒प॒प॒प॒क्रे॒४ । लू॒मू॒४॒रु॒त॒२॒या॒यि । सु॒र॒दु॒घा॒मी॒२॒३ । वा॒गो॒रु  
 दू॒३॒२॒३॒४॒हा॒प॒यि॒प । सु॒४॒दु॒प॒घा॒प॒मा॒४ । वा॒गो॒४॒रु॒दु॒२॒हा॒यि ।  
 जु॒र॒हू॒मा॒ऽ॒२॒३॒सी॒२॒३ । द्या॒ऽ॒२॒३॒वी॒४॒ऽ॒३ । द्या॒२॒३॒४॒प॒वो॒प॒६॒हा॒प  
 यि॒प ॥ ३६ ॥

[ इति ] चतुर्थः प्रपाठकः ॥

ऋषिः—त्रिशोकः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१६१. अ॒भि॒ त्वा॒ वृ॒ष॒भा॒ सु॒ते॒ सु॒तं॒ सृ॒जामि॒ पी॒तये॒ । तृ॒म्पा॒ व्य॒श्रु॒ही॒ म॒दम् ॥

१. अ॒प॒भि॒४॒त्वा॒प॒वृ॒ष॒प॒भा॒प॒सु॒प॒ता॒४॒यि॒४ । सू॒तः॒सृ॒र॒जा॒२ । मि॒र  
 पा॒यि॒ता॒२॒ऽ॒या॒४॒रु॒यि॒र । त्र्यं॒२॒पा॒वा॒२॒ऽ॒या॒ऽ॒२ । श्नु॒र॒हा॒२॒३॒ऽ  
 उ॒वा॒ये॒२॒३ । मा॒३॒२॒३॒४॒दा॒प॒म् ॥ १ ॥

२. अ॒प॒भि॒प॒त्वा॒प॒वृ॒ष॒प॒भा॒प॒सु॒प॒ते॒प॒अ॒प॒भ्या॒प॒हा॒प॒उ॒प । त्वा॒२  
 व्रे॒२॒३॒षा॒भा॒२॒ऽ॒सू॒ता॒४॒रु॒यि॒र । सू॒तः॒सृ॒र॒जा॒२ । मि॒र॒पा॒यि॒ता॒२॒ऽ  
 या॒ऽ॒रु॒यि॒रु । त्र्यं॒३॒पा॒२॒३॒हो॒यि । वि॒३॒या॒२॒३॒हो । श्नु॒र॒ही॒मा॒ऽ  
 २॒३॒दा॒२॒३॒४॒ऽ॒३म् ३ । ओ॒ऽ॒२॒३॒४॒प॒यि॒प । डा॒प ॥ २ ॥

३. अ॒प॒भि॒ष्ठ॒त्वा॒प॒वृ॒ष॒प॒भा॒प॒सु॒प॒ते॒४ । सु॒प॒त॒प॒२॒प॒सृ॒प॒जो॒ष्ठ॒वा॒प ।  
मि॒र । पी॒र॒ता या॒४रु॒यि॒र । सु॒र॒त॒२॒सृ॒जा॒र॒मि॒र । पी॒ताऽ॒र॒३  
या॒र॒यि॒र । त्राऽ॒र॒३म्पा॒र॒३ । वाऽ॒रु॒या॒३॒र॒३४अ॒प॒हो॒प॒वा॒प । श्नु॒र  
ही॒र॒मदां॒३॒र॒३४प॒म्प ॥ ३ ॥

ऋषिः—कुसीदी ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१६२. य<sup>१ २</sup> इन्द्र<sup>३ १</sup> चमसेष्वा<sup>२२ ३ १ २</sup> सोमश्चमूषु<sup>३ २</sup> ते सुतः<sup>१ २२ ३ १ २</sup> । पिबेदस्य<sup>१ २</sup> त्वमीशिषे ॥

कौत्से द्वे—

१. या॒३ही॒र॒न्द्राऽ॒र॒३ । च॒म॒प॒से॒ष्ठ॒षु॒ष्ठ॒वा॒४ई॒४या॒प । सो॒म॒श्च॒र॒मू॒षु  
ते॒र॒सु॒र॒तः । सो॒म॒श्च॒र॒मू॒र । षु॒र॒ता॒यि॒सूऽ॒र॒३ता॒रः । पा॒इ॒बे॒र॒३  
द्वा॒र॒यि॒र । आ॒स्या॒र॒३हा॒र॒यि॒र । त्व॒र॒मी॒शाऽ॒र॒३यि॒३षा॒र॒३४  
ऽ३यि॒३ । ओऽ॒र॒३४प॒यि॒प । डा॒प ॥ ४ ॥

२. य॒प॒इं॒प॒द्रा॒प॒चा॒प॒मा॒प॒द॒से॒षु॒प॒वा॒प । सो॒म॒श्च॒मू॒षु॒ता॒र॒यि॒सू॒र॒३  
ता॒रः । सो॒र॒म॒श्च॒र॒मू॒र॒३ । षू॒र॒३ता॒यि॒सू॒र॒३ता॒रः । आऽ॒र॒  
यि॒र । पि॒र॒बे॒र॒द॒स्यो॒३॒र॒३४हा॒प॒यि॒प । त्व॒३मा॒र॒३यि॒३शा॒४ऽप॒  
यि॒प षा॒प॒द॒प॒द॒यि॒द ॥ ५ ॥

ऋषिः—शुनःशेषः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१६३. यो॒गे॒यो॒गे॒ तव॒स्तरं॒ वा॒जे॒वा॒जे॒ हवा॒महे॒ । स॒खा॒य॒ इन्द्र॒मू॒तये॒ ॥

सौमेधानि त्रीणि—

१. यो॒४गे॒प॒यो॒प॒गे॒प॒त॒प॒व॒४स्त॒४रा॒४म् ४ । वा॒जे॒वा॒र॒जे॒र॒ह॒र॒वा॒र॒म॒र  
हे॒र । स॒र॒खा॒याऽ॒र॒३ई॒र॒३ । द्र॒र॒मू॒ऽर॒३वा॒प । ता॒४ऽप॒यो॒प॒द  
हा॒प॒यि॒प ॥ ६ ॥

२. यो॒प॒गे॒प॒यो॒प॒गे॒प॒त॒प॒व॒प॒स्ता॒प॒द॒रा॒प॒म्प॒ । वा॒जै॒र॒वा॒जै॒र॒ह॒वा॒रँ॒म॒र॒  
हे॒र॒३ । हो॒वा॒र॒३हा॒र॒यि॒र॒ । सा॒खा॒४रु॒याई॒ऽर॒३ । हो॒वा॒र॒३हा॒र॒  
यि॒र॒ । द्र॒मू॒ऽर॒३ । ता॒ऽरु॒या॒३२॒३४अ॒प॒हो॒प॒वा॒प॒ । ऊ॒र॒३ऽर॒३४  
पा॒प॒ ॥ ७ ॥

३. यो॒प॒गे॒प॒यो॒गे॒प॒त॒प॒वा॒प॒हा॒प॒उ॒प॒स्ता॒४रा॒प॒म्प॒ । वा॒जे॒वा॒र॒जे॒र॒ । ह॒र॒  
वा॒४रु॒माहा॒यि॒ । हू॒वा॒यि॒ । अ॒र॒३हो॒३२॒३४वा॒प॒ । सा॒खा॒२य॒र॒इ॒ ।  
द्र॒मू॒४रु॒ताया॒यि॒ । हू॒वा॒यि॒ अ॒र॒३हो॒३२॒३४वा॒प॒ । स॒३खा॒३य॒र॒आ॒ ।  
हू॒वा॒४रु॒यि॒र॒ । अँ॒र॒३हो॒३२॒३४प॒वा॒प॒६॒प॒६ । द्र॒मू॒र॒३त॒ये॒ऽर॒३-  
४॒प॒ ॥ ८ ॥

ऋषिः—मधुच्छन्दाः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१६४. आ त्वेता<sup>२३</sup> नि<sup>३</sup> षीदतेन्द्रमभि<sup>१ २ ३ १ २ ३ १ २२</sup> प्र गायत । सखायः<sup>१ २ ३</sup> स्तोमवाहसः<sup>१ २</sup> ॥

१. आ॒३तू॒र॒३४ । ए॒४ता॒४नि॒४षी॒प॒दा॒प॒६ता॒प॒ । इं॒र॒द्र॒म॒भाइ॒ ।  
प्र॒रगा॒२ य॒ता । सा॒खा॒२य॒र॒स्तो॒म॒ । वा । अ॒र॒३हो॒२ । व॒वा॒ऽरु॒  
हा॒३२॒३४सा॒प॒ । ह॒र॒या॒यि॒ । सा॒खा॒२य॒र॒स्तो॒म॒ । वा । अ॒र॒३हो॒२ ।  
हु॒म्मा॒ऽर॒३ । हा॒र॒३४प॒सो॒प॒६हा॒प॒यि॒प॒ ॥ ९ ॥

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१६५. इदं<sup>३ १</sup> ह्यन्वोजसा<sup>२२</sup> सुतं<sup>३ १ २</sup> राधानां पते । पिबा<sup>२ ३</sup> त्वा॒३स्य<sup>२</sup> गिर्वणः<sup>१ २</sup> ॥

अंगिरसानि त्रीणि—

१. इ॒प॒दा॒प॒६मे॒प॒हि॒र॒या॒र॒३नू॒ ओ॒र॒ऽजा॒सा॒४रु॒ । सू॒तः॒२रा॒धा॒२ ।  
ना॒म्पा॒२ऽता॒४रु॒यि॒र॒ । पि॒बा॒तु॒व॒स्या॒र्गि॒र्व्वा॒णा॒ऽर॒३४ः । पि॒३बा॒  
२॒३४तु॒३वा॒र॒३ । स्या॒ऽरु॒गा॒३२॒३४अ॒प॒हो॒प॒वा॒प॒ । वा॒३२॒३४  
णा॒प॒ः ॥ १० ॥

२. इ॒प॒द॒५॒५॒हि॒५॒या॒५॒ऽ॒४॒अ॒४॒हो॒५॒ । नू॒३ओ॒रु॒जा॒३२३४ सा॒५॒ ।  
 सू॒त॒२॒रा॒धा॒२॒ । ना॒३ओ॒रु॒मू॒रु॒ । पा॒३२३४ता॒५॒यि॒५॒ । पि॒बा॒तु॒-  
 व॒स्या॒ऽ॒२३॒ । ग॒४॒ । वा॒४हा॒५॒यि॒५॒ । वा॒ऽ॒२३४णा॒४ः॒ । ए॒५॒  
 हि॒५॒या॒५॒६ हा॒५॒ । हो॒४ऽ॒५॒यि॒५॒ । डा॒५॒ ॥ ११ ॥

राधुच्छंदसं क्रोचम्—

३. इ॒प॒द॒५॒५॒ह्य॒५॒नू॒५॒६ओ॒५॒ज॒५॒सा॒५॒ । सु॒२त॒२रा॒धा॒२॒ । ना॒म्पा॒तौ॒२॒ ।  
 हो॒२ वा॒२३हा॒२यि॒२॒ । पि॒२बा॒तु॒व॒२॒ । स्य॒२गा॒यि॒र्व्वा॒णौ॒२हो॒२  
 वा॒२३ हा॒२यि॒२॒ । पि॒२बा॒तु॒वौ॒२॒ । हो॒२वा॒२३हा॒२॒ । स्य॒२  
 गा॒ये॒२३४॒ । वा॒ऽ॒रु॒ना॒३२३४अ॒५॒हो॒५॒वा॒५॒ । घृ॒२त॒२श्चु॒ता॒३२  
 ३४५ः ॥ १२ ॥

ऋषिः—मधुच्छन्दाः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१६६.महो<sup>३ १ २</sup> इन्द्रः<sup>२२ ३ १ २</sup> पुरश्च<sup>३ १ २</sup> नो महित्वमस्तु<sup>३ १ २</sup> वज्रिणे<sup>१ २२ ३ १ २२</sup> । द्यौर्न<sup>१</sup> प्रथिना<sup>२२ ३ १ २२</sup> शवः ॥

वाग्मनि त्रीणि—

१. म॒४हा॒४२४इं॒५॒द्रा॒५ः॒ । पु॒२र॒२श्च॒नो॒ । मा॒२ऽ॒ही॒४रु॒त्वा॒मा॒४रु॒ । स्तु॒२  
 व॒२ । जि॒णा॒यि॒ । द्यौ॒४रु॒र्ना॒प्रा॒४रु॒ । थि॒२ना॒शा॒ऽ॒२३वा॒२३४ऽ॒३॒ ।  
 ओ॒ऽ॒२३४५यि॒५॒डा॒५॒ ॥ १३ ॥
२. म॒५हा॒५हा॒५इं॒४॒द्रा॒५ः॒ । पू॒२३रा॒श्चा॒२३नो॒२ । म॒हा॒ऽ॒रु॒यि॒रु॒त्वा॒३२  
 ३४मा॒५॒ । स्तु॒२वौ॒३हौ॒२३॒ । ह॒४वा॒४ऽ॒५जि॒५णा॒५यि॒५॒ ।  
 द्यौ॒र्नप्रा॒थि॒२ ना॒श॒वा॒ऽ॒२३ः॒ । द्यौ॒ । ऽरु॒र्ना॒३२३४प्रा॒५॒ । थि॒२नौ॒३  
 हौ॒२३॒ । ह॒४वो॒४वा॒५॒ । शा॒४ऽ॒५वो॒५६हा॒५यि॒५॒ ॥ १४ ॥



३. म॒हा॒४इं॒४द्रा॒४ऽप॒ष्पु॒पर॒प॒श्च॒४ना॒४ः । मा॒३हि॒र॒त्वा॒३ऽ२३२३  
मा॒२ । स्तु॒३व॒र॒ज्रा॒३ऽ२३२३२३यि॒३णा॒२यि॒२ । द्यौ॒२र्त्ना॒३ऽ२३२३  
२३प्रा॒२ । थि॒३ना॒३श॒र॒वा॒३ऽ२३२३२३४ऽ३ः । ओ॒२३४५  
यि॒५ । डा ॥ १५ ॥

ऋषिः—कुसीदी काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१६७. आ<sup>१</sup> तू<sup>२२</sup> न<sup>३१</sup> इन्द्र<sup>२</sup> क्षुमन्तं<sup>३२</sup> चित्रं<sup>३३</sup> ग्राभं<sup>३४</sup> सं<sup>२२</sup> गृभाय<sup>३</sup> । महाहस्ती<sup>१</sup> दक्षिणेन<sup>२२</sup> ॥  
गौरिवीते द्वे—

१. आ॒प॒तू॒प॒न॒प॒आ॒प॒१ । द्र॒२क्षु॒मा॒ऽ२३न्ता॒२म् । चा॒यि॒त्रं ग्रा॒२भा॒ऽ  
२३३३हा॒२यि॒२ । सं॒गृ॒४रु॒भा॒या । म॒हा॒२ह॒र॒स्तो॒३२३४हा॒५  
यि॒५ । द॒क्षा॒४रु॒यि॒र॒णा॒यि॒ना । म॒हा॒ऽ२३ । हा॒ऽरु॒स्ता॒३२३४अ॒५  
हो॒५वा॒५ । द॒क्षि॒२णे॒२ना॒ऽ२३४५ ॥ १६ ॥

२. आ॒प॒तू॒प॒न॒प॒इं॒५द्र॒५क्षु॒प॒मा॒४न्ता॒५म् । चि॒त्रा॒ऽरु॒३रु॒ग्रा॒३२३४  
भा॒५म् । सं॒२गृ॒भा॒३२३४या॒५ । मा॒३हा॒२३ । हा॒ऽरु॒स्ता॒३२३४  
अ॒५हो॒५वा॒५ । द॒क्षि॒२णे॒२ना॒३२३४५ ॥ १७ ॥

औपालवेणवे द्वे—

३. आ॒४तू॒४न॒५इं॒४ । द्र॒५क्षु॒प॒मा॒५न्ता॒५म् । चि॒२त्र॒ङ्गा॒भः  
स॒ङ्गृ॒भा॒४रु॒या । चि॒२त्र॒ङ्गा॒भःस॒म् । अ॒२३हो॒रु॒यि॒रु ।  
भा॒३२३४या॒५ । ऐ॒२हो॒यि । म॒हा॒ह॒स्ती॒द॒क्षा॒ऽ२३हो॒यि । औ॒२  
हो॒वा॒३हो॒३२३४ वा॒५ । णा॒४ऽ५ यि॒५नो॒५द॒हा॒५यि॒५ ॥ १८ ॥

४. आ॒प॒तू॒प॒न॒प॒इं॒५द्र॒५क्षु॒प॒मा॒५न्ता॒५म् । चि॒२त्र॒ङ्गा॒भः  
स॒ङ्गृ॒भा॒या । चि॒२त्र॒ङ्गा॒भःस॒म् । ग्रे॒ऽ२३ । ई॒२३४हा॒५ । भा॒३२

३४या५ । ऐ२होयि महाहस्तीदक्षाऽ२३होयि । अ२हो । वा३  
हो३२३४वा५ । णा४ऽ५यि५नो५६हा५यि५ ॥ १९ ॥

ऋषिः—प्रियमेधः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१६८. अभि<sup>३ १</sup> प्र<sup>२२</sup> गोपतिं<sup>३ १ २</sup> गिरेन्द्रमर्च<sup>३ १ २</sup> यथा<sup>३ २</sup> विदे<sup>३ २</sup> । सूनुं<sup>३ २</sup> सत्यस्य<sup>३ २</sup> सत्पतिम्<sup>३ १ २</sup> ॥

१. अ४भी५अ४भी५ । प्र२गो३पातिं५गिरा४२ । इन्द्रमर्च्याथा२ऽ  
विदाऽ२यि२ । सू३नु२३३होयि । सत्यो३२३४हा५ । स्याऽ२  
सा३२३४अ५हो५वा५ । परती२३मेऽ२३४५ ॥ २० ॥

२. अ४भी५अ४भी५ । प्र२गो । परति३ङ्गिरा । इन्द्राम् । अ३र्च्या२  
या३२३४था५ । हुं३हुं२३ । आऽ२३४यि४वि४दा४यि४ । सू४नुः  
३स४त्य३स्य४सा५ । हुं३ । हुं२३ । ओऽ२३४वा५ । पा४ऽ५  
तो५६हा५यि५ ॥ २१ ॥

महागौरिवीतम्—

३. अ५भि५ । प्र३गो२३ । प४तिं४गि५रा५ । इन्द्रमर्च्याथाविदाऽ२३  
यि३ । सूनुःसत्या२३ऽ२३ । स्य४सा४ऽ५त्प५ता५यि५म् ।  
सूनुःसत्या२३ऽ२३ । स्य४सो४वा५ । पा४ऽ५तो५६हा५  
यि५ ॥ २२ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१६९. कया<sup>१ २</sup> नश्चित्र<sup>३ १</sup> आ<sup>२२</sup> भुवदूती<sup>३ २</sup> सदावृधः<sup>३ १ २ ३</sup> सखा । कया<sup>१ २</sup> शचिष्ठया<sup>२ ३</sup> वृता<sup>३ २</sup> ॥

वाचस्सामनी द्वे—

१. क५या५न५श्ची५ । त्र२आभू२३वारत्त२ । ऊ२तायिस२ । दा ।  
वाब्द२स्सा३२३४खा५ । कयाशा२३ची२३ । ष्ठाऽ२३या४ऽ३ ।  
वार३४५त्तो५६हा५यि५ ॥ २३ ॥

२. हो॒पवा॒पयि॒प । हो॒पवा॒पयि॒प क॒पया॒पन॒पश्चि॒प । त्र॒२ आ॒भू॒२ ३  
वा॒२ ३ ४ त् ४ । हो॒पवा॒पयि॒प । हो॒पवा॒प ऊ॒॒पती॒॒प स॒पदा॒प ।  
वृ॒२ धा॒स्सा॒२ ३ खा॒२ ३ ४ । हो॒पवा॒पयि॒प । हो॒पवा॒पयि॒प क॒पया॒प  
स॒॒प १ चा॒पयि॒प । ष्ठ॒२ या॒ । वाऽरु॒त्ता ३ २ ३ ४ अ॒॒प हो॒पवा॒प ।  
ऊ॒३ २ ३ ४ पा॒प ॥ २४ ॥

३. का॒३ ऽप॒या॒प । न॒पश्चा॒४ ऽ३ यि॒त्रा॒२ ३ आ॒४ भू॒४ वा॒पत् ५ । ऊ॒ ।  
ती॒ स॒२ दा॒वृ॒ध॒२ स्स । खा॒ । अ॒२ ३ हो॒३ हा॒२ यि॒२ । क॒या॒ऽ२ ३ श॒३  
चा॒रु॒यि॒२ । ष्ठ॒३ यौ॒३ हो॒२ ३ । हुं॒मा॒४ २ । वाऽरु॒त्तो॒२ ३ ३ ५ हा॒२  
यि॒२ ॥ २५ ॥

ऋषिः — श्रुतकक्षः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — गायत्री ॥ स्वरः — षड्जः ॥

१७०. <sup>१ २</sup>त्यमु <sup>३ २ ३</sup>वः सत्रासाहं <sup>१ २</sup>विश्वासु <sup>३ १ २</sup>गीर्ष्वायितम् । आ <sup>१ २</sup>च्यावयस्यूतये ॥

सत्रासाहीये द्वे—

१. त्य॒पमु॒पवा॒पः । स॒२ त्रा॒२ सा॒हा॒४ २ मु॒२ । वि॒श्वा॒सु गी॒रिषू॒आ॒२ ५  
या॒ता॒४ २ मु॒२ । आ॒च्या॒ऽ२ ३ । वाऽरु॒या॒३ २ ३ ४ अ॒॒प हो॒पवा॒प ।  
सि॒२ यू॒२ ३ तये॒ऽ२ ३ ४ ५ ॥ २६ ॥

२. त्या॒२ ३ ४ म् ४ । उ॒४ व॒पस्स॒प॒त्रा॒॒प सा॒४ ह॒पम् ५ । ओ॒प॒६ वा॒प ।  
वि॒श्वा॒सु गी॒र्ष्वायि॒या॒४ २ ता॒म् । आ॒४ २ च्या॒वा॒ऽ२ ३ या॒२ ।  
सि॒यौ॒३ हो॒२ । वा॒३ हा॒२ ३ ४ ५ ३ यि॒३ । ता॒ऽ२ ३ ४ यो॒॒प॒६ हा॒प  
यि॒प ॥ २७ ॥

ऋषिः — मेधातिथिः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — गायत्री ॥ स्वरः — षड्जः ॥

१७१. <sup>१ २ ३ २ ३ १ २</sup>सदसस्पतिमद्भुतं <sup>३ १ २ २ ३ १ २</sup>प्रियमिन्द्रस्य <sup>३ २ ३ १ २</sup>काम्यम् । सनिं मेधामयासिषम् ॥

१. अत्र सकारस्य स्थाने शकारः स्यात् । — सम्पादकः

१. सा४दा५ । सस्पतायि॒मँद्भू॒ता॒रु । ओ३२३४वा५ । प्रा॒या॒रुओ३२  
३४वा५ । आ॒यि॒न्द्रा । स्या का॒रु॒मा३२३४५या५६५६म्६ । स२  
नि॒म्मे॒रँधा॒मया॒र॒सि॒रषा३२३४५म्५ ॥ २८ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१७२. ये ते पन्था अ॒धो दि॒वो येभिर्व्य॑श्वमै॒रयः । उत श्रो॑षन्तु नो भुवः ॥

१. हा॒रयि॒र । आ॒र॒प्सू॒रुदा३२३४क्षा५ः । २ । ये॒रते॒रपं॒रथा॒र  
आ॒र॒धोदि॒वाऽ॒र॒३४५ः हा॒रयि॒र । आ॒र॒प्सू॒रुदा३२३४क्षा५ः ।  
२ । ये॒र भि॒रर्व्य॑र॒श्वा॒र॒मायि॑र॒याऽ॒र॒३४५ः । हा॒रुयि॒रु ।  
उ॒३ता॒रुश्रो३२३४षा५ । तु॒रनो॑ऽ॒र॒३ । भूऽरु॒वा३२३४अ॒५  
हो॒५वा५ । ई॒३२३४ती५ ॥ २९ ॥

ऋषिः—श्रुतकक्षः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१७३. भ॒द्रं भ॒द्रं न आ भ॑रे षमूर्जं शतक्रतो । य॒दिन्द्र॑ मृ॒डया॑सि नः ॥

सोमसामम्—

१. भ॒प॒द्रं॒५ भा॒४द्रा॒५म्५ । न॒२आ॒भाऽ॒र॒३रा॒३ । आ॒४यि॒४षा॒५मू॒४  
जा॒५ि॒५म्५ । श॒२त॒क्राऽ॒र॒३ता॒३उ॒३ । या॒४दि॒५द्रा॒४मृ॒५ । डाऽरु  
या॒३२३४अ॒५हो॒५वा॒५सी॒३२३४ना॒५ः ॥ ३० ॥

ऋषिः—बिन्दुः पूतदक्षो वा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१७४. अ॒स्ति सो॒मो अ॒यं सु॒तः पि॒बन्त्य॑स्य मरुतः । उत स्व॑राजो अ॒श्विना ॥

१. अ॒३स्ति॒४सो॒३मो॒४अ॒४य॒३ः सु॒४त॒३ः । अ॒४ । स्ते॒४आ॒४स्ति॒५ ।  
सो॒३मो॒४अ॒४य॒३ः सु॒४त॒३षि॒३ब॒४न्त्य॒५स्य॒५म॒५ । रु॒३तो॒३२  
३४हा॒५ यि॒५ । उ॒४त॒४स्व॒४रा॒४ऽ५जो॒४वा॒५ । श्वा॒४ऽ५यि॒५  
नो॒५६हा॒५ यि॒५ ॥ ३१ ॥

ऋषिः — इन्द्रमातरो देवजामयः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — गायत्री ॥ स्वरः — षड्जः ॥

१७५. ई<sup>३ १ २</sup>ङ्ख<sup>३ २ ३ १ २</sup>यन्तीरपस्युव इन्द्रं<sup>३ १ २ २</sup> जातमुपासते । वन्वाना<sup>३ १ २</sup>सः सुवीर्यम् ॥

त्वाष्ट्रीसामम्—

१. ई<sup>३ १ २</sup>५<sup>३ २ ३ १ २</sup>ख<sup>३ १ २ २</sup>५<sup>३ १ २</sup>यं<sup>३ १ २</sup>५<sup>३ १ २</sup>त्ती<sup>३ १ २</sup>५<sup>३ १ २</sup>५ः । अ२पा४२स्यूवा४२ः । आयिंद्रज्जा२तर  
मूर । ऊपा२ऽसाता४२यि२ । व२न्वा॒नाऽ२३सा२ः । सु२वीरिया  
२३ऽउवाऽ२३ । वृ२धेऽऽ ॥ ३२ ॥

ऋषिः — गोधा ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — गायत्री ॥ स्वरः — षड्जः ॥

१७६. न<sup>१ २</sup> कि<sup>३ १ २</sup> देवा इनीमसि<sup>३ १ २</sup> न क्या<sup>३ १ २</sup> योपयामसि । मन्त्रश्रुत्यं<sup>३ १ २</sup> चरामसि ॥

गोधासामम्—

१. न५कि५दे५वा५ः । इ२नायि । इनीमासा२३यि३ । मासी३या२ ।  
न५कि५या५यो५ । प२या । पयामासा२३यि३ । मासी३या२ ।  
मं५त्र५श्रु५त्या५म्५ । च२रा । चरामासा२३यि३ । मासी३  
या२ ॥ ३३ ॥

ऋषिः — दध्यङ्ङाथर्वणः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — गायत्री ॥ स्वरः — षड्जः ॥

१७७. दोषो<sup>३ १ २</sup> आगाद्<sup>२ २</sup> बृहद्गाय<sup>३ १ २ ३ १ २</sup> द्युमद्रामन्नाथर्वण । स्तुहि<sup>३ २ ३ १ २ ३ १ २</sup> देवं सवितारम् ॥

१. दो४षो५आ५गा४त्४ । बृ२हद्गा५या । द्युमद्गाऽ२३मा२नृ२ ।  
आ५थर्व्व३णा२३ । स्तु२रहि । औ३हो२३४यि४ । दे२वा२३म्३ ।  
स४वो४वा५ । ता४ऽ५रो५६हा५यि५ ॥ ३४ ॥

ऋषिः — प्रस्कण्वः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — गायत्री ॥ स्वरः — षड्जः ॥

१७८. एषो<sup>३ २ ३ १ २ २ ३ २</sup> उषा अपूर्व्या<sup>३ २ ३ २</sup> व्युच्छति<sup>३ १ २</sup> प्रिया दिवः । स्तुषे<sup>३ २</sup> वामश्विना बृहत् ॥

एषस्सामम्—

१. ए॒प॒षो॒प॒उ॒षा॒पः । आ॒पू॒र्वि॒र॒या॒२ । व्यु॒च्छ॒र॒ति॒२ । हो॒वा॒२३हा॒२  
यि॒२ । प्रि॒र॒या॒दा॒ऽ२३यि॒३वा॒२३४ः । स्तु॒३षा॒२३यि॒४वा॒३  
मा॒२३ । शि॒व॒२नो॒ऽ२३४वा॒प । ब्रे॒४ऽ५हो॒५६हा॒५यि॒५ ॥ ३५ ॥

[ इति ] अर्द्धप्रपाठकः ॥

ऋषिः—गोतमः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१७९. इन्द्रो॑ दधी॒चो॑ अस्थ॒भिर्वृ॒त्राण्य॒प्रतिष्कु॑तः । ज॒घान॑ नवती॒र्नव॑ ॥

१. इन्द्रो॑दधी॒चो॑ अस्थ॒भिरि॒या॒४२ुई॒३या॒२ । वृ॒त्रा॒ण्य॒प्रतिष्कु॑त  
इ॒या॒४२ुई॒३या॒२ । ज॒र॒घा॒न नवती॒र्नव॑ इ॒या॒४२ु । ई॒ऽ२ु । या॒३२  
३४ । अ॒प॒हो॒५ वा॒प । ऊ॒३२३४पा॒प ॥ १ ॥
२. इ॒प॒द्रो॒५द॒५धा॒५यि॒५ । चो॒२ुअ॒र॒स्था॒३२३४भी॒५ः । वृ॒त्रा॒णि॒या ।  
प्रा॒२तिष्कु॑ताः । ज॒र॒घा॒ना॒ऽ२३ना॒२ु । व॒३त्ती॒र्न॒२वा । अ॒२३हो॒४  
वा॒प । हो॒४ऽ५यि॒५ । डा॒प ॥ २ ॥

ऋषिः—मधुच्छन्दाः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१८०. इन्द्रे॑हि मत्स्यन्धसो॒ विश्वे॑भिः सोमपर्व॒भिः । म॒हा॑ अभिष्टि॒रोज॑सा ॥

१. इ॒प॒द्रे॒५हि॒५मा॒५हा॒५उ । त्सी॒२३आ॒न्धा॒२३सा॒२ः । वा॒यि॒श्वे॒२  
भि॒२स्सो॒ऽ२३हा॒२३ । मा॒प॒२र्वा॒३२३४भी॒५ः । म॒हा॒ऽ२३ ।  
आ॒ऽ२ुभा॒३२३४अ॒प॒हो॒५वा॒प । ष्टि॒२रो॒ज॑सा॒३२३४५ ॥ ३ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१८१. आ॒ तू न॑ इन्द्र॒ वृ॒त्रह॒न्नस्मा॑कमर्ध॒मा ग॑हि । म॒हान्म॑हीभि॒रु॒तिभिः॑ ॥

१. आ॒३तू॒२अ॒३हो॒५ । २ । न॒२इन्द्र॒२वृ॒त्राऽ॒२३४हा॒५न्॒५ । अ॒२स्मा॒  
क॒२म॒र्द्ध॒२म् २ । आ॒गाऽ॒२३ही॒२ । गा॒ही४॒२ । मा॒हा४॒२नु॒माही  
ऽ॒२३ । भि॒२रूऽ॒२३४वा॒५ । ता४ऽ॒५यि॒५भो॒५६हा॒५यि॒५ ॥ ४ ॥

ऋषिः—वत्सः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१८२. ओज॒<sup>२ ३ १ २</sup>स्तदस्य॒ तित्विष॒<sup>३ २ ३</sup> उभे॒ यत्<sup>३ १ २</sup> समवर्तयत् । इन्द्र॒<sup>२ ३ १ २ ३ १ २</sup>श्चर्म॑ेव रोदसी ॥

१. हा॒५ । हा॒२उ॒२वा॒२३ । ओज॒स्तदस्य॒२ति॒२त्वि॒२षे॒२ऽ॒२३४ ।  
हा॒५ । हा॒२उ॒२वा॒२ । उ॒२भे॒यत्समवर्त्त॑ २या॒३२३४त्४ । हा॒५ ।  
हा॒२उ॒२-वा॒२३ । इन्द्र॒श्चर्म॑े॒र्व॒२रो॒दसी॒३२३४५ः ॥ ५ ॥

२. ओ॒४ज॒४स्त॒४दा॒४ऽ॒५स्य॒५ति॒५त्वि॒४षा॒४इ॒यि॒४ । उ॒२भे॒यत्सम॑  
वर्त्तया॒दा॒२ऽयि॒न्द्रऽ॒२३ः । चा॒ऽ॒२ु॒र्मा॒३२३४अ॒५हो॒५वा॒५ । व॒२  
रो॒दसी॒३२३४५ ॥ ६ ॥

ऋषिः—शुनःशेषः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१८३. अ॒यमु॒<sup>३ १ २ ३ १ २</sup> ते॒ सम॒तसि॒ कपो॒तइ॒व गर्भ॑धिम् । वच॒स्तच्चि॒न्न ओ॒हसे ॥

१. अ॒४या॒३ऽ॒५मु॒५ । ता॒४ऽ॒३यि॒३सा॒२३मा॒४त॒४सा॒५यि॒५ । का॒पो  
त॒२इ॒२ । व॒२गा॒र्भा॒२ऽधीं॒४२ुम् । वा॒चा॒४॒२ुस्ता॒च्चीऽ॒२३त्३ ।  
न॒२ओ॒ऽ॒२३४वा॒५ । हा॒४ऽ॒५सो॒५६हा॒५यि॒५ ॥ ७ ॥

ऋषिः—वातायन उलः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१८४. वा॒त आ॒ वा॒तु॒ भेष॑जं श॒म्भु॒ मयो॑भु नो हृ॒दे । प्र॒ न आ॒यू॒षि॒ तारि॑षत् ॥

प्रतीचीनेदं कांक्षीतम्—

१. वा॒४त॒५आ॒४वा॒५तु॒५ । भा॒४ऽ॒५यि॒५ष॒५जा॒४म् ४ । शां॑भुम॒२  
य॒२ः । भु॒२नो॒र्हृदा॒ऽ॒२३४यि॒४ । हा॒३हो॒२यि॒२ । प्र॒नआ॒यू॒षी॒२३  
ता॒२ । रि॒२षात् । औ॒ऽ॒२३हो॒४वा॒५ । ई॒४डा॒५ ॥ ८ ॥



ऋषिः—कण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१८५. यं<sup>१</sup> रक्षन्ति<sup>२२</sup> प्रचेतसो<sup>३</sup> वरुणो<sup>१ २</sup> मित्रो<sup>३ १ २</sup> अर्यमा<sup>३ १ २ ३ २</sup> । न किः<sup>२ ३</sup> स दभ्यते<sup>१ २</sup> जनः<sup>३ १ २</sup> ॥

१. य४२४र४क्ष५न्ति५प्र४चे५त५सा४ः । वरुणो॥मित्रो॥अर्या५२३  
मा२ । नाकायिस्सा५२३दा२ । हुम्माये२३ । भ्या५रुता३२३४  
अ५हो५वा५ । जा३२३४ना५ः ॥ ९ ॥

ऋषिः—वत्सः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१८६. गव्यो<sup>३ २३</sup> षु<sup>३ १ २ ३ २</sup> णो<sup>३ १ २२ ३ २</sup> यथा<sup>३ २ ३ १ २</sup> पुराश्वयो<sup>२ ३ १ २</sup> रथया<sup>२ ३ १ २</sup> । वरिवस्या<sup>२ ३ १ २</sup> महोनाम् ॥

१. ग५व्यो४षु४णो५य४था५पु५रा४ । अ२श्व२यो२तरथा । याव२  
रि२व२स्या । म२ । होमा५२३ । हो३ना२३४अ५हो५वा५ ।  
ऊ३२३४पा५ ॥ १० ॥

२. ग५व्यो५षु५णो५य५था५पु५रा५द५ए५ । अ२श्व२यो२५तरथा  
४२ । या । व२रिवा४रुस्या । म२हो । महो५रना३२३४अ५हो५  
वा५ । ई३२३४५ ॥ ११ ॥

ऋषिः—वत्सः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१८७. इमास्त<sup>३ १ २</sup> इन्द्र<sup>३ १ २</sup> पृश्नयो<sup>३ १ २</sup> घृतं<sup>३ १ २</sup> दुहत<sup>३ १ २</sup> आशिरम्<sup>३ २ ३ १ २</sup> । एनामृतस्य<sup>३ १ २</sup> पिप्युषीः ॥

शैखण्डिनम्—

१. इ५मा५स्त५इ । न्द्र२पृश्नयो घृतं दू३हा२ । अ३हो३हा२३ । हा२३  
यि३ । ताआ५रुशा३२३४यि४रा५म्प । ए३ना२३४मृ३ता२३ ।  
स्य२पो५२३४वा५ । प्यू४५षो५दहा५यि५ ॥ १२ ॥

ऋषिः—श्रुतकक्षः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१८८. अया<sup>३ २</sup> धिया<sup>३ १ २</sup> च गव्यया<sup>३ १ २२</sup> पुरुणामन्पुरुष्टुत<sup>१ २२</sup> । यत् सोमे<sup>३ १ २</sup> सोम आभुवः ॥

१. अ॒प॒या॒प॒धि॒प॒या॒प॒च॒प॒ग॒प॒व्या॒प॒द॒या॒प॒ । पुरु॒णा॒२३ । म॒२न॒२  
पू॒३२३४रू॒प॒ । ष्टू॒तौ॒२ । वा॒२३५२ । य॒२त्सो॒२मे॒३सो॒२म॒३आ॒२ ।  
या॒सो॒मे॒२सो॒ । म॒५ओ॒५२३४वा॒प॒ । भू॒४५॒प॒वो॒५६हा॒प॒यि॒प॒ ॥ १३ ॥

ऋषिः—मधुच्छन्दाः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१८९. पा॒व॒का॒ नः॑ सर॒स्वती॑ वा॒जे॒भिर्वा॑ जिनी॒वती॑ । य॒ज्ञं॑ व॒ष्टु॒ धि॒या॒व॒सुः॑ ॥

१. पा॒प॒व॒का॒प॒न॒प॒ई॒४या॒प॒ । स॒२रा॒स्वा॒२५ती॒४२ु॒ । वा॒जे॒भि॒२र्वा॒॑२ ।  
जि॒२ना॒यि॒वा॒२५ती॒४२ु॒ । <sup>म</sup>य॒ज्ञा॒५२३म्३॑ । वा॒५२ु॒ष्टु॒३२३४अ॒५  
हो॒५वा॒प॒ । धि॒२या॒व॒सू॒३२३४५ः॑ ॥ १४ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१९०. क॒ इ॒मं॑ नाहु॒षी॒ष्वा॒ इन्द्रं॑ सोम॒स्य॑ त॒र्प॒यात् । स॒ नो॑ व॒सू॒न्या॑ भ॒रात् ॥

१. क॒४इ॒५म॒४म्४ । उ॒५हु॒४वा॒४हा॒५यि॒५ । ना॒२हू॒२३षा॒यि॒षू॒२५  
वा॒४२ु॒ । आ॒यि॒न्द्रः॑ सो॒म॒२ । स्य॒२ता॒प्या॒२५या॒४२ुत्॒२ । स॒नो॒२  
व॒सू॒२ । नि॒२या॒भा॒२५रा॒४२ुत्॒२ । सा॒नो॒२व॒सू॒२नि॒२ । आ॒५२३॑ ।  
भ॒३रा॒२उ॒२वा॒२ । आ॒ग॒हि॒२ये॒हि॒ता॒इ॒मे॒२५ ॥ १५ ॥

ऋषिः—इरिम्बिठिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१९१. आ॒ या॒हि॒ सु॒षु॒मा॒ हि॒ त॒ इन्द्रं॑ सोमं॒ पि॒बा॒ इ॒मम् । ए॒दं॑ ब॒र्हिः॑ स॒दो॑ म॒म ॥

सौमे॒रम्—

१. आ॒प॒या॒प॒हि॒प॒सू॒प॒ । षु॒२मा॒हा॒२५यि॒ते॒४२ु॒ । २ । आ॒इ॒न्द्र॒सो॒म॒२म्॒२ ।  
पि॒२बा॒इ॒म॒२म्॒२ । पि॒२बा॒आ॒२५यि॒मा॒५२ुम्॒२ु॒ । ए॒३दं॑३ब॒२ऋ॒२  
हा॒यिः॑ । स॒२दो॒मा॒५२३मा॒२३४५३॑ । ओ॒५२३४५यि॒प॒ । डा॒प॒ । १६ ।

ऋषिः—वारुणिः सत्यधृतिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

११२. महि<sup>१ २</sup> त्रीणामवरस्तु<sup>३ १ २२</sup> द्युक्षं<sup>३ २</sup> मित्रस्यार्यम्णाः<sup>३ १ २ ३ २</sup> । दुराधर्षं<sup>३ २ ३ १ २</sup> वरुणस्य ॥

१. म३हा२यि२त्रा३२३४यि४णा५म् ५ । अवा४रुस्तू । द्यु३क्षं२  
मा३२३४यि४त्रा५ । स्या४र्यम्णाः । दु३रा२धा३२३४ऋ४षा५  
म् ५ । व२रौहोऽ२३४ । वा५ । णा४ऽ५स्यो५६हा५यि५ ॥ १७ ॥

२. म५हि५त्री२णा५म५व५र५स्तू५६ए५ । द्यु२क्षं मित्रस्यार्यम्णाः ।  
दु२रा२धाऽ२३ऋ३षा२म् २ । व२रौहो४२ । हुम्मा४२ । ण२ । स्योऽ२ ।  
या३२३४अ५हो५वा५ । हा२ओवा२ । ओवा३२३ ४५ ॥ १८ ॥

ऋषिः—वत्सः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

११३. त्वावतः<sup>१ २</sup> पुरूवसो<sup>३ १ २</sup> वयमिन्द्र प्रणेतः<sup>१ २</sup> । स्मसि<sup>१ २</sup> स्थातर्हरीणाम् ॥

धरासाकामाश्वम्—

१. त्वा॒वतो२३ । हौ॒३हो२३५यि । पुरू॒व२सो२३ । हौ॒३हो२३५यि ।  
व२यमिन्द्रा२३ । हौ॒३हो२३५यि । प्रणे॒ता२३ः । हौ॒३हो२३५यि२ ।  
स्मसि स्था॒२ता२३ः । हौ॒३हो२३५यि । हरी॒णा२३म् ३ । हौ॒३हो२३  
ऽ२३४५यि५डा५ ॥ १९ ॥

ऋषिः—प्रगाथः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

११४. उत्त्वा<sup>१ २</sup> मन्दन्तु<sup>३ १ २</sup> सोमाः<sup>३ १ २२</sup> कृणुष्व<sup>१ २</sup> राधो<sup>३ १ २</sup> अद्रिवः । अव<sup>१ २</sup> ब्रह्मद्विषो<sup>३ १ २</sup> जहि ॥

यामम्—

१. उ५त्त्वा५मं५दं५तु५सो५हो४मा५ः । कृ२णौहो । ष्व२रौहोधा२  
अद्रिवाः । अ । व॒ब्राऽ२३ह्वा२ । द्विषा४२ुः । हा४२ु यि२ । अ३हो  
२३५ये२३ । जाऽ२ुहा३२३४अ५हो५वा५ । ए२३ । य॒यूऽ२३  
४५ः ॥ २० ॥

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१९५. गिर्वणः<sup>१ २</sup> पाहि नः<sup>३ १ २</sup> सुतं<sup>३ २ ३</sup> मधोर्धाराभिरज्यसे<sup>३ १ २</sup> । इन्द्र त्वादातमिद्यशः<sup>२ ३ १ २ ३ १ २ २</sup> ॥

हरिश्रीनिधनम्—

१. गि४र्व्व४ण५ष्पा५हि४न५सु५त४म्४ । गि४र्व्व५ण५ष्पा४ । हि  
नस्सुता४२ु । म्२ । मधोर्धाराभिरराहो४२ु । ज्यासेऽ२३ । हा२उ२  
वा२ । इंद्रात्वाऽ२३दा२ । त२माये२३त्३ । याऽ२ुशा३२३४  
अ५हो५वा५ । ह२री२३श्रीऽ२३४५ः ॥ २१ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१९६. सदा व इन्द्रश्चकृषदा<sup>१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३</sup> उपो नु स सपर्यन्<sup>३ १ २ २ ३ २ २ ३ २ ३ ३ २ ३</sup> । न देवो वृतः शूर इन्द्रः<sup>३ १ २</sup> ॥

वैतहव्यम्—

१. सा४दा५ । व२इं२द्रा२३ः । च२ुर्कृषा४दा५ । उ२पो२नु२सा२३ः ।  
सापर्य२ुन्२ु । न३दे२वाऽ२३ः । वृ३ता२३४ऽ३ः । शू२३४ऽ३ः ।  
रा२३आ४ऽ५यिं५द्रा५६५६ः ॥ २२ ॥

ऋषिः—श्रुतकक्षः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१९७. आ त्वा विशन्त्विन्दवः<sup>१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३</sup> समुद्रमिव सिन्धवः । न त्वामिन्द्राति रिच्यते<sup>३ १ २</sup> ॥

आसितम्—

१. आ५त्वा५वि५शं५त्विं५दा५६वा५ः । स२मु२द्रमिव२सिंध२  
व२ः । स२मु२द्रमि । व२सिंधऽ२३वाः२ । न त्वा५मि५द्रा५ति५रि५च्य५  
ते । न२त्वा५माऽ२३यिं२द्रा२ । ति२रि५च्याऽ२३ताऽ२३४ऽ३ः ।  
यि३ । ओऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ २३ ॥

ऋषिः—मधुच्छन्दाः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१९८. इन्द्रमिद्राथिनो बृहदिन्द्रमर्केभिरकिणः<sup>२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २</sup> । इन्द्रं वाणीरनूषत ॥

१. इ॒प॒द्र॒प॒मि॒३॒द्गा॒रु॒थि॒३॒नो॒४॒बृ॒प॒हा॒प॒त्प॒ । इ॒२॒द्रा॒म॒२॒क्का॒यि॒ । भि॒२  
र॒२॒क्कि॒र्णाः॒ । इ॒३॒द्रं॒वा॒णी॒२॒३ः॒ । हा॒२॒३॒हा॒२॒यि॒२ । अ॒४॒नू॒४॒ऽ॒प॒ष॒प  
ता॒प॒ । हो॒४॒ऽ॒प॒यि॒प॒ । डा॒प॒ ॥ २४ ॥

ऋषिः—श्रुतकक्षः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१९९. इ॒न्द्र इ॒षे॒ द॒दा॒तु॒ न ऋ॒भु॒क्ष॒ण॒मृ॒भुं॒ र॒यि॒म् । वा॒जी॒ द॒दा॒तु॒ वा॒जि॒न॒म् ॥

१. इ॒४॒द्र॒प॒इ॒प॒षे॒४॒द॒प॒दा॒प॒तु॒प॒न॒पः॒ । ओ॒४॒हा॒४॒यि॒४ । ऋ॒२॒भु॒२ । क्ष॒ण॒ऽ॒रु  
मृ॒२ु । ऋ॒३॒भु॒२ुः॒२ु॒रा॒३॒२॒३॒यी॒प॒म्प॒ । वा॒२॒जी॒२॒द॒२॒दा॒२॒तु॒३  
वा॒२॒३ । वा॒२॒जी॒द॒दा । तु॒२॒वो॒ऽ॒२॒३॒४॒वा॒प॒ । जा॒४॒ऽ॒प॒यि॒प॒नो॒प॒६  
हा॒प॒ यि॒प॒ ॥ २५ ॥

२. इ॒५॒द्र॒प॒इ॒प॒षे॒५॒द॒प॒दा॒प॒तु॒प॒ना॒प॒६॒ए॒प॒ । ऋ॒२॒भु॒२क्ष॒ण॒मृ॒२ । भू॒४॒रु॒ऽ  
२॒३॒म्३॒ । र॒३॒यी॒२॒३॒४॒ऽ॒३॒म्३॒ । वा॒ऽ॒२॒३॒जी॒२ । द॒२॒दा॒४॒रु॒ओ॒ऽ॒२॒३ ।  
तु॒४॒वो॒४॒वा॒प॒ । जा॒४॒ऽ॒प॒यि॒प॒नो॒प॒६॒हा॒प॒यि॒प॒ ॥ २६ ॥

ऋषिः—गृत्समदः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२००. इ॒न्द्रो॒ अ॒ङ्ग॒ म॒ह॒द्भ॒य॒म॒भी॒ ष॒द॒प॒ चु॒च्य॒व॒त् । स॒ हि॒ स्थि॒रो॒ वि॒च॒र्ष॒णिः॒ ॥

अभयंकरः—

१. इ॒५॒द्रो॒५॒अ॒प॒ङ्गा॒प॒ । म॒२॒ह॒द्भ॒ऽ॒२॒३॒या॒२॒म्२॒ । आ॒भी॒ष॒२॒द॒२ ।  
प॒२॒चु॒च्या॒ऽ॒२॒३॒वा॒२॒३॒४॒त्४ । स॒३॒हा॒२॒३॒४॒यि॒४स्थि॒३॒रा॒२॒३ः॒ । वि॒४  
चो॒४॒वा॒प॒ । षा॒४॒ऽ॒प॒णो॒५॒६॒हा॒प॒यि॒प॒ ॥ २७ ॥

ऋषिः—भरद्वाजः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२०१. इ॒मा उ॒ त्वा सु॒तेसु॒ते न॒क्ष॒न्ते॒ गि॒र्व॒णो॒ गि॒रः॒ । गा॒वो॒ व॒त्सं॒ न धे॒न॒वः॒ ॥

त्वाश्रीसामम्—

१. इ॒प॒मा॒प॒उ॒प॒त्वा॒प । सु॒प॒ता॒र॒यि॒र॒सु॒ता॒यि । नक्ष॑न्ताऽ॒र॒३यि॒३गी॒र  
३४ः । व॒४न॒पः । गा॒र॒३यि॒३रा॒रः । गा॒वो॒वा॒र॒३त्सा॒र॒३म्३ ।  
न॒र॒धोऽ॒र॒३४ऽवा॒प । ना॒४ऽप॒वो॒प॒६हा॒प॒यि॒प ॥ २८ ॥

ऋषिः—भरद्वाजः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२०२. इन्द्रा नु पूषणा वयं सख्याय स्वस्तये । हुवेम वाजसातये ॥  
२ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २

१. इ॒प॒द्रा॒प॒नु॒प॒पू॒प । ष॒र॒णा॒वाऽ॒र॒३या॒र॒म्॒र । सा॒ख्या॒य॒र । सु॒र॒व॒स्ता  
ऽ॒र॒३या॒र॒यि॒र । हू॒वे॒४रु॒मा॒वाऽ॒र॒३ । ज॒र॒सोऽ॒र॒३४॒वा॒प । ता॒४ऽप॒  
यो॒प॒६हा॒प॒यि॒प ॥ २९ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२०३. न कि इन्द्र त्वदुत्तरं न ज्यायो अस्ति वृत्रहन् । न क्येवं यथा त्वम् ॥  
१ २ ३ १ २ २ ३ १ २ २ २ ३ २ ३ २ ३ ३ २

१. न॒४ । क्ये॒४ना॒४की॒प । आ॒यि॒न्द्र॒त्वदु॒त्तरा॒म् । न॒र॒ज्या॒यो॒र ।  
अ॒स्ताऽ॒र॒३यि॒३वृ॒र । हुं॒३ । हुं॒रु । त्रा॒३॒र॒३४हा॒प॒न्॒प । न॒क्ये॒र ।  
व॒ंयाऽ॒र॒३था॒र । हुं॒३ । हुं॒२॒३४ऽ३म्तू॒र॒३४॒प॒वो॒प॒६हा॒प  
यि॒प ॥ ३० ॥

ऋषिः—त्रिशोकः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२०४. तरणिं वो जनानां त्रदं वाजस्य गोमतः । समानमु प्र शंसिषम् ॥  
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २

१. त॒प॒र॒प॒णि॒प॒वा॒पः । ज॒नाऽ॒र॒३ना॒र॒म्॒र । त्र॒र॒दं॒वा॒जा॒र॒३हा॒र॒३ ।  
स्या॒ गो॒रु॒मा॒३॒र॒३४ता॒पः । स॒र॒मा॒नाऽ॒र॒३मू॒र । प्र॒४शा॒४ऽप॒३सि॒प  
षा॒प॒म्प । हो॒४ऽप॒यि॒प । डा॒प ॥ ३१ ॥

ऋषिः—मधुच्छन्दाः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२०५. <sup>१ २</sup>असृग्रमिन्द्र <sup>३ २ ३</sup>ते गिरः <sup>२ ३</sup>प्रति त्वामुदहासत । <sup>१ २२</sup>सजोषा <sup>३ १ २</sup>वृषभं <sup>३ १ २२</sup>पतिम् ॥

वैरूपम्—

१. अपसृपग्रपमापइंपद्रापदतेपगिपरापः । प्राती४रुत्वामू४रुत् ।  
अ२हा२ । सता । साऽ२जो४रुषावा४रु । ष२भ४रुम२पति२  
मू२ । ओऽ२३४पयिपडाप ॥ ३२ ॥

ऋषिः—वत्सः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२०६. <sup>३ २ ३ २३</sup>सुनीथो घा स <sup>३ २ ३ २ ३</sup>मर्त्यो यं <sup>१ २ ३ २</sup>मरुतो <sup>३ २३</sup>यमर्यमा । <sup>३ १ २</sup>मित्रास्पान्त्यद्रुहः ॥

१. सु४नी४थो४घा४ऽपसपमपत्ति४या४ः । यंमरुतो२यमर्य२मा ।  
मि२त्रा॒स्पान्त्य२द्रुह२ः । ऊ । ऊ । वा॒रहा२३ऽउवा४रु । अति२  
द्विषा३२३४पः ॥ ३३ ॥

ऋषिः—त्रिशोकः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२०७. <sup>२ ३ १ २ ३ २ ३ १</sup>यद्वीडाविन्द्र <sup>२२ ३ १ २</sup>यत्स्थिरे <sup>१ २ ३ १</sup>यत्पशानि <sup>२२</sup>पराभृतम् । <sup>१ २ ३ १</sup>वसु <sup>२२</sup>स्पार्हं <sup>२२</sup>तदा भर ॥

तौभम्—

१. अ॒रहो॒रवा॒रअ॒रहो॒३२३४वाप । ओप६हाप । य॒रद्वी॒रडा॒रवी॒र३  
न्द्रा ४ऽ३य॒रत्स्थि॒३रापयिप । अ॒रहो॒रवा॒रअ॒रहो॒३२३४वाप ।  
ओप६ हाप । य॒रत्प॒रऋ॒रशा॒रने॒र३पा४ऽ३रा॒रभृ३तपम्प ।  
अ॒रहो॒रवा॒रअ॒रहो॒३२३४वाप । ओप६हाप । व॒रसु॒रस्पा॒र  
'र्हा॒र३न्ता४ऽ३दा॒रु भ३रप । अ॒रहो॒रवा॒रअ॒रहो॒३२३४वाप ।  
ओप६हाप । हो४ऽपयिप डाप ॥ ३४ ॥

ऋषिः—सुकक्षः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२०८. <sup>३ १ २ ३ १ २ ३ १ २२</sup>श्रुतं वो <sup>३ २</sup>वृत्रहन्तमं <sup>३ २ ३ १ २ ३ २</sup>प्र शर्ध चर्षणीनाम् । आशिषे राधसे महे ॥



## श्रौतम्—

१. श्रुप्ता४म्४वो । वृत्रहंतमम् । प्रशब्दं च ऋषरणाऽ२३  
यि३नार२म् । आ२शायिषाऽ२३यि३रा२ । ध३से३महा । अ२३  
हो४वा५ । हो४ऽ५यि५डा ॥ ३५ ॥

[ इति ] पञ्चमप्रपाठकः ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२०९. अ१२रं त इन्द्र३ श्रवसे१२ गमेम३ शूर१२ त्वावतः३ । अ१२रं शक्र३ परेमणि१२ ॥

## आभीश्यवम्—

१. अ५र५न्त५इ५द्र५श्र५व५से५ । ए५ग२मायिमशूर२२त्वावता२  
३ः । होवा२३हारयि२ । अरा२शा२ऽक्राऽ२३होवा२३हारयि२ ।  
प२ रायिमाऽ२३णा२३४ऽ३यि३ । ओऽ२३४यि५ । डा५ ॥ १ ॥

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२१०. धा३ना१२वन्तं कर३म्भिणाम३पूप१२वन्तमु३क्थि१२नम् । इन्द्र३ प्रा१२तर्जु३ष१२स्व नः ॥

१. धा५ना५वं३तरु३ङ्क३र४म्भि५णा५म् । अ५पूप५वंत५मूर५क्थी२३  
नार२म् । इं२द्रा२रुप्रा३२३४ता५ः । ओ३२३४हा५यि५ । जु४षो४  
वा५ । स्वा४ऽ५नो५६हा५यि५ ॥ २ ॥

ऋषिः—गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२११. अ३पां१ फेनेन२ नमुचेः३ शिर३ इन्द्रो३दवर्तयः३ । विश्वा२ यदजय३ स्पृधः१२ ॥

## क्षुरपविम्—

१. अ५पा५म्फे५ने५न५न५मु५चे५ः । शिर३ । द्रोत् । अ५वाऽ२  
त्ता३२३४या५ः । वायि३श्वाऽ२३ । याऽ२रुदा३२३४अ५हो५  
वा५ । ज२य२स्पृधा३२३४फः ॥ ३ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२१२. इमे<sup>३ १ २</sup> त इन्द्र<sup>३</sup> सोमाः<sup>१ २</sup> सुतासो<sup>३ २ ३ २</sup> ये च<sup>३</sup> सोत्वाः<sup>१ २</sup> । तेषां<sup>१ २</sup> मत्स्व प्रभूवसो ॥

१. इ॒पमे॒पत॒पआ । द्र॒सोमाः । हो॒वा॒र॒३हो॒यि । सु॒रता॒सो॒ये॒३ ।  
चा॒सो॒रुतू॒३२३४वा॒पः । ते॒३ऽ४षा॒पम्प । हा॒र॒३हा॒रयि॒२ ।  
मा॒त्स्वप्र॒२भू॒ऽ२३४वा॒प । वा॒४ऽ५ । सो ५६हा॒पयि॒५ ॥ ४ ॥

ऋषिः—श्रुतकक्षः सुकक्षो वा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२१३. तुभ्यं<sup>१ २</sup> सुतासः<sup>३ २ ३</sup> सोमाः<sup>१ २</sup> स्तीर्णं<sup>३ २</sup> बर्हिर्विभावसो । स्तोतृभ्यं<sup>३ १ २</sup> इन्द्र मृडय ॥

१. तु॒४भ्य॒४ऽ४हा॒पउ॒५ । सु॒रता॒सस्सो॒माः । स्ती॒र्णम्बा॒ऽ२३ऋ॒३ही॒२ः ।  
वि॒भा॒४रु॒हो॒२ऽयि । वा॒ऽ२३सा॒२उ॒२ । स्तो॒ता॒२३उ॒३वा॒२३ ।  
भ्यआ॒ऽरु॒यि॒रु । द्र॒३मे॒२३४अ॒५हो॒५वा॒प । डा॒३२३४या॒प ॥ ५ ॥

ऋषिः—शुनःशेषः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२१४. आ व इन्द्रं<sup>२ ३ २ ३</sup> कृविं यथा<sup>२ ३ १ २</sup> वाजयन्तः<sup>३ १ २</sup> शतक्रतुम् । महिष्ठं<sup>३ १ २</sup> सिञ्च इन्दुभिः<sup>३ १ २</sup> ॥

कौत्से द्वे—

१. आ॒५व॒५इं॒५द्रा॒५म्प॒क्रि॒२विं॒यथा । वा॒जया॒ऽ२३न्ता॒२ः । श॒२  
ता॒क्रतुम् । म॒हिष्ठा॒ऽ२३सी॒२ । चा॒याउ॒३वा॒२३यि॒३ । दू॒३२३४  
भी॒५ः ॥ ६ ॥

ऋषिः—श्रुतकक्षः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२१५. अतश्चिदिन्द्रं<sup>१ २</sup> न उपा याहि<sup>३ १ २</sup> शतवाजया । इषा सहस्रवाजया<sup>३ २ ३ १ २</sup> ॥

१. अ॒पत॒पश्चि॒पदिं॒५द्र॒पन॒५उ॒५पा॒५६ए॒५ । आ॒या॒हि॒२श॒२ । त॒२वा॒  
जा॒ऽ२३या॒२३४ । इ॒२षा॒२३४स॒३हा॒२३ । स्र॒२वो॒ऽ२३४वा॒प ।  
जा॒४ऽ५यो॒५६हा॒पयि॒५ ॥ ७ ॥

ऋषिः—त्रिशोकः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२१६. आ बुन्दं वृत्रहा ददे जातः पृच्छाद्वि मातरम् । क उग्राः के ह शृण्विरे ॥

औषसम्—

१. आ५बु५दं५वृ५ । त्र२हा५ । दा५यि५ । जा५त५षृ५च्छा२३त् । वि५मा५ऽ२  
ता३२३४रा५म् । क२उ५ग्रा५ऽ२३ष्के२ । हा५शृ५ण्वि२रे२ । इ५डा५  
२३भा२३४ ५३ । ओ५ऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ ८ ॥

ऋषिः—मेधातिथिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२१७. बृबदुक्थं हवामहे सृप्रकरस्नमूतये । साधः कृण्वन्तमवसे ॥

भारद्वाजम्—

१. बृ५ब५दु५क्थ५ऽ५हा५६वा५म५हा५यि५ । सा५प्रा५४रु५कारा  
४२ । स्न२मू२ । तया५यि५ । सा२ऽधा५४रु५ष्का५ण्वा५ऽ२३ । त२मो५ऽ२  
३४वा५ । वा५ऽ५सो५६हा५यि५ ॥ ९ ॥

ऋषिः—गोतमः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२१८. ऋजुनीती नो वरुणो मित्रो नयति विद्वान् । अर्यमा देवैः सजोषाः ॥

कौत्ससामानि—

१. ऋ५जु५नी५ती५ऽनो५व५रु५ण५ः । इ५हा५४ । मि२त्रो५नयति२  
वि५द्वा५ऽ२३न्त्सा२ः । इ५हा२ । अ२र्या५मा५दा५ऽ२३यि३वा५यि२ ।  
इ५हा२ । स५जो५षा५ऽउ३वा५३ । ई२३४हा५ ॥ १० ॥

ऋषिः—ब्रह्मातिथिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२१९. दूरादिहेव यत्सतोऽ रुणप्सुरशिश्वितत् । वि भानुं विश्वथातनत् ॥

## औषसम्—

१. दूररादीऽ२३हे४व४य५त्स५ता५ः । अ२रु२णप्सुर२शिश्वाऽ  
२३यि३ता२त्२ । वि२भानूऽ२३म्बि२ । श्वाथा॒त२न२त्२ ।  
इडाऽ२३भा२३४ऽ३ । ओऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ ११ ॥

ऋषिः—विश्वामित्रो जमदग्निर्वा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२२०. आ<sup>१</sup> नो<sup>२</sup> मित्रावरुणा<sup>३ १ २</sup> घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम् । मध्वा<sup>२</sup> रजांसि<sup>३ १ २</sup> सुक्रतू ॥

१. आ३नो४मि५त्रा५ । व२रु२णा२३ । अ॒रहोवाऽ२३४घृ४तै  
३र्ग३व्यू४ति५मु५ । क्ष२ता२३म्३ । अ॒रहोवा४२ु । माध्वा॒र  
रजा॒रँ२सि२सू२३ । अ॒रहोवा४२ु । क्र२तू२ । इडाऽ२३  
भा२३४ऽ३ । ओऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ १२ ॥

ऋषिः—प्रस्कण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२२१. उदु<sup>२ ३</sup> त्ये<sup>२ ३ २ ३</sup> सूनवो<sup>२ ३</sup> गिरः<sup>१ २ ३ १ २</sup> काष्ठा यज्ञेष्वत्नत । वाश्रा<sup>३ १ २ ३ १</sup> अभिज्ञु<sup>२ २</sup> यातवे ॥

## मरुत्सामम्—

१. उ५दु५त्त्ये५सू५ना५६वो५गि५रा५ः । काष्ठा॒रय२ । ज्ञायि ।  
षु॒वाऽरु॒त्ना३२३४ता५ । वा॒रश्रा॒आऽ२३भी२३ । जूऽ२३या४ऽ  
३ । ता२३ ४५वो५६हा५यि५ ॥ १३ ॥

ऋषिः—मेधातिथिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२२२. इदं<sup>३ २ ३</sup> विष्णुर्वि<sup>३ १ २</sup> चक्रमे<sup>३ १</sup> त्रेधा<sup>२ २</sup> नि दधे<sup>१ २</sup> पदम् । समूढमस्य<sup>३ २</sup> पाँसुले<sup>३ २</sup> ॥

## विष्णुसाम—

१. इ५दा५६मे५ । विष्णूऽ२ुः । वि३च२क्रा३२३४मा५यि५ । त्रायि-  
धा॒नि२ । द२धा॒यिपा२ऽदा४२ुम्२ । समू४२ुहो२ऽऽ । ढाऽ२३  
मा२३ । स्याऽरु॒पा३२३४अ॒पहो५वा५ । ए२३ । सु२ले२ऽऽ ॥ १४ ॥

ऋषिः — मेधातिथिः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — गायत्री ॥ स्वरः — षड्जः ॥

२२३. अतीहि<sup>१ २</sup> मन्युषाविणं<sup>३ १ २</sup> सुषुवांसमुपेरय<sup>३ २ ३ १ २२</sup> । अस्य रातौ<sup>३ २ ३ २ ३ १ २</sup> सुतं पिब ॥

कौत्सप्रम्—

१. अपती<sup>१</sup>पहि<sup>२</sup>मा<sup>३</sup>प । न्युरषा<sup>४</sup>रुवायिणा<sup>४</sup>रुम्<sup>२</sup> । सुरषु<sup>२</sup>वांसा<sup>४</sup>रुम्<sup>२</sup> । होयि । ऊपै<sup>२</sup>राया<sup>५</sup>रु । अरस्य<sup>३</sup>रारा<sup>२</sup>ता<sup>५</sup>रउ<sup>३</sup> । सू<sup>५</sup>रुता<sup>३</sup>र ३४अ<sup>५</sup>हो<sup>५</sup>वा<sup>५</sup> । पी<sup>३</sup>र ३४बा<sup>५</sup> ॥ १५ ॥

ऋषिः — वामदेवः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — गायत्री ॥ स्वरः — षड्जः ॥

२२४. कदु<sup>२ ३ १ २</sup> प्रचेतसे<sup>३ १</sup> महे<sup>२२ ३ १ २</sup> वचो<sup>१</sup> देवाय<sup>२२ ३ १ २</sup> शस्यते । तदिद्व्यस्य<sup>१</sup> वर्धनम्<sup>२२ ३ १ २</sup> ॥

काश्यपम्—

१. क<sup>३</sup>दु<sup>४</sup>प्र<sup>३</sup>चे<sup>४</sup>त<sup>५</sup>से<sup>५</sup> । म<sup>३</sup>हा<sup>२</sup>र<sup>३</sup>यि<sup>३</sup> । वा<sup>५</sup>र ३४चो<sup>५</sup>द्वे<sup>५</sup>वा<sup>५</sup>हा<sup>५</sup>उ<sup>५</sup> । व<sup>४</sup>चो<sup>४</sup>द्वे<sup>५</sup>वा<sup>५</sup> । य<sup>२</sup>शस्या<sup>५</sup>र ३ता<sup>२</sup>र ३यि<sup>४</sup> । त<sup>३</sup>दा<sup>२</sup>र ३यि<sup>४</sup>द्वि<sup>३</sup>या<sup>२</sup>र ३ । स्य<sup>२</sup>वो<sup>५</sup>र ३४वा<sup>५</sup> । धा<sup>४</sup>र ५नो<sup>५</sup>द्वहा<sup>५</sup>यि<sup>५</sup> ॥ १६ ॥

ऋषिः — मेधातिथिप्रियमेधौ ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — गायत्री ॥ स्वरः — षड्जः ॥

२२५. उक्थं<sup>३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २२</sup> च न शस्यमानं<sup>१ २ ३ २ ३ १ २</sup> नागो रयिरा<sup>१ २ ३ २ ३ १ २</sup> चिकेत । न गायत्रं<sup>१ २ ३ २ ३ १ २</sup> गीयमानम् ॥

बार्हदुक्थे द्वे—

१. उ<sup>५</sup>क्थं<sup>४</sup>च<sup>५</sup>नो<sup>४</sup>हा<sup>४</sup>यि<sup>४</sup> । श<sup>२</sup>स्यमानम् । ना<sup>२</sup>गो<sup>२</sup>रा<sup>५</sup>र ३यी<sup>२</sup> । आ<sup>२</sup>चिके<sup>२</sup>ता । न<sup>२</sup>गा<sup>२</sup>या<sup>५</sup>र ३त्रा<sup>२</sup>म्<sup>२</sup> । गी<sup>२</sup> । यमा<sup>५</sup>रुना<sup>३</sup>र ३४अ<sup>५</sup>हो<sup>५</sup>वा<sup>५</sup> । ऊ<sup>३</sup>र ३४पा<sup>५</sup> ॥ १७ ॥

ऋषिः — विश्वामित्रः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — गायत्री ॥ स्वरः — षड्जः ॥

२२६. इन्द्र उक्थेभिर्मन्दिष्ठो<sup>१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २</sup> वाजानां च वाजपतिः । हरिवान्त्सुतानां<sup>१ २ ३ २ ३ १ २</sup> सखा ॥

१. इ॒प॒द्र॒प॒उ॒प॒क्था॒प॒यि॒प । भि॒र॒म्मा॒न्दा॒यि॒ष्ठो॒र॒३ । वा॒जा॒रु॒ना॒३॒२॒३॒४  
आ॒प । वा॒ज॒प॒र॒ति॒रः । ह॒रा॒ऽर॒यि॒रु॒वा॒३॒२॒३॒४न्त॒सू॒प । ता॒ना॒र॑ः  
र॒स । खा । अ॒र॒३॒हो॒४वा॒प । हो॒४ऽप॒यि॒प । डा ॥ १८ ॥

ऋषिः—मेधातिथिप्रियमेधौ ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२२७. आ<sup>२</sup> या<sup>३</sup> ह्युप<sup>१२</sup> नः<sup>३</sup> सु॒तं<sup>३</sup> वा॒जे॒भि॒र्मा<sup>२२</sup> ह॒णी॒य॒थाः<sup>३</sup> । म॒हा॒इ॒व॒ यु॒व॒जा॒निः<sup>३</sup> ॥

कौत्सानि त्रीणि—

१. आ॒४या॒प॒ही॒४ । उ॒प॒न॒र॒स्सु॒र॒त॒म् । हो॒वा॒र॒३॒हा॒र॒यि॒र । वा॒जे॒र॑भि॒र  
म्मा॒ह॒णी॒र॒य॒र॒था॒र॒३ः । हो॒वा॒र॒३॒हा॒र॒यि॒र । म॒र॒हा॒इ॒व॒र  
यु॒वा॒ऽर॒३ । हो॒वा॒र॒३॒हा॒र॒३यि॒३ । जा॒ऽरु॒ना॒३॒२॒३॒४अ॒प॒हो॒प॒वा॒प ।  
ऊ॒र॒३॒ऽर॒३॒४ पा॒प ॥ १९ ॥

ऋषिः—कौत्सो दुर्मित्रः सुमित्रो वा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥

स्वरः—षड्जः ॥

२२८. क॒दा<sup>३</sup> व॒सो<sup>१</sup> स्तो॒त्रं<sup>२</sup> ह॒र्य॒त आ॒ अव॒ श्म॒शा<sup>३</sup> रु॒ध॒द्वाः<sup>१</sup> । दी॒र्घं<sup>२</sup> सु॒तं<sup>३</sup> वा॒ता॒प्या॒य ॥

१. ओ॒४रु॒ हो॒र॒ऽयि॒ऽ । क॒दा॒रु॒व॒३सो॒प । स्तो॒त्रा॒र॒३म्॒३ । ह॒र्य॒३ता॒४  
आ॒प । ओ॒४रु॒ हो॒ऽयि॒ । अ॒३व॒रु॒श्म॒३शा॒प । रु॒३धा॒रु॒दू॒३॒२॒३॒४  
वा॒पः । ओ॒४रु॒हो॒र॒ऽयि॒ । दी॒र्घं॒रु॒सु॒३त॒प॒म्प । वा॒३ता॒र॒३४ऽ३ ।  
पी॒र॒३ या॒४ऽप॒या॒प॒६॒५॒६ । ई॒३॒२॒३४॒प ॥ २० ॥

२. क॒३दा॒र॒३४अ॒३हो॒४वा॒प । व॒सो । स्तो॒त्रा॒र॒३म्॒३ । ह॒र्य॒३ता॒४  
आ॒प । अ॒वा॒र॒३४ । अ॒३हो॒४वा॒प । श्म॒शा॒ऽरु॒ । रु॒३धा॒रु॒दू॒३॒२॒३॒४  
वा॒पः । दी॒र्घा॒र॒३४अ॒३हो॒४वा॒प । सु॒ता॒ऽर॒३म्॒३ । वा॒३ता॒र॒३४ऽ  
३ । पी॒र॒३ या॒४ऽप॒या॒प॒६॒५॒६ ॥ २१ ॥

ऋषिः—मेधातिथिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२२९. ब्राह्मणादिन्द्र राधसः पिबा सोममृतूरनु । तवेदं सख्यमस्तृतम् ॥

और्ध्वसद्मने द्वे—

१. ब्रा॒ह्म॒ण॒दी॒ ॥ द्र॒र॒ध॒साः । पि॒बा॒सो॒मा॒ ४२० ॥  
ऋ॒तू॒र॒नु । त॒वे॒दा॒सा॒ ४२३ । ख्या॒ ४२३ ४३ । स्ता॒ ४२३ ४५  
त्तो॒ ५६ हा॒यि॒ ॥ २२ ॥

ऋषिः—मेधातिथिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२३०. वयं घा ते अयि स्मसि स्तोतार इन्द्र गर्वणः । त्वं नो जिन्व सोमपाः ॥

१. व॒यं॒घा॒ते॒अ॒यि॒स्म॒सा॒ ४५४ । स्तो॒र॒ता॒र॒इ॒न्द्र॒गि॒र्व॒णाः ।  
व॒वा॒ ४२३ हो॒यि । तू॒व॒त्रो॒जी॒ ४२ । व॒वा॒ ४२३ हो । न्व॒र॒सो॒ ४२३ ।  
मा॒ ४२३ पा॒ ४२३ ४५ ॥ २३ ॥

ऋषिः—विश्वामित्रो गाथिनोऽभीपाद उदलो वा ॥ देवता—इन्द्रः ॥

छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२३१. एन्द्र पृक्षु कासु चित्रम्णां तनूषु धेहि नः । सत्राजिदुग्र पौंस्यम् ॥

१. ए॒न्द्र॒पृ॒क्षु॒का॒सु॒चि॒त्र॒म्णां॒त॒नू॒षु॒धे॒हि॒नः । स॒त्रा॒जि॒दु॒ग्र॒पौ॒ंस्य॒म् ॥  
षू॒र॒धा॒यि॒हा॒र॒यि॒ना॒ ४२ । सा॒त्रा॒जि॒र॒दु॒ग्र॒पौ॒ ४२३ ४३ ४३  
या॒र॒उ॒र । वा॒र॒ ४२३ ४५ ॥ २४ ॥

ऋषिः—श्रुतकक्षः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२३२. एवा ह्यसि वीरयुरेवा शूर उत स्थिरः । एवा ते राध्यं मनः ॥

१. ए॒वा॒ह्य॒सि॒वी॒र॒यु॒रे॒वा॒शू॒र॒उ॒त॒स्थि॒रः । ए॒वा॒ते॒रा॒ध्यं॒मनः॒ ॥  
र॒ ४३ स्थि॒र॒रा॒रः । आ॒यि॒वा॒र॒ते॒रा॒ । धि॒या॒ ४२३ ४३ ४३ ४३ ४३  
वा॒र॒ ४३ । स्तो॒र॒षे॒र॒ ४५ ॥ २५ ॥

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२३३. अभि<sup>३ १ २</sup> त्वा<sup>३ १ २</sup> शूर<sup>३ १ २</sup> नोनु<sup>३ १ २</sup>मोऽ<sup>३ १ २</sup> दुग्धा<sup>३ १ २</sup> इव<sup>३ १ २</sup> धेनवः ।

ईशानमस्य<sup>१ २ ३ १ २ २ २</sup> जगतः<sup>३ २ ३ १ २</sup> स्वर्दृशमीशानमिन्द्र<sup>३ १ २</sup> तस्थुषः ॥

१. अपभिपत्वा<sup>३ १ २</sup>पशू<sup>३ १ २</sup>प । र२नोनु<sup>३ १ २</sup>मा४२ुः । ओयिनू<sup>३ १ २</sup>र३मा२ः ।  
आदुग्धा<sup>३ १ २</sup>र३इ२ । व२धायिन<sup>३ १ २</sup>वा४२ुः । ओयिना<sup>३ १ २</sup>र३वा२ः ।  
आयिशा<sup>३ १ २</sup>न२म२ स्य२ज२ग२त२ः । सु२र्वा<sup>३ १ २</sup>र्दृश२म२ । आ३द्रे२३  
शा२म२ । आयिशा<sup>३ १ २</sup>न२ मि२ । द्र२ता<sup>३ १ २</sup>स्थुष२ः । आ३ऽ२३ । स्थू३ऽ२ु ।  
षा३२३४ । अ॒पहो॒पवा॒प । स्थु॒रष॒रस्थुषा३२३४५ः ॥ २६ ॥

२. अपभिपत्वा<sup>३ १ २</sup>र३शू४र५नो४नु४मा५ः । आदुग्धा<sup>३ १ २</sup>र३इ२व२ ।  
धायिना<sup>३ १ २</sup>ऽ२३वा२ः । आयिशा<sup>३ १ २</sup>न२म२स्याजग । ताः । सुँवा<sup>३ १ २</sup>ऽ२ु  
र्द्रे३२३४शा५म्प । ई॒रशा॒नाऽ२३मी२ । द्रातस्थु॒रष॒रः ।  
इन्द्रा<sup>३ १ २</sup>ऽ२३भा२३४ऽ३ । ओ३ऽ२३४५यि५डा ॥ २७ ॥

ऋषिः—भरद्वाजः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२३४. त्वा<sup>१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३</sup>मिद्धि<sup>३ १ २</sup> हवामहे<sup>३ १ २</sup> सातौ<sup>३ १ २</sup> वाजस्य<sup>३ १ २</sup> कारवः ।

त्वां<sup>१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३</sup> वृत्रे<sup>३ १ २</sup>ष्विन्द्र<sup>३ १ २</sup> सत्पतिं<sup>३ १ २</sup> नरस्त्वां<sup>३ १ २</sup> काष्ठास्वर्वतः ॥

भारद्वाजे द्वे—

१. त्वा<sup>३ १ २</sup>पमि<sup>३ १ २</sup>पद्धी५ । हवा४२ुमहे२ । आ । अ२३हो३वा३हा२उ२  
वा२३ । ऊ२३४पा५ । सा॒रतौ॒रवा॒रज२ । स्या२३का४२ुव२ः ।  
आ । औ२३हो३वा३हा२उ२वा२३ । ऊ२३४पा५ । त्वां॒वृत्रा॒यि-  
षु३इ२ । द्र२सा४२ु त्पति२म२ । आ । अ२३हो३वा३हा२उ२  
वा२३ । ऊ२३४पा५ । नरस्त्वा<sup>३ १ २</sup>ङ्काष्ठा२ । सु२आ४२ुर्व्वत२ः ।  
आ । अ२३हो३वा३हा२उ२वा२३ । ऊ२३ऽ२३४पा५ ॥ २८ ॥



ऋषिः—बालखिल्याः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

यां ज॒रि॒तृ॒भ्यो म॒घ॒वा पु॒रू॒व॒सुः स॒ह॒स्रे॒ण॒व शि॒क्ष॒ति ॥

१. अ॒प॒भि॒प॒प्र॒वा॒पः । सु॒र॒रा॒धाऽ॒र॒३सा॒रम् । इं॒द्रम॒र्च्चा॒याथा॒रऽ  
वि॒दाऽ॒र॒३४यि॒४ । यो॒३जा॒र॒३४रि॒३तृ॒३ । भ्यो॒मघ॒वा॒पू॒रुऽ  
वा॒सू॒४रुः । स॒हाऽ॒र॒३ । स्त्राऽ॒रु॒यि॒रु॒णा॒३॒३४अ॒॒प॒हो॒॒प॒वा॒प । व॒र  
शि॒क्ष॒ती॒३॒३४५ ॥ ३० ॥

२. अभायिप्रेवाऽरुः । सु३रा२ुधा३२३४सा५म् । इंद्रामॅच्चाऽर३ ।  
याऽरुथा३२३४अ५हो५वा५ । वी३२३४दे५ । योजरि२तृभ्यो२  
म२घवा॒रॅपु२रू२वसू२ः । स२हार । स्त्रे२णो२वार३शाये२३ ।  
क्षाऽरुता३२३४अ५हो५वा५ । सु२भूर३तयेऽर३४५ ॥ ३१ ॥

३. अ४भि३प्र३व४स्सु५रा५ । ध३सा२३४अ३हो४वा५ । आ५िंद्र-  
म२र्च्च२ । य२थाविदा५२३४यि४ । ओ५६हा५ । यो॒जरि२  
तृ॒भ्यः२ । माघा५२३वा२ । पुरू५२ । वा३२३४सू५ः । स२  
ह॒स्त्रे॒णायि॒वा२३शा२ । हुं॒म्मा॒ये२३ । क्षा५२ुता३२३४अ५हो५  
वा५ । वा३२३४सू५ ॥ ३२ ॥

ऋषिः—नोधाः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२३६. तं<sup>१</sup> वो<sup>२</sup> दस्म<sup>३</sup> मृती<sup>४</sup> षहं<sup>५</sup> वसो<sup>६</sup> र्मन्दा<sup>७</sup> नमन्ध<sup>८</sup> सः<sup>९</sup> ।

अभि<sup>३</sup> वत्सं<sup>२</sup> न स्वसरेषु<sup>३</sup> धेनव<sup>४</sup> इन्द्रं<sup>५</sup> गीर्भिर्न<sup>६</sup> वामहे<sup>७</sup> ॥

नविकम्—

१. तं४व५ः । ए४दा४स्मा५मू५ । ऋ२रती२षह२मू२ । हा४रुयि२ ।  
आऔ२३हो२ । इहा२ । वासो॒र्मन्दा२नमं॒ध२सा२३ः । हा४रु  
यि२ । आअ२३हो२ । इहा२ । अ२भिवत्सन्नस्वसरे२षु२धे२  
नवा॒रैः । हा४रुयि२ । आअ२३हो२ । इहा२ । इन्द्र२मू२ । हा४रु  
यि२ । आअ२३ हो२ । इहा२ । गी३र्भा३रुयि३ः । ना३२३४अ५  
हो५वा५ । वामहे३२ ३४५ ॥ ३३ ॥

अभीवर्तः—

२. तं५वो४ऽ३दा२३स्मा४मृ४ती५ष५हो४वा५ । वासो॒र्मन्दा२ ।  
न२मान्धा२ऽसा४रु । आभिवत्सा२३ऽ२३४मू४ । न३स्व३स४  
रे५ । षु२धायिना२ऽवा४रुः । इन्द्रा॒ङ्गा२ऽयिर्भी३ः । न३वा२३ ।  
मा५२३४५ । हा३२३४५यि५ ॥ ३४ ॥

आभीवर्तम्—

३. तं३वो४द४स्म३मृ४ती५ । ष३हा२ओ३२३४वा५ । वासो॒र्मन्दा॒नमं॒धासा४रुः । आभिवत्सन्न स्वसरेषू धे२ऽनावा४रुः ।  
ओ३ँवा२ । इन्द्रं॒गाऽ२३४यि४र्भी५ः । न२वा॒माऽ२३४५ हा५६  
५६यि६ । भ२ गार३याऽ२३४५ ॥ ३५ ॥

नौधसम्—

४. तं३वो५द४स्म३मृ४ती५ । ष३हा२३मू३ । वाऽ२३४ । सो॒ऽर्मन्दा॒नम५ । न्धा४सा५ः । अ२भि२वरत्स२न्न२स्व२सरे२

षूर३धायि । नाऽ२३वारः । इन्द्रङ्गीर्भायिर्न्ना२३वार । हु३ ।  
हुं२३ । हुं३ । हुं२ । न२वारुन२वो३२३४वा५ । मा४ऽ५हो५६  
हा५यि५ ॥ ३६ ॥

५. ताऽ२३४म्४ । वो४द५स्म४मृ५ती५ । षा४हा५म्५ । व२सो-  
र्मन्दा । ना २३माऽन्धा२३सारः । आऽ२३भी२ । वात्सन्न२ ।  
स्वस२ । रायि । षूधेरुना३२३४वा५ः । आऽ२३यिं३द्रा२स२ ।  
गायिर्भिर्न्न२वोऽ२ ३४वा५ । मा३२३४हे५ ॥ ३७ ॥

[ इति ] अर्द्धप्रपाठकः ॥

ऋषिः — कलिः प्रागाथः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — बृहती ॥ स्वरः — मध्यमः ॥

२३७. तरोभिर्वो विदद्वसुमिन्द्रं सबाध ऊतये ।

बृहद्गायन्तः सुतसोमे अध्वरे हुवे भरं न कारिणम् ॥

लौशे द्वे—

१. ता४रो५ । भायिर्वो वि२दा२३ऽउवाऽ२३ । वा३२३४सू५म्५ ।  
इन्द्रा२२सरबा॒ध२ऊ२तये२ । बृ२हात् । बृ२हा२३ऽउ । वा४रु ।  
गा॒यन्त२स्सु२तसो२मे२अ२ध्व२रे । हु२वेभाऽ२३रा२मृ२ ।  
नाका॒रि२ण२मृ२ । इडाऽ२३भा२३४ऽ३ । ओऽ२३४५यि५ ।  
डा५ ॥ १ ॥

२. ता४रो५ । भायिर्वो वि२दा२३ऽउवाऽ२३ । वा३२३४सू५म्५ ।  
इन्द्रा२२र२बा॒ध२ऊ२तये२ । बृ२हाद्गा२ऽया४रु । तास्सु-  
तसो४रु । मे२अ२ध्वरायि । हु२वेभाऽ२३रा२मृ२ । नाका॒रि२ण२  
मृ२ । इडाऽ२३ भा२३४ऽ३ । ओऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ २ ॥

## क्षुल्लककालेयम्—

३. तपरोपभिपर्व्वोपविपदपद्मापसूपम्प । इंरद्रः२ सरबा२ धार३ऊता२ऽया४रुयिर । बृरहारत् । बृरहरद्गा२ यंरतरस्सुरतरसो२रमा३आध्वार२रा४रुयिर । हु२वारयिर । हु२वे२भ२र२न्न२का२ररि२ण२म् । इडा२३भा२३४२३ । ओ२३४५यि५ । डा५ ॥ ३ ॥

## कालेये द्वे—

४. तपरोपभिपर्व्वोपविपदा५ऽ४द्वा४सूपम्प । इंरद्रः२सरबा२३ । धऊ२ ता३२३४या५यि५ । बृरहात् । बृरहार३उ । वा४रु । गायन्तरसुरतसो२मे२अ२ध्वरे । हु२वेहोयिभा२३रा२म् । नाका२रि२ण२म् । इ२डा२३भा२३४२३ओ२३४५यि५ । डा५ ॥ ४ ॥

## कालेये द्वे—

५. तरो२३भि३र्व्वो२ । वि४दा ४२५द्व५सूपम्प । इंरद्रः२सर बा३धऊ२ऽताया३यि३ । ओ२३४वा५ । ओ३२३४वा५ । बृरहरद्गा२यरन्तः२सुरतरसो३मा अध्वरा३यि३ । ओ२३४वा५ । ओ३२३४वा५ । हुवायिभराम् । नाका२रा३२३४इ४णा५म्प । ओ२३४वा५ । ओ३२३४५यि५ । डा५ ॥ ५ ॥
६. तरोभिर्व्वो२ । वि३द२द्वा३२३४सूपम्प । इंरद्रः२सरबा३धऊ२ऽताया४रुयिर । अ३हो२३वार । २ । बृरहरद्गा२यंरतस्सुरतरसो३मा अध्वरा४रुयिर । अ३हो२३वार । २ । हुवायिभा२रा४रुम् । अ३ हो२३वार । २ । नाका२रि२ण२म् । इडा२३भा२३४२३ओ२३४५यि५ । डा५ ॥ ६ ॥

## महाकालेयम्—

७. त॒प॒रो॒प॒भा॒र॒३यि॒३व्वो॒४वि॒५द॒४द्व॒४सू॒५म्॒५ । इ॒र॒न्द्रा॒ंस॒बा ।  
 ध॒र॒ऊ॒३ त॒र॒या॒ऽर॒३यि॒३ । बृ॒र॒ह॒३द्गा॒३या॒र॒३ । ता॒ऽर॒३४ः ।  
 सु॒४त॒३सो॒४ मे॒५अ॒५ । ध्वा॒र॒३रा॒र॒यि॒२ । हु॒वा॒यि॒भ॒३रौ॒२ ।  
 वा॒र॒३४ऽ३ओ॒२३४वा॒५ । न॒४का॒४ऽ५रि॒५णा॒५म्॒५ । हो॒४ऽ५  
 यि॒५ । डा॒५ ॥ ७ ॥

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२३८. त॒र॒णि॒रि॒त् सि॒षा॒स॒ति वा॒जं पु॒र॒न्ध्या यु॒जा ।  
 आ व इ॒न्द्रं पु॒रु॒हू॒तं न॒मे गि॒रा नै॒मिं त॒ष्टे॒व सु॒द्रु॒वम् ॥

## एषिरे द्वे—

१. त॒प॒र॒५णि॒५री॒५त्॒५ । सि॒३षा॒र॒३सा॒४ती॒५ । वा॒र॒जा॒म्पु॒र॒रा॒म् ।  
 धि॒र॒या॒२यु॒जा । आ॒वा॒र॒३आ॒४यि॒४न्द्रा॒५म्॒५ । पु॒र॒रू॒हू॒र॒तम् ।  
 न॒र॒मे॒रगा॒यि॒रा । ना॒यि॒मी॒र॒३न्ता॒४ष्टे॒५ । वा॒र॒सु॒द्रु॒हा॒ऽर॒३४५  
 म्॒५ ॥ ८ ॥
२. त॒४रा॒४हा॒५उ॒५ । णि॒र॒रि॒र॒त्सी॒र॒३षा॒स॒ति॒र । ह॒र॒या॒र॒यि॒२ । २ ।  
 वा॒जं पु॒र॒र॒र॒म् । धि॒र॒या॒यू॒जौ॒२ । हो॒र॒वा॒र॒३हा॒र॒यि॒२ । आ॒व॒इं-  
 द्र॒म्पु॒र॒र॒र॒३हू॒र॒त॒म् । न॒र॒मा॒यि॒गा॒यि॒रौ॒२ । हो॒र॒वा॒र॒३हा॒र॒यि॒२  
 ने॒र॒मिं॒र॒त॒३ष्टे॒र॒वा॒र॒३सा । अ॒र॒३हो॒३वा॒३हा॒र॒३४औ॒५हो॒५  
 वा॒५ । उ॒र॒पू॒र । हू॒३र॒३४वा॒५म॒५ ॥ ९ ॥

## गौरीविते द्वे—

३. त॒४र॒३णि॒४रि॒३त्सि॒४षा॒५ । सा॒र॒३ती॒४ । वा॒४जं॒५पु॒४रं॒५ध्या॒५  
 यु॒५जा॒४ । वा॒ज॒म्पु॒र॒न्ध्या॒यु॒जा । व॒आ॒ऽर॒३यिं॒३द्रा॒र॒३४म॒४ । पु॒४  
 रु॒४हू॒४ त॒३न्न॒४मे॒५ । गा॒र॒३यि॒३रा॒२ । ने॒र॒मा॒यिं॒ता॒ऽर॒३ष्टे॒र । व॒र  
 सु॒द्रु॒व॒र॒म् । इ॒डा॒ऽर॒३भा॒र॒३४ऽ३ । ओ॒र॒३४५यि॒५ । डा॒५ ॥ १० ॥

४. त४र३णि४रि३त्सि४षा५ । स३ती२३ । वाऽ२३४ । जं४पु४र५  
 न्धि५या५ । यु४जा५ । वा॒जम्पु॒रं॒ध्या॒युजा॒वइंद्र॒म्पुरु॒हूत॒न्नमा४२  
 यि२गायिरा४२ । हा४२ऊऊवायि । ने२मिन्तष्टेवसोवा२३ओऽ  
 २३४वा५ । द्रू४ऽ५वो५६हा५यि ॥ ११ ॥

ऋषिः—मेधातिथिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२३९. पि५बा सु५तस्य रसि५नो मत्स्वा न इन्द्र गो५मतः ।

आ५पि५र्नो बो५धि सध५माद्ये वृ५धे३ऽस्माँ अव५न्तु ते धि५यः ॥

पृष्ठम्—

१. पि५बा४ऽसु२त३स्य४र४सि५ना५ः । मत्स्वाइंद्रगो५मताऽ२३  
 होयिया । आ॒र॒पि॒र्नो॒बो॒धिसध॒माद्ये॒वृ॒धाऽ२३होयिया । अ॒र॒स्माँ  
 आऽ२३वार । तु॒र॒तायि॒धाऽ२३या॒र३४ऽ३ः । ओऽ२३४५यि५ ।  
 डा५ ॥ १२ ॥

शौल्कम्—

२. पि५बा५सु५त५स्य५र५सि५नो५हा५उ५ । मत्स्वा॒नइंद्र॒  
 गो॒माऽ२त३ः । हा॒रुओ३२३४वा५ । आ॒र॒पि॒र्नो॒बो॒धिसध॒मादि॒र  
 ये॒वाऽ२रु॒द्धे३ । हा॒रुओ३२३४वा५ । अ॒र॒स्माँअ॒वंतु॒रते॒धाऽ२  
 य३ः । हा३ओ३२३४वा५ । ई३२३४५ ॥ १३ ॥

जमदग्नेरभीवर्तम्—

३. पि५बा५सु५त५स्य५र५सि५नो५म५त्स्वा५हा५उ५ । ना४२ुः ।  
 इन्द्रा४२ुगो॒मताऽ२३हा॒रउ॒र । आ॒र॒पि॒र्नो॒रँबो॒र । धि॒रसा॒र्ध  
 मा४२ु । दि॒येवृ॒धाऽ२३ । हा॒रउ॒र । अ॒र॒स्माँअ॒वाऽ२३ । हा॒रु ।  
 तु॒रते॒र३होऽ२ु । या३२३४अ॒हो॒५वा५ । धि॒रय॒रतु॒३२३  
 ४५ ॥ १४ ॥

ऋषिः—भर्गः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२४०. त्वं<sup>२३</sup> ह्येहि<sup>३</sup> चैर<sup>१ २</sup> वे विदा<sup>३ २३</sup> भगं<sup>३ १ २</sup> वसुत्तये ।

उद्वा<sup>१ २</sup> वृषस्व<sup>३</sup> मघवन्<sup>१ २</sup> गविष्टय<sup>३ २ ३ १ २</sup> उदिन्द्राश्वमिष्टये ॥

कौल्मालाबर्हिषे द्वे—

१. तु<sup>२</sup>पवा<sup>४</sup>ऽ३२३हो<sup>२</sup>३ए<sup>५</sup>हि<sup>४</sup>चे<sup>५</sup>पर<sup>५</sup>वा<sup>५</sup>यि<sup>५</sup> । वि२दाभगं-  
वसू<sup>४</sup>२ुत्ताया<sup>५</sup>२३४यि<sup>४</sup> । उ५द्वा<sup>५</sup>पवृ<sup>५</sup>ष<sup>५</sup>स्व<sup>५</sup>म<sup>५</sup>घा<sup>४</sup>वा<sup>५</sup>न्<sup>५</sup> ।  
ऐ२होयि । गा<sup>४</sup>२ुविष्टयायि । उदिन्द्रा<sup>५</sup>श्वमोवा<sup>२</sup>३ओ<sup>५</sup>२३४वा<sup>५</sup> ।  
ष्टा<sup>४</sup>५यो<sup>५</sup>५६हा<sup>५</sup>यि<sup>५</sup> ॥ १५ ॥

२. त्व<sup>५</sup>२५ह्ये<sup>५</sup>हि<sup>५</sup>चे<sup>५</sup>परा<sup>५</sup>५६वा<sup>५</sup>यि<sup>५</sup> । वि२दाभगंवसूत्ता<sup>२</sup>५  
या<sup>५</sup>२३४यि<sup>४</sup> । उ४द्वा<sup>५</sup>पवृ<sup>५</sup>ष<sup>५</sup>स्व<sup>५</sup> । मा<sup>४</sup>५५घ<sup>५</sup>वा<sup>४</sup>न्<sup>४</sup> ।  
आयिहि<sup>२</sup> यायि । ग२वि२ष्टाया<sup>४</sup>२ुयि<sup>२</sup> । उदिन्द्रा<sup>४</sup>२ुअश्वमी ।  
ओ२३५म् । ओ३२ ३४वा<sup>५</sup> । ष्टा<sup>४</sup>५यो<sup>५</sup>५६हा<sup>५</sup>यि<sup>५</sup> ॥ १६ ॥

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२४१. न<sup>१</sup> हि<sup>२२</sup> वश्चरमं<sup>३ २ ३ १</sup> च न<sup>२२</sup> वसिष्ठः<sup>३ १ २</sup> परिमंसते ।

अस्माकमद्य<sup>३ १ २ ३ २ ३ १ २</sup> मरुतः<sup>३ २३</sup> सु<sup>३</sup> ते सचा<sup>३ १ २</sup> विश्वे<sup>३ १ २</sup> पिबन्तु<sup>३ १ २</sup> कामिनः ॥

जनित्रे द्वे—

१. न<sup>५</sup>हि<sup>५</sup>वा<sup>२</sup>३श्चा<sup>४</sup>र<sup>५</sup>मं<sup>४</sup>च<sup>४</sup>ना<sup>५</sup> । हु<sup>२</sup>२वेहो<sup>४</sup>२ुयि<sup>२</sup> ।  
वसिष्ठश्चरायिमंसाता<sup>४</sup>२ुयि<sup>२</sup> । अ२स्माकमद्यमरुता<sup>५</sup>२ुः ।  
सु३ता२ुयि२ुसा३२ ३४चा<sup>५</sup> । वायिश्वे२३होयि । पिबा२३हो ।  
तु२का<sup>५</sup>२३ । मा<sup>५</sup>२ु यि२ुना३२३४अ<sup>५</sup>हो<sup>५</sup>वा । ज२नित्रा<sup>५</sup>  
२३४५म् ॥ १७ ॥

२. न३हि३व४श्च५र५म५म्५ । च३ना२३ । व४सि४ष्टा५ः ।  
 होयि२ । परायिमेसाताऽ२३४यि४ । अ४स्मा३क४म४द्य३म४  
 रु४त५ः । सु३ता२३यि३सा४चा५ । वायिश्चेपि२बं२तुरकौ३ ।  
 हो२३५ये२३ । माऽरुयिरुना३२३४अ५हो५वा५ । ज२नी२३  
 त्राऽ२३४५म्५ ॥ १८ ॥

ऋषिः—प्रगाथः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२४२. मा<sup>१</sup> चिद<sup>२३</sup>न्यद्<sup>१</sup> वि<sup>२२</sup> शंसत<sup>३</sup> सखा<sup>१</sup>यो मा<sup>२</sup> रिषण्यत<sup>३</sup> ।  
 इन्द्र<sup>२३</sup>मिस्तोता<sup>१</sup> वृषणं<sup>२३</sup> सचा<sup>१</sup> सुते<sup>२३</sup> मुहुरुक्था<sup>१</sup> च शंसत<sup>२</sup> ॥

मैधातिथम्—

१. मा५चि५द५न्य५दो४हा५यि५ । वि३शा२३३सा४ता५ ।  
 सखा५या४रुहो२५यि । माअ२३हो२ । रायिषा२उ२वा२ ।  
 ण्याता२ उ२वा२ । इन्द्रमिस्तोता वृषणाअ२३हो२ । साचा२उ-  
 २वा२ । सूता२उ२वा२ । मुहुरुक्थाअ२३हो२ । च२शा । अ२हो ।  
 वा३हो३२३४वा५ । सा४ऽ५तो५-६हा५यि५ ॥ १९ ॥

ऋषिः—आङ्गिरसः पुरुहन्मा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२४३. न<sup>२</sup> किष्टं<sup>३</sup> कर्मणा<sup>२२</sup> नशद्<sup>३</sup> यश्चकार<sup>२</sup> सदावृधम्<sup>३</sup> ।  
 इन्द्रं<sup>२३</sup> न यज्ञैर्विश्वगूर्तमृभ्वसमधृष्टं<sup>१</sup> धृष्णुमोजसा<sup>२२</sup> ॥

वैखानसम्—

१. न५कि५ष्टा२३का४र्म५णा४न४शा५त५ । य२श्चा का२रा ।  
 स२दा३ वृ२धाऽ२३म्३ । स२दा३वृ३धा२म्२ । इ२द्रा२न२या ।  
 ज्ञैरुर्वि३श्व२ गू५तेमो२र्भ्व२साऽ२३म्३ । त२मृ३भ्व३सा२म्२ ।  
 अ२धार३ष्टं२धा । ण्णु२मो३जसाऽ२३ । ण्णु२मो३ज३  
 सा२३४ऽ३ । ओ२३४५यि५ । डा५ ॥ २० ॥



गौरुहन्मनम्—

२. न३कि४ष्टं३ङ्क३र्म४णा५न५श५त्प । हो२३४यि४ । य५श्च५-  
का२३रा४स५दा४वृ४धा५म्प । आयिद्रा४रुन्नाया४रु । ज्ञैर्व्विश्व  
गूत्तार्मृभ्वासा४रुम् । अधा४रुहो२ऽ । ष्टा२३धे२३४ । हा५  
ओ४वा५ । ष्णु२मोजसा३२३४५ ॥ २१ ॥

ऋषिः—मेधातिथिर्मेध्यातिथिश्च ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२४४. य ऋते चिदभिश्चिषः पुरा जत्रुभ्य आतृदः ।  
सन्धाता सन्धिं मघवा पुरूवसुर्निष्कर्ता विहुतं पुनः ॥

गार्कषम्—

१. य५ऽऋ५ता२३यि३ची४द५भि४श्चि४षा५ः । पूरा४रुजात्रू४रु ।  
भ्य२आ२तृदा२३ः । होवा२३हारयि२ । सांन्धा४रुतासा४रु  
म् । धायिम्म२घवा२रपु२रु२वसु२ः । होवा२३हारयि२ ।  
नायिष्का४रुत्तावी४रु । हु२तं२पुन२ः । हो । वा२रु । हा३२३४ ।  
अ५हो५वा५ । ऊ३२३४पा५ ॥ २२ ॥

ऋषिः—मेधातिथिर्मेध्यातिथिश्च ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥  
स्वरः—मध्यमः ॥

२४५. आ त्वा सहस्रमा शतं युक्ता रथे हिरण्यये ।  
ब्रह्मयुजो हरय इन्द्र केशिनो वहन्तु सोमपीतये ॥

वत्वारि भारद्वा [ जा ] नि—

१. आ५त्वा५स५हा५ । स्त्र२माशा२ऽता४रुम् । यूक्ता२रथे२हि२  
र२ण्य२ये२ । ब्रह्मायू२ऽजा४रुः । हारय२इ२ । द्र२कायिशा२ऽ  
यिना२३४ः । वहान्तू२ऽसो२३ । मा२रुपा३२३४अ५हो५  
वा५ । ता३२३४ये५ ॥ २३ ॥

२. अ॒प॒हो॒प॒आ॒प॒त्वा॒प॒स॒प॒हा॒प॒द॒ए॒प॒ । स्त्र॒मा॒शा॒र॒ऽता॒ऽर॒३४म॒४ ।  
 हा॒३हो॒र॒यि॒र॒ । यू॒क्ता॒र॒र॒थे॒र॒हि॒र॒र॒ण्य॒र॒ये॒र॒ । ब्र॒ह्मा॒यू॒र॒ऽजा॒ऽर॒  
 ३४ः । हा॒३हो॒र॒यि॒र॒ । हा॒र॒य॒र॒इ॒र॒ । द्र॒का॒यि॒शा॒र॒ऽयि॒ना॒ऽर॒३४ः ।  
 हा॒३हो॒र॒यि॒र॒ । व॒हा॒न्तू॒र॒ऽसो॒ऽर॒३४ । हा॒३हो॒रु॒ । म॒३पी॒र॒३ ।  
 ता॒ऽर॒३४या॒४यि॒४ । उ॒प॒हु॒प॒वा॒प॒द॒हा॒प॒उ॒प॒ । वा॒प॒ ॥ २४ ॥
३. आ॒४त्वा॒प॒स॒र॒ह॒४स्त्र॒प॒मा॒४श॒प॒त॒४मा॒४ । यु॒र॒क्ता॒र॒थे॒हि॒र॒ण्य॒ये॒ ।  
 ब्र॒ह्म॒र॒यु॒जो॒ह॒र॒य॒इं॒द्र॒के॒हो॒४रु॒यि॒र॒ । शा॒यि॒ना॒ऽर॒३ः । हा॒र॒उ॒र॒  
 वा॒र॒ । व॒हं॒तु॒सो॒म॒र॒पौ॒३हो॒र॒३ । हु॒म्मा॒ऽरु॒ । त॒३या॒र॒३यि॒३ । ओ॒ऽर॒  
 ३४वा॒प॒ । ऊ॒३२३४५ ॥ २५ ॥
४. आ॒३त्वा॒४स॒४ह॒३स्त्र॒४मा॒५ । श॒३ता॒रु॒म॒रु॒ । आ॒३त्वा॒४स॒प॒हा॒प॒ ।  
 स्त्र॒मा॒श॒त॒र॒म॒र॒ । आ॒ऽर॒यि॒र॒हि॒र॒या॒३२३४हा॒प॒यि॒प॒ । यू॒क्ता॒र॒र॒-  
 थे॒र॒ हि॒र॒र॒णा॒र॒ये॒र॒ । ब्र॒ह्मा॒यू॒र॒ऽजा॒ऽर॒३ः । आ॒ऽर॒यि॒र॒हि॒र॒  
 या॒३२३४हा॒प॒यि॒प॒ । हा॒र॒य॒र॒इ॒र॒ । द्र॒का॒यि॒शा॒र॒ऽयि॒ना॒ऽर॒३ः ।  
 आ॒ऽर॒यि॒र॒हि॒र॒या॒३२३४हा॒प॒यि॒प॒ । व॒हा॒न्तू॒र॒ऽसो॒ऽर॒३ । आ॒ऽर॒-  
 यि॒र॒हि॒र॒या॒३२३४हा॒प॒यि॒प॒ । म॒र॒पी॒ता॒ऽर॒३या॒र॒३४ऽ३यि॒३ ।  
 ओ॒ऽर॒३४५यि॒प॒ । डा ॥ २६ ॥

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२४६. आ म॒न्द्रैरि॒न्द्र ह॒रि॒भिर्या॒हि म॒यूर॒रोम॒भिः ।

मा त्वा के चि॒न्नि ये॒मु॒रि॒न्न पा॒शि॒नोऽ ति ध॒न्वे॒व तां इ॒हि ॥

वाग्नाणि त्रीणि—

१. आ॒प॒मं॒प॒द्रै॒प॒रा॒प॒ । [ यिं— ] द्र॒ह॒र॒रि॒र॒भा॒र॒यि॒र्या॒र॒हि॒र॒म॒र॒यू॒र  
 रा॒र॒३रो॒मा॒भा॒र॒३यि॒३ः । मा॒४त्वा॒प॒का॒४यि॒४ची॒प॒त्प॒ । नि॒र॒ये॒रु  
 मू॒३२३४री॒प॒त्प॒ । न॒र॒पा॒र॒शि॒नाः । अ॒र॒ति॒र॒धा॒न्वे॒४रु॒ । व॒र॒ता॒ऽ  
 २३ । आ॒ऽरु॒यि॒रु॒हा॒३२३४अ॒प॒हो॒प॒वा॒प॒ । वा॒३२३४या॒प॒ः ॥ २७ ॥

२. आ॒४मं॑५द्रै॒४रिं॑५द्र॑५ । हा॒४ऽ५रि॑५भा॒४यि॑४ः । या॒२हि॑ म॒यूर॑२  
रो॒मभा॑यिः । मा॒त्वा॒काऽ२३यि॑३ची॒२त्॒२ । ना॒यि॒येमु॑रि॒२त्॒२ ।  
न॒२पा॒शाऽ२३यि॑३ना॒२ः । अ॒२ता॒यि॒धाऽ२३न्वे॑२ । व॒२ताऽ२३ ।  
अऽ॒रु॒यि॒रुहा॑३२३४अ॒५हो॑५वा॒५ । व॒२यो॒२३भी॑ऽ२३४५ः ॥ २८ ॥
३. आ॒४मं॑५द्रै॒४रिं॑५द्र॑५ । हा॒४ऽ५रि॑५भी॒४ः । या॒२हि॑ म॒यूर॑२रो॒म  
भा॒३ । वा॒४२ु । मा॒त्वा॒४२ु । के॒चि॒न्नि॒येमु॑रि॒न्न॒२पा॒शि॒ना॒३ । वा॒४२ु ।  
आ॒ती॒४२ु । ध॒न्वे॒व॒२ता॒२३ऽ२३ । ई॒३२३४हि॑५ ॥ २९ ॥

ऋषिः—गोतमः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२४७. त्वमङ्ग॑ प्र शंसिषो देवः शविष्ठ॑ मर्त्यम् ।

न त्वद॑न्यो मघवन्नस्ति मर्दि॑तेन्द्र ब्रवी॑मि ते वचः ॥

गौङ्गवम्—

१. त्व॑५मा॒२३३गा॑४प्र॒५श॑४सि॒४षा॑५ः । दा॒यि॒वा॒४२ुः । श॒वि॒ष्ठ॑३  
मा॒२३ । तर्॑४या॒५म् । न॒२त्व॑द॒न्यो म॑घ॒वाऽ२३ना॑ऽ२ु । स्ति॑३  
मा॒२३डा॑४यि॒४ता॑५ । आइ॑न्द्र॒ब्र॒२ । वा । अ॒२३हो॑२ । मि॒२तो॑ऽ  
२३४वा॑५ । वा॒४ऽ५चो॑५६हा॒५यि॑५ ॥ ३० ॥

ऋषिः—नृमेधपुरुमेधौ ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२४८. त्वमिन्द्र॑ यशा अस्यूजीषी शवसस्पतिः ।

त्वं वृ॒त्राणि॑ हंस्यप्रती॒न्येक॑ इत् पु॒र्वनु॑त्तश्चर्षणीधृतिः ॥

यशः सामम्—

१. त्व॑४मिं॑५द्रा॒४ । य॒२शाः॑ । अ॒सा॒यि । ऋ॒२जी॒॑२षी॑श॒वस॑२ः ।  
प॒ता॒यिः । त्वं॒॑२वृ॒॑२त्रा॒२णी॒॑२३हा॒॑२ुसि॒॑३या॒॑२ । प्र॒ती॒ना॑ए॒४२ु ।  
क॒इ॒त्पू॒रू॒४२ु । अ॒नू॒४२ुहो॒॑२ऽ । तश्च॒॑२ । षाऽ॒रु॒णा॒॑३२३४अ॒५हो॑५  
वा॒५ । धा॒॑३२३४॒र्त्ती॑५ः ॥ ३१ ॥

१. अत्रैकमक्षरं घृष्टमतो नैव पठितुं शक्यते किन्तदिति । — सम्पादकः

साधम्—

२. त्व५मा२३यिं३द्रा४य५शा४अ४सा५यि५ । ऋ२जायिषी२  
शाऽ२ । व३सा२३४५ः । पा३२३४ती५ः । त्वंवृत्राणिहंस्य२  
प्र२तीन्येक२इत्पु२ । रू । आना२ओ३२३४वा५ । ताश्चा२  
ओ३२३४वा५ । ष४णा४ ५यि५धृ५तीः५ । हो४ऽ५यि५ ।  
डा ॥ ३२ ॥

वैरूपम्—

३. हा५उ५त्व५मिं५द्रा५ । या२शा२ओ३२३४सी५६ । हा५उ५ ।  
ऋ२जा२यि२षी३२३४शा५ । वा२स२ऽस्पा३२३४ती५६ः ।  
हा५उ५ । त्वंवृत्रा । णी२हंसिया । हा५उ५ । प्र२ती२ना३२३४  
ए५ । क२इत्पू२३४रू५६ । हा५उ५ । अ२नुत्ताऽ२३४श्चा५६ ।  
हा५उ५ । षाऽ२ुणा३२३४अ५हो५ वा५ । धा३२३४  
त्ती५ः ॥ ३३ ॥

समीचीनः—

४. हा५उ५त्व५मिं५द्रा५ । य२शाअसि२ । होयि । २ । होये२३४ ।  
हा५उ५ । ३ । ऋ२जी२षीशवस२स्पति२ः । होयि । २ । होये२३४ ।  
हा५उ५ । ३ । त्वंवृत्राणिहंस्य२प्र२तीन्येक२इत्पु२रू ।  
होयि । २ । होये२३४ । हा५उ५ ३ । अनुत्त२श्च२ऋ२ष२णी२  
धृति२ः । होयि । २ । होये२३४ । हा५उ । २ । हा५उ५ वा५ ।  
सुवर्म्महा३२३४५ ॥ ३४ ॥
५. हो५त्व५मिं५द्रा५ । य२शाअसि२ । होये२३ । हो३२३४५ ।  
ऋ२जी२षीशवस२स्पति२ः । होये२३ । हो३२३४५ । त्वंवृत्रा-  
णिहंस्य२प्र२ तीन्येक२इत्पु२रू । होये२३ । हो३२३४५ ।

अनुत्तरश्चरऋषरणीर धृतिरः । होयेर३ । हो३र३४वा५६ ।  
हा५उ५वा५ । सुवर्म्मयाऽर३ ४५ः ॥ ३५ ॥

[ इति ] षष्ठप्रपाठकः ॥

ऋषिः—मेधातिथिर्मेध्यातिथिश्च ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥  
स्वरः—मध्यमः ॥

२४९. इन्द्रमिदेवतातय इन्द्रं प्रयत्यध्वरे ।

इन्द्रं समीके वनिनो हवामह इन्द्रं धनस्य सातये ॥

यौत्कश्रूचम्—

१. इन्द्रमिदेवतातय इन्द्रं प्रयत्यध्वरे । तयायि । इन्द्रं प्रयतिरयध्वाऽर३रा२  
यिर । आयिन्द्रा४रुम् । सरमीरके वनिनो हरवामाऽर३हार  
यिर । आयिन्द्रा४रुम् । धानस्यरसोऽर३४वा५ । ता३र३४  
ये५ ॥ १ ॥

ऋषिः—मेधातिथिर्मेध्यातिथिश्च ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥  
स्वरः—मध्यमः ॥

२५०. इमा उ त्वा पुरुवसो गिरो वर्धन्तु या मम ।

पावकवर्णाः शुचयो विपश्चितोऽभि स्तोमैरनूषत ॥

१. इमा उ त्वा पुरुवसो गिरो वर्धन्तु या मम । गिरा४५  
वार्द्धन्तु३या३मरमाऽर३ । पारव३करव३र्णाः । शुचयो-  
वीर३पार । हुं३ हुं३ । चा३र३४यि४ता५ । अरभिस्तोमैर२  
नौ४रु । हुवायि । हो३वार । षरता । अर३हो४वा५ । हो४५५  
यि५ । डा ॥ २ ॥

## आन्त्राणि त्रीणि—

२. इ॒प॒मा॒प॒उ॒प॒त्वा॒प॒पु॒रू॒प॒वा॒प॒सो॒प॒हा॒प॒उ॒प॒ । गि॒रो॒व॒र॒र्द्ध॒२ ।  
 तू॒या॒र॒ऽम॒मा॒ऽरु॒ । इ॒३हा॒३हा॒२हो॒यि॒ । इ॒२हो॒३२३४वा॒प॒ । पा॒र॒व॒र॒  
 क॒व॒र्णा॒२श॒शु॒रच॒य॒रुः॒ । इ॒३हा॒३हा॒२हो॒यि॒ । इ॒२हो॒३२३४वा॒प॒ ।  
 वि॒र॒प॒र॒श्चि॒ । तो॒ । अ॒भि॒स्तो॒मैः॒ । इ॒२हा॒३हा॒२हो॒यि॒ । इ॒२हो॒३२३४  
 ३४वा॒प॒ । अ॒र॒नू॒ऽर॒३ । षा॒ऽरु॒ता॒३२३४औ॒प॒हो॒प॒वा॒प॒ । ऊ॒३२३४  
 पा॒प॒ ॥ ३ ॥

३. इ॒४मा॒३उ॒४त्वा॒प॒पु॒रू॒प॒ । व॒३सा॒२३उ॒३ । गा॒ऽ२३४यि॒४ । रो॒४  
 व॒प॒र्द्ध॒प॒न्तु॒प॒या॒४ः । म॒४मा॒प॒ । पा॒र॒व॒र॒क॒व॒र्णा॒२श॒शु॒च॒यो॒२ वि॒र॒  
 प॒र॒श्चि॒ । ता॒ । अ॒२३हो॒२ । आ॒अ॒२३हो॒२ । अ॒२भि॒स्तो॒मैर॒२ नौ॒४रु॒ ।  
 हु॒वा॒यि॒ हो॒३ँवा॒२ । ष॒२त॒४ । अ॒२३हो॒४वा॒प॒ । हो॒४ऽप॒ यि॒प॒ ।  
 डा॒प॒ ॥ ४ ॥

ऋषिः—मेधातिथिर्मेध्यातिथिश्च ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥

स्वरः—मध्यमः ॥

२५१. उ॒दु॒<sup>२ ३</sup> त्ये॒<sup>१</sup> म॒धु॒म॒त्त॒मा॒<sup>२२</sup> गि॒र॒<sup>३</sup> स्तो॒मा॒स॒<sup>२ ३</sup> ई॒र॒ते॒ ।<sup>१ २</sup>

स॒त्रा॒जि॒तो॒<sup>३</sup> ध॒न॒सा॒<sup>१ २</sup> अ॒क्षि॒तो॒त॒यो॒<sup>३ १</sup> वा॒ज॒य॒न्तो॒<sup>२२</sup> र॒था॒इ॒व॒ ॥<sup>३ २ ३ १ २</sup>

## वासिष्ठानि त्रीणि—

१. उ॒प॒दु॒प॒त्ये॒प॒मा॒प॒ । धू॒र॒म॒त्त॒मा॒ऽर॒३गा॒रु॒यि॒रु॒रु॒स्तो॒३२३४मा॒प॒सा॒  
 ई॒र॒ता॒ये॒३ । सा॒र॒त्रा॒रु॒जा॒३२३४यि॒४ता॒प॒ः । धा॒र॒ना॒रु॒सा॒३२३४  
 आ॒प॒ । क्षी॒र॒तो॒ता॒४या॒ऽर॒३ः । वा॒र॒जा॒रु॒या॒३२३४न्ता॒प॒ः । र॒३था॒  
 र॒३आ॒४ऽप॒यि॒प॒वा॒प॒६५६ ॥ ५ ॥

२. उ४दु४त्ये४मा४ऽ५धू४म४त्त४मा४ः । गिरस्तो॒मा॒सआ४रु॒यि॒र-  
राता४रु यि॒र । स॒रत्रा॒रजितो॒धना४रुसा॒अ । क्षि॒रतो॒र  
ताया४रुः । वा॒जय॑न्तो॒रथा॒र३ऽउवा॒ऽर३ । ई३॒र३४वा॒५ ॥ ६ ॥

३. हः३॒र३४उ३दु४त्ये३म३धु४म॒५ । त३मो३॒र३४हा॒५यि॒५ ।  
गायि॒रा४रुस्तो॒माऽरु । स३आ॒र३४५यि । रा३॒र३४ते॒५ । स॒र  
त्रा॒रजितो॒रँ ध॒रन॒रसा॒अक्षितो॒रत॒रया३॒र३४५ः । हः३॒र३४  
५ । वा॒ज४य३तो॒र४था॒५ः । इ३वो३॒र३४हा॒५यि॒५ । वा॒रज॒र  
य॑न्तो॒ररथा॒रइ॒र । वा । अ॒र३हो॒४वा॒५ । हो॒४ऽ५यि॒५ । डा॒५ ॥ ७ ॥

ऋषिः—देवातिथिः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥

स्वरः—मध्यमः ॥

२५२. यथा<sup>१ २ ३ २ ३ २ ३ २ उ</sup> गौरो अपा<sup>३ १ २ २</sup> कृतं तृष्यन्नेत्यवेरिणम् ।

आपित्वे<sup>३ १ २ ३ २ उ</sup> नः प्रपित्वे<sup>३ १ २ ३ १ २ ३ २ उ</sup> तूयमा गहि कण्वेषु सु सचा पिब<sup>३ १ २</sup> ॥

१. य॒रथा॒गौऽ॒र३रो॒४अ॒४पा॒५कृ॒५ता॒५म्॒५ । तृष्यन्ने॒तिय॒रवे॒राऽ॒र३  
यि॒३णा॒रम्॒२ । आ॒रपि॒रत्वे॒नष्प्रपि॒त्वेतू॒य॒रमा॒गाऽ॒र३ही॒र ।  
कण्वे॒४रुषु॒रसूऽ॒र३ । साऽरु॒चा३॒र३४अ॒५हो॒५वा॒५ । पी३॒र३४  
बा॒५ ॥ ८ ॥

२. ओ॒रवा॒रुओ३॒र३४वा॒५ । या॒४था॒५ । गौ॒ररो॒रअ॒र३पा॒कृतम् ।  
ओ॒र३४ । हा॒३हो॒रयि॒र । तृष्यन्ने॒रति॒रया॒र३वा॒यिरि॒णम् ।  
ओ ॒र३४ । हा॒३हो॒रुयि॒रु । आ३॒र३४पी॒५ । त्वे॒नष्प्रपि॒त्वेतू॒-  
या॒मा॒रऽगहि॒३ । ओ॒र३४ । हा॒३हो॒रयि॒र । कण्वे॒४रुषु॒रसूऽ॒र३ ।  
साऽरु॒चा३॒र३४अ॒५हो॒५वा॒५ । पि॒रबा॒र३ईऽ॒र३४५ ॥ ९ ॥

ऋषिः—भर्गः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२५३. शगध्यू३षु शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः ।

भर्गं न हि त्वा यशसं वसुविदमनु शूर चरामसि ॥

हारायणानि त्रीणि—

१. शगध्यू५षु५ । शरचायिपतारुयिरु । ई३२३४न्द्रा५ । विश्वा२-  
भी२३रूतिभारुयिरुः । भा३२३४गा५म् । नरहिरत्वा२-  
यरशा२३साम्बसुरु । वी३२३४दा५म् । अनु५२३ । शू५रु-  
३२३४अ५हो५वा५ । चरा२म२सी३२३४५ ॥ १० ॥

२. शगध्यू४ष्वौ४हो४५यि५श५ची५प४ता४यि४ । आयिन्द्रविश्वा  
भिरूतिभिः । भगान्ना२३ही२ । त्वायशसाम् । वसूर३हारयिर ।  
वायिदा४रुम् । अनुशूरचरोवार३ओ५२३४वा५ । मा४५५  
सो५६हा५यि५ ॥ ११ ॥

३. शगध्यू३षु३श४ची५ । प३तारुयिरु । श३गध्यू४षु५ । श२  
चायिपते२ । आ५२यिरहिरमा३२३४हा५ः । आयिन्द्रविश्वा२ ।  
भिरूतिभिरः । आ५२यिरहिरमा३२३४हा५ः । भागन्नरहिर  
त्वा२यरश२सरम् । वरसूविद२म् । आ५२यिरहिर मा३२  
३४हा५ः । अनुशूर५रा५२३ । आ५२यिरहिरमा३२३४ हा५ः ।  
चरामा५२३सार३४५३यि३ । ओ५२३४५यि५ । डा५ ॥ १२ ॥

ऋषिः—रेभः काश्यपः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२५४. या इन्द्र भुज आभरः स्ववी असुरेभ्यः ।

स्तोतारमिन्मघवन्नस्य वर्धय ये च त्वे वृक्तबर्हिषः ॥



## वाग्नाणि त्रीणि—

१. या३हो२रुयि२ । ई३२३४न्द्रा५ । भु२जा२३आभा२ऽरा४रुः ।  
सुवाऽ२३हा२ । व्वाँः२अ२सूर३रायिभा२ऽया४रुः । स्तोता२३  
हा२ । रमिन्मघवन्नस्यावर्द्धाया४रु । व्ययिचा२३हा२यि२ ।  
त्वे२वृ२क्तरबक्रहाऽ२३यि३षा२३४ऽ३ः । ओंऽ२३४५यि५ ।  
डा५ ॥ १३ ॥
२. या५ई५द्र५भु५ज५आ५भा५दरा५ःसु२वरव्वाँम्२अ२सुरेऽरु  
भा३ २३४या५ः । हा२ । अ३हो३२३४हा५ । स्तो३ता३र२  
मायित् । माघ२वरन्ना । स्यवाऽरुर्द्धा३२३४या५ । हा२ । अ३  
हो३२३४हा५ । ये२चत्वाऽ२३ यि३त्रे२३ । हा२ । अ३हो३२३४  
हा५ । क्तरबक्रहाऽ२३यि३षा२३४ऽ३ः । ओंऽ२३४५यि५  
डा५ ॥ १४ ॥
३. या४ई५द्र५भु४ज५आ४भ५र५ः । उ५हु४वा४हा५यि५ । सुवव्वाँः  
२असुरे२भ्यः । उ२हुवाऽ२३हा२यि२ । स्तो२तारमिन्मघ२वर  
न्न२ । स्यावर्द्धाया४रु । उ२हुवाऽ२३हा२यि२ । ये२चत्वाऽ२३  
यि३त्रे२ । उ२ हुवाऽ२३हा२ । क्तरबक्रहाऽ२३यि३षा२३४ऽ  
३ः । ओंऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ १५ ॥

ऋषिः—जमदग्निः ॥ देवता—आदित्याः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२५५. प्र मित्राय प्रार्यम्णो सचथ्यमृतावसो ।

वरुथ्ये३ वरुणे छन्द्यं वचः स्तोत्रं राजसु गायत ॥

## वरुणसामानि त्रीणि—

१. प्र५मि५त्रा५य५प्रा५हा५उ । आ४रुयम्णायि । सचा४रुहो ।  
थि२रयौ४रु । हुवायि । आ२त्ता५वसाउ । वरा४रुहो । थि२रयौ४रु-

हुवायि । वरुणे । छादीरयंवचाः । स्तोत्रा४२३२हायिरा२जौ४२ ।  
हुवा । सू२गायता२३५उवा५२३ । ओ२३४पा५ ॥ १६ ॥

२. प्र५मि५त्रा५य५प्रो२हो४वा५ । आर्यम्णा२ । अ३हो२३४यि४ ।  
अ२होवा२ । साचथ्य२म् । ऋ२तावासा२ । अ३हो२३४यि४ ।  
अ२हो३ वार । वारूथ्ये२व२रु२णे२छ२दि२याम्वाचा२ ।  
अ३हो२३४यि४ । अ२हो३वार । स्तोत्रः । राजा२ । अ३हो२३४  
यि४ । अ२हो३वार । १षू२गायाता । अ३हो२३४यि४ । अ२  
होईया२३४५३ । ओ५२३४५यि५डा५ ॥ १७ ॥

३. प्र२मि५त्रा५य५प्रा५र्य५म्णो४वा५ । ओं४वा५ । साचथ्य२म् ।  
ऋ२तावा२५सा४२उ२ । वा५२३रू२ । था५२३या२यि२ ।  
वरुणे२छ । दाया५२३३हा२यि२ । वचो३आ२ । स्तो२त्रः  
राजसु२ गा२य२त२ । स्तो५२३त्रा२म् । राजसु२गौ३ । हो२३५  
२३४ । वा५ । या४५५तो५६हा५यि५ ॥ १८ ॥

ऋषिः — मेधातिथिः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — बृहती ॥ स्वरः — मध्यमः ॥

२५६. अ३भि१ त्वा२ पूर्व३पी१तय२ इन्द्र३ स्तोमे१भिरा३यवः२ ।

समी३चीना१स२ ऋ३भवः१ समस्वरन् रु३द्रा१ गृणन्त३ पूर्व्यम्२ ॥

वषट्कारणिधनम्—

१. अ४भि३त्वा५पू४र्व्व३पी४त५ये५ । अ५भि५त्वा२३पू४र्व्व५पी४  
त४या५यि५ । इं२द्र२स्तो२मे२भी२३रायवा४२ुः । भि२राया२५  
वा५२३ः । ओ॒मो३ँवा२ । स२मी२ची२रना२स२५ऋ२भ२व२  
स्सा२३मा२स्वरा४२ुन्२ । स२मास्वा२५रा५२३न्३ । ओं॒मोवा२ ।

१. अत्र 'षू' इत्यस्य स्थाने 'सू' इति स्यात् । — सम्पादकः

रु२द्रा२गृ२णं२ता२३पूर्व्विया४रुम्२ । त२पूर्व्वार२या२३म्३१

...म्ओ२रु । वा३२३४ । औ॒प॒हो॒प॒वा॒प॒ऊ३२३४पा ॥ १९ ॥

ऋषिः—नृमेधपुरुमेधौ ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२५७. प्र व इन्द्राय बृहते मरुते ब्रह्मार्चत ।

वृत्रं हनति वृत्रहा शतक्रतुर्वज्रेण शतपर्वणा ॥

मारुतम्—

१. प्र४व५इं४द्रा५य५बृ५ह५ते४ । प्र५वा४ः । इं२द्रा२या२३ये॒हा२३  
ते२३ । ओ॒मो॒इँ॒वा॒र । म२रु२तो॒र॒ब्र॒ह्मा॒२३आ॒र्च्चा॒२३  
ता२३ । ओ॒मो॒इँ॒वा॒र । वृ२त्र॒हा॒ना॒र । ति॒र॒वृ॒र । त्रा॒हा॒२३  
ओ॒मो॒इँ॒वा॒र । श२ता॒क्र॒तुः । वा३२३४ज्रे५ । ण३शा२३ ।  
हा२३हा२ । त४पा४५प॒र्व्व५णा५ । हो४५यि५डा५ ॥ २० ॥

२५७क. १स त्वा हिन्वति धीतिभिः संश्रवसे स त्वा रिणति धीतिभिः  
विश्रवसे । स त्वा ततक्षुर्धीतिभिः सत्यश्रवसे सं त्वा शिशति धीतिभिः ॥

सांश्रवसः—

१. सा॒त्वा॒हि॒र॒न्व॒र । ति॒र॒धा॒यि॒ता॒यि॒भी॒२३ः । ता२रु॒यि॒रु ।  
भा३२३४ । अ॒प॒हो॒प॒वा॒प । स॒स्त्र॒र॒व॒र॒से॒२३सा॒त्वा॒रि॒ण॒र ।  
ति॒र॒धा॒यि॒ता॒यि॒भी॒२३ः । ता२रु॒यि॒रु॒भा३२३४औ॒प॒हो॒प॒वा॒प ।  
वि॒श्र॒र॒व॒र॒से॒२३ । सा॒त्वा॒त॒र॒त॒र । क्षु॒र॒ब्धा॒यि॒ता॒यि॒भी॒२३ः ।  
ता॒रु॒यि॒रु॒भा३२३४ । अ॒प॒हो॒प॒वा॒प । स॒र॒त्य३२३श्र॒र॒व॒र॒से॒२३ ।  
३सां॒त्वा॒शि॒र॒श॒र । ति॒र॒धा॒यि॒ता॒र॒यि॒र॒भी॒४रुः । [ ता ]  
यि॒भि॒४रुः ॥ २१ ॥

१. अत्र '३' त्रिसंख्याया अग्रेऽनुदात्तयुतं किमक्षरमिति न ज्ञायते हस्तलेखेऽस्पष्टत्वात् ।

२. अयं मन्त्रः सामवेदेऽद्यत्वे नोपलभ्यते, कस्मिंश्छिन्नाखाग्रन्थे स्यादयं मन्त्र इत्यन्वेष्टव्यम् ।

३. मूलगानग्रन्थेऽस्मादारभ्यामन्त्रांतं 'बृहदिन्द्राय...' इति मन्त्रस्यारम्भे लिखितम् । —सम्पादकः

ऋषिः — नृमेधपुरुमेधौ ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — बृहती ॥ स्वरः — मध्यमः ॥

२५८. <sup>३ १ २ २</sup>बृहदिन्द्राय <sup>३ १ २</sup>गायत मरुतो <sup>३ १ २</sup>वृत्रहन्तमम् ।

<sup>२ ३ २ ३ १ २</sup>येन <sup>३ १ २ ३ २ ३ २ ३</sup>ज्योतिरजनयन्नृतावृधो <sup>१ २</sup>देवं देवाय जागृवि ॥

श्रवसः —

२. बृ२ह२दि२द्रा२या२३गाया२ऽता४२ु । या॒ता४२ु । मा२रु२तो२  
वृ२त्रा२३हान्ता२ऽमा४२ुम् । ता॒मा४२ुम् । ये॒न२ज्यो२रति२र२  
ज२न२य२त्रे२३ता वा२ऽर्द्ध४२ुः । वा॒र्द्धा४२ुः । दे॒व२रन्दे२  
वा॒या२३जाग्र२ऽवी४२ु । ग्रे॒वी४२ु । सां॒त्वा॒शि२श२ । ति॒रधा  
यि॒तायि॒भी२३ः । ता॒ऽरु॒यि॒रु । भी३२३४ । अ॒प॒हो॒प॒वा॒प ।  
श्रव॒से३२३४५ ॥ २२ ॥

ऋषिः — वसिष्ठः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — बृहती ॥ स्वरः — मध्यमः ॥

२५९. <sup>२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २</sup>इन्द्रं क्रतुं न आ भर पिता पुत्रेभ्यो यथा ।

<sup>१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ २</sup>शिक्षा णो अस्मिन्पुरुहूत यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि ॥ ७ ॥

१. इं२द्राअ२३हो२ । क्र२तु२न्ना२३आभा२ऽरा४२ु । पि॒रताऔ२३  
हो२ । पु॒रत्रे॒भी२३योया२ऽथा४२ु । शि॒रक्षाअ२३हो२ । णो॒र-  
अ॒स्मि॒न्पु॒ररु॒हू॒तया॒मा२ऽनी४२ु । जी॒वाऽ२३ः । ज्यो॒ऽरु॒ता  
३२३४अ॒प॒हो॒प॒वा॒अ॒रशी॒रम॒ही३२३४५ ॥ २३ ॥

२. ई॒ऽद्र॒ऽक्र॒ऽतू॒ऽऽप॒न्न॒प॒आ॒प॒भ॒रा॒ । पि॒रता॒पु॒त्रेभि॒रयो॒यथा ।  
शि॒क्षा॒णोऽ२३आ॒ । स्मा॒यि॒न्पु॒ररु॒हू॒ । तया॒मा२ऽनी४२ु ।  
औ॒ऽरु॒ । हौ॒ऽरु॒ । हु॒वायि॒ । औ॒२३हो३२३४वा॒प । जी॒रवा॒ज्योऽ  
२३ती॒रः । अ॒रशी॒माऽ२३हा॒र३४ऽ३यि३ । ओं॒ऽर३४५यि॒प ।  
डा॒प ॥ २४ ॥

३. इ॒प॒द्र॒ष्ट॒क्र॒इ॒तु॒ष्ट॒न्न॒प॒आ॒प॒ । भ॒इ॒रा॒नु॒ओं॒इ॒र॒इ॒ष्ट॒वा॒प॒ । पि॒प॒ता॒प॒पू॒  
 र॒इ॒त्रे॒ष्ट॒भि॒प॒ यो॒ष्ट॒य॒ष्ट॒था॒प॒ । ह॒इ॒र॒इ॒ष्ट॒प॒ । पि॒ष्ट॒ता॒इ॒पु॒ष्ट॒त्रे॒इ॒  
 भि॒ष्ट॒य॒प॒ । या॒था॒ऽर॒इ॒ष्ट॒हा॒प॒यि॒प॒ । शा॒ष्ट॒यि॒ष्ट॒क्षा॒प॒णो॒ष्ट॒आ॒प॒-  
 स्मा॒इ॒यि॒इ॒न्पु॒ष्ट॒रु॒प॒हू॒प॒त॒प॒ या॒प॒ । मा॒नो॒ऽर॒इ॒ष्ट॒हा॒प॒यि॒प॒ । जी॒ष्ट॒  
 वा॒प॒ज्यो॒ष्ट॒ती॒प॒ । अ॒र॒शो॒ऽर॒इ॒ष्ट॒ वा॒प॒ । मा॒ष्ट॒प॒हो॒प॒द॒हा॒प॒  
 यि॒प॒ ॥ २५ ॥

ऋषिः—रेभः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२६०. मा न इन्द्र परा वृणग्भवा नः सधमाद्ये ।

त्वं न ऊती त्वमिन्न आप्यं मा न इन्द्र परावृणक् ॥

आंगिरसे द्वे—

१. मा॒प॒न॒प॒इ॒प॒द्रा॒प॒ । प॒रा॒वा॒र॒इ॒र्णा॒र॒क् २ । भ॒वा॒ न॒स्स॒ध॒मा॒र॒ऽदी॒र॒इ॒  
 या॒र॒यि॒र॒ । त्व॒न्न॒ऊ॒ती॒ त्व॒मि॒न्न॒आ॒पी॒र॒इ॒या॒र॒म् २ । मा॒ न॒ इ॒न्द्र॒  
 प॒रा॒वृ॒ण॒वृ॒णा॒र॒इ॒ऽउ॒वा॒ऽर॒इ॒ । ऊ॒र॒इ॒ष्ट॒पा॒प॒ ॥ २६ ॥

२. मा॒इ॒न॒ष्ट॒इ॒प॒द्र॒प॒प॒ष्टा॒प॒ । वृ॒इ॒णा॒रु॒क् २ । मा॒इ॒न॒ष्ट॒इ॒प॒द्रा॒प॒ । प॒र॒  
 रा॒वा॒ऽर॒इ॒र्णा॒र॒क् २ । भ॒वा॒र॒न॒र॒स्स॒र॒ध॒र॒मा॒दा॒ऽर॒इ॒या॒र॒यि॒र॒ ।  
 त्व॒न्न॒ ऊ॒ती॒ऽरु॒ । त्व॒मि॒न्ना॒ऽरु॒आ॒पि॒याम् । मा॒र॒ना॒आ॒ऽर॒इ॒यिं॒इ॒  
 द्रा॒र॒ । प॒र॒रा॒वा॒ऽर॒इ॒ र्णा॒र॒इ॒ष्ट॒ऽइ॒क् ३ । ओ॒ऽर॒इ॒ष्ट॒प॒यि॒प॒  
 डा॒प॒ ॥ २७ ॥

ऋषिः—मेधातिथिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२६१. वयं घ त्वा सुतावन्त आपो न वृक्तबर्हिषः ।

पवित्रस्य प्रस्त्रवणेषु वृत्रहन् परि स्तोतार आसते ॥

## आष्कारणिधनकाण्वम्—

१. व॒प॒यं॒घा॒र॒३त्वा॒४सु॒४ता॒५वं॒४ता॒५ः । आ॒पो न॒र॒वृ॒र । क्त्वा॒र॒बा॒ऽ  
२३॒ऋ॒३हि॒३षा॒२उ॒२ । वा॒र॒३२॒प॒र॒वि॒त्र॒र॒स्या । प्र॒र॒स्त्र॒३व॒र  
णा॒यि॒र । षु॒र॒वृ॒त्रा॒ऽ२३॒४हा॒५न्॒५ । पा॒र॒३री॒२ । स्तो॒ता॒र॒२ः ।  
आ॒सा॒ऽ२३॒४५ ता॒५६५॒इ॒५ध्या॒३२३॒४५षू॒५ ॥ २८ ॥

## वैष्टम्भम्—

२. १ॐ॒४हो॒५वा॒४ । व॒प॒यं॒४घ॒५त्वा॒५सु॒५ता॒४वं॒५तः । १ॐ॒४हो॒५-  
वा॒४ । अ॒हो॒यि । आ॒पो न॒ वृ॒क्त॒ब॒ऋ॒हि॒षः । प॒वा॒यि॒त्रा॒र॒३स्या॒२ ।  
प्र॒स्त्र॒व॒णे॒षु वा॒र॒ऽर्त्रा॒र॒३हा॒र॒न्॒२ । औ॒र॒हो॒र॒३यि॒३ । औ॒हो॒यि ।  
प॒रि॒स्तो॒ता॒ र॒आ॒स॒ते । प॒रा॒यि॒स्तो॒र॒३ता॒२ु । र॒३आ॒३स॒र॒ता ।  
अ॒र॒३हो॒४वा॒५ । हो॒४ऽ५यि॒५डा॒५ ॥ २९ ॥

## अभिनिधनकाण्वम्—

३. अ॒५हो॒४हो॒४हा॒५यि॒५ । आ॒४यि॒४ही॒५ । वा॒४या॒५म्॒५ । घा-  
३२३॒४त्वा॒५ । सू॒र॒र्ता॒रु॒वा॒३२३॒४न्ता॒५ः । आ॒र॒पो॒रु॒ना॒३२३॒४  
वृ॒५ । क्त्वा॒र॒ब॒ऋ॒हि॒षाः । ऐ॒र॒हो॒यि । आ॒३२३॒४यि॒४ही॒५ । पा॒र॒वि॒रु  
त्रा॒३२३॒४स्या॒५ । प्रा॒र॒स्त्रा॒रु॒ वा॒३२३॒४णे॒५ । षू॒र॒वृ॒त्रहा॒न् । ऐ॒र  
हो॒यि । आ॒३२३॒४यि॒४ही॒५ । पा॒र रि॒रु॒स्तो॒३२३॒४ता॒५ । र॒३  
आ॒र॒३सा॒४ऽ५ता॒५६५॒इ॒५यि॒५ । आ॒३२३॒४ भी॒५ ॥ ३० ॥

## महावैष्टम्भम्—

४. व॒प॒यं॒४घ॒५त्वा॒४हा॒४यि॒४ । सु॒५ता॒५वं॒५तो॒४वा॒५ । आ॒पो न॒र॒वृ॒र ।  
क्त्वा॒र॒बा॒ऋ॒हा॒र॒ऽयि॒षा॒२३ः । हो॒वा॒र॒३हा॒र॒यि॒२ । प॒र॒वि॒त्र॒स्य॒र॒प्र॒र  
स्त्र॒व॒णे॒२ । षु॒र॒वा॒र्त्रा॒र॒हा॒ऽ२३न्॒३ । हो॒वा॒र॒३हा॒र॒यि॒२ । प॒रा॒यि  
स्तो॒र॒ऽता॒ऽ२३ । हो॒वा॒र॒३हा॒र । र॒र॒आ॒ऽ२३ । सा॒ऽरु॒ता॒३२३॒४-  
औ॒५हो॒५वा॒५ । दी॒३२३॒४शा॒५ः ॥ ३१ ॥

ऋषिः — भरद्वाजः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — बृहती ॥ स्वरः — मध्यमः ॥

२६२. यदिन्द्र नाहुषीष्वा ओजो नृम्णं च कृष्टिषु ।

यद्वा पञ्च क्षितीनां द्युम्नमा भर सत्रा विश्वानि पौंस्या ॥

शनौष्टीगवम्—

१. ओ॒प॒हा॒प॒यि॒प॒य॒४दि॒प॒द्र॒प॒ना॒४ । हु॒प॒षी॒प॒षू॒प॒६वा॒प । ओ॒जो॒४रु॒-  
ना॒म्णा॒४रु॒म्२ । च॒र॒कृ॒२ष्टि॒ । षू॒ । ऐ॒४रु॒ही॒२ऽआ॒यि॒ही॒४रु॒-  
हा॒४रु॒ऊ॒ऊ॒वा॒यि॒ । या॒२ऽद्वा॒४रु॒पां॒चा॒४रु॒ । क्षि॒र॒ती॒२ना॒म् । ऐ॒४रु॒-  
ही॒२ऽ२आ॒यि॒ही॒४रु॒ । हा॒४रु॒ ओ॒हु॒वा॒यि॒द्यु॒३म्न॒मा॒ऽभ॒२ । रा॒ ।  
ऐ॒४रु॒ही॒२ऽआ॒यि॒ही॒४रु॒ । हा॒४रु॒ऊ॒ऊ॒वा॒यि॒ । सा॒२ऽत्रा॒४रु॒-  
वा॒यि॒श्वा॒४रु॒ । नि॒२पौ॒ंसि॒ । या॒ । ऐ॒४रु॒ही॒२ऽआ॒यि॒ही॒४रु॒ ।  
हा॒४रु॒ऊ॒ऊ॒वा॒ऽरु॒ । या॒३२३४अ॒॒प॒हो॒॒प॒वा॒प । ऊ॒३२३४  
पा॒प ॥ ३२ ॥

ऋषिः — मेधातिथिः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — बृहती ॥ स्वरः — मध्यमः ॥

२६३. सत्यमित्था वृषेदसि वृषजूतिर्नोऽविता ।

वृषा ह्युग्र शृण्विषे परावति वृषो अर्वावति श्रुतः ॥

वृषकम्—

१. स॒प॒त्य॒४मि॒प॒त्था॒४वृ॒४षा॒४ऽप॒यि॒प॒द॒प॒सा॒४यि॒४ । वृ॒ष॒जू॒ति॒र्नो॒-  
वि॒ता॒४रु॒ । वृ॒षा॒ह्यु॒ग्रा॒शृ॒ण्वि॒षा॒४रु॒यि॒२ । प॒२रा॒२व॒ता॒यि॒ । वृ॒षो॒ऽ  
२३॒र्वा॒२ । व॒२ ता॒यि॒श्रू॒ऽ२३॒ता॒३२३४ऽ३ । ओं॒ऽ२३४प॒यि॒प॒ ।  
डा॒प ॥ ३३ ॥

[ इति ] अर्द्धप्रपाठकः ॥

ऋषिः—रेभः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२६४. यच्छक्रासि परावति यदवावति वृत्रहन् ।

अतस्त्वा गीर्भिर्द्युगदिन्द्र केशिभिः सुतावाँ आँ विवासति ॥

घाते द्वौ द्वेगातम्—

१. य॒च्छ॒क्रा॒सि॒ परा॒वति॒ यद॒वा॒वति॒ वृ॒त्र॒हन् । याद॒व्वाँ॒२ व॒२ । ति॒२  
वा॒त्राँ॒२ ऽहा॒ऽरु॒न् । अ॒३ता॒२३ः । होँ३हो॒२३वा॒२ । त्वा॒गी॒र्भि॒र्द्यु॒ग-  
दि॒न्द्रा॒के॒२ ऽशि॒भी॒४रुः । सु॒ता॒ऽ२३ । वाँ॒ऽ२रु॒आ॒३२३४अ॒५हो॒५  
वा॒५ । ए॒२३ । वि॒वाँ॒२स॒२ती॒३२३४५ ॥ १ ॥

२. य॒च्छ॒क्रा॒सी॒५प॒५रा॒५व॒४ति॒५य॒५दो॒४हा॒४यि॒४ । व्वाँ॒२  
वा॒२३ता॒यि॒र्वृ॒त्रा॒हा॒ऽ२३४न् । अ॒३ता॒२३४स्त्वाँ॒३गा॒२यि॒२ ।  
भा॒यि॒र्द्यु॒ग॒२दि॒२ । द्रा॒के॒२ ऽशि॒भी॒४रुः । सु॒ता॒ऽ२३ । वाँ॒ऽ२रु॒  
आ॒३२३४अ॒५हो॒५वा॒५ । वि॒वाँ॒२स॒२ती॒३२३४५ ॥ २ ॥

ऋषिः—वत्सः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२६५. अभि वो वीरमन्धसो मदेषु गाय गिरा महा विचेतसम् ।

इन्द्रं नाम श्रुत्य शाकिनं वचो यथा ॥

कार्तयशम्—

१. अ॒५भि॒४वो॒५वी॒५र॒४मं॒४ध॒५सा॒४ः । म॒२दे॒२षू॒२३गा॒या॒४रुः । गि॒२  
रा॒मा॒हा॒२३ । वी॒चे॒रु॒ता॒३२३४सा॒५म् । इं॒४द्र॒५न्ना॒५मा॒४ । श्रू॒त्यः  
शा॒२का॒ऽरु॒यि॒रु । ना॒३२३४अ॒५हो॒५वा॒५ । व॒२चो॒२उ॒या॒३२  
३४५ । [ था ] ॥ ३ ॥



ऋषिः — भरद्वाजः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — बृहती ॥ स्वरः — मध्यमः ॥

२६६. इन्द्रं त्रिधातु शरणं त्रिवरूथं स्वस्तये ।

छर्दिर्यच्छ मघवद्भ्यश्च मह्यं च यावया दिद्युमेभ्यः ॥

१. इन्द्रं त्रिधातुशरणं त्रिवरूथं स्वस्तयायि । छर्दिर्याऽरच्छछार । माघवरद्भ्यरः । चामैह्याऽरञ्चार । याऽरवयाऽदीर । द्यूमेऽरुभिरया । औरञ्होऽवाप । होऽपयिप । डाप ॥ ४ ॥

ऋषिः — नृमेधः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — बृहती ॥ स्वरः — मध्यमः ॥

२६७. श्रायन्तइव सूर्यं विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत ।

वसूनि जातो जनिमान्योजसा प्रति भागं न दीधिमः ॥

श्रायन्तीम्—

१. श्रापयंपतपइपवपसूपऽराऽयापम्प । विश्वाऽरुयिरदिन्द्राऽरु । स्यभाऽरुक्षाता । वासूनिऽजाऽरतोऽजनिमाऽर । निऽरयोजाऽसाऽरु । प्रतिभाऽरगन्नदीऽरधिऽरमरः । प्राऽरऽतीर । भागान्नाऽरदार । हुं । धिऽमारऽरः । ओऽरऽवाप । हेऽरऽवाप ॥ ५ ॥

ऋषिः — पुरुहन्मा ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — बृहती ॥ स्वरः — मध्यमः ॥

२६८. न सीमदेव आप तदिषं दीर्घायो मर्त्यः ।

एतग्वा चिद्य एतशो युयोजत इन्द्रो हरी युयोजते ॥

वामम्—

१. नऽसीऽमऽदेऽवपआप । हाऽरऽहारऽयिऽर । पाऽरऽवाप । तऽत्पऽतोऽवाप । इषऽहोऽरुयिर । दीर्घाहोऽरु । योमैर्त्तयाऽरुः । आयितग्वाऽरचिरत्त । यऽरआयिताशोऽरु । युऽरयाऽरउऽवारऽर ।

ऊ२३४पा५ । जता४२यि२ । आयिंद्रो४२हारी४२ । यु२ग्रो५२३ ।

जा५२ता३२३४ओ५हो५वा५ । ऊ२३५२३४पा५ ॥ ६ ॥

ऋषिः—नृमेधपुरुमेधौ ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२६९. आ नो विश्वासु हव्यमिन्द्रं समत्सु भूषत ।

उप ब्रह्माणि सवनानि वृत्रहन् परमज्या ऋचीषम ॥

वासिष्ठानि त्रीणि—

१. आ४न५ः । ए४वि४श्वा५ । सु२हाव्या४२मु२ । आयिंद्रः५२म२ ।  
त्सूभूर५षाता२ । ऊ३२३४पा५ । हा२३हा२यि२ । ब्रह्मा२णि२  
सवना२ । नि३वृ३त्र२हान् । प२रमा५२३ज्या२ः । आर्च्या२३  
हा२यि२ । ष२मा । औ२३हो४वा५ । हो४५५यि५ । डा५ ॥ ७ ॥

२. आ५नो५वि५श्वा५षु५हा५हा४व्या५म् । इन्द्रः५२समत्सुभूषतो ।  
प॒ब्रा५२३ह्या२ । णि२सवना । नि२वृत्रहान् । प॒रमा५२३ज्या२ः ।  
आर्च्या२३हा२यि२ । ष२मा । औ२३हो४वा५ ॥ हो४५५यि५ ।  
डा५ ॥ ८ ॥

वैयश्वम्—

३. आ५नो५वि५श्वा५सु५हा४व्या५म् । इन्द्रा२म२ । स२म२  
त्सु२भूर५ष२त२ । उ२पा॒ब्रा२५ह्या४२ । णि२स२व२ना२नि२वृ२  
त्र२ह२न् । प॒रामा२५ज्या४२ । ऋ२ची॒षा५२३मा२३४५३ ।  
ओं५२३४५यि५ । डा५ ॥ ९ ॥

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२७०. तवेदिन्द्रावमं वसु त्वं पुष्यसि मध्यमम् ।

सत्रा विश्वस्य परमस्य राजसि न किष्ट्वा गोषु वृण्वते ॥

## निधनकामम्—

१. त॒व्वे॒दि॒द्रा॒ऽप॒मं॒व॒सू॒ । त्वं पु॒ष्य॒र॒सि॒र॒म॒र॒ध्य॒र॒मम् ।  
सा॒त्रा॒रु॒ वा॒३२३॒यि॒श्वा॒प । स्या॒प॒र॒र॒म॒स्य॒र॒रा॒र॒ज॒र॒सि॒र ।  
न॒कि॒र॒ष्ट्वा॒३२३॒गो॒प । षू॒व्रे॒ण्वा॒ऽर॒३ता॒र॒यि॒र । हो॒वा॒र॒३  
हो॒यि । हो । वा॒र॒हा॒र॒३ऽउ॒वा॒ऽर॒३॒प ॥ १० ॥

ऋषिः—मेधातिथिर्मेध्यातिथिश्च ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥  
स्वरः—मध्यमः ॥

२७१. <sup>३२</sup>क्वे॒यथ॒ <sup>३</sup>क्वे॒द॒सि॒ <sup>१२</sup>पु॒रु॒त्रा॒ <sup>३२</sup>चि॒द्धि॒ <sup>३</sup>ते॒ <sup>२३</sup>म॒नः॑ ।

<sup>१२</sup>अ॒ल॒र्षि॒ <sup>३१</sup>यु॒ध्म॒ <sup>२३</sup>ख॒ज॒कृ॒त् <sup>३१</sup>पु॒र॒न्द॒र॒ <sup>२</sup>प्र॒ <sup>३१</sup>गा॒य॒त्रा॒ <sup>२</sup>अ॒गा॒सि॒षुः॑ ॥

## इन्द्रप्रियाणि त्रीणि—

१. क्वे॒य॒य॒था॒प । कु॒र॒वे॒द॒सा॒रु॒यि॒र । औ॒हो॒रु॒ । औ॒हो॒यि॒ । औ॒र॒३  
हो॒३२३॒वा॒प । पु॒र॒रु॒र॒त्रा॒चा॒यि॒त् । हि॒र॒ते॒र॒म॒ना॒रुः॑ ।  
औ॒हो॒रु॒ । औ॒हो॒यि॒ । औ॒र॒३हो॒३२३॒वा॒प । अ॒र॒ल॒र॒ऋ॒र॒षि॒यू ।  
ध्मा॒र॒ख॒ज॒क्रे॒रु॒त् । औ॒हो॒रु॒ । औ॒हो॒यि॒ । औ॒र॒३हो॒३२३॒  
वा॒प । पु॒र॒रं॒र॒द॒रा । प्र॒र॒गा॒र॒या॒त्रा॒रुः॑ । रुः॑ । औ॒हो॒रु॒ ।  
औ॒हो॒यि॒ । औ॒र॒३हो॒-३२३॒वा॒प । अ॒३गा॒र॒३ । सा॒रु॒यि॒रु॒षू॒३२  
३॒अ॒प॒हो॒प॒वा॒प । सु॒र॒शः॑सा॒रु॒३॒पः॑ ॥ ११ ॥

२. कु॒वा॒प॒कु॒वा॒प । या॒था । कु॒र॒वे॒र॒द॒सा॒यि॒ । ऊ॒वा॒यि॒ । अ॒र॒३  
हो॒३२३॒प । पु॒र॒रु॒र॒त्रा॒चा॒यि॒त् । हि॒र॒ते॒र॒म॒नाः॑ । ऊ॒वा॒यि॒ ।  
अ॒र॒३हो॒३२३॒प । अ॒र॒ल॒र॒ऋ॒र॒षि॒यू । ध्मा॒र॒ख॒ज॒क्रे॒त् । ऊ॒वा॒यि॒ ।  
अ॒र॒३हो॒३२३॒प । पु॒र॒रं॒र॒द॒रा । प्र॒र॒गा॒र॒या॒त्राः॑ । ऊ॒वा॒यि॒ । अ॒र॒३  
हो॒३२३॒प । अ॒३गा॒र॒३ । सा॒रु॒यि॒रु॒षू॒३२३॒अ॒प॒हो॒प॒वा॒प ।  
सु॒र॒शा॒र॒३ः॑ ३सा॒रु॒३॒पः॑ ॥ १२ ॥

३. क्वे॒रय॒रथ॒रकू॒र३वा॒यिदा॒ऽर३४सी॒प् । पु॒रुत्रा॒रचि॒रत् । हि॒र  
ता॒यिमा॒ऽर३ना॒रः । आ॒ल॒ऋषि॒र । यु॒र॒ध्मा॒खज॒क्रे॒र३त् । हा॒र  
उ॒रवा॒र । पु॒र॒रंदा॒ऽर३रा॒र । प्र॒रगा॒रया॒त्रा॒४रुः । अ॒रगा॒ऽर३ ।  
सा॒ऽरु॒यि॒रुषू॒३२३४अ॒प्हो॒प्वा॒प् । प्सू॒३२३४५ ॥ १३ ॥

ऋषिः—कलिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२७२. व॒यमे॒नमि॒दा ह्यो॒ऽपी॒पेमे॒ह व॒ज्रि॒णम् ।

तस्मा॑ उ॒ अद्य॑ स॒वने॑ सु॒तं भ॒रा नू॒नं भू॒षत॑ श्रु॒ते ॥

१. व॒प् य॒प् मे॒प् ना॒प् म् । आ॒ऽरु॒यि॒रुदा॒३२३४अ॒प्हो॒प्वा॒प् । ही॒३२  
३४या॒प् । अ॒पी॒पे॒रमे॒रह॒वज्रि॒णम् । ता॒स्मा॒४रु॒ऊवा॒४रु । द्य॒स-  
व॒नायि॑ । सू॒तम्भा॒रा॒४रु । आ॒र॒नूना॒ऽर३म्भू॒र । षा॒तश्रु॒रते॒र ।  
इ॒डा॒ऽर३ भ॒ार३४ऽ३ । ओं॒ऽर३३४५यि॒प्डा॒प् ॥ १४ ॥

पौरुहन्मनम्—

२. व॒प् य॒प् मे॒प् ना॒प् म् । इ॒दा॒४रु॒हायाः॑ । अ॒र॒पौ॒होयि॑ । पे॒र॒मौ॒होयि॑ ।  
इ॒३ । हा॒रव॒ज्रि॒णाम् । त॒रस्मा॒रउ॒वा । द्या॒रस॒वनायि॑ । सू॒र  
तम्भा॒रा । आ॒र॒नौ॒हो । न॒रम्भौ॒हो । षा॒रत॒श्रुता॒र३उ॒र्व॒ऽर३ ।  
ऊ॒र३४पा॒प् ॥ १५ ॥

वसिष्ठसामासितम्—

३. व॒४य॒३मे॒४ना॒प् । मि॒प्दा॒प् । हि॒३या॒रुओ॒३२३४वा॒प् । इ॒४या॒४  
हा॒प् यि॒प् । हु॒रवे॒हो॒४रु॒यि॒रअ॒पी॒पेमे॒हाव॒ज्रि॒णा॒४रुम् । तस्मा॑उ॒-  
वद्य॒सव॒नायि॑ । सू॒तम्भा॒रा॒४रु । ई॒३या॒र । आ॒र॒नूना॒ऽर३म्भू॒प् ।  
ष॒रता॒श्रू॒ऽर३४५ता॒प् द॒प् द॒यि॒द । श्र॒रवा॒र३सा॒ऽर३४५-  
यि॒प् ॥ १६ ॥

ऋषिः — पुरुहन्मा ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — बृहती ॥ स्वरः — मध्यमः ॥

२७३. यो<sup>१</sup> राजा<sup>२</sup> चर्षणीनां<sup>३ २३</sup> याता<sup>३ १ २ ३ १ २</sup> रथेभिरधिगुः ।

विश्वासां<sup>१ २</sup> तरुता<sup>३ १ २२</sup> पृतनानां<sup>३</sup> ज्येष्ठं<sup>२ ३</sup> यो<sup>१</sup> वृत्रहा<sup>२ ३ २ ३ २</sup> गृणे ॥

१. यो<sup>१</sup>प<sup>२</sup>रा<sup>३</sup>प<sup>४</sup>जा<sup>२</sup>३च<sup>४</sup>ऋ<sup>४</sup>ष<sup>५</sup>णा<sup>४</sup>यि<sup>४</sup>ना<sup>५</sup>म्<sup>५</sup> । याता<sup>२</sup>र<sup>२</sup>थे<sup>२</sup> ।  
भि<sup>२</sup>रा<sup>२</sup>ध्वा<sup>२</sup>ऽयि<sup>४</sup>गू<sup>४</sup>ः । ध्रा<sup>४</sup>यि<sup>४</sup>गू<sup>४</sup>ः । वा<sup>४</sup>यि<sup>४</sup>श्वा<sup>२</sup>सा<sup>२</sup>३म्<sup>३</sup> ।  
तरुता<sup>२</sup>३ । २ । पा<sup>२</sup>र्त्ता<sup>२</sup>रुना<sup>३ २ ३</sup>ना<sup>५</sup>म्<sup>५</sup> । ज्या<sup>४</sup>यि<sup>४</sup>ष्ठं<sup>२</sup>यो<sup>२</sup>रवा ।  
त्रा<sup>४</sup>हा<sup>२</sup>गु<sup>३</sup>गा<sup>३ ३</sup>र्णा<sup>५</sup>यि<sup>५</sup> । त्र<sup>४</sup>ह<sup>४</sup>ऽप<sup>५</sup>गृ<sup>५</sup>णा<sup>५</sup>यि<sup>५</sup> । हो<sup>४</sup>ऽप<sup>५</sup>  
यि<sup>५</sup> । डा<sup>५</sup> ॥ १७ ॥

प्राकर्षणम्—

२. यो<sup>३</sup>रा<sup>३</sup>जा<sup>४</sup>च<sup>५</sup> । ष<sup>३</sup>णा<sup>२ ३</sup>ऽर<sup>३ ३</sup>यि<sup>४</sup>ना<sup>५</sup>म्<sup>५</sup> । याता<sup>२</sup>-  
रथेभि<sup>२</sup>रधा<sup>२</sup>ऽर<sup>३</sup>यि<sup>३</sup>गूरः । विश्वासा<sup>२</sup>न्तरुता<sup>२</sup>पृतना<sup>२</sup>ना<sup>२</sup>म् ।  
ज्या<sup>२</sup>ऽर<sup>३</sup>यि<sup>३</sup>ष्टा<sup>२</sup>म्<sup>२</sup> । यो<sup>२</sup>वृत्र<sup>२</sup>होवा<sup>२ ३</sup>ओ<sup>२ ३</sup>वा<sup>५</sup> ।  
गा<sup>४</sup>ऽप<sup>५</sup>र्णा<sup>५</sup>द्वा<sup>५</sup>यि<sup>५</sup> ॥ १८ ॥

ऋषिः — भर्गः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — बृहती ॥ स्वरः — मध्यमः ॥

२७४. यत<sup>१ २</sup> इन्द्र<sup>३</sup> भयामहे<sup>३ १ २ ३ १ २ ३ १ २</sup> ततो<sup>३</sup> नो<sup>३ १ २</sup> अभयं<sup>३</sup> कृधि ।

मघवञ्छ<sup>१ २</sup>ग्धि<sup>३ २३</sup> तव<sup>३ १ २ ३ २ ३ २३</sup> तन्न<sup>३</sup> ऊतये<sup>३</sup> वि<sup>३</sup> द्विषो<sup>३ १</sup> वि<sup>२२</sup> मृधो<sup>३</sup> जहि ॥

अभयंकरम्—

१. य<sup>५</sup>त<sup>५</sup>आ<sup>२ ३</sup>यिं<sup>३</sup>द्रा<sup>४</sup>भ<sup>५</sup>या<sup>४</sup>म<sup>४</sup>हा<sup>५</sup>यि<sup>५</sup> । ततो<sup>२</sup>नो<sup>२</sup>अभ<sup>२</sup>-  
य<sup>४</sup>ङ्गा<sup>२ ३</sup>र्द्धी<sup>२</sup> । मघवञ्छ<sup>४</sup>ग्धि<sup>४</sup> तव<sup>२</sup> तन्न<sup>२</sup>ऊता<sup>२ ३</sup>या<sup>२</sup>यि<sup>२</sup> ।  
वि<sup>२</sup>द्वा<sup>४</sup>यि<sup>४</sup>षो<sup>२ ३</sup>वी<sup>२</sup> । मा<sup>४</sup>र्द्धी<sup>२</sup>ज<sup>२</sup>हि<sup>२</sup> । इडा<sup>२ ३</sup>भा<sup>२ ३</sup>ऽऽ<sup>३</sup> ।  
ओ<sup>२ ३</sup>वा<sup>५</sup>यि<sup>५</sup> । डा<sup>५</sup> ॥ १९ ॥

ऋषिः — इरिम्बिठिः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — बृहती ॥ स्वरः — मध्यमः ॥

२७५. वा<sup>१</sup>स्तो<sup>२</sup>ष्पते<sup>३</sup> ध्रुवा<sup>४</sup> स्थूणा<sup>५</sup> सत्रं<sup>६</sup> सौम्यानाम्<sup>७</sup> ।

द्रप्सः<sup>८</sup> पुरां<sup>९</sup> भेत्ता<sup>१०</sup> शश्वतीनामिन्द्रो<sup>११</sup> मुनीनां<sup>१२</sup> सखा<sup>१३</sup> ॥

कवषे द्वे—

१. वा॒प्तो॒ष्प॒ता॒यि॒ । ध्रु॒वा । स्थू॒णा॒ओ॒ऽ२३४वा॒ ।  
अ॒स॒त्र॒२३सो॒२म्या॒नो॒२म् । द्र॒प्स॒पु॒रा॒म्भे॒त्ता॒श॒श्व॒ता॒ऽ२३  
यि॒३ना॒२म् । आ॒३२३४यिं॒४द्रा॒ऽ५ । मु॒नी॒२ । ना॒२३४उ॒वा॒ऽ२३ ।  
सा॒३२३४खा॒ ॥ २० ॥

२. वा॒३स्तो॒४ष्प॒ते॒ध्रु॒वा॒ । स्थू॒३णा॒२३ । आ॒ऽ२३४ । स॒४त्र॒५  
५सो॒५ । म्या॒४ना॒५म् । द्र॒२प्स॒पु॒रा॒म्भे॒त्ता॒श॒श्व॒ता॒ऽ२३-यि॒३  
ना॒२म् । आ॒ऽ२३यिं॒३द्रा॒ऽ२ । मु॒नी॒२ । नो॒ऽ२३४वा॒ । सा॒३२३४  
खा॒ ॥ २१ ॥

ऋषिः — जमदग्निः ॥ देवता — सूर्यः ॥ छन्दः — बृहती ॥ स्वरः — मध्यमः ॥

२७६. ब॒ण्म॒हा॒ अ॒सि॒ सूर्यं॑ ब॒डा॒दित्यं॑ म॒हा॒ अ॒सि॒ ।

म॒हस्ते॑ स॒तो॒ म॒हि॒मा॒ प॒नि॒ष्ट॒म॒ म॒हा॒ दे॒व॒ म॒हा॒ अ॒सि॒ ॥

सूर्यसामम्—

१. ब॒ण्म॒हा॒२३अ॒सि॒४सू॒५र्या॒ । बा॒डा॒दि॒त्य॒२ । म॒हा॒२  
आ॒२ऽसा॒ऽ२३४यि॒४ । म॒हा॒स्ते॒४स॒तो॒३म॒हि॒मा॒३ प॒नि॒ष्ट॒ ।  
ष्टा॒२३ मा॒२ । म॒हा॒दा॒ऽ२३यि॒३वा॒२३ । म॒हा॒ऽ२३४ वा॒ ।  
आ॒४ऽसो॒५६हा॒५यि॒ ॥ २२ ॥

ऋषिः—देवातिथिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२७७. अ<sup>३</sup>श्वी<sup>२</sup> र<sup>३</sup>थी<sup>१</sup> सु<sup>२</sup>रूप<sup>३</sup> इ<sup>२</sup>द्रो<sup>३</sup>मो<sup>१</sup> यदि<sup>२</sup>न्द्र<sup>३</sup> ते<sup>१</sup> स<sup>२</sup>खा<sup>३</sup> ।

श<sup>३</sup>वा<sup>२</sup>त्र<sup>३</sup>भा<sup>१</sup>जा<sup>२</sup> व<sup>३</sup>यसा<sup>१</sup> स<sup>२</sup>च<sup>३</sup>ते<sup>१</sup> स<sup>२</sup>दा<sup>३</sup> च<sup>१</sup>न्द्रै<sup>२</sup>र्या<sup>३</sup>ति<sup>१</sup> स<sup>२</sup>भा<sup>३</sup>मु<sup>१</sup>प ॥

आश्वे द्वे—

१. अ४श्वी५अ४श्वी५ । र२थी२सूर३रूपा२ऽई४रुत् । २ । गोमा-  
इय२दि२ । द्राते२ऽसाखा४रु । श्वात्रा४रुभाजा४रु । वयसास-  
च२तेसाऽ२३दा । चंद्रायिर्या२३ती२३ । साऽ२३भा४ऽ३म् ३ ।  
ऊ२३४५पो५६हा५यि५ ॥ २३ ॥

२. अ५श्वी५र५थी५सु५रूप५पा५६ई५त् ५ । गोमाइयदिंद्रते  
सखाउवाऽ२३होवाऽ२३हा४रुईया । श्वा२त्रा भाजा वयसा  
सचते सदाउवाऽ२३होवाऽ२३हा४रुइया । चंद्रायिर्या२ऽती४रु ।  
साभामु२प२ । इडाऽ२३भा२३४ऽ३ । ओऽ२३४५यि५ ।  
डा५ ॥ २४ ॥

ऋषिः—पुरुहन्मा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२७८. यद् द्याव इन्द्र ते शतं शतं भूमीरुत स्युः ।

न त्वा वज्रिन्त्सहस्रं सूर्या अनु न जातमष्ट रोदसी ॥

वैरूपम्—

१. य२द्यावाऽ२३इं४द्र४ते५श५ता५म् । श२तंभूमीरुतस्यू४रुः । न  
त्वावज्रिन्त्सहस्रं सूर्या अनु४रु । ना जा४रुतामाऽ२३ष्ट२रोऽ-  
२३४वा५ । दा४ऽ५सो५६हा५यि५ ॥ २५ ॥

ऋषिः—देवातिथिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२७९. यदिन्द्र प्रागपागु दग्न्यग्वा हूयसे नृभिः ।

सिमा पुरू नृषूतो अस्यानवेऽसि प्रशार्ध तुर्वशे ॥

१. य४दि५द्र५प्रा४ग४पा४क्४ । उदाक् । न्यग्वाहूय२सेनृभि४रु  
यि२ः । सिमापुरूनृषूतोअ । सि२यानैवा४रुयि२ । आसी४रु  
प्राशा४रु । ध२तोवीर२३ ओऽ२३४ वा ५ । व्वा४ऽ५ शो५६  
हा५ यि५ ॥ २६ ॥

२. य५दि५द्र५प्रा५ग५पा५गू५दा५६गे५ । नायग्वा२हू२ । य२  
सायिनृभी२३ः । हा २ । अ३हो३२३४हा५ । सिमा२पूरू२नृषू२  
तो२अ । सि२यानैवेऽ२३ । हा २ । अ३हो३२३४हा५ । असायि-  
प्राशा२३ । हा २ । अ३हो३२३४हा५ । धाऽ२तू३२३४ अ५हो५  
वा५ । व्वा३२३४शो५ ॥ २७ ॥

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२८०. कस्तमिन्द्र त्वा वसवा मर्त्यो दधर्षति ।

श्रद्धा हि ते मघवन् पार्ये दिवि वाजी वाजं सिषासति ॥

कौसुदे द्वे—

१. क५स्त५मि५न्द्रा५ । त्व४रुवासा४रुउ२ । आ॒मर्त्यो॒दध॒ऋष॒तायि ।  
श्र२द्धा२हायिते४रु । माघ२वर२न्पा । रियायिदा२ऽयिवीऽरु ।  
वा३जी२वाजा४रुम् । सि२षाऽ२३ । साऽरुता३२३४अ५हो५  
वा५ । ऊ२३ऽ२३४पा५ ॥ २८ ॥

२. क३स्त३मि३द्र५त्वा५ । व३सार३उ३ । आऽ२३४ । म४र्त्यो५  
द५ध५ । ष४ता५यि५ । श्र२द्धा२हायिते४रु । माघ२वर२न्पा ।  
रियायि । दायिवी२ओ३२३४वा५ । ऊ३२३४पा५ । वा३जी२



वाजा४२५२ । सिरषाऽ२३ । साऽरुता३२३४अ५हो५वा५ ।  
ऊ३२३४पा५ ॥ २९ ॥

ऋषिः — भरद्वाजः ॥ देवता — इन्द्राग्नी ॥ छन्दः — बृहती ॥ स्वरः — मध्यमः ॥

२८१. इन्द्राग्नी अपादियं पूर्वागात् पद्वतीभ्यः ।

हित्वा शिरो जिह्वया रारपच्चरत् त्रिंशत् पदा न्यक्रमीत् ॥

वाचस्सामम्—

१. इ५द्रा५ग्नी५अ५पा५दि५या५६मे५ । पूर्वागा४२५२ । पद्वतायि-  
भा२ऽया४२ुः । हित्वाशिरोजि२ह्वया५रा५ । रा५प५च्चा५रा४२५२ ।  
त्रिं२शत्पदा । नि२याऽ२३ । क्राऽरुमा३२३४अ५हो५वा५ ।  
ऊ२३ऽ२३४ पा५ ॥ ३० ॥

ऋषिः — बालखिल्याः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — बृहती ॥ स्वरः — मध्यमः ॥

२८२. इन्द्र नेदीय एदिहि मितमेधाभिरूतिभिः ।

आ शन्तम शन्तमाभिरभिष्टिभिरा स्वापे स्वापिभिः ॥

वाम द्वे—

१. इ५द्र५ने५दी५य५ए५दि५हि । हा४यि४ । मि५त४मे५ । धा५ । भि२  
रू५ति५भिः । आ५शं५तऽ२३मा२ । शं५तमा५भि२र५भिष्टि५भिः ।  
आ५स्वाऽ२३ पे२ । स्वाअ२३हो४ऽ३ । पि२भि२रो३२३४५यि५ ।  
डा५ ॥ ३१ ॥

२. इ५द्र५ने५दी५य५ए५दि५हि । हा४यि४मि५त४मे५ । धा५ । भि५  
रू५ति४भा४यि४ः । आ५शन्तमशं५तमा४२ुभा५यिः । आ५भिष्टि५भिः ।  
आ५स्वा४२ुपा५यि५स्वाऽ२३ । हा४ऽ३ । पि२भि२रो३२३४५यि५ ।  
डा५ ॥ ३२ ॥

ऋषिः — नृमेधः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — बृहती ॥ स्वरः — मध्यमः ॥

२८३. इत ऊती वो अजरं प्रहेतारमप्रहितम् ।

आशुं जेतारं हेतारं रथीतममतूर्त तुग्रियावृधम् ॥

प्रहितौ द्वौ—

१. इ॒प॒त॒प॒ऊ॒प॒ती॒प॒ । वो॒२३ओ॒जा॒२३रा॒२म्॒२ । अ॒३हो॒२३वा॒२ ।  
प्र॒२हे॒२ता॒२२२म॒प्राही॒२३ता॒२म्॒२ । अ॒३हो॒२३वा॒२ । आ॒२शु॒२-  
ज्जे॒२ता॒२रा॒२३३हा॒यिता॒२३रा॒२म्॒२ । अ॒३हो॒२३वा॒२ । २२  
था॒यित॒मम॒तूर्ता॒ऽ२३४न्तू॒प॒ । ग्रि॒३या॒२३ । वा॒ऽरु॒र्द्धा॒३२३४ अ॒॒प॒  
हो॒॒प॒वा॒प॒ । स्तु॒२षे॒२ऽऽ ॥ ३३ ॥

२. इ॒प॒त॒प॒ऊ॒प॒ती॒प॒वो॒॒प॒अ॒प॒जा॒प॒द॒रा॒प॒म्प॒ । प्र॒२हे॒२ता॒२म॒प्रहित॒-  
मुहु॒वा॒ऽ२३हो॒यि॒ । आ॒२शु॒ज्जे॒ता॒२३३हा॒यिता॒मुहु॒वा॒ऽ२३हो॒ ।  
२२थी॒२ । तमा॒ऽरु॒म्॒२ । अ॒३तू॒र्त्ता॒३२३४न्तू॒प॒ग्रि॒या॒२३ । वा॒ऽरु॒  
र्द्धा॒३२३४अ॒॒प॒हो॒॒प॒वा॒प॒ । स्तौ॒२३षा॒३२३४प॒यि॒प॒ ॥ ३४ ॥

ऋषिः — वसिष्ठः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — बृहती ॥ स्वरः — मध्यमः ॥

२८४. मो षु त्वा वाघतश्च नारे अस्मन्नि रीरमन् ।

आरात्ताद्वा सधमादं न आ गहीह वा सन्नुप श्रुधि ॥

आत्रे द्वे—

१. मो॒॒प॒षु॒प॒त्वा॒॒प॒वा॒प॒ । घा॒ता॒ऽ२३४प॒ः । चा॒३२३४ना॒प॒ । आ॒२रे  
अ॒स्मन्नि॒री॒२२२म॒२न्॒२ । आ॒रा॒२ऽत्ता॒द्वा॒४रु॒ । सा॒धेमा॒दा॒४रु॒म्॒२ ।  
नाआ॒ ग॒२हि॒२ । आ॒यि॒हैवा॒सा॒४रु॒न्॒२ । ऊ॒प॒श्रु॒२धि॒२ । इ॒डा॒ऽ२३  
भा॒२३४ऽ३ । ओ॒ऽ२३४प॒यि॒प॒ । डा॒प॒ ॥ ३५ ॥

२. मो<sup>३ १ २</sup>प<sup>३ २ ३</sup>षु<sup>२ ३ १ २</sup>प<sup>३ १ २</sup>त्वा<sup>३ १ २</sup>प<sup>३ १ २</sup>वा<sup>३ १ २</sup>घ<sup>३ १ २</sup>प<sup>३ १ २</sup>त<sup>३ १ २</sup>प<sup>३ १ २</sup>श्च<sup>३ १ २</sup>प<sup>३ १ २</sup>ना<sup>३ १ २</sup>प<sup>३ १ २</sup>द<sup>३ १ २</sup>ए<sup>३ १ २</sup>प<sup>३ १ २</sup> । आ<sup>३ १ २</sup>रा<sup>३ १ २</sup> अ<sup>३ १ २</sup>स्म<sup>३ १ २</sup>न्नि<sup>३ १ २</sup>री<sup>३ १ २</sup>  
र<sup>३ १ २</sup>मा<sup>३ १ २</sup>४<sup>३ १ २</sup>रु<sup>३ १ २</sup>न्<sup>३ १ २</sup>२ । हा<sup>३ १ २</sup>४<sup>३ १ २</sup>रु<sup>३ १ २</sup>ऊ<sup>३ १ २</sup>ऊ<sup>३ १ २</sup>वा<sup>३ १ २</sup>४<sup>३ १ २</sup>रु<sup>३ १ २</sup> । यि<sup>३ १ २</sup>२ । ऊ<sup>३ १ २</sup>ऽऽ । आ<sup>३ १ २</sup>२<sup>३ १ २</sup>रा<sup>३ १ २</sup>त्ता<sup>३ १ २</sup>द्वा<sup>३ १ २</sup>स<sup>३ १ २</sup>  
ध<sup>३ १ २</sup>मा<sup>३ १ २</sup>दा<sup>३ १ २</sup>४<sup>३ १ २</sup>रु<sup>३ १ २</sup>म्<sup>३ १ २</sup>२ । हा<sup>३ १ २</sup>४<sup>३ १ २</sup>रु<sup>३ १ २</sup>ऊ<sup>३ १ २</sup> ऊ<sup>३ १ २</sup>वा<sup>३ १ २</sup>४<sup>३ १ २</sup>रु<sup>३ १ २</sup>यि<sup>३ १ २</sup>२ । ऊ<sup>३ १ २</sup>ऽ२ न<sup>३ १ २</sup>२आ<sup>३ १ २</sup>रु<sup>३ १ २</sup>गा<sup>३ १ २</sup>३२  
३४<sup>३ १ २</sup>ही<sup>३ १ २</sup>प<sup>३ १ २</sup> । आ<sup>३ १ २</sup>यि<sup>३ १ २</sup>ह । वा<sup>३ १ २</sup>सौ<sup>३ १ २</sup>२वा<sup>३ १ २</sup>रु<sup>३ १ २</sup>ओ<sup>३ १ २</sup>३२३४<sup>३ १ २</sup>वा<sup>३ १ २</sup>प<sup>३ १ २</sup> । उ<sup>३ १ २</sup>२ प<sup>३ १ २</sup>श्रू<sup>३ १ २</sup>ऽ२३  
धा<sup>३ १ २</sup>२३४<sup>३ १ २</sup>ऽ३ यि<sup>३ १ २</sup>३ । ओ<sup>३ १ २</sup>ऽ२३४<sup>३ १ २</sup>प<sup>३ १ २</sup>यि<sup>३ १ २</sup>प<sup>३ १ २</sup> । डा<sup>३ १ २</sup>प<sup>३ १ २</sup> ॥ ३६ ॥

[ इति ] सप्तमः प्रपाठकः ॥

ऋषिः — वसिष्ठः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — बृहती ॥ स्वरः — मध्यमः ॥

२८५. सु<sup>३ १ २</sup>नो<sup>३ १ २</sup>ता<sup>३ १ २</sup> सो<sup>३ १ २</sup>म<sup>३ १ २</sup>पा<sup>३ १ २</sup>त्रे<sup>३ १ २</sup> सो<sup>३ १ २</sup>म<sup>३ १ २</sup>मि<sup>३ १ २</sup>न्द्रा<sup>३ १ २</sup>य<sup>३ १ २</sup> व<sup>३ १ २</sup>जि<sup>३ १ २</sup>णे<sup>३ १ २</sup> ।

प<sup>३ १ २</sup>च<sup>३ १ २</sup>ता<sup>३ १ २</sup> प<sup>३ १ २</sup>क्ती<sup>३ १ २</sup>र<sup>३ १ २</sup>व<sup>३ १ २</sup>से<sup>३ १ २</sup> कृ<sup>३ १ २</sup>णु<sup>३ १ २</sup>ध्व<sup>३ १ २</sup>मि<sup>३ १ २</sup>त् पृ<sup>३ १ २</sup>ण<sup>३ १ २</sup>न्नि<sup>३ १ २</sup>त् पृ<sup>३ १ २</sup>ण<sup>३ १ २</sup>ते<sup>३ १ २</sup> म<sup>३ १ २</sup>यः<sup>३ १ २</sup> ॥

गौरीवीते द्वे—

१. सु<sup>३ १ २</sup>प<sup>३ १ २</sup>नो<sup>३ १ २</sup>प<sup>३ १ २</sup>त<sup>३ १ २</sup>प<sup>३ १ २</sup>सो<sup>३ १ २</sup>प<sup>३ १ २</sup>म<sup>३ १ २</sup>पा<sup>३ १ २</sup>प<sup>३ १ २</sup>व्ना<sup>३ १ २</sup>प<sup>३ १ २</sup>द<sup>३ १ २</sup>ए<sup>३ १ २</sup>प<sup>३ १ २</sup> । सो<sup>३ १ २</sup>म<sup>३ १ २</sup>मि<sup>३ १ २</sup>न्द्रा<sup>३ १ २</sup>ऽ२३ । हो<sup>३ १ २</sup>वा<sup>३ १ २</sup>२३  
हा<sup>३ १ २</sup>२ । य<sup>३ १ २</sup>२व<sup>३ १ २</sup>ज्रा<sup>३ १ २</sup>ऽ२३यि<sup>३ १ २</sup>३णा<sup>३ १ २</sup>२यि<sup>३ १ २</sup>२ । प<sup>३ १ २</sup>च<sup>३ १ २</sup>ता<sup>३ १ २</sup>२प<sup>३ १ २</sup>क्ता<sup>३ १ २</sup>यि<sup>३ १ २</sup>र<sup>३ १ २</sup>व<sup>३ १ २</sup>से<sup>३ १ २</sup>२  
कृ<sup>३ १ २</sup>२ । णू । ध्वा<sup>३ १ २</sup>२ऽमी<sup>३ १ २</sup>ऽ२३ब्दा<sup>३ १ २</sup>२यि<sup>३ १ २</sup>२ । पृ<sup>३ १ २</sup>२ । णा<sup>३ १ २</sup>त् । आ<sup>३ १ २</sup>यि<sup>३ १ २</sup>त्प्रे<sup>३ १ २</sup>२३  
हा<sup>३ १ २</sup>२ । ण<sup>३ १ २</sup>२ता<sup>३ १ २</sup>यि<sup>३ १ २</sup>मा<sup>३ १ २</sup>ऽ२३या<sup>३ १ २</sup>२३४<sup>३ १ २</sup>ऽ३ः । ओं<sup>३ १ २</sup>ऽ२३[ ४ ] प<sup>३ १ २</sup> । डा<sup>३ १ २</sup>प<sup>३ १ २</sup> ॥ १ ॥

२. सु<sup>३ १ २</sup>४<sup>३ १ २</sup>नो<sup>३ १ २</sup>३त<sup>३ १ २</sup>४<sup>३ १ २</sup>सो<sup>३ १ २</sup>प<sup>३ १ २</sup>म<sup>३ १ २</sup>पा<sup>३ १ २</sup>प<sup>३ १ २</sup> । आ<sup>३ १ २</sup>३व्ना<sup>३ १ २</sup>रु<sup>३ १ २</sup>ओ<sup>३ १ २</sup>३२३४<sup>३ १ २</sup>वा<sup>३ १ २</sup>प<sup>३ १ २</sup> । इ<sup>३ १ २</sup>४<sup>३ १ २</sup>या<sup>३ १ २</sup>४  
हा<sup>३ १ २</sup>प<sup>३ १ २</sup>यि<sup>३ १ २</sup>प<sup>३ १ २</sup> । सो<sup>३ १ २</sup>म<sup>३ १ २</sup>मि<sup>३ १ २</sup>न्द्रा<sup>३ १ २</sup>४<sup>३ १ २</sup>रु<sup>३ १ २</sup> । हु<sup>३ १ २</sup>वे<sup>३ १ २</sup>४<sup>३ १ २</sup>रु<sup>३ १ २</sup>हु<sup>३ १ २</sup>वे<sup>३ १ २</sup>४<sup>३ १ २</sup>रु<sup>३ १ २</sup>हो<sup>३ १ २</sup> । या<sup>३ १ २</sup>वे<sup>३ १ २</sup>ज्जि<sup>३ १ २</sup>णा<sup>३ १ २</sup>४<sup>३ १ २</sup>  
यि<sup>३ १ २</sup>२ । प<sup>३ १ २</sup>च<sup>३ १ २</sup>ता<sup>३ १ २</sup>प<sup>३ १ २</sup>क्ता<sup>३ १ २</sup>यि<sup>३ १ २</sup>र<sup>३ १ २</sup>व<sup>३ १ २</sup>से<sup>३ १ २</sup>२कृ<sup>३ १ २</sup>२ । णू । ध्वा<sup>३ १ २</sup>२ऽमी<sup>३ १ २</sup>ऽ२३ब्दा<sup>३ १ २</sup>२  
यि<sup>३ १ २</sup>२ । पृ<sup>३ १ २</sup>२ । णा<sup>३ १ २</sup>न् । आ<sup>३ १ २</sup>यि<sup>३ १ २</sup>त्प्रे<sup>३ १ २</sup>२३हा<sup>३ १ २</sup>२ । ण<sup>३ १ २</sup>२ता<sup>३ १ २</sup>यि<sup>३ १ २</sup>मा<sup>३ १ २</sup>ऽ२३  
या<sup>३ १ २</sup>ऽ२३४<sup>३ १ २</sup>ऽ३ः । ओं<sup>३ १ २</sup>२३४<sup>३ १ २</sup>प<sup>३ १ २</sup>यि<sup>३ १ २</sup>प<sup>३ १ २</sup> । डा<sup>३ १ २</sup>प<sup>३ १ २</sup> ॥ २ ॥

ऋषिः — भरद्वाजः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — बृहती ॥ स्वरः — मध्यमः ॥

२८६. यः<sup>३ १ २</sup> स<sup>३ १ २</sup>त्रा<sup>३ १ २</sup>हा<sup>३ १ २</sup> वि<sup>३ १ २</sup>च<sup>३ १ २</sup>र्ष<sup>३ १ २</sup>णि<sup>३ १ २</sup>रि<sup>३ १ २</sup>न्द्रं<sup>३ १ २</sup> तं<sup>३ १ २</sup> हू<sup>३ १ २</sup>म<sup>३ १ २</sup>हे<sup>३ १ २</sup> व<sup>३ १ २</sup>य<sup>३ १ २</sup>म् ।

स<sup>३ १ २</sup>ह<sup>३ १ २</sup>स्त्र<sup>३ १ २</sup>म<sup>३ १ २</sup>न्यो<sup>३ १ २</sup> तु<sup>३ १ २</sup>वि<sup>३ १ २</sup>नृ<sup>३ १ २</sup>म्ण<sup>३ १ २</sup> स<sup>३ १ २</sup>त्प<sup>३ १ २</sup>ते<sup>३ १ २</sup> भ<sup>३ १ २</sup>वा<sup>३ १ २</sup> सं<sup>३ १ २</sup>म<sup>३ १ २</sup>त्सु<sup>३ १ २</sup> नो<sup>३ १ २</sup> वृ<sup>३ १ २</sup>धे<sup>३ १ २</sup> ॥

१. य३स्स४त्रा४हा३वि३च४ऋ४ष५णी५ः । इ५द्र५ता२३३३हू४  
म५हे४व४या५म् । इ५द्रंतःहूम२हेवाऽ२३या२म् । सहस्रमन्यो  
तुविनृम्ण२सत्पाऽ२३ता२यि२ । भ२वा॒साऽ२३ मा२ । त्सूनो॒वृ२  
धे२ । इडाऽ२३भा२३४ऽ३ । ओऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ ३ ॥

ऋषिः — पुरुच्छेपः ॥ देवता — अश्विनौ ॥ छन्दः — बृहती ॥ स्वरः — मध्यमः ॥

२८७. श१ची२भिर्नः श३चीवसू३ दिवा३नक्तं३ दिशस्यतम् ।

मा१ वा२ रातिरुप३ दसत्कदा३ च३ नास्मद्रातिः३ कदा३ च३ न३ ॥

साम—

१. श४ची४भि४र्त्रा४ऽ५ः श५ची५व४सू४ । दिवा॒नक्तं॑न्दि२शस्य-  
ताम् । मावा४२ुम् । रा॒तिरुप॑दसत्क२दा॒चना । आस्मा४२ुत् ।  
रातिष्क२दोऽ२३४वा५ । चा४ऽ५नो५६हा५यि५ ॥ ४ ॥

ऋषिः — वामदेवः ॥ देवता — वरुणः ॥ छन्दः — बृहती ॥ स्वरः — मध्यमः ॥

२८८. य३दा३ कदा३ च३ मी३दुषे३ स्तो३ता३ जरेत३ मर्त्यः३ ।

आदिद्३ वन्देत३ वरुणं३ विपा३ गिरा३ धर्तारं३ विव्रतानाम्३ ॥

पञ्चाणि त्रीणि—

१. य५दा५क५दा५ । चाऽ२ुमा३२३४औ५ होवा५ । दू३२३४षे५ ।  
स्तो॒रता॒जरे॒त२मर्त्ति॒रया२३ः । आदिद्वन्दे२ । तावैरुणाऽ  
२३४म् । वि३पा२३४गि३रा२ । धा॒र्त्ता॒राम्बीऽ२३ । ब्राऽ२ुता  
३२३४औ५ हो५वा५ । ना३२३४५म् ॥ ५ ॥
२. य५दा५क५दा५ च५मा५हा५उ५ । दूषा४२ुयि२स्तोता४२ु । ज२  
रा२इ२ । त२म२र्त्ति॒यः । आ॒दिद्वन्दा२ु । अ॒३हो॒र्हा२३ । हा२३  
यि३ । तावाऽ२ुरू३२३४णा५म् । वि॒रपा॒रगिरा॑ । ध॒र्त्ता॒रिव्या२ु ।

अ३हो३हा२३ । हा२यि२ । व्रा॒ता॒ना॒२म् २ । इडा॒ऽ२३भा२३४ऽ३  
ओ॒ऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ ६ ॥

३. य४दा३ऽ४क५ । दा३ऽ४च४मी५ । दु३षा२३यि३ । स्तो४ता५ ।  
ज२ रा२यि२ । त२मा॒र्त्ता॒या२३ः । आ॒दा॒यि॒द्वं॒दा२३यि३ । ता॒वा॒२  
रू३२३४णा५म् । वि५पा५ । गि३रौ२वा॒२ओं३२३४वा५ ।  
ध५त्ता५ । रं३व्यौ२वा॒२ओं३२३४वा५ । व्र४ता४ऽ५ना५म् ।  
हो४ऽ५यि५ डा५ ॥ ७ ॥

ऋषिः — मेध्यातिथिः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — बृहती ॥ स्वरः — मध्यमः ॥

२८९. पा॒हि॒ गा॒ अ॒न्ध॒सो॒ म॒द॒ इ॒न्द्रा॒य॒ मे॒ध्या॒ति॒थे ।

यः॑ स॒मि॒श्लो॒ ह॒र्यो॑र्यो॒ हिर॑ण्य॒य॒ इ॒न्द्रो॒ व॒ज्री॒ हिर॑ण्य॒यः॑ ॥

सोभरे द्वे—

१. पा॒४हि॒५गा॒५आ॒४ । ध॒२सो॒मा॒ऽ२३दा॒२यि॒२ । आ॒यि॒न्द्रा॒य॒२मे॒२ ।  
धि॒२ या॒ता॒ऽ२३यि॒३था॒२यि॒२ । य॒स्स॒मि॒श्लो॒२ह॒रि॒यो॒२र्यः॑ ।  
हा॒यि॒रे॒ण्या-या॒४२ । आ॒यि॒द्रो॒वा॒२३ज्री॒२३ । हि॒२रो॒ऽ२३४वा॒५ ।  
ण॒या॒४ऽ५यो-५६हा॒५ यि॒५ ॥ ८ ॥

२. पा॒५हो॒४पा॒४ही॒५ । गा॒२अं॒२ध॒२सो॒मा॒ऽ२३दा॒२यि॒२ । आ॒यि॒न्द्रा॒  
य॒२मे॒२ । धि॒२या॒ता॒ऽ२३यि॒३था॒२यि॒२ । य॒स्स॒मि॒श्लो॒२ह॒रि॒  
यो॒२र्यः॑ । हा॒यि॒रे॒ण्याया॒४२ुः । आ॒यि॒द्रो॒वा॒२३ज्री॒२३ । हि॒२रो॒ऽ२३४  
वा॒५ । ण॒या॒४ऽ५यो५६हा॒५यि॒५ ॥ ९ ॥

ऋषिः — भर्गः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — बृहती ॥ स्वरः — मध्यमः ॥

२९०. उ॒भयं॑ शृ॒णव॑च्च न इ॒न्द्रो॒ अ॒र्वा॒गि॒दं॑ व॒चः॑ ।

स॒त्रा॒च्या॒ म॒घ॒वा॒न्त्सो॒मपी॑तये धि॒या॒ श॒वि॒ष्ठ आ॒ ग॒म॒त् ॥

वैयश्वम्—

१. उपभयप५५शृणपवपच्चनाप६ए५ । आयिंद्रो२अ२व्वा॒गि-  
दंवचाऽ२३ः । होवा२३हा२यि२ । स२त्रा॒चिया॒२म२घवा॒२न्२ ।  
सो । मापा२३हा२यि२ । ता३२३४या५यि५ । धि२या॒शविष्ट  
आऽ२३होयि । गरमात् । अऽ२३हो४वा५ । हो४ऽ५यि५  
डा५ ॥ १० ॥

ऋषिः—मेधातिथिर्मेध्यातिथिश्च ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥

स्वरः—मध्यमः ॥

२९१. <sup>३२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २</sup>महे च न त्वाद्रिवः परा शुल्काय दीयसे ।

<sup>२ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ २ ३ १ २</sup>न सहस्राय नायुताय वज्रिवो न शताय शतामघ ॥

सुस्त्रा इतीये द्वे—

१. म५हे५च५नो४वा५ । त्वा२उअ२द्रा३२३४यि४वा५ः । प२रा॒२  
शु॒ल्का॒२ । या२३दायासा२३यि३ । न४स५ । ह३स्त्रा२३ ।  
याना॒यु२ ता॒२ । य२वाज्रायिवो२३ । न४श५ । ता३या२३ ।  
शाऽ२३ता४ऽ३ । मा२३४५घो५६हा५यि५ ॥ ११ ॥
२. म५हे५चा२३न४त्वा५अ४द्रि४वा५ः । पा॒रा॒शु॒ल्का॒२ । य२दा  
या२ऽसा४२यि२ । नसहस्रा४२ । यना॒युता॒यावैज्रिवा४२ुः ।  
न२शाताऽ२३या२ । श२ताऽ२३ । माऽ२ुघा३२३४औ५हो५  
वा५ । म२होविशे२ऽऽ ॥ १२ ॥

ऋषिः—मेधातिथिर्मेध्यातिथिश्च ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥

स्वरः—मध्यमः ॥

२९२. <sup>१ २</sup>वस्याँ इन्द्रासि मे <sup>३ २ ३ २ ३</sup>पितुरुत <sup>३ १ २</sup>भ्रातुरभुज्जतः ।

<sup>३ १ २</sup>माता च मे <sup>३ १ २</sup>छदयथः <sup>३ २ ३ १ २</sup>समा वसो वसुत्वनाय राधसे ॥

इन्द्राण्याः साम—

१. व४स्या५२५इं५द्रा५सि५मे५ । हा४उ४पि४तू५ः । उ३ता२भ्रा३२  
३४तू५ः । अ२भू३जातौ२ । वा२ओ३२३४वा५मा२तोचामौ२ ।  
वा२ओ३२३४वा५ । छ२द२य२थः२ । सा२३मावासौ२ । वा२  
ओ३२३४वा५ । व२सू॒त्वानौ२ । वा२ओ३२३४वा५ । य२रोऽ-  
२३४वा५ । धा४ऽ५सो५६हा५यि५ ॥ १३ ॥

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२९३. इमं इन्द्राय सुन्विरे सोमासो दध्याशिरः ।

तां आ मदाय वज्रहस्त पीतये हरिभ्यां याह्योक आ ॥

सौभवम्—

१. इ३मा२३४यि४ । इ४म४इ४ । द्रा५य५सु५न्वा५६यि६ । रा५  
यि५ । सो॒मा॒सो॒दध्या॒शिराः । ता॒ऽ२आ॒मदा॒यवज्रहस्त-  
पी॒ताया॒यि । हरा५२३ हो । भ्या॒ऽया५२३हो । हि२यो५२३ ।  
का५२आ३२३४ अ॒पहो॒पवा५ । ऊ३२ ३४पा५ ॥ १४ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२९४. इमं इन्द्र मदाय ते सोमाश्चिकित्र उक्थिनः ।

मधोः पपान उप नो गिरः शृणु रास्व स्तोत्राय गिर्वणः ॥

गार्त्समदम्—

१. इ४म४इं४द्रा४ऽ५म५दा५य४ता४यि४ । सो॒मा॒श्चि॒कित्र-  
उक्थि॒नाः । मा२ऽधो४रु५ष्यापा४२ । नउपनो॒गिरा॒शशा॒ऽर्णू४२ ।  
रा॒ऽस्वस्तो॒ऽ२३त्रा॒२ । य॒ऽगि॒र्वा॒ऽ२३णा॒२३४ऽ३ । ओ॒ऽ२३  
४५यि५ । डा५ ॥ १५ ॥

ऋषिः—मेधातिथिमेध्यातिथी; विश्वामित्र इत्येके ॥ देवता—इन्द्रः ॥

छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२९५. आ त्वा<sup>१ २</sup>३५ द्य<sup>१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २</sup> सबर्दु<sup>१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २</sup>घां हुवे गायत्रवेपसम् ।

इन्द्रं धेनुं सुदुधामन्यामिषमुरुधारामरङ्कृतम् ॥

वाच्यस्साम—

१. आ॒प॒त्व॒प॒द्या॒प॒सा॒प॒द॒ब॒र्दु॒प॒घा॒प॒म् । हु॒र॒वा॒यि॒गा॒र्य॒र॒त्र॒वे॒रं  
प॒र॒स॒र॒म् । आ॒यि॒न्द्रा॒न्धे॒र॒नू॒र॒म् । सु॒र॒दु॒घा॒र॒म् । आ ।  
नि॒या॒ऽरु॒मा॒३२३४यि॒षा॒प॒म् । उ॒रु॒धा॒ऽर॒३रा॒र॒म् । अ॒र॒  
र॒ङ्गा॒ऽर॒३र्त्ता॒र॒३४ऽ३म् । ओं॒ऽर॒३४५यि॒प॒ । डा॒प॒ ॥ १६ ॥

ऋषिः—नोधाः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२९६. न त्वा बृहन्तो अद्रयो वरन्त इन्द्र वीडवः ।

यच्छिक्षसि स्तुवते मावते वसु न किष्टदा मिनाति ते ॥

बार्हदुक्थम्—

१. न॒ऽत्वा॒प॒बृ॒ह॒ । तो॒ऽप॒द्र॒या॒ः । व॒र॒न्त॒इन्द्र॒र॒वी॒डा॒ऽर॒३  
वा॒रः । या॒च्छि॒क्षा॒सी॒ऽरु॒ । स्तू॒र्वे॒ता॒यि॒मा॒ऽरु॒ । व॒र॒ते॒व॒सू ।  
न॒कि॒ष्टा॒ऽर॒३दा॒ । मि॒र॒ना॒ता॒ऽर॒३यि॒र॒ता॒र॒३४५३यि॒३ । ओ॒ऽर॒३  
४५यि॒प॒ । डा॒प॒ ॥ १७ ॥

ऋषिः—मेधातिथिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२९७. क ई वेद सु ते सचा पिबन्तं कद्वयो दधे ।

अयं यः पुरो विभिनत्त्योजसा मन्दानः शिष्यन्धसः ॥

वाशम्—

१. क॒र्दु॒प॒म्वे॒प॒दा॒प॒ । सु॒र॒ता॒यि॒सा॒र॒ऽचा॒ऽरु॒ । पि॒ब॒न्तं॒क॒द्वयो॒र॒ऽ



दाधा४२ुयिर । अ२यंयःपुरोविभिनत्ताओ२ऽजासा४२ु । मं२  
दा॒नाऽ२३३शी२३ । प्राऽ२ुया३२३४अ॒पहो॒पवा॒प । धा३२३४  
सा॒पः ॥ १८ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२९८. यदिन्द्र<sup>१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २</sup> शासो<sup>३ १ २ ३ १ २</sup> अव्रतं<sup>३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २</sup> च्यावया<sup>३ १ २ ३ १ २</sup> सदसस्प<sup>३ १ २ ३ १ २</sup>रि ।  
अस्माकमंशुं<sup>३ १ २ ३ १ २</sup> मघवन्<sup>३ १ २ ३ १ २</sup> पुरुस्पृहं<sup>३ १ २ ३ १ २</sup> वसव्ये<sup>३ १ २ ३ १ २</sup> अधि बर्हय ॥

तौरश्रवसम्—

१. य२दिन्द्राऽ२३शा४सो४अ॒पव्र॒पता॒पम्प । च्या२व॒रया॒२स२ ।  
दा२३ सा॒स्पारौ॒२ । वा२३२ । अ॒स्माका॒मौ॒२ । वा२३२ ।  
शु॒म्मघ॒२व॒रन्॒२ । पु॒रुस्प्रे॒हौ॒२ । वा२३२ । व॒रसा॒व्यायौ॒२ ।  
वा२३ऽ२३ । धि॒रवौ॑ऽ२३४बा॒प । हा४ऽ॒पयो॒पद्हा॒प यि॒प ॥ १९ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—बहवः—( पर्जन्यब्रह्मणस्पत्यदितयो विश्वेदेवाः ) ॥  
छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२९९. त्वष्टा<sup>१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २</sup> नो<sup>३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २</sup> दैव्यं<sup>३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २</sup> वचः<sup>३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २</sup> पर्जन्यो<sup>३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २</sup> ब्रह्मणस्पतिः ।  
पुत्रैर्भ्रातृभिरदितिर्नु<sup>३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २</sup> पातु नो<sup>३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २</sup> दुष्टरं<sup>३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २</sup> त्रामणं<sup>३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २</sup> वचः ॥

त्वाष्ट्री साम—

१. त्व३ष्टा२३४ । नो॒४दै॒४वि॒पय॒पम्प । व४चा॒पः । प॒रर्ज॒न्यो  
ब्रह्म॒रण॒स्याऽ२३ती॒२ । पु॒रत्रै॒र्भ्रातृ॒भिर॒दिति॒र्नु॒रपा॒तूऽ२३ना॒२ ।  
दु॒रष्टा॒राऽ२३त्रा॒२ । म॒रण॒म्वाऽ२३चा॒२३४ऽ३ । ओ॒ऽ२३४५-  
यि॒पडा॒प ॥ २० ॥

ऋषिः—बालखिल्याः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

३००. कदा च न स्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे ।

उपोपेन्नु मघवन् भूय इन्नु ते दानं देवस्य पृच्यते ॥

अदिदसाम—

१. क५दा५च५ना५स्ता५द५री५र५सा५ यि५ । ने२न्द्रा२रुसा३२३४  
शचा५ । सा२यि२दा२शू३२३४षा५यि५ । उ३पो४पे३न्नु३  
म४घ५व५न्भू३य४इ५त्प । हा५रुयि२नु३२३४ता५यि५ । दा२  
नं२दा३२३४यि४ वा५ । स्य२पो५२३४वा५ । च्या४ऽ५तो५६  
हा५यि५ ॥ २१ ॥

ऋषिः—मेध्यातिथिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

३०१. युङ्क्ष्वा हि वृत्रहन्तम हरी इन्द्र परावतः ।

अर्वाचीनो मघवन्त्सोमपीतय उग्र ऋष्वेभिरा गहि ॥

अजीगर्तम्—

१. आ५यि५ही४२ । आ५यि५हि२हा५यि । युं३क्ष्वा२रहि२वा२३र्त्रा४ऽ३  
हं२त३म५ । हा२री३इं२द्र२ । प२रा५वा२ऽता५२३४ः । अ३र्वा२३४  
ची३ना२ः । मा५घ२व२न्त्सो३ । म५पा५यि५ता२ऽया५२३४यि४ ।  
उ३ग्रा२३४ऽऋ३ष्वा२३यि३ । भि२रो५२३४वा५ । गा४ऽ५हो-  
५६हा५यि५ ॥ २२ ॥

ऋषिः—नृमेधः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

३०२. त्वामिदा ह्यो नरोऽपीप्यन् वज्रिन् भूर्णयः ।

स इन्द्र स्तोमवाहस इह श्रुध्युप स्वसरमा गहि ॥

माधुछन्दसम्—

१. त्वा३मि४दा५ । हो२रुयि३रु । हि३यो४न४रा५६ए५ । अ५पायिष्य२  
न्वा । ज्रा॒यिन्भूरु॑णा३२३४या५ः । स॒इन्द्र२स्तो॒मवा॒रहर२स२ः ।  
इ२हाश्रू॒धा३रु । अ॒३हो२३४वा॒३हा३यि२ । उ२पस्वासा३रु । अ॒३  
हो२३४वा॒३हा२ । र२मा॒गाऽ२३हा२३४ऽ३ यि३ । ओऽ२३४५  
यि५ । डा५ ॥ २३ ॥

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—उषाः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

३०३. प्र॒त्यु॑<sup>१ २</sup> अद॒श्याय॑त्यू३<sup>३ २</sup> च्छन्ती॑<sup>१ २</sup> दुहि॒ता दि॒वः ।<sup>३ २ ३ २</sup>

अपो॑<sup>१ २</sup> मही॑<sup>३ १ २</sup> वृणु॑ते चक्षु॒षा तमो॑<sup>३ १ २</sup> ज्योति॑ष्कृ॒णोति॑<sup>३ १ २</sup> सून॒री ॥

अषमः—

१. प्र॒रता॑यि । इ३हा२ । आ॒यि । इ३हा२ । उ॒रवर॑द२ । शी॒र३  
आ॒यती॑२ । आ॒यती॑२ । उ॒रच्छा॑ । इ३हा२ । आ । इ३हा२ ।  
ती॒रदु॑२ । ही॒र३र्तादि॑वा४रुः । आदि॑वा४रुः । अ॒रपो । इ३हा२ ।  
ओ । इ३हा२ । माही॑वृ॒णु॒रते॒॑रच॑२ । क्षु॒रषा॑त॒मा४रुः ।  
आ॒त॒मा४रुः । ज्यो॒रता॑यि । इ३हा२ । आ॒यि । इ३हा२ । कृ॒र  
णो॒र । ती॒र३सू॑नेरी४रु । ओ॒ने॒रीऽ२३४ऽ३ । ओऽ२३४५यि५ ।  
डा५ ॥ २४ ॥

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

३०४. इ॒मा उ॒ वां दि॒विष्ट॑य उ॒स्रा ह॑वन्ते अ॒श्विना॑ ।<sup>३ १ २ ३ १ २ ३ १ २</sup>

अयं॑<sup>३ १ २ ३ १ २</sup> वा॒मह्वे॑ऽवसे श॒चीव॑सू वि॒शंवि॑शं हि गच्छ॑थः ॥<sup>३ १ २ ३ १ २ २२</sup>

## अश्विसाम—

१. इ२मा२उ२वा२रन्दि२वि२ष्ट२या३२३४ऐ२प२ही२ । उ२स्त्रा२र२ह२  
वं२ ते२रअ२श्चि२रना३२३४ऐ२प२ही२ । अ२यं२वा२रम२ह्वे२रव२से२  
श२ची२रव२ सू३२३४ऐ२प२ही२ । वि२श२रम्बि२रशः२हि२रग२  
च्छ२था३२३४ऐ२प२ही२ । हो४ऽप२यि२ डा२ ॥ २५ ॥

ऋषिः—पौर आत्रेयः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

३०५. कु३ष्ठः१ को२ वाम३श्विना१ तपा२नो३ दे३वा१ म३र्त्यः२ ।  
घ३न्ता१ वाम३श्नया१ क्षप३माणो१ऽशु३ने२त्थमु१ आ३द्व२न्यथा१ ॥

## संयोजनम्—

१. कु३ष्ठ५ष्को३वा५म५श्वि५ना५आ४ । तापा२नो२रदे२ । वा३मे॒र्त्ता  
या२३ः । हो॒वा२३हा२३४यि४ । घ३र३ता२३४वा३मा२ऽ ।  
श्ना॒या२३ । हो॒वा२३हा२३४यि४ । क्ष३पा२३४मा३णारः ।  
आ॒शूना२३ । हो॒वा२३हा२३४यि४ । इ३त्था२३४मु३वा२३  
त्३ । उवा३ऽरु३न् । य३था२३४अ५हो५वा५ । ऊ३२३४  
पा५ ॥ २६ ॥

ऋषिः—प्रस्कण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

३०६. अ३यं३ वां३ म३धु३मत्त३मः३ सु३तः३ सो३मो३ दि३वि३ष्टि३षु३ ।  
तम३श्विना३ पि३बतं३ ति३रो३अ३ह्वयं३ ध३त्तं३ रत्ना३नि३ दा३शु३षे३ ॥

## आश्विसाम—

१. अ३या२३४म्४ । अ४यं४वा५म५धु५म५त्ता५द५मा५ः । सु२  
तस्सो॒मो॒रदि॒वि॒ष्टि॒रषु॒ । ओ॒रहा॒ । ओ॒रहा॒३४ । ओ॒रहा॒ ।  
ताम३श्विना३ पि३बतं३ ति३रो३अ३ह्वि३रय३रम् । ओ॒रहा॒ । ओ॒रहा॒३४ ।

ओ३हार । धत्ताऽरा२ऽत्ता४२ । ओ३हारओ३हार३४ । ओ३  
हार । नि२दाऽ२३ । शूऽरुषा३२३४औ५हो५वा५ । ऊ३२३४  
पा५ ॥ २७ ॥

ऋषिः—मेधातिथिमेध्यातिथी ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

३०७. आ त्वा सोमस्य गल्दया सदा याचन्नहं ज्या ।

भूर्णि मृगं न सवनेषु चुक्रुधं क ईशानं न याचिषत् ॥

सोमसाम—

१. आ५त्वा५सो५मा५ । स्य२ । गल्दाऽरुया३२३४औ५हो५वा५ ।  
सदा३याचन्न२हञ्जियाऽ२३ । भूर्णा३रुओ३२३४वा५ । मृ२गन्न-  
सवने२षुरचु२क्रु२ध२म् । क२ईशाऽ२३नारम् । नायाचि२-  
ष२त् । इडाऽ२३भा२३४ऽ३ । ओऽ२३४५यि५डा५ ॥ २८ ॥

ऋषिः—देवातिथिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

३०८. अध्वर्यो द्रावया त्वं सोममिन्द्रः पिपासति ।

उपो नूनं युयुजे वृषणा हरी आ च जगाम वृत्रहा ॥

अजमायवम्—

१. अ४ध्व४र्यो४द्रा४ऽ५व५या५तु४वा४म् । सोममिन्द्रा४ऽः । पि२  
पासा२ऽती४२ । उपो३नू२ । नंयूयु२जे२वृ२ । षाणा२ऽ  
हारी४२ । आ२चाजाऽ२३गा२ । म३वृ३त्र२हा । अ२३हो४वा५ ।  
हो४ऽ५यि५ ॥ डा५ ॥ २९ ॥

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

३०९. अभीषतस्तदा भरेन्द्र ज्यायः कनीयसः ।

पुरुवसुहिं मघवन् बभूविथ भरेभरे च हव्यः ॥

प्रैषयमेधः—

१. अ५भी५ष५त५स्त५दा५हा५उ५ । भरा । इंद्रज्यायष्क२नीयाऽ  
२३सारः । पुररू२वसु२ऋहिभघवन्ब२भूवाऽ२३यि३था२ ।  
भरायिभाऽ२३रे२ । च२हव्य२ः । इडाऽ२३भा२३४ऽ३ ।  
ओऽ२३४५यि५डा५ ॥ ३० ॥

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

३१०. <sup>१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ २</sup>यदिन्द्र यावतस्त्वमेतावदहमीशीय ।

<sup>३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २</sup>स्तोतारमिदधिषे रदावसो न पापत्वाय रंसिषम् ॥

वैरूपे द्वे—

१. य२दिन्द्राऽ२३या४व४त५स्तु५वा५म्५ । ए२तावदहमीशीया ।  
स्तो॒ता॒राऽ२३मी२त्२ । दाधिषे२ । र२दावा२ऽसा४उ२ ।  
न२पा॒पाऽ२३४त्वा५ । या॒रौ२वा॒रुओ३२३४वा५ । सा४ऽ५यि५  
षो५६हा५ यि५ ॥ ३१ ॥

शाम—

२. य५दि॒न्द्र३या॒रुव३त४स्तु५वा५म्५ । आ॒यिता२३ । वा॒दा२३  
हा४मी५ । शीया२३४उ२ । स्तो॒ता॒रामीऽ२३त्३ । द४धि४षे५  
र५दा५ । वा॒सा२उ४उ२ । ना पा॒रपा॒त्वाऽ२३ । या॒रौ२वा॒रु  
ओं३२३४वा५ । सा४ऽ५यि५षो५६हा५यि५ ॥ ३२ ॥

ऋषिः—नृमेधः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

३११. <sup>१ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २</sup>त्वमिन्द्र प्रतूर्तिष्वभि विश्वा असि स्पृधः ।

<sup>३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २</sup>अशस्तिहा जनिता वृत्रतूरसि त्वं तूर्य तरुष्यतः ॥ १ ॥

## वैश्वदेवम्—

१. त्व४मिं५द्रो४हा४यि४ । प्र५तू५र्त्ति५ष्वा४वा५ । आभि॒वि॒र  
श्वा॒रः । अ॒रसा॒यि॒स्या॒र॒ऽब्दा॒रुः । आ॒शस्ति॒रहा॒रज॒रनि॒र  
ता॒रवृ॒र । त्रा॒तूर॒रासा॒रुयि॒र । त्वा॒न्तूर॒ऽरि॒य॒रु । त॒रु॒रु॒रु  
ता । अ॒र॒रु॒हो॒वा॒ । हो॒र॒ऽयि॒ । डा॒ ॥ ३३ ॥

ऋषिः—नोधाः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

३१२. प्र॒ यो॒ रिरि॒क्ष ओ॒जसा॒ दि॒वः स॒दो॒भ्य॒स्प॒रि ।

न त्वा वि॒व्याच॒ रज॒ इन्द्र॒ पार्थि॒वम॒ति वि॒श्वं वव॒क्षि॒थ ॥

## पुरीषम्—

१. प्र॒यो॒रि॒क्ष॒क्ष॒ओ॒ज॒सा॒द॒ए॒ । दि॒वस्स॒दो॒भ्य॒र  
स्प॒रि । न॒त्वा । वि॒व्या । अ॒रहो॒र्वा॒र । चा । रजः । अ॒रहो॒र्वा॒र  
यि॒र । द्र॒ पार्थि॒वाम् । अ॒ति॒वा॒र॒रु॒यि॒र॒वा॒र॒म॒ । वा॒व॒क्षि॒र  
थ॒र । इ॒डा॒र॒रु॒भा॒र॒रु॒ऽयि॒ । ओ॒र॒रु॒यि॒ । डा॒ ॥ ३४ ॥

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

३१३. अ॒सा॒वि दे॒वं गो॒ऋ॒जी॒कम॒न्धो न्य॒स्मिन्निन्द्रो॒ जनु॒षे॒मु॒वो॒च ।

बो॒धाम॒सि त्वा ह॒र्य॒श्व य॒ज्ञैर्बो॒धा न स्तो॒मम॒न्धसो॒ मदेषु॒ ॥

## प्राकर्षम्—

१. अ॒रसौ॒रहो॒रवा॒र॒रु॒यि॒रु । वी॒र॒रु॒रु॒दे॒ । वा॒ऽङ्गो॒ऽऋ॒ ।  
जी॒रु॒क॒रु॒मं॒धा॒ः । न्यौ॒रहो॒रवा॒र॒रु॒ । स्मी॒र॒रु॒नी॒ ।  
द्रो॒जनु॒ । षे॒रु॒मु॒रु॒वा॒चा॒ । बो॒र॒धौ॒रहो॒रवा॒र॒रु॒यि॒रु ।  
मा॒र॒रु॒सी॒ । त्वा॒हरि॒ । अ॒रु॒श्च॒रु॒रु॒ । बो॒ । र॒धौ॒रहो॒र  
वा॒र॒रु॒यि॒रु । ना॒र॒रु॒स्तो॒ । म॒रु॒मं॒ध । सो॒र॒रु॒ऽयि॒ ।  
मा॒र॒रु॒दा॒ऽयि॒ । षू॒रु॒रु॒ ॥ ३५ ॥

१. मूलगानग्रन्थेऽत्र 'यरि' इत्याद्यन्तविपर्यत्वेन पठितं, तूर्यशब्दस्य 'तूरिय' इत्येतेनैव भाव्यम्, न तु 'तूररि' इति । २. मूलगानग्रन्थेऽत्र त्रुटिपूर्तिरित्थं कृता—इडा॒र॒रु॒भा॒र॒रु॒ऽयि॒ इति । संशोध्यैतदस्माभिः प्रकाशितम् । —सम्पादकः

निहवः—

२. आयिही२३ । आयिही२ । ए३हि३या२ । ओ३२३४वा५हार  
यि२ । अ२सा२रवि२दे२वर३ङ्गो२ऋ२जी२का२३मा५न्धा२३ः ।  
आन्धा२ः । अ३न्धा२ । ओ३२३४वा५ । हार२यि२ । न्य२स्मि२  
न्नि२द्रो२रज२नुर३षे२मू२३वोचा२३ । वोचा२ । वो३चा२ ।  
ओं३२३४वा५ । हार२यि२ । बो२धा२रम२सि२त्वा२ ह२र्य२  
श्वा२३याज्ञैः२३ः । याज्ञै२ः । य३ ज्ञा२ । ओ३२३४वा५ । हार  
यि२ । बो२धा२रन२स्तो२ म२मं२ध२ सो२मा२३दायि३षू२३ ।  
अ३यि३षू२ । ए३षु३वा२ओ३२३४वा५ । ब्दा२यि२ ।  
आयिही२३ । आयिही२ । ए३हि३या२ । ओ३२३४वा५ ।  
हार३४ । औ५हो५वा५ । ई३२३४५ ॥ ३६ ॥

[ इति ] अर्द्धप्रपाठकः ॥

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

३१४. यो<sup>१ २</sup>निष्ट<sup>३ १ २</sup> इन्द्र<sup>३ १</sup> सदने<sup>२ २</sup> अकारि<sup>३ १</sup> तमा<sup>२ २</sup> नृभिः<sup>३ १ २</sup> पुरुहूत<sup>३ १ २</sup> प्र याहि ।

असो<sup>२ ३ १ २</sup> यथा<sup>३ २ ३ २</sup> नोऽ<sup>३ २ ३ १ २</sup> विता<sup>३ १ २</sup> वृधश्चिददो<sup>३ १ २</sup> वसूनि<sup>३ १ २</sup> ममदश्च<sup>३ १ २</sup> सोमैः ॥

योनिनीद्वे—

१. यो४नी५ः तआयि । द्रा२३सद । ना२अ३का४री५ । ता४मा५ ।  
नृभायिः । पुरुहू२३ । ता२प्र३या४ही५ । आ४सा५ः । यथा ।  
नो२३अवि । ता२वृ३ध४श्ची५त् । दा४दा५ः । वसू । नी२३  
ममादा२३४ऽ३ । चा२३सो४ऽ५मा५६५६यि६ः ॥ १ ॥
२. योनि२ष्ट३आ२यि२ । द्र३स४द४ना५यि५ । हो४वा५ ।  
आका२३रा२ यि२त३मा४नृ४भी५ः । हो४वा५ । पू । रु२हू२३ ।  
ता२प्र३या४ही५ । हो४वा५ । आसो२य३था२ । नो३अ४वि४



ता५ । हो४वा५ । वाब्दा२३ः । चारुयिरुद्द३दो४व४सू५ । हो४  
वा५ । नायिम२म३द२ः । च३सो४मै५ः । हो४वा५हो४ऽ५यि५ ।  
डा५ ॥ २ ॥

ऋषिः—गातुः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

३१५. अ३द३रु३त् सम३सृ३जो वि खानि त्वमर्णवान् बद्धधानां अरम्णाः ।  
महान्तमिन्द्र पर्वतं वि यद्वः सृजद्भारा अव यद्दानवान् हन् ॥

औरुक्षये द्वे—

१. अ३द३र्द३रु३त्स३म३सृ३जो२वि३खानि२१ । त्व२मर्णाऽ-  
२३४वा५न५ । ब२द्ध२धा२रनाऽ२अ२राम्णाऽ२ः । म२हान्ताऽ२३४  
मी५ । द्र२प२र्व्व२तं२वि३याद्व२ः । सृ२जाब्दाऽ२३४रा५ः । अव२  
यद्दा२न२वाऽ२३न्३हा२३४ऽ३न्३ । ओऽ२३४५यि५ ।  
डा५ ॥ ३ ॥

२. अ३द३र्द३रु३त्स३म३सृ३जा३ःवि३खानि । त्वमर्णवान्बद्धधा-  
नाऽ२अ२राऽ२३म्णाऽ२ः । म२हान्तमिन्द्रपर्व्वतम्वि२याऽ२३  
द्वा२ः । सृ२जाब्दा२रा४रुः । अवा२र्यद्दा२न२ । वाऽ२  
या३२३४अ५हो५वा५ । हा३२३४५न५ ॥ ४ ॥

ऋषिः—पृथुर्वैन्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

३१६. सु३ष्वाणा३स इन्द्र स्तुमसि त्वा सनिष्यन्तश्चित्तुविनृम्ण वाजम् ।  
आ नो भर सुवितं यस्य कोना तना त्मना सह्याम त्वोताः ॥

पाथे द्वे—

१. सू३ष्वा५णा४सा५ः । इ३न्द्र२स्तु३ । म२सि३त्वा५ । स४नि४  
ष्य३त४श्चि५तु५वि५नृ५ । म्णा३वा३२३४जा४म५ । आ५न५ः ।

भ३रा२ओं३२ ३४वा५ । सु५वि५तं४य४स्य५को५ । ना४ ।  
ता४ना५त्मा४ना५ । सर३हि२रया२ । मा२३४ऽ३ । तू२३वो४ऽ५  
ता५६५६ः ॥ ५ ॥

२. ओं२३हो२३हो२ुयि२ु । सू३२३४ष्वा५ । णा॒साः । इं३द्र२स्तु३ ।  
म२सि३ त्वा५ । ओ२३हो२३हो२ुयि२ु । सा३२३४नी५ । ष्यंताः ।  
ची२३त्तु५वि । नृ२म्णा३वा४जा५म् । ओ२३हो२३हो२ुयि२ु ।  
आ३२३४ना५ः । भ२रा । सु२रवि२ता३म् । य२स्य३को४ना५ ।  
ओं२३हो२३हो२ुयि२ु । ता३२३४ना५ । त्मना२सर३हि२रया॒ ।  
मा२३४ऽ३ । तू२३वो४ऽ५ता५६५६ः ॥ ६ ॥

ऋषिः—सप्तगुः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

३१७. ज३गृ२ह्या ते दक्षि३णमिन्द्र ह३स्तं व३सू॒यवो व३सु॒पते व३सू॒नाम् ।

वि३द्या हि त्वा गो॒पतिं शू॒र गो॒नाम॒स्मभ्यं चि॒त्रं वृ॒षणं रयिं दाः ॥

सौपर्णे द्वे—

१. ज५गृ५ह्या५ते५द५क्षि५ण५मो५हा५अ५हा५६ए५ । इं३द्रहा२३  
स्ता२म् । व२सू॒रयवो । व॒सुपा२३ । ता॒रुयि॒रुव३सु५ ।  
ना२म् । ओं२३हा२ । ओ२३३ । हा२३ए२ । वि॒रद्मा॒हित्वा ।  
गो॒पती२३म् । शु॒रु३गो५ ना२म् । ओ॒र३३ । हा२ । ओ३२ ।  
हा२३ । अ॒रस्मभ्यं चायि । त्रा॒र३म्बृष । ण॒र३२र३यिं५म् ।  
दा॒रः । ओ॒र३३ । हा॒र । ओ॒र३३ । हा॒ररयायिंदा३ उ३वा२३ ।  
ऊ॒र३४पा५ । अ॒रहो॒अ॒रहो-वा॒ऽ२३४५हा५उ५ । वा५ । ई३२३  
४५ ॥ ७ ॥

२. ज५गृ५ह्या४ते५द४क्षि५ण५म् । अ५हौ४हो४वा४हा५यि५ ।  
 इं२द्रा२ हा३२३४स्ता५म् । ५ व२सूर५यवो । वसुपा२३ ।  
 तारुयि२व३सु५ । नौ२ । वा२ओ३२३४वा५ । हा२३हा२यि२ ।  
 वि२द५मा हि॒त्वा । गो॒पती २३म् । ३ शू२र३गो५ । नौ२ ।  
 वा२ओ३२३४ वा५ । हा२३ हा२यि२ । अ२स्मभ्यञ्चायि ।  
 त्रा२३म्३वृष । ण२रुर३यि५म् । दौ२ । वा२ओ३२३४वा५ ।  
 हा२३हा२३४ अ५हो५वा५ । ई३२३४५ ॥ ८ ॥

वात्सप्राणि त्रीणि—

३. होई४२ । ३ । ज२गृ२ह्याते२दक्षि२ण२म् । ई२ द्र२हास्ता४२  
 म् । हास्ता४२म् । २ । व२सूर५यवो रँव२सु२प२ । ते२व२  
 सूना४२म् । सूना४२म् । २ । वि२द५मा हि॒त्वा २गो॒पति२म् । २  
 शू२र२गोना४२म् । गोना४२म् । २ । अ२स्मभ्य२ञ्चि२  
 त्रम्बृष२ । ण२र२या-यिदा४२ः । आयिंदा४२ः । २ । हो<sup>१</sup>....२ । २ ।  
 होयाऽ२ । वा३२३४ अ५हो५वा५ । ई३२३४५ ॥ ९ ॥

४. आ४अ५हो५यि५२ । आ४अ५हो५द५वा५<sup>२</sup>...२यि२ । २ ।  
 अऽ२३ हो३वा२ । ज२गृ२ह्यातायि । दक्षिणा२३म्३ ।  
 इं२द्र३ह४-स्त५म्५द्र४ह४ स्त५म्५ । द्र४ह४स्ता५म्५ ।  
 व२सूर५यवो । वसुपा२३ । तारुयि२व३ सू४ना५म्५ ।  
 व४सू५ना५म्५ । २ । वि२द५मा हि॒त्वा । गो॒पती२३म् । ३ ।  
 शू२र३गो४ना५म्५ । र४गो४ ना५म्५ । २ । अ२स्मभ्यञ्चायि ।  
 त्रा२३म्३वृष । ण२रुर३ यिन्दा५ः । र४यि४न्दा५ः । २ ।  
 आ४अ५हो५यि५ । २ । आ४अ५ हो५द५वा५ । अईहो२यि२ ।  
 २ । अऽ२३हो३वा२३४ । अ५हो५ वा५ । ई३२३४५ ॥ १० ॥

५. हा॒पउ॒प॒३ । ओ । हो॒होवा॒२ । ३ । ज॒र॒गृ॒र॒ह्या॒तायि॒२ । दक्षिणा॒२३  
 म्३ । इं॒रु॒द्र॒ह॒४स्त॒५म्५ । द्र॒ह॒४स्त॒५म्५ । द्र॒ह॒४स्ता॒५म्५ ।  
 व॒र॒सू॒र॒यवो । वसु॒पा॒२३ । ता॒रु॒यि॒रुव॒३सू॒४ना॒५म्५ । व॒४सू॒४  
 ना॒५म्५ । २ । वि॒२ द्मा॒हि॒त्वा । गो॒प॒ती॒२३म् । ३ । शू॒रु॒र॒३गो॒४  
 ना॒५म्५ । र॒४गो॒४ना॒५म्५ । २ । अ॒र॒स्मभ्य॒ञ्चायि॑ । त्रा॒२३म्३  
 वृषा । ण॒रु॒र॒३यि॒४ दा॒५ः । र॒४यि॒॑४ दा॒५ः । २ । हा॒पउ॒प॒३ । ओं ।  
 हो॒होवा॒२ । २ । ओ । हो । होऽ॒रु । वा॒३२३४ । अ॒५हो॒५वा॒५ ।  
 ई॒३२३४५ ॥ ११ ॥

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

३१८. इं॒द्रं न॒रो ने॒मधि॒ता ह॒वन्ते॒ यत्पा॒र्या यु॒नज॑ते॒ धिय॑स्ताः ।

शू॒रो नृ॒षा॒ता श्र॒वस॑श्च॒ काम॑ आ॒ गो॒म॒ति॒ ब्र॒जे भ॒जा त्वं॑ नः ॥

गौरीवितम्—

१. इं॒रु॒द्र॒र॒न्ना॒३२३४रो॒५ । ने॒र॒मा॒रु॒धा॒३२३४यि॒४ता॒५ । ह॒र॒वं॒ताऽ  
 २३यि॒३ । य॒र॒त्पा॒रु॒रा॒३२३४या॒५ः । यू॒र॒ना॒रु॒जा॒३२३४ता॒५  
 यि॒५ । धि॒र॒या॒स्ताऽ॒२३ः । शू॒र॒रो॒रु॒ना॒३२३४ऋ॒४षा॒५ । ता॒र॒श्रा॒रु  
 वा॒३२३४सा॒५ः । च॒र॒का॒माऽ॒२३यि॒३ । आ॒र॒गो॒रु॒मा॒३२३४  
 ती॒५ । ब्र॒र॒जा॒रु॒यि॒रु॒भा॒३२३४जा॒५ । त्व॒न्ना॒३उ॒३वा॒३ए॒२३ ।  
 उ॒पा॒३२३४५ ॥ १२ ॥

ऋषिः—गौरिवीतिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

३१९. व॒यः सु॒पर्णा॑ उ॒प से॒दुरि॒न्द्रं प्रि॒यमे॒धा ऋ॒षयो॑ ना॒धमा॒नाः ।

अ॒प ध्वा॒न्त॒मूर्णु॑हि॒ पू॒र्ब्धि॑ चक्षु॒र्मु॒ग्ध्या॑स्मा॒न्नि॒धये॒व ब॒द्धान् ॥

वैदन्वतम्—

१. व॒प॒यो॒प॒हा॒प॒हा॒प॒उ॒प॒ । सू॒प॒र्णा॒उ॒प॒से॒दुरा॒यि॒न्द्र॒र॒म् । प्रि॒र॒य॒मे॒धा॒ऽ  
ऋ॒ष॒यो॒ना॒र्ध॒मा॒ऽ॒र॒३॒ना॒रः । अ॒प॒ध्वा॒न्त॒मू॒र्णु॒हि॒पू॒र्धि॒र॒चा॒ऽ॒र॒३॒क्षू॒रः ।  
मु॒र॒मु॒र॒ग्धि॒ । अ॒३॒हो॒र॒३॒यि॒३ । आ॒४॒रु॒ऽ । स्मा॒र॒३॒न्नि॒धा । ये॒र॒३—  
४॒ऽ॒३ । वा॒र॒३ । बा॒४॒ऽ॒प॒ब्दा॒प॒६॒प॒६॒न्६ ॥ १३ ॥

ऋषिः—वेनो भार्गवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

३२०. ना॒के॒ सु॒प॒र्ण॒मु॒प॒ यत् प॒त॒न्तं हृ॒दा वे॒नन्तो॒ अभ्य॒चक्ष॒त त्वा ।

हि॒र॒ण्य॒पक्षं॑ व॒रु॒णस्य॑ दू॒तं य॒मस्य॑ यो॒नौ श॒कु॒र्नं भु॒रण्यु॒म् ॥

महायामम्—

१. आ॒४॒रु॒पा॒म् । अ॒३॒यी॒र॒य॒म् । अ॒३॒हो॒र॒३॒यि॒३ । आ॒४॒रु॒यि॒र ।  
ऊ॒४॒रु । ना॒के॒सु॒पा॒र्ण॒ मु॒प॒या॒त्प॒३॒तं॒र॒ता॒म्प॒३॒तं॒र॒त॒म् । अ॒३॒हो॒र॒३  
यि॒३ । आ॒४॒रु॒यि॒र । ऊ॒२ । आ॒४॒रु॒या॒म् । अ॒३॒या॒२॒य॒म् । अ॒३॒  
हो॒र॒३॒यि॒३ । आ॒४॒रु॒यि॒र । ऊ॒४॒रु । हृ॒दा॒वे॒ना॒न्तो॒ अभ्य॒चाक्ष॒॑त॒र  
त्वा । क्ष॒३ त॒र॒त्वौ॒३ । हो॒र॒३॒यि॒३ । आ॒४॒रु॒यि॒र । ऊ॒४॒रु ।  
आ॒४॒रु॒या॒म् । अ॒३॒या॒२॒य॒म् । अ॒३॒हो॒र॒३॒यि॒३ । आ॒४॒रु॒यि॒र ।  
ऊ॒४॒रु । हि॒र॒ण्य॒पाक्ष॑व॒रु॒णा॒स्य॒३ दू॒र॒ता॒म् । स्य॒३दू॒र॒त॒म् ।  
अ॒३॒हो॒र॒३॒यि॒३ । आ॒४॒रु॒यि॒र । ऊ॒४॒रु । आ॒४॒रु॒या॒म् । अ॒३॒या॒२॒य॒म् ।  
अ॒३॒हो॒र॒३॒यि॒३ । आ॒४॒रु॒यि॒र । ऊ॒४॒रु । य॒मस्य॑यो॒नौ  
श॒कु॒र्नांभु॒॑३॒रण्यु॒म् । भु॒३॒रण्यु॒म् । अ॒३॒हो॒र॒३॒यि॒३ । आ॒४॒रु॒यि॒र ।  
ऊ॒४॒रु । आ॒४॒रु॒या॒म् । अ॒३॒या॒२॒य॒म् अ॒३॒हो॒र॒३॒यि॒३ । आ॒४॒रु॒यि॒र ।  
ऊ॒२ । वा॒२॒हा॒र॒३ऽउ॒वा॒ऽ॒३ । ए॒२॒३ । दि॒व॒म् । २ । ए॒२॒३ ।  
दि॒वा॒ऽ॒३॒४॒५॒म् ॥ १४ ॥

ऋषिः—बृहस्पतिर्नकुलो वा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

३२१. ब्रह्मा जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः ।

स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥

त्रितसामनी द्वे—

१. ब्रह्मा । ब्राऽ२३ह्मा२ । ज२ज्ञा२नं२प्र२थ२मं२पुरास्ता२त्२ ।  
वि॒सा॒यि॒ । वाऽ२३यि३सी२ । म२त२स्सु२रु२चो२वे२न  
आ॒वः॒ । स॒बू । सा२३बू२ । धि॒न॒या॒उ॒प॒मा॒अ॒स्य  
वा॒यि॒ष्ठाः॒ । स॒ताः॒ । साऽ२३ ता२ः । च॒यो॒नि॒म॒स॒त॒  
श्च॒वा॒यि॒वा॒३४ऽ३ः । ओऽ२३४५यि५ डा५ ॥ १५ ॥

२. हु॒वे॒ह्य॒३यि३ । २ । हि॒षा॒ह्य॒ । ब्र॒ह्मा॒ज॒ज्ञा । ना॒३म्३प्र॒थ ।  
मं॒रु॒पु॒३४स्ता५त्५ । वि॒सी॒म॒ताः । सु॒रु॒चः । वे॒नु॒३आ४  
वा५ः । स॒बु॒ध्न्याः । उ॒प॒माः । अ॒स्य॒३वि४ष्ठा५ः । स॒  
त॒श्च॒यो । नी॒३म॒स । त॒श्च॒३वि४वा५ः । हु॒वे॒ह्य॒३यि३ ।  
२ । हि । षाऽ२ुः । आ॒३२३४ । अ॒५हो५वा५ । ए॒३ । ऋ॒त॒म  
मृ॒त॒३म् । २ । ए॒३ । ऋ॒त॒म॒मृ॒ता॒३२३४५म् ॥ १६ ॥

ऋषिः—सुहोत्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

३२२. अपूर्व्या पुरुतमान्यस्मै महे वीराय तवसे तुराय ।

विरिणिने वज्रिणे शन्तमानि वचांस्यस्मै स्थविराय तक्षुः ॥

वारवन्तीयम्—

१. अ॒५पू॒५व्या॒५अ॒५हो४हो४हा५यि५ । पु॒३रु॒३त॒३ । मा॒नु॒३य४-  
स्मै५ । म॒हे॒वी॒रा । या॒३त॒व । सा॒नु॒यि॒रु॒३रा४या५ । वि॒र  
रि॒णि॒३ । ना॒नु॒यि॒रु॒३जि॒३णे५ । शा॒३४ऽ३न्त॒३मा॒३नी५ ।

वरचांसिया । स्मार३यि३ स्थवि । रा२य३त४क्षू५ः । स्थ३वि४  
 रा५य५त५क्षू५ः । स्थ२वि२ । रा२३४५३ । या२३ता४५५  
 क्षू५६५६ । स्थविरा२य२त२क्षू३२३ ४५ः ॥ १७ ॥

[ इति ] दशतिः ॥

ऋषिः—द्युतानः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

३२३. <sup>१ २ ३</sup>अव <sup>१ २ ३ १ २</sup>द्रप्सो अंशुमतीमतिष्ठदीयानः <sup>३ २ ३</sup>कृष्णो <sup>२ ३ १ २</sup>दशभिः <sup>३ १ २</sup>सहस्रैः ।  
<sup>२ ३ २३</sup>आवत्तमिन्द्रः <sup>३ २ ३ १ २ ३ २ ३</sup>शच्या धमन्तमप <sup>१ २ ३ १ २</sup>स्त्रीहितं <sup>३ २</sup>नृमणा अधद्राः ॥

क्षुरपविणी द्वे—

१. अ२व२द्रा३२३४प्सा५ः आ२शू२मा३२३४ती२म् ५ ।  
 आती२३ । ष्ठा३२३४५ त् ५ । ई२यारुना३२३४ष्कृ५ । णो२  
 दा२शा३२३४भी५ः । साहा२३ । स्वा३२३४५यि५ः । आ२व२  
 ता३२३४मी५द्र२शा२ची३२३४या५ । धामा२३ । ता३२३४  
 म् ५ । आ२प२स्नी३२३४ही५ । ति२न्न२मा३२३४णा५ः । अधा२  
 द्रा३२३४अ५हो५वा५ । अ२धा२३द्रा२३४५ः ॥ १८ ॥
२. अ५व५द्र५प्सा५६ए५ । आ२शूर२म३ती३म३ति२ष्टा२३त् ३ ।  
 ई३यारुन३ष्कृ४णा५ः । दा२श२भि३स्स३ह२स्त्रा२३यि३ः ।  
 आ३व२त्त३मिं४द्रा५ः । शाचि२या३ध३मं२ता२३म् ३ । अ३  
 पा२स्नी३हि४ ती५म् ५ । नृमणा२३ः । अ४धा४५५द्रा५ः ।  
 हो४५५यि५ । डा५ ॥ १९ ॥
३. अ३व४द्र४प्सो३अ४२शु५म४ती५म् ५ । अ४ो२३यि४ ।  
 औ३हो४वा५ । आती२३ष्टा२त् २ । औ३हो२३यि४ । अ३हो४  
 वा५ई३यारु न३ः कृष्णा५ः । अ३हो२३यि४ । अ३हो४वा५ ।  
 दा२श । भा२रुयि२स्स३ ह४स्त्रै५ः । अ३हो२३यि४ । अ३हो४

वा५ः । आ३वरुत्त३मिं४ द्रा५ः । अ३हो२३४यि४ । अ३हो४  
वा५ । शाचि । यारुध३मं४ता५ म्५ । अ३हो२३४ यि४ ।  
अ३हो४वा५ । अ३पारुस्नी३हि४ती५म्५ । अ३हो२३४यि४ ।  
अ३हो४वा५ । नृमाऽरुणा३२३४अ५हो५वा५ । अ२धार३-  
द्राऽ२३४५ः ॥ २० ॥

४. अ३व४द्र४प्सो३अ४ः४शु५म४ती५म्५ । ए२३ । अ२३हो४ऽ५  
वा५६ । आताऽ२३४५यि५ष्ठा५६५६त्६ । ई२या२नष्कृ२  
ष्णोद२शभिरस्स२ हस्त्रै२ः । आवत्तम् । आयिंद्रा२३शचि ।  
यारुध३मं४ता५म्५ । अ४प५स्नी४हि५ति५ नृ५म४णा५ः ।  
ओ४वा५ । अ२ध२द्रा२३आऽ२३४५ ॥ २१ ॥

ऋषिः—द्युतानः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

३२४. वृत्रस्य त्वा श्वसथादीषमाणा विश्वे देवा अजहुर्ये सखायः ।

मरुद्भिरिन्द्र सख्यं ते अस्त्वथेमा विश्वाः पृतना जयासि ॥

द्यौते द्वे—

१. हार३ । ओ२३हार३ । ओ३हार३ । हारयि२ । वृत्रस्यत्वा ।  
श्व२सथात् । ई२षमा४णा५ः । वि२श्वेदे॒वाः । अजहूर३ः ।  
ये२स३खा४या५ः । म२ रुद्भिरा॒यि । द्रा२३सखि । यं२ते३  
अ४स्तू५अ२थेमा॒वा॒यि । श्वा२३ष्पृ॒त । ना२ज३या४सी५ ।  
हार३ । ओ३हार३ । ओ३हार३ । हार३४ । अ५हो५वा५ ।  
आअ२३हो३२३४५ता ॥ २२ ॥

२. होये२३ । हरयाये२३ । ह३यारु । अ३हो३२३४वा५ । हारयि२ ।  
वृत्रस्यत्वा । श्व२सथात्५ । ई२ष३मा४णा५ः । वि२श्वेदे॒वाः ।  
अजहूर३ः । ये२स३खा४या५ः । म२रुद्भिरा॒यिं । द्रा२३सखि ।



यंरुते३अ४स्तूप । अ२थेमा॒वायि । श्वा२३ष्पृत । ना२ज३  
या४सी५ । होये२३ । ह२याये२३ । ह३या२ । अ३हो३२३४ ।  
वा५ । हा२३४ । अ५हो५वा५ । आअरु३हो२ । आअ२३ हो३२  
३४५ ॥ २३ ॥

ऋषिः—बृहदुक्थः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

३२५. वि३धुं१ द३द्रा१णं२ सम३ने१ ब३हूनां१ यु३वानं१ स३न्तं१ प३लि३तो१ ज३गार१ ।  
दे३वस्य१ प३श्य१ का३व्यं१ म३हित्वा३द्या१ म३मार१ स३ ह्यः१ स३मान१ ॥

सोमसामनी द्वे—

१. वी४धू५म् । द३द्रा३द्रा । णा२३३सम । ना२यि३रु३ब३हू५ना५  
म् । यू४वा५ । नः३सा३नः३सा । ता२३म्पलि । तो२ज३गा४रा५ ।  
दे४वा५ । स्यपा३श्या२३ क्रा॒वि । य३रु३म्म३हि४त्वा५ । आ४द्या५ ।  
म३मा३र्मा । रा२३सहि । या२३४ऽ३ । सा२३मा४ऽ५ना५६  
५६ ॥ २४ ॥

२. हः३३४ । आ३४ऽ५ । ह५ः५ । ह३ः३२३४५ । वि३रु३धुं३द्रा ।  
णा२३३सम । ना२यि३रु३ब३हू५ना५म् । यु३रवा३नः३सा ।  
ता२३म्पलि । तो२ज३गा४रा५ । दे३वस्यपा । श्या२३क्रा॒वि ।  
य३रु३म्म३हि४त्वा५ । हः३३४ । आ३४ऽ५ । ह५हः३२३४५ ।  
अ३द्या३मा । रा२३सहि । या२३४ऽ३ । सा२३मा४ऽ५ना५  
५६५६ ॥ २५ ॥

ऋषिः—द्युतानः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

३२६. त्वं१ ह३त्यत्१ स३प्त३भ्यो१ जा३यमा३नोऽ१ श३त्रु३भ्यो१ अ३भवः१ श३त्रु३रिन्द्र१ ।  
गू३ढे१ द्या३वा३पृ३थि३वी१ अ३न्ववि३न्दो१ वि३भु३म३द्भ्यो१ भु३वने३भ्यो१ र३णं१ धाः१ ॥

इं [ द्र ] वज्रे द्वे—

२. अ॒प॒हो॒प॒यि॒प॒तु॒प॒वा॒प॒म्॒ह॒र॒त्य॒त्स॒र॒स॒भ्यो॒र॒जा॒य॒मा॒र॒ना॒३२३४ः ।  
अ॒प॒हो॒प॒अ॒प॒शा॒४ । त्रु॒भ्यो॒र॒अ॒भ॒र॒व॒र॒श॒श॒त्रु॒रि॒र॒द्रा॒३२३४ ।  
अ॒प॒हो॒प॒यि॒प॒गू॒ढे॒४ । द्या॒वा॒पृ॒थि॒र॒वी॒अ॒न्व॒वि॒र॒दा॒३२३४ः ।  
अ॒प॒हो॒प॒यि॒प॒वि॒प॒भू॒४ । म॒द्भ्यो॒र॒भु॒व॒ने॒र॒भ्यो॒र॒र॒णं॒धा॒३२३४  
४५ः ॥ २६ ॥

३. त्वो॒ऽहा॒४यि॒४ । ह॒३त्यौ॒र॒वा॒रु॒ ओं॒३२३४वा॒प॒ । स॒र॒स॒भ्यो॒र॒जा॒य॒मा॒र॒ ।  
नो॒वा॒र॒३ । ओं॒वा॒र॒३४५ । अ॒प॒शो॒ऽहा॒४यि॒४ । त्रु॒३भ्यौ॒र॒वा॒रु॒ओं॒३२३४वा॒प॒ ।  
अ॒भ॒र॒व॒र॒श॒श॒त्रु॒रि॒र॒द्रो॒वा॒र॒३ । ओं॒वा॒र॒३४५ । गू॒प॒<sup>१</sup>ढे॒ऽहा॒४यि॒र॒वा॒रु॒<sup>१</sup> । ओ॒३२३४ [ द्या ] वा॒प॒ ।  
पृ॒थि॒र॒वी॒अ॒न्व॒वि॒र॒ । दो॒वा॒र॒३ । ओं॒वा॒र॒३४५ । वि॒प॒भो॒ऽहा॒४यि॒४ ।  
म॒३द्भ्यौ॒र॒वा॒रु॒ओ॒३२३४वा॒प॒ । भु॒व॒ने॒र॒ । भ्यो॒वा॒र॒३ । ओ॒वा॒र॒३४५ ।  
र॒ऽणा॒४ऽप॒न्धा॒प॒ः । हो॒ऽप॒यि॒प॒डा॒प॒ ॥ २७ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

३२७. मे॒डिं॑ न त्वा वज्रि॒णं॑ भृ॒ष्टि॒म॒न्तं॑ पु॒रु॒ध॒स्मा॒नं॑ वृष॒भं॑ स्थि॒र॒प्स्त्रु॒म् ।  
क॒रो॒ष्य॒र्य॒स्तरु॒षी॒र्दु॒व॒स्यु॒रि॒न्द्र॒ द्यु॒क्षं॑ वृ॒त्र॒ह॒णं॑ गृ॒णी॒षे ॥

ऋषिप्रमाणपदगणित अर्द्धवेयः सूर्यवर्चसस्सामनी द्वे—

१. मे॒ऽडी॒प॒म्प॒ । न॒त्वा॒वज्रि॒नं॑ भृ॒ष्टि॒र॒मा॒ऽर॒३न्ता॒र॒म् । पु॒रु॒रं॒र॒ध॒स्मा॒नं॑ वृष॒भः॑ स्थि॒र॒रा॒ऽर॒३प्सू॒र॒म् । क॒रो॒ष्य॒र्य॒स्तरु॒षा॒यि॒दु॒वा॒ऽर॒३ स्यू॒रः॑ । आ॒यि॒न्द्र॒द्यु॒रक्ष॒म् । वृ॒त्रा॒ऽर॒३ । हा॒ऽरु॒ण॒३२३४अ॒प॒हो॒प॒ वा॒प॒ । गृ॒र॒णी॒र॒३षे॒ऽर॒३४५ ॥ २८ ॥

१. अत्र नष्टलेखत्वात्त्रुटिपूर्त्यर्थं केनचिदेवं पाठो लिखितः 'हो॒ऽहा॒४यि॒४ । म॒द्भ्यो॒र॒' । —सम्पादकः

२. मे४डि५न्न५त्वा४ । वार३४अ४हो५ । ज्रायि । ण२म्भारष्टा-  
यिमौ२ । वार३५२३४ । ता५म्५ । पु३रु२३४अ४हो५ । ध२  
स्मानंवृ । ष२भःस्थायिरौ२ । वार३५२३४ । प्नू५म्५ । क३  
रा२३४अ४हो५ । षि२ अर्यस्तरुषायिर्हूवौ२ । वार३५२३४ ।  
स्यू५ः । इ३द्रा२३४अ४हो५ । द्यु२क्षम्वृत्रा५२३ । हा५रुणा३२  
३४अ५हो५वा५ । गृ२णी२षे३२३४५ ॥ २९ ॥

ऋषिः — वसिष्ठः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — त्रिपदाविराडनुष्टुप् ॥ स्वरः — गान्धारः ॥

३२८. प्र<sup>१</sup> वो<sup>२</sup> महे<sup>३१</sup> महेवृ<sup>२३</sup>धे<sup>१२</sup> भरध्वं<sup>३</sup> प्रचेतसे<sup>१२</sup> प्र<sup>३</sup> सुमतिं<sup>१</sup> कृणुध्वम्<sup>२</sup> ।  
विशः<sup>१२</sup> पूर्वीः<sup>३</sup> प्र<sup>१</sup> चर<sup>२२</sup> चर्षणिप्राः<sup>३२</sup> ॥ ६ ॥

अहूशौ द्वौ—

१. प्र५वा४ः । माहेम२हे२वृ२धे<sup>१</sup>२ । भराधूर३वारमृ२ । प्र२चायि-  
तरसायि । प्रासूरुमा३२३४ती५म्५ । कृणुध्वम् । ईहा५रुवा३२-  
३४यि४ शा५ः । पू५२३र्वी२ः । प्रचा । रा५२३चार । ष२णायि ।  
प्रा । अ२३हो४वा५ । हो४५५यि५डा५ ॥ ३० ॥
२. हः३२३४५ । प्र२वोरम२हारुयिरुमा३२३४हे५ । वृ३धार३४५  
३यि३ । भ२रा३२३४ध्वा५म्५ । हः३२३४५ । प्र२चे२तरसारु-  
यिरुप्रा ३२३४सू५ । म३तार३४५३यि३मृ३ । कृ२णू३२३४-  
ध्वा५म्५ । हः३२३४५ । वि२श२ष्यूरर्वी२यिरुः । प्रा३२३४  
चा५ । र३चार३४५३ । ष२णा३२३४यि४प्रा५ः । हः३२३४५ ।  
हा५उ५ हौ५हो४वा५६ । हा५उ५वा५ । ई३२३४५ ॥ ३१ ॥

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

३२९. शुनं हुवेम मधवानमिन्द्रमस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।  
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि सज्जितं धनानि ॥

भारद्वाजम्—

१. शुपन४ः४हु५वे५म५म५घ४वा५न५मि४द्रा४म्४ । अ२स्मिन्भरे  
नृतमम्वाज२सा५२३ता२उ२ । शृ२ण्वन्तमुग्रमूतये२स२मा५२३  
त्सू२ । घ्न१ । न्तम्वा५२३त्रा२३ । होवा२३हा२ । णि२सं२जित२  
मू२ । धना५२३नी२३ । होवा२३हा२३४५३यि३ । ओ५२३४५  
यि५ । डा५ ॥ ३२ ॥

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

३३०. उदु ब्रह्माण्यैरत श्रवस्येन्द्रं समर्थं महया वसिष्ठ ।  
आ यो विश्वानि श्रवसा ततानोपश्रोता म ईवतो वचांसि ॥

वैश्वदेवं मौरसश्च—

१. दिवया२ । ओवा२ । अ३हो२३वा२ । उ२दुब्रह्मा । णी२३ऐर ।  
त२श्र३ व४स्या५ । इं२द्रः२समा । र्ये२३मह । या२व३सि४ष्टा५ ।  
आ२ योविश्वा । नी२३श्रव । सा२त३ता४ना५ । दिवया२ ।  
ओवा२ । अ३हो२३वा२ । उ२प । श्रो॒ता । म२ईव । तो२३४५३ ।  
वा२३चा४५५५सा५६५६यि६ ॥ ३३ ॥

ऋषिः—गौरिवीतिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

३३१. चक्रं यदस्याप्स्वा निषत्तमुतो तदस्मै मध्विच्चच्छद्यात् ।  
पृथिव्यामतिषितं यदूधः पयो गोष्वदधा ओषधीषु ॥

## पुरीषम्—

१. च५कं ४य४द५स्या५प्सु४वा४नि४ष५त्ता४म्४ ।  
उ२तो॒तदस्मै॒मध्वि॒च्च२छ्छा५२३द्या२त्२ । पृ२थि२रव्या॒म-  
१नि॒षितं॒य२ दू५२३धा२ः । पयो॒गो५२३षू२ । आ॒दधा२ओ॒षधी२  
षु२ । इ॒डा५२३भा२३४५३ । ओ५२३४५ यि॒पडा५ ॥ ३४ ॥

[ इति ] अष्टमप्रपाठकः ॥

ऋषिः—अरिष्टनेमिस्ताक्षर्यः ॥ देवता—ताक्षर्यः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

३३२. <sup>२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २</sup> ३३२. त्यमू षु वाजिनं देवजूतं सहोवानं तरुतारं रथानाम् ।  
<sup>१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २</sup> अरिष्टनेमिं पृतनाजमाशुं स्वस्तये ताक्षर्यमिहा हुवेम ॥

ताक्षर्यसामनी द्वे—

१. त्य५मू५षु५ । वा॒रजि२ । ना२३४५म्५ । दे२व२जू२ता३२३४  
मू४ । स५हो५वा॒३नं२ता५ । रु२ता२३ । रं२रु३था४ना५म्५ ।  
अ२रि२ष्ट२नां ३२३४यि४मी५म्५ । पृ२त२ना॒२३४५३ज२मा॒३  
शु५म्५ । स्वरस्त । यायि । ता॒क्षर्य२मि३हा२३४५३ । हू२३  
वा४५यि५मा५६५६ ॥ १ ॥
२. ई॒रय२ई॒रया२३हा२यि२ । त्य२मू२षु२वा॒रजि२ना२३न्दे४५३  
व२ जू३त५म्५ । ई३५४य५इ४या५ । हा३२३४यि४ । स५हो५  
वा॒३नं२ ता५ । रु२ता२३ । रं२रु३था४ना५म् । ई॒रय२ई॒रया२३  
हा२यि२ । अ२रि२ष्टा२३ । नायि । मी२३म्पू२त । ना२ज३मा४शू५  
म्५ । ई३५४य५ ई४या५ । हा३२३४५यि५ । स्वरस्त । यायि ।  
ता॒क्षर्य२मि३हा२३४५३हू२३वा४५यि५मा५६५६ ॥ २ ॥

ऋषिः—भरद्वाजः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

३३३. <sup>३ २३ १ २ ३ २३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २३ १ २</sup>त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवेहवे सुहवं शूरमिन्द्रम् ।  
<sup>३ २३ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २</sup>हुवे नु शक्रं पुरुहूतमिन्द्रमिदं हविर्मघवा वेत्विन्द्रः ॥

आत्रम्—

१. त्रा२तारमिन्द्रमविता । र२मीऽ२ इन्द्रा२मृ२ । हवे२रहवे२ । सुहवः२शू ।  
 रमीऽ२ इन्द्रा२मृ२ । हु२रवायिनुशक्रं पुरुहूतमीऽ२ इन्द्रा२ मृ२ ।  
 इ२रदः२ह२ । वायिः । म२रघवा । वा२३४ऽ३यि३ । तूर३ वा४ऽ५ ।  
 यि५द्रा५६५६ः ॥ ३ ॥

ऋषिः—वसुक्रो विमदो वा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

३३४. <sup>१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २</sup>यजामह इन्द्रं वज्रदक्षिणं हरीणां रथ्यां३ विव्रतानाम् ।  
<sup>१ २ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ १ २ २</sup>प्र श्मश्रुभिर्दोधुवदूर्ध्वधा भुवद्वि सेनाभिर्भयमानो वि राधसा ॥

१. य५जा५म५हो४वा५ । आ५यि५द्रं५व५र५ज्र५ । द५क्षाऽ२३यि३णार्२मृ२ ।  
 ह५री५णा२२२रथ्य५म्वि । व५त्राऽ२३ना२मृ२ । प्र५श्म५श्रु५भि५र५दो५धु५  
 व५र५त् । ऊ । ध्वा५धा५रु५भू३२३४वा५त् । वि५सा५यि । ना । भि५र  
 भ५र५य५मा५नाऽ२३ः । वाऽ२३यि३रा४ऽ३ । धा२३४५सो५६हा५  
 यि५ ॥ ४ ॥

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

३३५. <sup>३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २</sup>सत्राहणं दाधृषिं तुम्रमिन्द्रं महामपारं वृषभं सुवज्रम् ।  
<sup>२ ३ २ ३ १ २ २ ३ २ ३ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २</sup>हन्ता यो वृत्रं सनितो त वाजं दाता मघानि मघवा सुराधाः ॥

१. स५त्रा५ । ह३णा२३४अ३हो४वा५ । दा५धृ५र५षि५र५तू । प्रा५मि५न्द्रा५रु  
 ओ३२३४मृ५ । म२हा५मपा५रं५वृष५भः५सु५र५व५ज्राऽ२३मृ३ । हंता  
 ऽरु५यो३२३४वृ५ । त्राः५स५नि५तो२३४ऽ३ । ता२३वा४ऽ५ जा५६  
 ५६मृ६ । दा५ता५र५म५घा५नि५म५र५घवा५रं५सु५रा५धा३२३ ४५ः ॥ ५ ॥

२. स४त्रा४ह३णं४दा३धृ४षि५म्५ । तूर३४ऽ३म२म्र२मिं३द्र५  
म्५ । म२हामपा२रं३वृष२भः३सुवज्राऽ२३म्३ । हं२ता२यो३२३४  
वृ५ । त्राः३सनि । तो२३४ऽ३ता२३वा४ऽ५जा५६५६म्६ । दा॒ता॒२  
म२घा॒निम२घर्वा॒२सुर॒ग॒धा३२३४५ः ॥ ६ ॥

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

३३६. यो॑ नो॒ वनु॑ष्यन्नभि॒दाति॑ म॒र्त्त उ॒गणा॑ वा म॒न्यमा॑नस्तु॒रो वा॑ ।  
क्षि॒धी यु॒धा श॒वसा॑ वा तमिन्द्रा॒भी ष्या॑म वृषम॒णस्त्वो॒ताः ॥

आत्रम्—

१. यो॑३नो॒४व॒४नु॒४ष्य॒३न्न॒४भि॒५दा॒५ । ति॑३मा॒३ऽ२३४त्ता॒५ः ।  
उ॒ग-णा॒वा म॒न्यमा॑नस्तु॒रोऽ२३वा॒२ । क्षि॒२धी॒यु॒धाश॒वसा॒वा  
त॒२माऽ२३यिं३ द्रा॒२ । अ॒भायि॑ष्या॒३मा॒२ । वृषा॑मा॒३  
णा॒३ः । त्वो॑ऽ२३ता॒३४ऽ३ः । ओ॑ऽ२३४५यि॒५ । डा॒५ ॥ ७ ॥

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

३३७. यं॑ वृ॒त्रेषु॑ क्षि॒तयः॑ स्प॒र्धमा॑ना यं॑ यु॒क्तेषु॑ तु॒रय॑न्तो ह॒वन्ते॑ ।  
यं॑ शू॒रसा॑तौ यमपा॒मुप॑ज्मन् यं॑ वि॒प्रासो॑ वाज॒यन्ते॑ स इन्द्रः ॥

गार्त्समदौ द्वौ—

१. हा॒५उ॒५यं॑५वृ॒५त्रे॒५षू॒५ । क्षि॒२त॒२या॒३ः । स्प॒२र्द्ध॑३मा॒४नाः॒५ ।  
धमा॒ना॒३ः । ई॑ऽ२३४य॒४इ॒४या॒४ । हा॒५उ॒५यं॑५यु॒५क्ते॒५षू॒५ ।  
तु॒२र॒२या॒३ः । तो॒२ह॒३व॒४ता॒५यि॒५ । ह॒वंता॒३यि॒३ । ई॑ऽ२३४  
य॒४इ॒४या॒४ । हा॒५उ॒५य॒५ः॒५शू॒५र॒५सा॒५ । ता॒४ऽ३उ॒३य॒२म॒३ ।  
पा॒२मु॒३ प॒४ः॒ज्मा॒५न् । १उ॒प॒ज्मा॒२३न्॒३ । ई॑ऽ२३४य॒४इ॒४या॒४ ।

हा॒पउ॒पयँ॑पवि॒पप्रा॒पसा॒पः । वा॒४५३ज॒२य॒३ । ता॒रु॒यि॒रुस॒३इं॒४  
द्रा॒पः । सइं॒द्रा॒२३ः । ई॒५२३४य॒४ । ई॒५या॒५६ । हा॒पउ॒पवा॒प ।  
ई॒३२३४५ ॥ ८ ॥

२. यं॒पयं॒पया॒५ । हा॒पउ॒पयं॒पवृ॒पत्रे॒५षू॒५ । क्षि॒२त॒२या॒२३ः । स्प॒२  
र्द्ध॒३मा॒४ना॒५ः । ध॒मा॒ना॒२ः । यं॒२य॒याँ॒॑२या॒५म् । यं॒पयं॒पया॒५ ।  
हा॒पउ॒पयं॒पयु॒पक्ते॒५षू॒५ । तु॒२२॒२या॒२३ । तो॒रु॒ह॒३वं॒४ता॒५यि॒५ ।  
ह॒वं॒ते॒२ । यं॒२य॒याँ॒॑२या॒५म् । यं॒प यं॒पया॒५ । हा॒पउ॒पय॒५५  
शू॒५र॒५सा॒५ । ता॒४५३उ॒३य॒२म॒३ । पा॒रु॒मु॒३प॒४ज्माँ॒॑५न् । ५ ।  
१उ॒पज्म॒२न् । यं॒२य॒याँ॒॑२या॒५म् । यं॒पयं॒पया॒५ । हा॒पउ॒पयं॒पवि॒प  
प्रा॒पसा॒५ः । वा॒४५३ज॒२य॒३ । ता॒रु॒यि॒रुस॒३इं॒४द्रा॒पः । सइं॒न्द्र॒२ः ।  
यं॒यं॒याँ॒॑२या॒५म् । यं॒पयं॒पया॒५६ । हा॒पउ॒पवा॒प । ई॒३२३४५ ॥ ९ ॥

ऋषिः — विश्वामित्रः ॥ देवता — इन्द्रापर्वतौ ॥ छन्दः — त्रिष्टुप् ॥ स्वरः — धैवतः ॥

३३८. <sup>१ २</sup>इन्द्रापर्वता <sup>३ १ २२</sup>बृहता <sup>३ २३ ३</sup>रथेन <sup>१ २</sup>वामीरिष <sup>३ १ २</sup>आ वहतं <sup>३ १ २</sup>सुवीराः ।

<sup>३ २ ३</sup>वीतं <sup>१ २ ३ १ २</sup>हव्यान्त्यध्वरेषु <sup>३ १ २</sup>देवा <sup>३ १ २२ ३ १ २</sup>वर्धेथां गीर्भिरिडया मदन्ता ॥

वैश्वामित्रम्—

१. इं॒४द्रा॒४हा॒पउ॒प । हा॒२हो॒यि । प॒र्व॒ता॒बृ॒ह॒ता॒र॒था॒५रु॒यि॒रुना॒३उ॒३  
वा॒२३ । ऊ॒२३४पा॒५ । वा॒४मी॒४रि॒४हा॒पउ॒प । हा॒२हो॒यि । इ॒षआ  
व॒ह॒तः॑ सु॒वा॒५रु॒यि॒रुना॒३उ॒३वा॒२३ । ऊ॒२३४पा॒५ । वी॒४त॒४ः॒॑४  
हा॒पउ॒प । हा॒२हो॒यि । ह॒व्या॒न्त्य॒ध्व॒रेषु॒दा॒५रु॒यि॒रुवा॒३उ॒३वा॒२३ ।  
ऊ॒२३४पा॒५ । व॒४र्द्धा॒४हा॒पउ॒प । हा॒२हो । था॒ङ्गी॒र्भिरि॒डया॒म-  
दा॒५रु॒न्ता॒३उ॒३वा॒२३ । ऊ॒२३२३४पा॒५ ॥ १० ॥



ऋषिः—रेणुः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥

स्वरः—धैवतः ॥

३३९. इन्द्राय गिरो अनिशितसर्गा अपः प्रैरयत् सगरस्य बुध्नात् ।

यो अक्षेणेव चक्रियौ शचीभिर्विष्वक्तस्तम्भ पृथिवीमुत द्याम् ॥

सावित्रम्—

१. हा२३ । हा२यि२ । इं२द्रायगायि । रा२३अनि । शी२त३स४  
गा५ः । अ२सा२उ२ । २ । इं२द्रायगायि । रा२३अनि । शी२त३  
स४गा५ः । कु२वा२ । २ । इं२द्रायगायि । रा२३अनि । शी२त३  
स४गा५ः । अ२या२म् २ । २ । अ२प॒ष्प्रे॒रा । या२३त्सग । र२स्य३  
बु४ध्ना५त् ५ । अ॒विदा२३त् ३ । अ॒विद२त् २ । यो॒२अक्षे॒णायि ।  
वा२३चक्रि । यौ॒रुशे३ची४भी५ः । इ॒२हा॒ऽ२३ । ई॒२३४हा५ ।  
वि॒र॒ष्वक्त॒स्ता । भा॒२३पृथि । वी॒२३४ऽ३म् ३ । उ॒२३ता४ऽ५  
द्या५६५६म् ६ ॥ ११ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥

स्वरः—धैवतः ॥

३४०. आ त्वा सखायः सख्या ववृत्युस्तिरः पुरू चिदर्णावां जगम्याः ।

पितुर्नपातमा दधीत वेधा अस्मिन् क्षये प्रतरां दीद्यानः ॥

वैरूपम्—

१. आ॒४त्वा॒५स४खा॒५य५स५ख्या॒४व५वृ५त्यू४ः । ति॒२र॒ष्पुरूचि  
दर्णा॒वाञ्जगा॒ऽ२म्यौ॒२ । हो॒२हो॒२३वा॒२ । पि॒२तुर्न॒पातमा॒दधी॒त  
वा॒ऽ२यि॒२धौ॒२ । हो॒२हो॒२३वा॒२ । अ॒२स्मिंक्षये॒प्रतरा॒न्दीदिया॒ऽ२  
नौ॒२ । हो॒२ हो॒२३वा॒२ । अ॒२हो॒४२ । इहा॒३२३४५ ॥ १२ ॥

ऋषिः—गोतमः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

३४१. को<sup>२</sup> अद्य<sup>३ १ २</sup> युङ्क्ते<sup>३ २ ३</sup> धुरि<sup>३ २ ३</sup> गा<sup>३ १ २</sup> ऋतस्य<sup>३ १ २</sup> शिमीवतो<sup>३ १ २</sup> भामिनो<sup>३ २</sup> दुर्हणा<sup>३ २</sup>यून् ।  
आसन्नेषामप्सुवाहो<sup>३ १ २</sup> मयोभून्य<sup>३ १ २</sup> एषां<sup>३ १</sup> भृत्यामृणधत्स<sup>२ २ ३ २ ३ १ २</sup> जीवात् ॥

आमाहीयावम्—

१. को५अ५द्य५यु५ङ्क्ते५धु५रि५गा५ऋ५त५स्या५द५ए५ ।  
शिमीवतो भामिनोदुर्हणाऽ२३यू२न२ । आ२सन्नेषामप्सुवा  
होम२योऽ२३ भू२न२ । यएषांभृत्यामृणधत्सजायिवा३उ३  
वा२३ । ऊ२३४ पा५ ॥ १३ ॥

ऋषिः—मधुच्छन्दाः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

३४२. गायन्ति<sup>१ २</sup> त्वा<sup>३ १</sup> गायत्रिणोऽ<sup>२ २ ३ १ २</sup> र्चन्त्यकर्मर्किणः<sup>३ १ २</sup> । ब्रह्माणस्त्वा<sup>३</sup> शतक्रतु<sup>३</sup>  
उद्वंशमिव<sup>२ ३ १ २</sup> येमिरे ॥

शैखण्डिने द्वे—

१. गा३या२३ऽ । ति३त्वा२३ऽ२३४ । गा४य५ । त्रा२३यि३णा२ुः ।  
अ३र्च्वा२३ऽ । ति३या२३ऽ२३४ । क४म५ । का२३यि३णा२ुः ।  
ब्र३ह्मा२३ऽ । ण३स्त्वा२३ऽ२३४ । श४त५ । क्रा२३ता२ुउ२ु ।  
उ३द्वा२३ऽ । श३मा२३ऽ२३यि३ । व४या४ऽ५यि५मि५रा५  
यि५ । हो४ऽ५ यि५ । डा५ ॥ १४ ॥

२. गा५यं५ति५त्वो४हा५यि५ । गा३या२ुत्री३२३४णा५ः ।  
अ३र्च्चत्य३र्कमा२ऽर्की२३णा२ः । अ३र्च्च३ति२यो३२३४हा५ ।  
क३मा२ुर्की३२३४ णा५ः । ब्र२ह्माणस्त्वाशता२ऽक्रा२३  
तो२ । ब्र२ह्मा२ण२स्त्वो३२३४ हा५यि५ । श३ता२ुक्रा३२३४

ता५उ५ । उद्वःशमिवया२ऽयिमी२३ रे२ । उ२द्वःशुश२मो३२३  
४हा५यि५ । व३या२३यि३ । मा४ऽ५यि५रा५६५६ यि६ ॥ १५ ॥

३. गा४यं५ति५त्वा५गा५य५त्रि४ण५आ४ । अर्चन्त्यवर्कम-  
वर्काऽ२३यि३ णा२ः । ब२ह्वाणस्त्वा४रुहो२ऽयि । शतक्राऽ२३  
ता२उ२ । उद्वःशमिवया२ऽयिमी२३रे२ । उ२द्वःशुशा३२३४  
मी५ । वाया३उ३वा२३ । उ२पूर । माऽ२यि२रो२३ऽ५हा२  
यि२ ॥ १६ ॥

ऋषिः—जेता माधुच्छन्दसः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥  
स्वरः—गान्धारः ॥

३४३. इन्द्रं<sup>२ ३</sup> विश्वा<sup>१ २</sup> अवीवृधन्त्समुद्रव्यचसं<sup>३ १ २ ३ १ २</sup> गिरः ।  
रथीतमं<sup>३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २</sup> रथीनां वाजानां सत्पतिं पतिम् ॥

शैखण्डिनानि त्रीणि—

१. इ५द्र५म्वि५श्वा५ः । आवी४रुवृ२धान् । सामुद्र२व्या । चास२  
ङ्गि२राः । राथी२त२मा२३ऽउवा४रु । र२थायिना४रुम् ।  
वा२जा२नाऽ२३३सा२त् । पातिम्प२ति२म् । इडाऽ२३  
भा२३४ऽ३ । ओऽ २३४५यि५ । डा५ ॥ १७ ॥

२. ओ२रुइं३द्रं४वि५श्वा५ः । अ२वी२ । वृधान् । सा२ऽमू४रु  
द्राव्या४रु । च२स२म् । गिराः । रा२ऽथी४रुतामा४रुम् । २ ।  
र२थी । नाम् । वाजा४रुनांसा४रुत् । प२तिम्पाऽ२३ती२३४ऽ  
३म् । ओऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ १८ ॥

३. इं३द्रं४वि३श्वा४अ५वी५वृ५ध५न् । स२मूरुद्रा३२३४व्या५ ।  
चा२३साङ्गी२३राः । राथी२त२मा४रुम् २ । ऊ४रु । हा४रु  
यि२ । ऊ४रु । र२थायिनाम् । वाजा२नांसा४रु । ऊ४रु ।

हा४रुयिर । ऊ४रु । परतिम्पाऽर३तीर३४ऽ३म् । ओऽर३  
४५यि५डा५ ॥ १९ ॥

४. इं४द्रं५वि४श्वा५अ५वी५वृ५ध५ । न५ । ऐ४या४हा५यि५ । सर  
मूद्रा२ऽव्या४रु । च२साङ्गार२यिराऽर३ः । ऐयाऽर३हारयिर ।  
र२थायिता२ऽमा४रुम् । र२थायिनाऽर३म् । ऐयाऽर३ ।  
हारयिर । वा२जाना२ऽसा४रुत् । परतायिम्पा२ऽतीऽर३  
म् । ऐयाऽर३हार३४ऽ३यि३ । ओऽर३४५यि५डा५ ॥ २० ॥

महावैश्वामित्रे द्वे—

५. इं४द्रं५वि४श्वा५अ५वी५वृ५ध५त्रै४या५दौ४ । हो५६वा५ ।  
सरमुरद्रव्यच२सरम् । गायिराऽर३ः । ऐयाऽर३न् । अऽर३  
हो३वार । र२थायितम२ः२र२ । थायिनाऽर३म् । ऐयाऽर३  
न् । अऽर३ हो३वार । वा॒जा॒ना॒२ः२सत्पति२म् । पातीऽर३  
म् ऐयाऽर३न् । अऽर३हो३वार३४ऽ३ । ओऽर३४५यि५ ।  
डा ॥ २१ ॥

६. हरयारयिर । हरयार३ । ओ४हा५ओ४हा५ । ३ । इं२द्रं२विर  
श्वा२रुः । अ३वी२वारब्दा३रुन् । सरमुरद्रव्या२रु । च३सं२गा-  
यिरा४रुः । र२थी२त२म२म् । र२थायिना४रु । म् । वा॒र॒जा॒र  
ना॒२ः२सा॒रु त् । प३तिं२पाती४रुम् । हरयारयिर ।  
हरयार३ । ओ४हा५ओ४हा५३ । हो३ऽ४यि४डा५ । २ । हो३२३  
४५यि । डा ॥ २२ ॥

७. हरयाये२३ । २ । ह३या३२३४५ । ह३३२३ । आऽर३४यि४ ।  
द्रं४ वि३श्वा४अ४वी५ । वृ३धार३न् । साऽर३४ । मु४द्र३व्य४  
च५स५ म् । ५ । गिरा२३ः । राऽर३४ । थी३त४म५ः५र५थी५ ।

नार३म्३ । वाऽ२३४ । जा४ना४ः४स३त्य४ति५म्५ । ए३ता२३  
 यि३न्३ । हरयाये२३ । २ । ह३या३२३४५हः३२३४५ ।  
 हो३ऽ४यि४ । डा५ । २ । हो३२३४५यि५ । डा५ ॥ २३ ॥

ऋषिः—गौतमः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

३४४. इममिन्द्र सुतं पिब ज्येष्ठममर्त्यं मदम् ।

शुक्रस्य त्वाभ्यक्षरन् धारा ऋतस्य सादने ॥

इन्द्रप्रियाणि चत्वारि—

१. इ२ममाऽ२३४यिं४द्रा५ । सु२तम् । पाऽ२यि२ुबा३२३४ । अ५  
 हो५वा५ । ज्येष्ठ२ममा२र्त्ति२यं२मद२म्२ । शु२क्रा२ । स्य२  
 त्वा२भी२३याऽ२३ । क्षाऽ२रा३२३४अ५हो५वा५ । धा२रा२र्ऋ२  
 तस्य२सा॒दने३२३४५ ॥ २४ ॥

गौतमम्—

२. इ५म५मिं३द्र२सु३तं४पि५बा५ । ज्ये२ष्ठाम२मा । ति२य२र्म्म  
 दाऽ२मु२ । शु३क्रा२ । अ३हो३२३४वा५ । स्य२त्वा२भ्यक्ष२  
 र२नु२ । धा३रा२ । अ३हो३२३४वा५ऋ३ता२ । अ३हो३२३४  
 वा५ । स्य४सा४ऽ५द५ ना५यि५ । हो४ऽ५यि५ । डा५ ॥ २५ ॥

३. इ४म४मिं४द्रा४ऽ५सु५तं५पि४बा४ । ज्ये२ष्ठ२म२मा२३र्त्ता  
 यं॒म्मा॑दा४२ुम्२ । अ४२ु । हौ४२ु । हुवायि । अ२३हो३२३४  
 वा४ । शु२क्र२स्य२त्वा३भ्यक्षारा४२ुन्२ । अ४२ु । हौ४२ु ।  
 हौ४२ुहुवायि । अ२३हो३२३४वा५ । धारा२ऽऋता४२ु । अ४२ु ।  
 हौ४२ु । हुवायि । अ२३हो३२३४वा५ । स्य२सा॒दाऽ२३  
 नार३४ऽ३ । ओऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ २६ ॥

वासिष्ठप्रियम्—

४. इ२ममीऽ२३ । द्र४सु५तं४पि५ब५ । ज्ये४ष्ठा५म्५ । अ२मा२३  
त्तायि॑म्मादा४२म्२ । शु२क्रास्यत्वा२३ । भि॒याऽ२३ । क्षा३२३४-  
रा५न्५ । धा॒रा२ओ३२३४वा५ । आ॒र्त्ता२ओ३२३४वा५ ।  
स्य४सा४ऽ५द५ना५ यि५ । हो४ऽ५यि५ । डा५ ॥ २७ ॥

ऋषिः—अत्रिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

३४५. य॒दिन्द्र॑ चि॒त्र म॑ इ॒ह ना॑स्ति त्वा॒दा॒तम॑द्रि॒वः ।  
रा॒धस्त॑न्नो वि॒दद्व॑स उ॒भया॑ह॒स्त्या भ॑र ॥

वीकानि चत्वारि—

१. य॒दि॒प॒द्रो॒हा॒यि॒४ । चि॒त्र॒म॒इ॒र॒ह॒नाऽ२३ । आऽ२३४ ।  
स्ति॒४त्वा॒४दा॑५ । हा॒२३यि॑३ । त॒म॒द्रा॒यि॒वाऽ२३ । राऽ२३४ ।  
ध॒स्त॒न्नो॒वि॒दा॑५ । हा॒२३ । वा । सा॒उ । उ॒भया॑हाऽ२३ ।  
स्ति॒३ या॒उ॒वा॒३४ऽ३ । भा॒३४५रो॑५६हा५यि५ ॥ २८ ॥
२. य॒दि॒प॒द्र॒चि॒त्र॒मौ॒५हो॒वा॑५ । हा॒३२३४ना॑५ । अ॒स्ति॒त्वा॒  
दा॒तमो॑वा॒३ । ओ॒वा॒२ । द्रा॒३२३४यि॒वा॑५ । रा॒धस्त॑न्नो  
वि॒दो॒वा॒३ । ओ॒वा॒२ । वा॒३२३४सा॑५उ५ । उ॒भया॑ह॒स्ति  
यो॒वा॒३ । ओ॒वा॒३४ऽ३ । भा॒३४५रो॑५६हा५यि५ ॥ २९ ॥

आकूपारम्—

३. य॒दि॒द्राऽ२३चि॒त्र॒प॒ । म॒इ॒र॒हा॒३२३४ना॑५ । अ॒स्ता॒४२ुयि॒र  
त्वा॒दा । त॒म॒द्रा॒यि॒वो । रा॒धस्त॑न्ना॒४२ुः । वि॒द॒द्वसा॑उ ।  
उ॒२ भ॒र॒या॒हाऽ२३ । स्ताऽ२३या॒४ऽ३ । भा॒३४५रो॑५६हा५  
यि५ ॥ ३० ॥

४. य३दिं४द्र५चि५त्र५म५इ५ । ह३ना२३ । आ४स्ती५ । त्वा॒दा॒तम-  
द्रि॒वः । रा॒धस्ता५२३न्ना२ः । वी॒वी४२ । द॒द्वसा३ । उ॒भया५२३  
हा२ । स्ता॒या५२३ । भा५२३रा२३४५३ । ओ५२३४५यि५ ।  
डा५ ॥ ३१ ॥

[ इति ] अर्द्धप्रपाठकः ॥

ऋषिः — तिरश्चीः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — अनुष्टुप् ॥ स्वरः — गान्धारः ॥

३४६. श्रु॒धी ह॒वं तिर॑श्च्या इन्द्र॒ यस्त्वा स॑पर्यति ।  
सु॒वीर्य॑स्य गो॒मतो रा॑यस्पू॒र्धि म॒हो॑ असि ॥ ५ ॥

तैरश्चे द्वे—

१. श्रु॒धी४हा॒वा४२ु२हा॒वा४२ुम॒२ । ति॒र॒र॒श्चि॒याः । इं॒२द्र॒या५  
२३स्त्वा२ । स॒२पौ॑र्हो॒२ । र्य॒ती॑र्हो॒२ । सु॒२वी॒र्य॑स्यगो॒मताः ।  
रा॒२या॒स्पू५२३र्द्धी॒२ । म॒२हा॒५२३ । अ॒२सि॑र्हो॒२ । ओ५२३४५ यि५डा५ ॥ १ ॥
२. श्रु॒धी५हा॒२३वं॑ति॒५र॑श्चि॒५या५ः । इं॒२द्रा॒य॒स्त्वा । स॒२प॑३  
र्य॒२ता॒ये॒२३४ । सु॒४वी॒५ । रि॑र्हो॒२ । स्या॑३२३४गो॒५ ।  
मा॒ता४२ुः । रा॒या॒स्पू॒र्द्धी॒२३१ । हा॒२३हा॒२यि॒२ । म॒४हा॒५२५अ॒५  
सी॒५ । हो॒४५५ यि५डा५ ॥ २ ॥

ऋषिः — गोतमः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — अनुष्टुप् ॥ स्वरः — गान्धारः ॥

३४७. अ॒सा॒वि सो॒म इन्द्र॑ ते श॒विष्ठ॑ धृ॒ष्णावा॑ ग॒हि ।  
आ त्वा पृ॒णक्त्वि॒न्द्रि॒यं रजः॑ सूर्यो॒ न र॑श्मि॒भिः ॥

वैश्वामित्रम्—

१. अ॒३सा॒४वि॒४सो॒३म॒४इं॒५द्र॒५ते॒५ । शा॒२वि॒२ष्टा॑३२३४धृ॒५ ।

ष्णो२३आगा२३ही२ । आत्वा२पृ२णाऽ२३हा२३ । क्तुईऽ२-  
न्द्रा३२३४या५म् ५ । रजाः । सूर्यो२वा२ओ३२३४वा५ ।  
न४रा४ऽ५स्मि५भीः । हो४ऽ५यि५ । डा५ ॥ ३ ॥

ऋषिः—काण्वो नीपातिथिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥

स्वरः—गान्धारः ॥

३४८. एन्द्र<sup>१ २</sup> याहि<sup>३ १ २</sup> हरि<sup>३ २ ३</sup>भिरुप<sup>१ २</sup> कण्वस्य<sup>३ २</sup> सुष्टुतिम् ।  
दिवो<sup>३ २</sup> अमुष्य<sup>३ २</sup> शासतो<sup>१ २</sup> दिवं<sup>३ १ २</sup> यय<sup>३ १ २</sup> दिवावसो ॥

काण्वे द्वे—

१. ए५न्द्रा२३या४हि५ह४रि४भा५यि५ः । उ२पा२क२ण्वा२३ ।  
स्यासु२ष्टु३२३४ती५म् ५ । दि२वो२अ२मू२३ । ष्याशा२  
सा३२३४ता५ः । दा५िवं५य२या२३ऽउ५वाऽ२३ । दाऽ२३यि३  
वा४ऽ३ । वा२३ ४५सो५६हा५यि५ ॥ ४ ॥

२. ए४द्र५या५हि५ह४रि५भि५ः । उ५हु४वा४हा५यि५ । उ५कण्व-  
स्य२ सुष्टुति२म् २ । उ२हु५वाऽ२३हा२यि२ । दि२वो॒अ॒मू२३ ।  
ष्याशा२सा३२३४ता५ः । दा५िवं५य३या२उ२ । वा२३हि३२३४  
वा५ । व४सो४ऽ५हा५ । हो४ऽ५यि५ । डा५ ॥ ५ ॥

ऋषिः—तिरश्चीः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

३४९. आ<sup>२ ३</sup> त्वा<sup>१ २ ३</sup> गिरो<sup>२ ३</sup> रथीरिवास्थुः<sup>१ २ ३ १ २</sup> सुतेषु<sup>३ १ २</sup> गिर्वणः ।  
अभि<sup>३ २ ३</sup> त्वा<sup>१ २</sup> समनूषत<sup>३ १ २</sup> गावो<sup>३ २ ३</sup> वत्सं<sup>३ १ २</sup> न धेनवः ॥

मध्यमं वेयगानस्य सामेदं परिकीर्तितम् ।

आत्वागिरोरथीरीतिमेडिनश्चेत्युपश्रुतिः ॥



१. आ॒प॒त्वा॒प॒गा॒र॒३यि॒३रो॒४र॒प॒थी॒४रि॒४वा । अ॒र॒स्थु॒र॒स्सु॒र॒ ते॒३  
षू॒गि॒र्व्वि॒णा॒३ः । ओ॒२३४वा॒प॒ । ओ॒३२३४वा॒प॒ । अ॒र॒भि॒र॒त्वा॒र॒  
सा॒२३मा॒नू॒र॒ऽषा॒ता॒३ । ओ॒२३४वा॒प॒ । ओ॒३२३४वा॒प॒ ।  
गा॒वो॒वा॒र॒३त्सा॒र॒३म् । न॒र॒धो॒ऽ२३४वा॒प॒ । ना॒४ऽ५वा॒५६-  
हा॒५यि॒५ ॥ ६ ॥

ऋषिः—तिरश्चीः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

३५०. ए॒तो॒<sup>२ ३</sup> न्वि॒न्द्रं<sup>२ ३</sup> स्त॒वाम॑ शु॒द्धं<sup>१ २</sup> शु॒द्धे॒न॑ सा॒म्ना ।  
शु॒द्धै॒रु॒क्थै॒र्वा॒वृ॒ध्वांसं॑ शु॒द्धै॒रा॒शी॒र्वान्॑ म॒मत्तु॑ ॥

शुद्धाशुद्धीये द्वे—

१. ए॒तो॒प॒न्वि॒५द्र॒५ऽ५स्त॒४वा॒५मा॒४ । शु॒र॒द्धः॑ शु॒द्धे॒न॑ र॒सा॒ऽ२३  
म्रा॒२ । शु॒र॒द्धै॒रु॒क्थै॒र्वा॒वृ॒ध्वाऽ२३३३सा॒२म् । शु॒र॒  
द्धै॒रा॒ऽ२३शी॒२३ । व्वा॒ऽ२ नृ॒ । म॒३मा॒२३४अ॒५हो॒५वा॒५ ।  
तू॒३२३४५ ॥ ७ ॥
२. ए॒प॒तो॒प॒न्वि॒५द्र॒५ऽ५स्त॒५वा॒५६मा॒५ । शु॒र॒द्धः॑ शु॒द्धे॒२ । न॒२ ।  
सा॒म्रा॒४२ । शु॒द्धा॒यि॒रु॒३क्थार॑ ३यि॒३ः । वा॒वा॒ऽ२ध्वा॒३२३४-  
सा॒५म् । शु॒र॒द्धै॒रा॒ऽ२३शी॒२ । व्वा॒न्म॒म॒२त्तु॒२ । इ॒डा॒ऽ२३  
भा॒२३४५३ । ओ॒ऽ२३४५यि॒५ । डा ॥ ८ ॥

ऋषिः—शंयुर्बार्हस्पत्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

३५१. यो॒<sup>२ ३</sup> र॒यिं॑ वो॒<sup>१ २</sup> र॒यि॒न्त॒मो॑ यो॒<sup>२ ३</sup> द्यु॒मै॒र्द्यु॒म्व॒त्त॒मः॑ ।  
सो॒मः॑ सु॒तः॑ स इ॒न्द्र ते॒ऽस्ति॑ स्व॒धा॒प॒ते॑ म॒दः॑ ॥

रयिष्ठे द्वे—

१. यो॒५र॒५यिं॑५वो॒५र॒५या॒५हा॒५उ॒५ । ता॒३२३४मा॒५ः । यो॒द्यु॒मै॒र्द्यु॒म्व॒त्त॒मः॑

वत्त२म२ः । सो॒मस्सु॒तस्सआऽ२३हो॒यि । र्द्र॒ता४२ु॒यि२ ।  
अस्ति॒स्वधा॒पताऽ२३हो॒ये२३ । म३दो३२३४५यि५डा५ ॥ ९ ॥

२. यो॒३र४यिं३वो॒४र५यि५ । त३मो३२३४हा५यि५ । यो॒३द्यु४  
मै॒३द्यु४म्र४व५ । त३मो३२३४हा५यि५ । सो॒३म४स्सु४त३  
स्स४इ५ । द्र३तो३२३४हा५यि५ । अ३स्ति४स्व५धा५प५ते५ ।  
म३दो३२३४हा५ । हो४ऽ५यि५ । डा५ ॥ १० ॥

ऋषिः—भरद्वाजः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

३५२. प्र॒त्यस्मै॑ पि॒पीष॑ते वि॒श्वानि॑ वि॒दुषे॑ भर ।

अ॒र॒ङ्ग॒मा॒य॒ ज॒ग॒म॒येऽप॑श्चा॒दध्व॑ने॒ नरः॑ ॥

कौल्मलबर्हीये द्वे—

१. प्र॒त्य५स्मै॑५पि५पा॒५हा५उ५ । आ॒यि॒षा॒२३ता॒२यि॒२ । वा॒यि  
श्वा॒२नि॒२वा॒यि । दू॒षे॒२३हा॒२३यि॒३ । भा॒२३रा॒२ । आ॒रा॒२ँङ्ग॒२  
मा । या॒जा॒२३हा॒२३ । ग्मा॒२३या॒२यि॒२ । अ॒पाऽ२३ । श्चाऽ२ु  
दा३२३४अ॒५हो॒५वा५ । ध्व॒ने॒२ँन॒२रा३२३४५ः ॥ ११ ॥
२. प्र॒त्य५स्मै॑५पी॒५६पी॒५ष॒५ता॒५यि॒५ । वा॒यिश्चा॒२नि॒२वा॒यि ।  
दू॒षे॒२ भा॒रा४२ु । आ॒रा॒२ँङ्ग॒२मा । य॒ज॒ग॒मा । या॒यि । अ॒पश्चा॒  
दध्व॒नाऽ२३हो॒यि । न॒२रा । अ॒२३हो॒४वा५ । हो४ऽ५यि॒५ ।  
डा५ ॥ १२ ॥

तोनदम्—

३. प्र॒त्य४स्मै॑५पि॒४पी॒५ । ष॒३ता॒२३यि॒३ । वाऽ२३४यि॒४ ।  
श्चा॒४नि॒५वि॒५दु॒५षे॒५ । भा॒४रा॒५ । अ॒४रं॒४ग॒४मा॒३य॒४ज॒५ ।  
ग॒म॒३यो३२३४हा॒५यि॒५ । आ॒४प॒५श्चा॒४दा॒५ । ध्व॒२नोऽ२३४  
वा॒५ । ना॒४ऽ५रो॒५६हा॒५ यि॒५ ॥ १३ ॥

ऋषिः—वामदेवः शाकपूतो वा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥

स्वरः—गान्धारः ॥

३५३. आ नो वयो वयः शयं महान्तं गह्वरेष्ठाम् ।  
महान्तं पूर्वनेष्ठामुग्रं वचो अपावधीः ॥

शाकपूतम्—

१. आ॒प॒नो॒प॒व॒यो॒प॒व॒य॒प॒श॒शा॒प॒द॒या॒प॒म्प॒ । म॒र॒हा॒र॒न्तं॒र॒ग॒र॒  
ह्व॒र॒रा॒३२३४ यि॒ष्ठ॒ष्ठा॒प॒म्प॒ । म॒र॒हा॒र॒न्तं॒र॒पू॒र॒त्वि॒र॒ना॒३२३४  
यि॒ष्ठ॒ष्ठा॒प॒म्प॒ । उ॒र॒ग्रं॒वाऽ॒र॒३चा॒रुः । अ॒३पा॒र॒३वा॒ऽप॒धा॒प॒द॒प॒द॒  
यि॒दः ॥ १४ ॥

ऋषिः—प्रियमेधः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

३५४. आ त्वा रथं यथोतये सुम्नाय वर्तयामसि ।  
तुविकूर्मिमृतीषहमिन्द्रं शविष्ठ सत्पतिम् ॥

काल्मलबर्हिषे द्वे—

१. आ॒प॒त्वा॒प॒र॒प॒थं॒प॒य॒प॒थौ॒प॒हो॒४वा॒प॒ । ता॒या॒रु॒यि॒सू॒३२३४प्रा॒प॒ ।  
य॒व॒र्त्त॒या॒म॒सि॒तु॒वि॒कूर्॒म्मी॒रु॒म्रु॒ । आ॒३२३४र्त्ती॒ । ५ । ष॒ह॒र॒म्प॒ ।  
आ॒यि॒न्द्रा॒३२३४शा॒४वी॒प॒ । ष॒र॒स॒त्पाऽ॒र॒३ती॒३४३४३४म्प॒ ।  
ओऽ॒र॒३४५यि॒प॒डा॒प॒ ॥ १५ ॥

२. आ॒३त्वा॒४र॒३थं॒४य॒४थो॒प॒ । त॒३या॒रु॒यि॒रु॒ । आ॒३त्वा॒४र॒प॒था॒प॒  
म्प॒ । य॒र॒थो॒ता॒या॒रु॒ । अ॒३हो॒३२३४वा॒प॒ । ई॒३२३४हा॒प॒ । सु॒र॒म्रा॒र॒  
य॒र॒व॒र्त्ता॒३याम॒सि॒रु॒ । अ॒३हो॒र॒३यि॒ । अऽरु॒हो॒३२३४वा॒प॒ ।  
तु॒र॒वि॒र॒कू॒र॒र्मि॒र॒मृ॒र॒३ता॒यि॒ष॒ह॒रु॒म्रु॒ । अ॒३हो॒र॒३यि॒ ।  
अऽरु॒हो॒३२३४वा॒प॒ । इ॒र॒द्र॒र॒३श॒र॒वि॒र॒ष्टा॒र॒३सा॒त्प॒ति॒रु॒म्रु॒ ।  
अ॒३हो॒र॒३यि॒ । अऽरु॒हो॒३२३४५वा॒प॒द॒प॒द॒ । ई॒३२३४हा॒प॒ ॥ १६ ॥

ऋषिः—प्रगाथः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

३५५. स पू॒र्व्यो॑ म॒हो॒ना॑ वे॒नः॑ क्र॒तु॒भि॒रा॒न॒जे॑ ।

यस्य॑ द्वा॒रा म॒नुः पि॒ता दे॒वेषु॑ धि॒य आ॒न॒जे॑ ॥

मधुश्चु॑निधनम्—

१. स५पू५व्यो५म५हो५म५हो५ना५दमे५ । वे२न२ष्क्र२तू२३  
भायि॒रा॒न॒जे॒२३ । हा॒२३हा॒२ । अ॒३हो॒२३वा॒२ । आ॒यि॒ही॒४२ु ।  
य॒२स्य॒२द्वा॒२रा॒३मा॒नु॒ष्पि॒ता॒२३ । हा॒२३हा॒२ । अ॒३हो॒२३वा॒२ ।  
आ॒यि॒ही॒४२ु । दा॒यि॒वे॒षु॒धा॒२३ । हा॒२३हा॒२ । यि॒ । अ॒३हो॒२३वा॒२ ।  
आ॒यि॒ही॒४२ु । य॒२आ॒५२३ । ना॒५२ुजा॒३२३४अ॒५हो॒५वा॒५ ।  
म॒२धु॒२श्चु॒ता॒३२३४५ः ॥ १७ ॥

ऋषिः—श्यावाश्व आत्रेयः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

३५६. य॒दी॒ व॒ह॒न्त्या॑श॒वो॒ भ्रा॒ज॒मा॒ना॒ रथे॑ष्वा ।

पि॒ब॒न्तो॒ म॒दि॒रं॒ म॒धु॒ तत्र॑ श्र॒वांसि॑ कृ॒ण्व॒ते॑ ॥

औषसः—

१. य॒४दी॒५व॒४हं॒५त्या॒५श॒४व॒५ः । य॒४ । द्यो॒४या॒४दी॒५ । ओ॒यि॒व॒हं॒ता  
आ॒२५शा॒वा॒४२ुः । ओ॒यि॒भ्रा॒ज॒मा॒ना॒र॒था॒यि॒षू॒२५वा॒४२ु । ओ॒यि॒-  
पि॒ब॒न्तो॒ म॒दि॒रा॒म्मा॒२५धू॒४२ु । ओ॒यि॒ । तत्र॑ श्र॒वा॒ंसि॒को॒वा॒२३  
ओ॒५२३४वा॒५ । ण्वा॒४५॒तो॒५६हा॒५यि॒५ ॥ १८ ॥

ऋषिः—शंयुः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

३५७. त्य॒मु॒ वो॒ अ॒प्र॒ह॒णं॑ गृ॒णी॒षे॑ श॒व॒स॒स्प॒ति॒म् ।

इ॒न्द्रं॑ वि॒श्वा॒सा॒हं॑ न॒रं॑ श॒चि॒ष्ठं॑ वि॒श्व॒वे॒द॒स॒म् ॥

१. त्य३मु४वो५अ५ । प्र३हारु । हा३२३४णा५म् । गृ२णी२  
 पेशवसरः । पतायिम् । आयिंद्रा२३म्वा४यि४श्वा५ । सहा२३ः  
 ३होये२३४ । ना५र३मो२३ये३ । शरचिष्ठाऽ२३४म्वी५ ।  
 श्ववा२३ होऽ२३४ । वा५ । दा४ऽ५सो५६हा५यि५ ॥ १९ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—दधिक्रावा अग्निः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥  
 स्वरः—गान्धारः ॥

३५८. द३धि१क्रा२व्णो अकारिषं जि३ष्णो१र२श्वस्य वा३जिनः१२ ।

सु३र२भि नो३ मु३खा करत् प्र न आयू३षि तारिषत् ॥

१. ओ४हा४यि४ । द५धि५क्रा४व्णो५अ५का५रि५ष५म् ।  
 ओ४हा४यि४ । ओहायिजिष्णोरश्वस्यवाजिनाऽ२३होयि । सु२  
 र२भि । नोमु२खाकाऽ२३रा२त् । प्रनाऽ२३होयि । आयूऽ२३  
 हो । षि३ता॒राऽ२३यि३षा२३४ऽ३त् । ओऽ२३४५यि५ ।  
 डा५ ॥ २० ॥

ऋषिः—जेता माधुच्छन्दसः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥  
 स्वरः—गान्धारः ॥

३५९. पु३रां२ भिन्दु३र्युवा क३विर१मि२तौजा अजायत ।

इन्द्रो२ वि३श्वस्य कर्म१णो ध३र्ता व३ज्री पु३रुष्टुतः१२ ॥

मारुतम्—

१. पु५रां५भिं३दु२र्यु३वा४क५वि५ । अमि२तौजाअ२जायाऽ२-  
 ३ता२ । आयिंद्रोविश्वा२३ । स्याक२र्म्मा३२३४णा५ । धर्ता ।  
 वाज्रौ२ वा२ओ३२३४वा५ । पु४रु४ऽ५ष्टु५ता५ । हो४ऽ५  
 यि५डा५ ॥ २१ ॥

ऋषिः—प्रियमेधः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

३६०. <sup>१ २</sup>प्रप्र <sup>३ २ ३</sup>वस्त्रिष्टु <sup>३ १ २</sup>भमिष <sup>३ १ २</sup>वन्दद्वीरायेन्दवे ।

<sup>३ १</sup>धिया <sup>२ ३</sup>वो <sup>३ १ २</sup>मेधसातये <sup>३ २ ३</sup>पुरन्ध्या <sup>१ २</sup>विवासति ॥

वामदेव्यम्—

१. प्र५प्र५व५स्त्रि५ष्टु५भ५मि५ष५मो५हा५ओ५हा५६ए५ । वं२  
दद्वीरा२ । य२आयिन्दवे४२ । ओ३ँहा२ । ओ३ँहा२३ए२ ।  
धिया॒वो॒मेधसा२ऽता२३या२यि२ । ओ३ँहा२ । ओ३ँहा२३ए२ ।  
पुरान्धी२३या२३ । वि२वोऽ२३४वा५ । सा४ऽ५तो५६हा५  
यि५ ॥ २२ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

३६१. <sup>३ १ २</sup>कश्यपस्य <sup>३ २ ३</sup>स्वर्विदो <sup>२ ३ २</sup>यावाहुः <sup>३ २ ३</sup>सयुजाविति ।

<sup>२ ३ २</sup>ययोर्विश्वमपि <sup>३ १ २</sup>व्रतं <sup>३ २ ३</sup>यज्ञं <sup>२ ३ १</sup>धीरा <sup>२ ३ १</sup>निचाय्य ॥

काश्यपम्—

१. क५श्य५प५स्य५सु५व५र्वि५दा५६ए५ । यावा॒हु२स्स२ ।  
यु२जावा२ऽयितीऽ२३४ । य३यो॒४र्वि३श्च४म४पि५ ।  
व्र३ता२३म्३ । यज्ञान्धी२३रा२ः । नि२चाऽ२३ । आऽ२  
या३२३४अ५ हो५वा५ । ओ३२३४ पा५ ॥ २३ ॥

ऋषिः—प्रियमेधः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

३६२. <sup>१ २ ३</sup>अर्चत <sup>३ १ २</sup>प्रार्चता <sup>३ १ २</sup>नरः <sup>३ १ २</sup>प्रियमेधासो <sup>३ १ २</sup>अर्चत ।

<sup>१ २</sup>अर्चन्तु <sup>३ २ ३ २ ३</sup>पुत्रका <sup>३ २ ३ २</sup>उत <sup>३ २ ३ २</sup>पुरमिद् <sup>३ २ ३ २</sup>धृष्णवर्चत ॥

प्रैयमेधम्—

१. अ२र्च२त२प्रार्च२तारुना३२३४रा५ । प्रि२य२मे२धा२३सो४ऽ-

३अ२र्च्चा३त५ । अ२र्च्चन्तुपूऽ२३ । त्रा४ऽ३कृ२उ३त५ ।  
पुरमिद्धाऽ२३ । ष्णु३वार३र्च्चा४ऽ५ता५६५६ ॥ २४ ॥

ऋषिः—मधुच्छन्दाः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

३६३. उ३क्थ१मिन्द्रा२य शंस्य३ वर्धनं१ पुरु३निषि१धे ।

शक्रो३ यथा१ सुतेषु२ नो३ रारणत्१ सख्येषु२ च ॥

बार्हदुक्थम्—

१. उ५क्थ५मिन्द्रा५य२शंस५ाऽ२३या२म् । वा॒र्धन२म्पु२ । रु२  
निष्षाऽ२३यि३धा२यि२ । शक्रो३या२३था२३ । सूते३रुषू३२-  
३४ना५ः । रा२रणाऽ२३त्सा२ । खि२यायिषूऽ२३चा२३४ऽ३ ।  
ओऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ २५ ॥

ऋषिः—प्रियमेधः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

३६४. वि३श्वानर१स्य वस्पति३मनान१तस्य शवसः३ ।

ए॒वैश्च१ चर्षणी३नामू३ती हुवे३ रथाना१म् ॥

काण्वे—

१. वि५श्वा५न५रा५ । स्य२वा४रु॒स्पाती४रुम् । आ॒ना॒न॒र॒त॒ । स्य२  
शा॒वा॒र॒ऽसा४रुः । ए॒वैश्चा॒२ । च॒र॒ऋ॒र॒षणा४रु॒यि॒र॒नाम् ।  
ऊ४रु॒ती । हु॒र॒वा॒यि॒र॒ । थाऽ२३४नो५६हा५यि५ ॥ २६ ॥

२. वि३श्वा२३४ । न४र४स्य५वौ५ । हो४स्पा४ती५म् । अ२ना॒न-  
ता२३ । स्या॒शा॒रु॒वा३२३४सा५ः । ए॒वैश्चा॒२ । च॒र॒ऋ॒र॒षणाऽ  
२३४यि४ना५म् । ऊ॒र॒ती॒हु॒र॒वा॒यि॒र॒ । थाऽ२३४नो५६हा५  
यि५ ॥ २७ ॥

ऋषिः—भरद्वाजः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

३६५. स<sup>२</sup> घा<sup>३</sup> यस्ते<sup>१</sup> दिवो<sup>२</sup> नरो<sup>३</sup> धिया<sup>१</sup> मर्तस्य<sup>२</sup> शमतः<sup>२</sup> ।

ऊती<sup>३</sup> स<sup>१</sup> बृहतो<sup>२</sup> दिवो<sup>२</sup> द्विषो<sup>३</sup> अंहो<sup>३</sup> न तरति<sup>२</sup> ॥

१. स२घायस्ता२३यि३ । ए२ । दि२वो॒नरा२३ः । ए२ । धि२  
या॒मर्ता२३ । ए२ । स्य२शमता२३ः । ए२ । ऊ२तायिसब्रे२३ ।  
ए२ । ह२तो॒दिवा२३ः । ए२ । द्वि२षो॒अ॒हा२३ः । ए२ । नातर२  
ति२ । इडाऽ२३भा२३४ऽ३ । ओऽ२३४५यि५ । डा ॥ २८ ॥

२. स५घा५य५स्ता५यि५ । दि२वो॒रनराः । धि२या॒रमा॒र्ता४२ु ।  
स्य२ श२मताः । ऊ॒रती॒रसा॒ब्रे४२ु । ह२तो॒रदिवाः । द्वि२षो॒र  
आ॒हा४२ु । नातर२ति२ । इडाऽ२३भा२३४ऽ३ । ओऽ२३४५  
यि५ । डा५ ॥ २९ ॥

ऋषिः—अत्रिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

३६६. विभोष्ट<sup>३</sup> इन्द्र<sup>१</sup> राधसो<sup>२</sup> विभ्वी<sup>३</sup> रातिः<sup>१</sup> शतक्रतो<sup>२</sup> ।

अथा<sup>१</sup> नो<sup>२</sup> विश्वचर्षणे<sup>३</sup> द्युम्नं<sup>१</sup> सुदत्रं<sup>२</sup> मंहय ॥

१. वि५भो५ष्ट५इं५द्र५रा५धा५दसा५ । वि२भ्वी॒रा॒रं । रतिश्शत२-  
क्र२तो॒र । श२ता४२ुक्राताउ । आथा॒नो॒रवि॒श्वच॒र॒ऋ२-  
[ ष ] णे॒र । श्व॒चा४२ु॒ऋ॒षा॒णायि । द्यु॒म॒न्सुद॒त्र॒रम॒ः२  
ह॒रय॒२ु । त्र३मा२३॒हा४ऽ५ या५द५५६ ॥ ३० ॥

ऋषिः—प्रस्कण्वः ॥ देवता—उषाः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

३६७. वयश्चित्ते<sup>१</sup> पतत्रिणो<sup>३</sup> द्विपाच्यतुष्पादर्जुनि<sup>२</sup> ।

उषः<sup>२</sup> प्रार॒भृतूरनु<sup>१</sup> दिवो<sup>३</sup> अन्तेभ्यस्परि<sup>२</sup> ॥



१. व॒प॒य॒प॒श्चा॒र॒३यि॒३त्ते॒४प॒४त॒५त्रि॒५णा॒५ः । द्वि॒२पा॒च्चतु॒ष्पा॒दर्जु॒ ।  
नाये॒२३ । ऊ॒४ष॒५ः प्रा॒४रा॒५न् । ऋ॒२तू॒२ः२॒रनू॒ । दि॒२वो॒२अ॒न्ते॒५  
२३ । भा॒५२३॒या॒४५३ः । पा॒२३॒४५॒रो॒५६हा॒५यि॒५ ॥ ३१ ॥

ऋषिः—आप्यस्त्रितः ॥ देवता—विश्वेदेवाः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥  
स्वरः—गान्धारः ॥

३६८. अमी॑ ये दे॒वा स्थ॒न म॒ध्य आ॒ रोच॒ने दि॒वः ।  
क॒द्व ऋ॒तं क॒दमृ॒तं का॒ प्र॒त्ना व॒ आहु॒तिः ॥

१. अ॒प॒मी॒५ये॒५दे॒५वा॒५स्था॒४ना॒५ । म॒ध्यआ॒रोच॒नेदि॒वा॒२ । क॒२  
द्व॒२ । ऋ॒ताम् । क॒२द॒२मा॒र्त्ता॒४२मु॒२ । का॒प्र॒त्ना॒व॒२आ॒हू॒५२३  
ती॒२३॒४५३ः । ओ॒५२३॒४५॒यि॒५ ॥ डा॒५ ॥ ३२ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—ऋक्सामौ ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

३६९. ऋ॒चं॑ सा॒म य॒जाम॒हे या॒भ्यां॑ क॒र्मा॒णि कृ॒ण्व॒ते ।  
वि॒ ते स॒दसि॒ राज॒तो य॒ज्ञं दे॒वेषु॒ वक्ष॒तः ॥

ऋक्सामनी द्वे—

१. ऋ॒४च॒५ः५सा॒४म॒५य॒५जा॒४ । म॒हायि॒ । या॒भ्या॒ङ्क॒र्मा॒णि॒२-  
कृ॒ण्वा॒५२३ता॒२यि॒२ । वि॒तेस॒दसि॒२रा॒जा॒५२३ता॒२ः । य॒२ज्ञ॒न्दा॒५  
२३यि॒३वे॒२ । षू॒वक्ष॒२तः॒ । इ॒डा॒५२३भा॒२३॒४५३ । ओ॒५२३॒४५  
यि॒५ । डा॒५ ॥ ३३ ॥

२. ऋ॒५च॒५ः५सा॒२३मा॒४य॒५जा॒४म॒४हा॒५यि॒५ । या॒भ्या॒ङ्क॒२र्मा॒२ ।  
णि॒२ का॒ण्वा॒२५वा॒४२यि॒२ । ण्वा॒ता॒४२यि॒२ । वा॒यिते॒स॒२द॒२-  
सि॒२रा॒जा॒२५ता॒४२ः । जा॒ता॒४२ः । य॒ज्ञान्दा॒२५यि॒वे॒४२ । षू॒वक्ष॒-  
२तः । इ॒डा॒५२३ भा॒२३॒४५३ । ओ॒५२३॒४५॒यि॒५ ॥ डा॒५ ॥ ३४ ॥

ऋषिः—रेभः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

३७०. वि॒श्वाः॑ पृ॒तना॑ अ॒भिभू॑तरं नरः स॒जुस्त॑तक्षु॒रिन्द्रं॑ ज॒जनु॑श्च रा॒जसे॑ ।  
क्र॒त्वे व॑रे स्थे॒मन्या॑मु॒रीमु॑तो॒ग्रमो॑जिष्ठं तर॒सं तर॑स्वि॒नम् ॥ १ ॥

त्रैशोकम्—

१. वि॒५श्चो॒४हा॒४यि॒४ । पृ॒तना॒॑२अ॒२भि॒२भू॑ । त॒२र॒३न्न॒२राः । स॒२  
जु॒स्तत॒॑२क्षु॒२रायि॑द्रं॒ज॒२ज॒२नूः । च॒२रा॒२जा॒सोऽ॒२३॒४हा॒५यि॒५ ।  
क्र॒२त्त्वौ॒होयि॑ । व॒२रौ॒होयि॑ । स्थे॒मन्या॑ऽ॒२मु॒३२३॒४री॒५म् ५ ।  
उ॒५तो॒४हा॒४यि॒४ । उ॒२ग्र॒मोऽ॒२३॒४जी॒५ । छं॒२ता॒रु॒३२३॒४सा॒५  
म् ५ । हो॒२यि॒२ । त॒३रा॒२३॒४ । स्वि॒४न॒४म् ४ । ओ॒५६वा॒५ । ओ॒२  
यि॒२दी॒३२३॒४वा॒५ ॥ ३५ ॥

[ इति ] नवमः प्रपाठकः ॥

ऋषिः—सुवेदाः शैलूषिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

३७१. श्र॒त्ते द॑धामि प्रथ॒माय॑ म॒न्यवे॑ऽ हन् यद् दस्युं न॒र्यं वि॑वेरपः ।

उ॒भे य॑त्त्वा रो॒दसी॑ धाव॒ताम॑नु भ्य॒सात्ते॑ शु॒ष्मात् पृ॑थि॒वी चि॑द॒द्रि॒वः ॥

शैखण्डिने द्वे—

१. श्र॒त्ते॒२३हो॑यि॒द३धा॒२३हो॑ऽ॒२३॒४ । मि॒४प्र॒५थ॒५मा॒४य॒५म् ५ ।  
न्य॒४वा॒५यि॒५न्य॒४वा॒५यि॒५ । अ॒३हा॒२३न्॒३हो॑यि । य॒३द्वा॒२३  
हो॑ऽ॒२३॒४ । स्यु॒४न्न॒४र्य॒५म्वि॒५वे॒४ः । अ॒४पा॒५अ॒४पा॒५ः । उ॒३  
भे॒२३हो॑यि । य॒३त्वा॒२३हो॑ऽ॒२३॒४ । रो॒४द॒५सी॒५धा॒४व॒५ता॒५  
म् ५ । अ॒४नू॒५अ॒४नू॒५ । भ्य॒३सा॒२३द्भो॑यि । ते॒३शू॒२३ हो॑ऽ॒२३॒४ ।  
ष्मा॒४त्पृ॒५थि॒५वी॒४चि॒५द॒५ । द्रि॒४वो॒५द्रि॒४वा॒५ः द्रि॒४व॒५आ॒४ ।  
अ॒५हो॒५वा॒५६ । हा॒५उ॒५वा॒५ । ई॒३२३॒४५ ॥ १ ॥

२. श्र३त्ता२३५यि । द३धा२३५२३४ । मि४प्र५थ५मा४य५म५ ।  
 न्य४वा५यि५न्य४वा५यि५ । अ३हा२३५न् । य३द्वा२३५२३४ ।  
 स्यु४न्न४र्य५म्वि५वे४ः । अ४पा५अ४पा५ः । उ३भा२३५यि ।  
 य३त्वा२३५२३४ । रो४द५सी५धा४व५ता५म् । अ४नू५ ।  
 अ४नू५भ्य३सा२३५त् । ते३शू२३५ २३४ । ष्मा४त्पृ५थि५वी४  
 चि५द५ । द्वि४वो५द्वि४वा५ः । द्वि४व५ए४ । हि५या५६हा५ ।  
 हो४५यि५ । डा५ ॥ २ ॥

अविवर्त्तौ द्वौ—

३. अ३यो३२३४वा५ । इ३या२ुयो३२३४वा५ । श्रा४त्ता५यि५ ।  
 दा५२३४धा४ । मि५प्र५थ५मा४य५मा५न्य४वा५यि५न्य४वा५  
 यि५ । अ३यो३२३४वा५ । अ३या२ुयो३२३४वा५ । आ४हा५  
 न् । या५२३४द४ । स्यु५न्न४र्य५म्वि५वे४ः । अ४पा५अ४ ।  
 पा५ः । अ३यो३२३४वा५ । अ३या२ुयो३२३४वा५ ।  
 ऊ४भा५यि५ । या५२३४त्वा४ । रो४द५सी५धा४वा५ता५म् ।  
 अ४नू५ । अ४नू५ । अ३यो३२३४वा५ । अ३ या२ुयो३२३४  
 वा५ । भ्या४सा ५त् । ता५२३४यि४ शु४ । ष्मा५त्पृ५थि५वी४  
 चि५द५ । द्वि४वो५द्वि४वा५ः । द्वि४व५आ४ । औ५हो५वा५६ ।  
 हा५उ५वा५ । द्वि२व२औ२हो२३हाः२५५ ॥ ३ ॥

४. इ३यो३२३४वा५ । इ३या२ुयो३२३४वा५ । श्रा४त्ता५यि५ ।  
 दा५२३४धा४ । मि५प्र५थ५मा४य५म५ । न्य४वा५यि५न्य४  
 वा५यि५ । इ३यो३२३४वा५ । इ३या२ुयो३२३४वा५ । आ४  
 ह५न् । या५२३४द४ । स्यु५न्न४र्य५म्वि५वे४ः । अ४पा५अ४

पापः । इ३यो३२३४वा५ । इ३यारुयो३२३४वा५ । ऊ४भा५  
 यि५ । याऽ२३४त्वा४ । रो४द५सी५धा४व५ता५म् । अ४नू५  
 अ४नू५ । इ३यो३२३४वा५ । इ३यारुयो३२३४वा५ । भ्या४  
 सा५त् । ताऽ२३४यि४शु४ । ष्मा५ त्पृ५थि५वी४चि५ द५ ।  
 द्रि४वो५द्रि४वा५ःद्रि४व५आ४ । अ५हो५ वा५६ । हा५उ५  
 वा५ । द्रि२वार३इ२हो२३हाः२ऽऽ ॥ ४ ॥

५. आऽ२३यार३म् । श्रा४त्ता५यि५ । दाऽ२३४धा४ । मि५प्र५  
 थ५मा४य५म५ । न्य४वा५यि५न्य४वा५यि५ । आऽ२३यार३  
 म् । आ४हा५ । न् । याऽ२३४द्वा४ । स्यु५न्न४र्य५म्वि५वे४ः ।  
 अ४पा५अ४पा५ः । आऽ२३यार३म् । ऊ४भा५यि५ । याऽ२३४  
 त्वा४ । रो४द५सी५धा४व५ता५म् । अ४नू५अ४नू५आऽ२३  
 यार३म् । भ्या४सा५त् । ताऽ२३४यि४शु४ । ष्मा५त्पृ५थि५  
 वी४चि५द५ । द्रि४वो५द्रि४ वा५ः । द्रि४व५आ४ । औ५हो५  
 वा५६ । हा५उ५वा५ । द्रि२वो२३ द्रि२वाऽ२३४५ः ॥ ५ ॥

६. अ२यं२यार३ः । श्रा४त्ता५यि५ । द४धार३ऽ२३४ । मि४प्र५थ५  
 मा४य५म५ । न्य४वा५यि५न्य४वा५यि५ । अ२यं२यार३ः ।  
 आ४हा५न् । यद्धार३ऽ२३४ । स्यु४न्न४र्य५म्वि५वे४ः ।  
 अ४पा५अ४पा५ः । अ२यं२यार३ः । ऊ४भा५यि५ । यत्वार३ऽ  
 २३४रो४द५सी५धा४ व५ता५म् । अ४नू५अ४नू५ । अ२यं२  
 यार३ः । भ्या४ सा५त् । ता५िशू२३ऽ२३४ । ष्मा४ । त्पृ५थि५  
 वी४चि५द५ । द्रि४वो५द्रि४वा५ः । द्रि४व५श्रा४ । श्चौ५हो५  
 वा५६ । हा५उ५ वा५ । द्रि२वार३ ई३ऽ२३४५ ॥ ६ ॥

७. औ॒प॒हो॒४हो॒४हा॒प॒यि॒प॒ । श्रा॒४त्ता॒प॒यि॒प॒ । दा॒३२३४धा॒प॒ ।  
मी॒२प्रा॒२ु था॒३२३४मा॒प॒ । य॒२मं॒२न्या॒३२३४वे॒प॒ । य॒२मं॒२न्या  
३२३४वा॒प॒यि॒प॒ । अ॒३हा॒२३५२नु॒२ु । या॒३२३४हा॒प॒ । स्यु॒२न्ना॒२ु  
री॒३२३४या॒प॒म्प॒ । वि॒२वे॒२ुरा॒३२३४पो॒प॒ । वि॒२वे॒२ुरा॒३२३४  
पा॒प॒ः । उ॒३भा॒२३५२ु यि॒२या॒३२३४त्वा॒प॒ । रो॒२दा॒२ुसी॒३२३४  
धा॒प॒ । व॒२ता॒२ुमा॒३२३४ नू॒प॒ । २ । भ्य॒३सा॒२३५२ुता॒३२३४  
यि॒४शू॒प॒ । ष्मा॒२त्प्रे॒२ुथी॒३२३४वी॒प॒ । चि॒२द॒२द्री॒३२३४व॒प॒ः ।  
चि॒२द॒२द्रा॒३२३४यि॒४वा॒प॒ः ॥ द्रि॒४व॒प॒ आ॒४ । औ॒॒प॒हो॒॒प॒वा॒प॒६ ।  
हा॒प॒उ॒प॒वा॒प॒ । ए॒२३ । द्रि॒२व॒२इहा॒३२३४५ ॥ ७ ॥

८. श्र॒प॒त्ता॒प॒औ॒॒प॒हो॒॒४हो॒॒४हा॒प॒यि॒प॒ । द॒धा॒२३५२३४ । मि॒४प्र॒प॒थ॒प॒  
मा॒४य॒प॒ । म॒प॒न्य॒४वा॒प॒यि॒४ न्य॒४वा॒प॒यि॒प॒ । अ॒प॒हा॒प॒औ॒॒प॒हो॒॒४  
हो॒॒४हो॒॒प॒ यि॒प॒ । य॒द्दा॒२३५२३४ । स्यु॒४न्न॒४र्य॒प॒म्वि॒प॒वे॒४ः ।  
अ॒४पा॒प॒अ॒४पा॒प॒ः । उ॒प॒भा॒प॒औ॒॒प॒हो॒॒४हो॒॒४हा॒प॒यि॒प॒ । य॒त्त्वा॒२३  
५२३४ । रो॒४द॒प॒सी॒प॒धा॒४व॒प॒तां॒प॒ । अ॒४नू॒प॒भ्य॒प॒ सा॒प॒औ॒॒प॒हो॒॒४  
हो॒॒४हा॒प॒यि॒प॒ । ता॒यि॒प॒ । ता॒यि॒शू॒२३५२३४ष्मा॒४ त्पृ॒प॒थि॒प॒वी॒४  
चि॒प॒द॒प॒ । द्रि॒४वो॒प॒द्रि॒४वा॒प॒ः । द्रि॒४आ॒प॒औ॒॒प॒हो॒॒प॒ वा॒प॒६ ।  
हा॒प॒उ॒प॒वा॒प॒ । द्रि॒२व॒२ए॒२३द्रि॒वा॒५२ ३४५ः ॥ ८ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

३७२. <sup>३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २३</sup> वि॒श्वा ओ॒जसा॒ पतिं॑ दि॒वो य॒ एक॑ इ॒द् भू॒रति॑थि॒र्जनाना॑म् ।  
<sup>२ ३ १ २२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २२</sup> स॒ पू॒र्व्यो नू॒तन॑माजिगी॒षं तं॑ व॒र्त्तनी॑रनु॒ वावृ॑त॒ एक॑ इत् ॥

१. स॒४मा॒४हा॒प॒ । आ॒यित॑वि॒श्वाओ॒जसा॒२३ । प॒तिमा॒२३यि॒३ ।  
दि॒वा॒५२३४ः । हा॒३हो॒२यि॒२ । य॒२आ॒यिका॒२५ई॒४२ुत् । २ ।  
भू॒रति॑थि॒२ः । ज॒ना॒५२३ना॒२३४म् । हा॒३हो॒२यि॒२ । स॒२

पूर्व्वियाः४२ । नूतन२मा२ । जिगाऽ२३ यि३ । षा२३४म्४ ।  
हा३हो२यि२ । तं२वार्त्ता२ऽनी४२ुः । अनुवा२रवृ२ते२ ।  
आये२३ । क३या२उ२ वार३ । वृ२धे२ऽऽ ॥ ९ ॥

२. स५मे४त५वि४श्वा५ओ४ज५सा५प४ति५म्५ । ए४पा४ती५म्५ ।  
दिव्या२ । हौ४२ु । हौईहौ२३वार । ई३या२ । य२ आयिका२ऽ  
ई४२ुत्२ । भूरतिथि२ः । जनाऽ२३ना२म्२ । हौ४२ु । हौईहो२३  
वार । ई३या२ । स२पूर्व्वियाः४२ुः । नूतन२मा२ । जिगाऽ२३  
यि३षा२म्२ । हौ४२ुहौईहो२३वार । ई३या२ । तं२वार्त्ता२ऽ  
नी४२ुः । आनुवा२रवृ२ते२ । आये२३ । क३या२उ२ वार३ ।  
म२हे२ऽ ॥ १० ॥

३. स५मे४त५वि४श्वा५ओ४ज५सा५प४ति५म्५ । ए४पा४ती५म्५ ।  
दायिवा२ऽया४२ु । औ४२ु । हौई२ुहो२३वार । ओमोवार । य२  
आयिका२ऽई४२ुत्२ । भूरतिथि२ः । जनाऽ२३ना२म्२ । अ४२ु ।  
हौईहो२३वार । ओमोवार । स२पूर्व्वि२ऽयाः४२ुः । नूतन२  
मा२ । जिगाऽ२३ यि३षा२म्२<sup>१</sup> । अ४२ु । हौईहो२३वार ।  
ओमोवार । तं२वार्त्ता२ऽ नी४२ुः । अनुवा२रवृ२ते२ । आये२३ ।  
क३या२वार३ । धर्म्मणे३२३४५ ॥ ११ ॥

ऋषिः — सव्य आङ्गिरसः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — जगती ॥ स्वरः — निषादः ॥

३७३. इमे त इन्द्र ते वयं पुरुष्टुत ये त्वारभ्य चरामसि प्रभूवसो ।

न हित्वदन्यो गिर्वणो गिरः सघत्क्षोणीरिव प्रति तद्भ्य नो वचः ॥

१. इ५मे५त५आ५ । इ२ते२वयंपुरू४२ु ष्टुता४२ु । ये२त्वारभ्यच२रामसि  
प्रभू४२ुवासा४२ुउ२ । न२हित्वदन्यो॒गिर्व॒णो॒गिरा४२ुस्सा॒घा४२ु

त् २ । क्षो२णीरिवप्रतितद्धर्यनो४रुवाचाऽरुः । व३चा२ओ३-  
२३४वा५ । हो४ऽ५यि५ । डा५ ॥ १२ ॥

२. इ५मे५त५आ५ । द्र२ते५वयंपुरु२ । घृता । या२ऽयित्वा४रु  
राभ्या४रु । चाराम२सि२प्र२भूर । वसाउ । ना२ऽही४रु  
त्वादा४रुत् २ । योगिर्व्व२णो२गिरः । सघात् । क्षो२ऽणी४रु  
रायिवा४रु । प्रति२तद्ध२ । र्यनो॒वाऽ२३चा२३४ऽ३ः ।  
ओऽ२३४५यि५डा५ ॥ १३ ॥

३. इ२मे॒ताऽ२३ इं४द्र५ते४व५यं४पु५रु५ष्टु५तो४वा५ । ये॒त्वा॒रा-  
भ्या४रु । च॒राम॒सीऽ२३प्रा४ऽ३भूरव३सा५उ५ । न२हित्वा-  
दा४रुन् । यो॒गिर्व्व॒णोऽ२३गी४ऽ३र२स्स३घ५त् ५ । क्षो॒णीरि  
वा४रु । प्रतितद्धाऽ२३ । र्य४नो४ऽ५व५चा५ । हो४ऽ५यि५ ।  
यि५ । डा५ ॥ १४ ॥

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

३७४. च३र्षणी१२धृ३तं म१घवान३मुक्थ्या२मिन्द्रं३ गि१रो बृ३हती२रभ्य३नूष२त ।  
वा३वृ१धानं२ पु१रु३हूतं सु३वृ१क्तिभि२रम३र्त्यं ज३रमा१णं दि३वेदि२वे ॥

१. च५ऋ५ष५णी५धृ५त५ः५हा५उ५ । म२घवा॒न२मुक्थाऽ२३  
या२म् २ । इं॒द्रं गि॒रो बृ॒हती॒रभ्य२नूषाऽ२३ता२ । वा॒वृ॒धाना४रुम् २ ।  
पू॒रु॒हूताऽ२३म् ३ । सु॒वाऽरु॒क्ता३२३४यि४भी५ः । अमा४रु  
र्त्ति२याम् । ज२रमा॒णाऽ२३म् ३ । दाऽ२३यि३वे४ऽ३दा२३४५  
यि५वो५६हो५यि५ ॥ १५ ॥



ऋषिः—कृष्ण आङ्गिरसः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

३७५. अ<sup>१</sup>च्छा<sup>२</sup> व<sup>३</sup> इन्द्रं<sup>४</sup> मतयः<sup>५</sup> स्व<sup>६</sup>र्युवः<sup>७</sup> स<sup>८</sup>ध्रीचीर्वि<sup>९</sup>श्वा<sup>१०</sup> उ<sup>११</sup>शतीर<sup>१२</sup>नूषत ।

परि<sup>१३</sup>ष्वजन्त<sup>१४</sup> जनयो<sup>१५</sup> यथा<sup>१६</sup> पतिं<sup>१७</sup> मर्यं<sup>१८</sup> न शु<sup>१९</sup>न्ध्युं<sup>२०</sup> मघवान<sup>२१</sup>मूतये ॥

१. अ५च्छा५व५इं५द्रं५म५त५य५स्सु५व५र्यु५वा५दए५ । स२  
ध्री५ची५र्वि५श्वा५उ५शती५र५नू५षा५ता५२ । परि५ष्वजन्त५जनयो५यथा५२  
पा५ती५२म् । मर्य५न्ना५२३शू५२ । ध्यु५म्म५२ । घवा५२ । न३मू५२३४  
औ५हो५वा५ । त५या५२३ई५२३४५ ॥ १६ ॥

२. आ५२३४ । छा५व५इं५द्र५म्म५ । त५या५ः । सू५रव५र्यु५वा५  
२३ः । सा५२३४ । ध्री५ची५र्वि५श्वा५उ५ । श५ती५ः । आ५२  
नू५षता५२३ । पा५२३४ । रि५ष्वजन्त५ज५ । न५या५ः ।  
या५२था५पता५२३यि५३म् । मा५२३४ । र्य५न्न५शुं५ध्यु५म५  
घ५वा५ । ना५२मू५तया५२३उ५ । वा५२३४५ ॥ १७ ॥

ऋषिः—सव्य आङ्गिरसः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

३७६. अ<sup>३</sup>भि<sup>२</sup> त्वं<sup>३</sup> मे<sup>४</sup>षं<sup>५</sup> पुरु<sup>६</sup>हूत<sup>७</sup>मृ<sup>८</sup>ग्मि<sup>९</sup>यमिन्द्रं<sup>१०</sup> गी<sup>११</sup>र्भिर्म<sup>१२</sup>दता<sup>१३</sup> वस्वो<sup>१४</sup> अ<sup>१५</sup>र्णवम् ।

यस्य<sup>१६</sup> द्यावो<sup>१७</sup> न वि<sup>१८</sup>चरन्ति<sup>१९</sup> मानुषं<sup>२०</sup> भुजे<sup>२१</sup> मंहिष्ठमभि<sup>२२</sup> विप्रमर्चत ॥

१. अ५भि५त्वा५२३म्३मे५षं५पु५रु५हू५त५  
इं५द्र५ङ्गी५र्भा५२यि५ः । म५रदता५२व५स्वा५३आ५र्णवम् ।  
ओ५२३४ । हा५३हो५२ यि५२ । य५स्य५२द्या५२वो५२न५वि५च५रं५२  
ती५३मा५नु५षम् । ओ५२३४ । हा५३हो५२यि५२ । भु५रजे५म५२हि५ष्ठ५२  
म५भि५वि५प्र५म५र्च५२त५२ । दुरा५२ । ति५३ना५२३४ औ५हो५  
वो५ । ऊ५३२३४पा५ ॥ १८ ॥



ऋषिः—सव्य आङ्गिरसः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

३७७. <sup>२३</sup>त्यं <sup>३ १ २</sup>सु <sup>३ १ २</sup>मेषं <sup>३ १ २</sup>महया <sup>२२ ३ १ २</sup>स्वर्विदं <sup>३ १ २</sup>शतं <sup>२</sup>यस्य <sup>३ १ २</sup>सुभुवः <sup>३ १ २</sup>साकमीरते ।  
<sup>२ ३ १</sup>अत्यं <sup>२२</sup>न <sup>३ २ ३ २ ३ १ २</sup>वाजं <sup>३ १ २</sup>हवनस्यदं <sup>३ १ २</sup>रथमिन्द्रं <sup>३ १ २</sup>ववृत्यामवसे <sup>३ १ २</sup>सुवृक्तिभिः ॥

१. त्य५५सूर३मे४षं५म४ह४या५ । सु२वर२व्वायिदा४रुम२ ।  
 श२तं२य२स्य२सु२भु२वर२स्सा२रका२३मायिरा२ऽता४रुयिर ।  
 अ२त्य२न्न२वा२रज२२ह२वर२न२स्या२३दा२रा२ऽथा४रुम२ ।  
 आयिंद्रं२ । व२वृत्या२म । वसाये२३ । सू२रुव्रे३२३४औ५  
 हो५वा५ । क्ती३२३४ भी५ः ॥ १९ ॥

ऋषिः—भरद्वाजः ॥ देवता—द्यावापृथिवी ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

३७८. <sup>३ १ २ ३ १ २</sup>घृतवती <sup>३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २</sup>भुवनानामभिश्चियोर्वी <sup>३ १ २</sup>पृथ्वी <sup>३ २ ३ १ २</sup>मधुदुधे <sup>३ १ २</sup>सुपेशसा ।  
<sup>१ २ ३ १ २२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २</sup>द्यावापृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्कभिते अजरे भूरिरेतसा ॥

१. घृ४त३व५ । ता४ऽ३यि३भु२व३ना४ना५म५ । अ५भि५श्रि५-  
 या५ । उ२व्वी३पृथ्वी३मधुदुधे३सुपेशसा३२३होयि । द्या॒वा॒पृथि॒वी  
 वरुणा । स्या॒रध॒र्मणा३२३ । होयि । वि॒रष्का॒भा३२३यि३ते२ ।  
 आ॒जरे२ । भू॒रि । रा॒ये२३ । त३सा२उ२वा२३ । ए२३ । इंदु२स२  
 मु२द्रमुर्वि२रया॒विभा॒रती३२३४५ ॥ २० ॥

२. घृ५त४व५ती५भु४व५ना५म५ । भा४ऽ५यि५ । श्रि५या४उ२  
 व्वी३पृथ्वी३मधुदुधे३सुपेशा४रुसा । द्या॒वा॒पृथि॒वीवरुणा । स्या॒र  
 ध॒र्मणा । वा॒यिष्क२भि२तायि । अ२जरे२इभूरि । रा॒ये२३ । त३  
 सा२उ२वा२३ । इंदु२स२मु२द्रमुर्वि२रया॒विभा॒रती३२३४५ ॥ २१ ॥

ऋषिः—मेधातिथिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—महापङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

३७९. उभे<sup>३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २</sup> यदिन्द्र रोदसी आपप्राथोषाइव । महान्तं त्वा महीनां सम्राजं<sup>३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २</sup>  
चर्षणीनाम् । देवी<sup>३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २</sup> जनित्र्यजीजनद्भद्रा जनित्र्यजीजनत् ॥

१. उ५ भे४य४दि५द्र५रो४द५सा४यि४ । आ५२३पा२ । प्राथउ२-  
षा२३५उवा५२३ । इ२व३आ२ । म२हान्तंत्वामाहायिना२मू२ ।  
संम्रौ३हो२ । जञ्चऋष२णा२३५उवाये२३ । ना२३मा२ । दे२-  
वीजनित्रियाजी२५जाना४रुत्२ । भद्रौ३हो२ । जानित्रि२य२-  
जा२३५उवा५२३ । ए२३ । ज२न२दा३५२ ॥ २२ ॥

ऋषिः—कुत्सः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

३८०. प्र मन्दिने<sup>२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २</sup> पितुमदर्चता वचो यः कृष्णगर्भा<sup>३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २</sup> निरहन्नृजिश्वना ।  
अवस्यवो<sup>३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २</sup> वृषणं वज्रदक्षिणं मरुत्वन्तं सख्याय हुवेमहि ॥

प्र२मं२दा३२३४यि४ने५ । पि२तु२म२दा२३च्चा४५३ता२ुव३-  
च५ः ॥ यष्का२३ओ५२३४वा५ । ष्णगर्भा२नि२रह२न्नृ२-  
जिश्वना२३ । अ२व२ स्या३२३४वा५ः । वृष२णं२वा । ज्राद२-  
क्षा३२३४यि४णा५म् । मारौ२वा२ुओ३२३४वा५ । त्वं४तः४  
स४ख्या४य४हु४वा४५यि५ म५हा५उ५ । वा५ ॥ २३ ॥

ऋषिः—नारदः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

३८१. इन्द्र सुतेषु<sup>१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २</sup> सोमेषु<sup>३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २</sup> क्रतुं पुनीष उक्थ्यम् ।  
विदे<sup>३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २</sup> वृधस्य दक्षस्य महां हि षः ॥

१. इ५द्रा४ । सु२ते२षुसो२मे । षु२ । होई४रु । हो५ । वा२रहोयि ।  
क्रतुंपुनीष उक्थियाम् । वि२दायिवा२५र्द्धा५२३ । स्या२३

दाक्षार३स्या२ । महाऽ२३हि३षार३४ऽ३ः । ओऽ२३४५यि५ ।  
डा५ ॥ २४ ॥

२. इं३द्रा२३होयि । ह३वे२३होयि । सु२तेषुसोमेषुक्रतुंपुनीष-  
उक्थियाम् । वि२दायिवा२ऽब्दा४२ु । स्य२द२क्षस्या । मा२३  
हाऽ४हि५ । षा३२३४५ः ॥ २५ ॥

३. इं५द्र५सु५ते५षु५सो५मे४षू५ । क्रतू४२ुम्पुनायि । ष२उ२-  
क्थियाम् । वि२दे२वाब्दा४२ु । स्य२द२क्षस्या । म२हा२ऽ२  
हायिषा४२ुः । महाऽ२३हि३षार३४ऽ३ः । ओऽ२३४५यि५ ।  
डा ॥ २६ ॥

ऋषिः — गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — उष्णिक् ॥

स्वरः — ऋषभः ॥

३८२. तमु<sup>१ २ ३ १ २२</sup> अभि प्र गायत पुरु<sup>३ १ २ ३ २</sup> हूतं पुरु<sup>१ २ ३ १ २ ३ १ २२</sup> ष्टुतम् । इन्द्रं गीर्भिस्तविषमा विवासत ॥

१. हा५उ५त५मू५व५भी५ । प्र२गा२यता । हा५उ५ । पुररू२हु३२-  
३४ता५म् । पुररू२ष्टुताम् । हा५उ५ । इं२द्रं२गा३२३४-यि४  
भी५ः । त२वायिषाऽ२३मा२३४ । हा५उ५ । वि३वा२३सा४ऽ५  
ता५६५६ । दी३२३४वी५ ॥ २७ ॥

२. ता३ऽ४मू५व५भि५ । हो२ुयि२ु । प्र३गा४य४ता५६ए५ । पुररू  
हू२३ता२म् । पुररूष्टू२३ता२३म् । पुरुऽ२ुष्टू३२३४ता५म् ।  
इं२द्राङ्गी२३र्भा२यि२ः । त२वायिषा२३मा२ । वि२वासा२३-  
ता२३ । विवाऽ२ुसा३२३४ता५ । आयिंद्रा२३४म् । गी३र्भा-  
२३यि३ः । तविषम् । आ । विवाऽ२३हा२३ । साता२ुओ-  
३२३४वा५ । ऊ३२३४५ ॥ २८ ॥

३. त॒प॒मू॒४५३अ॒र॒भि॒३प्र॒४गा॒४य॒५ता॒५ । पु॒र॒रू । हू॒तं॒पु॒रू॒४रु॒ष्टूता॒४रु॒  
म॒२ । इ॒ं॒र॒द्रा॒४रु॒ं॒२गा॒यि॒र्भी॒४रुः । त॒र॒वि॒षा॒५२३४मा॒५ । वि॒र॒वा॒५  
२३ । सा॒५रु॒ता॒३२३४अ॒५हो॒५वा॒५ । ओ॒३२३४ का॒५ः ॥ २९ ॥
४. त॒प॒मू॒४५३अ॒र॒भि॒३प्र॒४गा॒४य॒५ते॒५दा॒५म् । पु॒र॒रू । हू॒तं॒पु॒रू॒४रु॒  
ष्टूता॒४रु॒म॒२ । आ॒यि॒ंद्र॒ङ्गी॒२र्भि॒२स्तर॒वि॒ष॒२मा॒२ । वि॒र॒वा॒सा॒२५  
ता॒४रु । आ॒यि॒ंद्रं॒गा॒२३४५यि॒५ । भा॒३२३४५यि॒५ः । त॒र॒वा॒यि॒  
षा॒५२३मा॒२३ । वा॒५रु॒यि॒रु॒वा॒३२३४अ॒५हो॒५वा॒५ । स॒र॒त॒र  
ए॒३२३४५ ॥ ३० ॥

ऋषिः—गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥

स्वरः—ऋषभः ॥

३८३. तै॒ ते॒ म॒दं॒ गृ॒णी॒म॒सि॒ वृ॒ष॒णं॒ पृ॒क्षु॒ सा॒स॒हि॒म् ।

उ॒ लो॒क॒कृ॒तु॒म॒द्रि॒वो॒ ह॒रि॒श्रि॒य॒म् ॥

१. तं॒४ते॒४५५म॒५द॒५म् । गृ॒४णी॒४५५[ म॒५ ]सि॒५ । वृ॒र॒षा ।  
णं॒पृ॒क्षूसा॒सा॒४रु॒हायि॒म् । उ॒लो॒का । कृ॒तु॒म॒द्रा॒यि । वो॒हा॒५२३  
री॒२३ । श्री॒५२३या॒२३४५३म् । ओ॒५२३४५यि॒५ । डा॒५ ॥ ३१ ॥
२. ता॒३५४न्ते॒५ । हो॒रु॒यि॒रु । म॒३दं॒४गृ॒४णी॒४म॒४सी॒५६ए॒५ । वृ॒र॒षा॒  
हो॒४रु । णं॒पृ॒क्षसा॒२५सा॒ही॒४रु॒म॒२ । उ॒र॒लो॒२क॒२कृ॒२तु॒म॒ द्रि॒वो  
हा॒२५री॒४रु । श्रि॒र॒या॒म् । अ॒५२३हो॒४वा॒५ । हो॒४५५यि॒५ ।  
डा ॥ ३२ ॥
३. तं॒५ते॒५म॒५दं॒५गृ॒५णी॒५म॒५सी॒५६ए॒५ । वृ॒र॒षाअ॒२३हो॒२३४ ।  
णं॒४पृ॒क्ष॒४सा॒५स॒५ही॒४म् । उ॒र॒लाअ॒२३हो॒२३४ । क॒४कृ॒५  
तु॒४म॒५द्रि॒वा॒४ः । ह॒र॒गे॒५२३४वा॒५ । श्रा॒४५५यो॒५६हा॒५ यि॒५ ॥ ३३ ॥

४. तं४ते४म४दा४ऽप४गृ४णी४म४सा४यि४ । वारिषणं२पृ२ ।  
क्षुरसासा२३ ही२३म्३ । होवा२३हा२यि२ । उलो । का२३  
क्रे२३ । होवा२३हा२ । तुर२ऽऽ२३ । द्रा२रुयिरुवा३२३४अ॒प  
हो॒पवा॒प । हरि२श्रिया२३४प॒म् ॥ ३४ ॥

[ इति ] अर्द्धप्रपाठकः ॥

ऋषिः—पर्वतः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

३८४. यत्सोममिन्द्र विष्णावि यद्वा घ त्रित आप्त्ये ।  
यद्वा मरुत्सु मन्दसे समिन्दुभिः ॥

१. यत्सो॒प॒म॒मि॒न्द्र॒वि॒ष्णा॒वी॒प । यद्वा॒घ॒त्रि॒त॒आ॒प्ति॒या॒यि ।  
य॒र॒द्वा॒र॒म॒रु॒त्सु॒र॒मा॒इ॒न्दा॒सो॒ऽ२३४हा॒प॒यि॒प । सा॒ऽरु॒मा॒३२  
३४अ॒प॒हो॒प॒वा॒प । ए॒२३ । दु॒भी॒३२३४पः ॥ १ ॥

२. यत्सो॒म॒मा॒ऽप॒यि॒न्द्र॒वि॒ष्णा॒वा॒यि॒४ । य॒र॒द्वा॒घा॒त्रि॒त  
आ॒प्ता॒रु॒या॒यि । य॒र॒द्वा॒मा॒रु॒त्सु॒मा । दा॒सा॒ये॒२३ । सा॒ऽरु॒मा॒३-  
२३४ । अ॒प॒हो॒प॒वा॒प । दू॒३२३४भी॒पः ॥ २ ॥

३. हा॒प॒ओ॒प॒हा॒प॒यत्सो॒प॒म॒मा॒प । द्रा॒ऽरु॒वा॒३२३४अ॒प॒हो॒प॒वा॒प ।  
ष्णा॒३२३४वी॒पः । यद्वा॒र॒घ॒त्रि॒त॒आ॒र॒प्ति॒र॒ये । यद्वा॒म-  
रु॒त्सु॒मा॒ऽ२३हो॒ऽदा॒सा॒रु॒यि॒२ । समा॒ऽ२३हो॒ये॒२३ । दु॒र॒भि॒र  
रो॒३२३४प॒यि॒प । डा॒प ॥ ३ ॥

४. अ॒३हो॒२३यि॒ । अ॒ऽरु॒हो॒३२३४वा॒प । य॒र॒त्सो॒र॒म॒मी॒२३  
न्दा॒ऽ३वि॒र॒ष्णा॒३वा॒प॒यि॒प । अ॒३हो॒२३यि॒ । अ॒ऽरु॒हो॒३२३४  
वा॒प । य॒र॒द्वा॒र॒घ॒त्री॒२३ता॒ऽ३आ॒रु॒प्ति॒३या॒प॒यि॒प । अ॒३हो॒२३

यि । अऽरुहो३२३४वा५ । य२द्वारम२रू२३त्सू४ऽ३ मं२द३  
सा५यि५ । अ३हो२३ऽयि । ओअऽरुहो३२३४५वा५६ ५६ ।  
समिंदुभी३२३४५ः ॥ ४ ॥

ऋषिः—विश्वमना वैयश्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥

स्वरः—ऋषभः ॥

३८५. ए<sup>२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २</sup>दु मधोर्मदिन्तरं सिञ्चाध्वर्यो अन्धसः ।

ए<sup>३ २ ३ ३ १ २ २ ३ १ २</sup>वा हि वीर स्तवते सदावृधः ॥

१. ए३दु४म४धो५ः । म३दा२३ऽरुयि२रुन्ता३२३४रा५म् । सिं२  
चाध्वर्यो अंधसाऽरुः । धा३२३४सा५ः । ए२वाहिवीर-  
स्तावताऽरुयि२ । वा३२३४ता५यि५ । स३दा२३वा४ऽ५ ।  
ब्दा५६५६ः ॥ ५ ॥

२. ए४दु४म४धौ४हो४ऽ५र्म५दि५त४रा४म्४ । सिं२चाहो४रु  
यि२ । अध्वर्यो अन्धासा४रुः । आयिवा२ऽहिवी४रु । रा४रु  
स्तवतायि । स२दावृ । धा । अ२३हो४वा५ । हो४ऽ५यि५ ।  
डा५ ॥ ६ ॥

ऋषिः—विश्वमना वैयश्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥

स्वरः—ऋषभः ॥

३८६. ए<sup>२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २</sup>न्दुमिन्द्राय सिञ्चत पिबाति सोम्यं मधु ।

प्र<sup>१ २ २ ३ २</sup>राधांसि चोदयते महित्वना ॥

१. ए३ऽ४न्दु५मि५ । न्द्रा४ऽ३या२३सिं४च४ता५ । पिबा३रुति२सो२  
म्यंमधु२ । प्र२रा॒धा२३३सी२ । चोदयतायिमा२३ही२ । त्व२  
ना । अ२३हो४वा५ । हो४ऽ५यि५डा५ ॥ ७ ॥

ऋषिः — विश्वमना वैयश्वः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — उष्णिक् ॥ स्वरः — ऋषभः ॥

३८७. एतो<sup>२ ३</sup> न्विन्द्रं<sup>२ ३</sup> स्तवाम<sup>१ २ ३</sup> सखायः<sup>१ २ ३</sup> स्तोम्यं<sup>२ ३</sup> नरम्<sup>१ २</sup> ।  
कृष्टीर्यो<sup>३ १</sup> विश्वा<sup>२ २</sup> अभ्यस्त्येक<sup>३ २</sup> इत् ॥

१. ए॒पतो॒प॒न्वि॒प॒द्र॒प॒ऽप॒स्त॒प॒वा॒प॒द॒मा॒प॒ । सा॒खा॒र॒य॒र॒स्तो॒ऽरु॒ ।  
मि॒श्या॒र॒३४५॒म्प॒ । न॒रमा॒कृ॒र॒ष्टी॒र्यो॒वि॒श्व॒ा॒र॒अ॒भि॒र॒ । आ॒ ।  
स्ति॒या॒ये॒र॒ । का॒ई॒ऽरु॒दा॒३२३४अ॒प॒हो॒प॒वा॒प॒ । ऊ॒३२३४५ ॥ ८ ॥

ऋषिः — नृमेधः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — उष्णिक् ॥ स्वरः — ऋषभः ॥

३८८. इन्द्राय<sup>१ २ ३</sup> साम<sup>१ २</sup> गायत<sup>३ १ २</sup> विप्राय<sup>३ २ ३ २</sup> बृहते<sup>३ २ ३ २</sup> बृहत् ।  
ब्रह्मकृते<sup>३ १ २</sup> विपश्चिते<sup>३ १ २</sup> पनस्यवे ॥

१. इ॒प॒द्रा॒प॒य॒प॒सा॒प॒ । मा॒गा॒य॒र॒त॒र॒ । वा॒यि॒प्रा॒र॒ऽया॒ब॒४रु॒ । हा॒ते॒बृ॒र॒  
ह॒र॒त्त॒र॒ । ब्रा॒ह्म॒कृ॒ते॒४रु॒ । वि॒र॒ । पा॒ऽर॒३ः॒ । चा॒ऽरु॒यि॒रु॒ता॒३२३४  
अ॒प॒हो॒प॒वा॒प॒ । प॒र॒न॒र॒स्य॒वे॒ऽर॒३४५ ॥ ९ ॥

२. इ॒ं॒३॒द्रा॒र॒३४॒ । य॒४सा॒४म॒४ । गा॒प॒या॒प॒द॒ता॒प॒ । वा॒यि॒प्रा॒र॒य॒र॒बृ॒ऽरु॒ ।  
ह॒३ता॒र॒३४५॒यि॒प॒ । ब्रे॒३२३४हा॒प॒त्प॒ । ब्र॒ह्म॒र॒कृ॒ते॒र॒वि॒र॒प॒र॒-  
शि॒च॒ते॒र॒ । ओ॒ये॒र॒३ । पा॒ऽरु॒ना॒३२३४अ॒प॒हो॒प॒वा॒प॒ । स्या॒३२-  
३४वे॒प॒ ॥ १० ॥

३. अ॒र॒हो॒हो॒यि॒ । अ॒र॒३हो॒४ऽ३यि॒३ । ओ॒र॒३ऽर॒३४५॒वा॒प॒द॒प॒द॒ ।  
इ॒ं॒द्रा॒र॒य॒र॒सा॒मगा॒र॒य॒र॒त॒र॒ । वि॒प्रा॒र॒य॒र॒बृ॒र॒ह॒र॒ते॒बृ॒र॒ह॒त् ।  
ब्र॒ह्म॒र॒कृ॒ते॒र॒वि॒र॒प॒र॒शि॒च॒ते॒र॒ । अ॒र॒हो॒हो॒यि॒ । अ॒र॒३हो॒४ऽ३  
यि॒३ । ओ॒र॒३ऽर॒३४५॒वा॒प॒द॒प॒द॒ । ए॒र॒३ । प॒र॒न॒र॒स्य॒वे॒ऽर॒३  
४५ ॥ ११ ॥

ऋषिः—गोतमः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

३८९. य एक इद्विदयते वसु मर्ताय दाशुषे ।

ईशानो अप्रतिष्कृत इन्द्रो अङ्ग ॥

१. य॒प॒ए॒प॒क॒प॒इ॒प॒दि॒प॒हा॒प॒हा॒प॒उ॒प॒ । वि॒र॒द॒य॒ता॒यि॒ । व॒सु॒मा॒ऽ॒र॒३  
त्ता॒र॒ । य॒र॒दा॒शु॒षा॒यि॒ । ई॒शा॒नो॒ऽ॒र॒३आ॒र॒ । प्रा॒र॒ति॒ष्कु॒ता॒र॒३ऽ  
उ॒वा॒ऽ॒र॒३ । ई॒३ २३४न्द्रा॒पः । अं॒र॒गा । अ॒र॒३हो॒४वा॒प॒ । हो॒४प॒  
यि॒प॒ । डा॒प॒ ॥ १२ ॥

२. या॒३२३४ए॒प॒ । का॒३२३४ई॒प॒त्प॒ । वी॒र॒दा॒रु॒या॒३२३४ता॒प॒यि॒प॒ ।  
वा॒सु॒र॒म॒र॒त्ता॒ऽ॒र॒३हा॒र॒३ । या॒दा॒रु॒शू॒३२३४षा॒प॒यि॒प॒ ।  
आ॒यि॒शा॒र॒नो॒२अ॒ । प्र॒र्ता॒ऽ॒र॒३हा॒रु॒यि॒रु॒ । ष्कू॒३२३४ता॒पः ।  
आ॒यि॒न्द्रो॒२अ॒र॒ । गा॒ऽ॒रु॒ । या॒३२३४अ॒प॒हो॒प॒वा॒प॒ । ई॒३२३४  
न्द्रा॒पः ॥ १३ ॥

३. य॒प॒ए॒प॒क॒प॒ । इ॒प॒द्वि॒प॒दा॒प॒या॒प॒द॒ता॒प॒यि॒प॒ । वा॒सु॒म॒र्ता॒या॒र॒३दा॒र॒ ।  
हुँ । शू॒३२३४षा॒प॒यि॒प॒ । आ॒यि॒शा॒र॒नो॒२अ॒प्र॒ति॒र॒ष्कु॒र॒त॒रः ।  
आ॒यि॒शा॒रु॒ । नो॒३अ॒३प्र॒र॒ता॒यि॒ । ष्कू॒३२३४ता॒पः । आ॒यि॒न्द्रो॒२  
अ॒र॒ । गा॒ऽ॒रु॒या॒३२३४अ॒प॒हो॒प॒वा॒प॒ । ई॒३२३४न्द्रा॒पः ॥ १४ ॥

ऋषिः—विश्वमना वैयश्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

३९०. सखाय आ शिषामहे ब्रह्मोन्द्राय वज्रिणे ।

स्तुष ऊ षु वो नृतमाय धृष्णवे ॥

१. स॒प॒खा॒प॒य॒प॒आ॒प॒हा॒प॒ओ॒प॒ । शि॒३षा॒र॒३म॒४हे॒४हा॒प॒उ॒प॒ । ब्र॒ह्मा॒र॒३  
इं॒४द्रा॒४हा॒प॒उ॒प॒ । य॒र॒व॒ज्रि॒णा॒यि॒ । स्तू॒षऊ॒षू॒३हा॒र॒ यि॒र॒ ।  
वो॒नृ॒त॒मा॒ऽ॒र॒३हा॒र॒ । य॒र॒धा॒ऽ॒र॒३ । ष्णा॒ऽ॒रु॒वा॒३२३४अ॒प॒ हो॒प॒  
वा॒प॒ । ऊ॒३२३४पा॒प॒ ॥ १५ ॥



२. स॒ऌख्रा॒प॒य॒प॒आ॒ऌशि॒षा॒प॒म॒प॒ । हा॒ऌयि॒ऌ । ब्र॒प॒ह्ये॒प॒द्रा॒प॒-  
य॒प॒व॒प॒ज्जि॒प॒णो॒ऌवा॒प॒ । आ॒यिती॒र॒ऌवा॒र॒ऌ । हो॒वा॒र॒ऌहा॒र॒ऌ ।  
हा॒रु॒यि॒रु । स्तु॒ऌष॒ऌ ऊ॒र॒षू॒ऌर॒ऌ॒ऌ । वो॒ऌहो॒ऌहा॒प॒यि॒प॒ । ना॒र्त्ता॒र॒ऌ  
मा॒र॒ऌ । हो॒वा॒र॒ऌहा॒र॒ऌ । हा॒र । य॒र॒धा॒ऌर॒ऌ । ण्णा॒ऌरु॒वा॒ऌर॒ऌ॒ऌ  
अ॒प॒हो॒प॒वा॒प॒ । ई॒ऌर॒ऌ॒ऌ॒ऌ ॥ १६ ॥

३. सा॒ऌऌख्रा॒प॒य॒प॒ः । आ॒ऌशि॒ऌषा॒प॒ । मा॒र॒ऌहा॒ऌयि॒ऌ । ब्र॒ऌह्ये॒ऌ  
द्रा॒प॒य॒प॒व॒प॒ज्जि॒ऌणो॒ऌ । हा॒ऌयि॒ऌ । स्तु॒ऌष॒र॒ऊ॒र॒षु॒र॒वो॒ऌ  
ना॒र्त्ता॒मा॒रु । या॒ऌर॒ऌ॒ऌधृ॒प॒ । हा॒र॒ऌहा॒र॒यि॒र । वो॒र॒ना॒र्त्ता॒मा॒रु ।  
या॒ऌर॒ऌ॒ऌधृ॒प॒ । हा॒र॒ऌहा॒र । ण्ण॒वा॒ऌयि॒ऌ । अ॒र॒ऌहो॒रु । अ॒ऌहो॒ऌ  
वा॒र । ण्ण॒र॒वा॒ऌयि॒ऌ । अ॒र॒ऌहो॒रु । अ॒ऌहो॒ऌवा॒र॒ऌ॒ऌ । अ॒प॒हो॒प॒  
वा॒प॒ऊ॒र॒ऌर॒ऌ॒ऌवा॒प॒ ॥ १७ ॥

ऋषिः—प्रगाथः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

३९१. गृ॒णो॒ तदिन्द्र॒ ते शव॒ उपमा॑ दे॒वता॑तये ।

यद्धं॑सि वृ॒त्रमो॑जसा श॒चीप॑ते ॥

१. हा॒ऌउ॒ऌगृ॒ऌणा॒प॒यि॒प॒ । त॒ऌदा॒र॒ऌयि॑ऌद्रा॒ऌता॒प॒यि॒प॒ । श॒वा॒ऌर॒ऌऌ  
र॒ऌः । उ॒ऌपा॒र॒ऌमा॒ऌन्दे॒प॒ । व॒र॒ता॒त॒या॒यि॒ । यद्धं॑सा॒ऌर॒ऌ  
यि॒ऌवा॒रु । त्र॒ऌमो॒र॒ऌजा॒ऌसा॒प॒ । शा॒ऌची॒प॒ । प॒ते॒र । अ॒ऌर॒ऌहो॒ऌ  
वा॒र॒ऌ॒ऌ । अ॒प॒हो॒प॒वा॒प॒ । द्यू॒ऌर॒ऌ॒ऌभी॒प॒ः ॥ १८ ॥

२. गृ॒प॒णो॒प॒ । त॒ऌदा॒र॒ऌ॒ऌ । अ॒ऌहो॒ऌऌप॒यि॒प॒द्र॒प॒ते॒प॒श॒ऌवा॒ऌः ।  
उ॒प॒मा॒न्दे॒व॒र॒ता॒ता॒ऌर॒ऌया॒र॒ऌऌयि॒ऌ । य॒ऌद्धा॒र॒ऌऌऌसि॒ऌवा॒र ।  
त्र॒र मो॒र॒ज॒सा । शा॒र॒ऌची॒ऌप॒प॒ । ता॒ऌर॒ऌ॒ऌप॒यि॒प॒ ॥ १९ ॥

३. गृ४णो४त४दौ४हो४ऽप॒यि॒प॒द्र॒प॒ते॒प॒श॒वा॒प॒उ॒प॒मा॒र॒दे॒र॒व॒ता॒र॒  
त॒र॒ये॒र॒। उ॒प॒मा॒र॒न्दे॒र॒। व॒र॒ता॒ता॒ऽर॒३या॒र॒यि॒र॒। य॒ब्ध॒ः॒सि॒र॒वृ॒र॒।  
त्र॒मो॒ऽर॒३ज॒३सा॒र॒उ॒र॒। वा॒र॒३। शा॒३२॒३४ची॒प॒। पा॒३२॒३४ता॒प॒  
यि॒प॒। हो॒३२॒३४प॒यि॒प॒। डा॒प॒॥ २० ॥

ऋषिः — भरद्वाजः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — उष्णिक् ॥ स्वरः — ऋषभः ॥

३९२. य॒स्य॒<sup>२ ३ १</sup> त्व॒च्छ॒म्ब॒रं॒<sup>२२ ३ २ ३ १ २</sup> म॒दे॒ दि॒वो॒दा॒सा॒य॒ र॒न्ध॒य॒न्॒।  
अ॒यं॒<sup>३ १</sup> स॒ सो॒म॒ इ॒न्द्र॒ ते॒ सु॒तः॒<sup>२२ ३ १ २२</sup> पि॒ब॒॥

१. य॒३स्या॒२३ऽ। त्व॒३छा॒२३ऽ२३४म्। ब॒४र॒प॒म्४। मा॒२३दा॒रु॒  
यि॒रु॒। दि॒३ वो॒२३ऽदा॒३सा॒२३ऽ२३४। य॒४र॒प॒। धा॒२३या॒रु॒नृ॒रु॒।  
अ॒३या॒२३ऽम्। स॒३सो॒२३ऽ२३४। म॒४इ॒प॒। द्रा॒२३ता॒रु॒यि॒रु॒।  
सु॒३ता॒२३ऽः। पि॒३बा॒२३। ओ॒ऽ२३४वा॒प॒। ऊ॒३२३४  
पा॒प॒॥ २१ ॥

२. य॒४स्य॒४त्य॒४छा॒४ऽप॒म्ब॒प॒रं॒प॒म॒४दा॒४यि॒४। दि॒वो॒दा॒सा॒य॒  
र॒न्ध॒य॒न्। आ॒र्य॒ः॒स॒सो॒२३। म॒४इ॒प॒। द्र॒३ता॒२३यि॒३। सू॒ऽरु॒ता॒३२  
३४अ॒प॒हो॒प॒वा॒प॒। पी॒३२३४बा॒प॒॥ २२ ॥

३. य॒प॒स्य॒प॒त्या॒२३छा॒४म्४ब॒प॒रं॒४म॒४दा॒प॒यि॒प॒। दि॒वो॒र॒दा॒२  
सा॒य॒र॒न्ध॒य॒न्। आ॒र्य॒ः॒स॒सो॒२३। म॒४इ॒प॒। द्र॒३ता॒२३यि॒३।  
सु॒त॒२आ॒ऽ२३ः। पा॒ऽरु॒यि॒रु॒बा॒३२३४अ॒प॒हो॒प॒वा॒प॒। ई॒३२-  
३४ती॒प॒॥ २३ ॥

४. या॒३ऽ४स्य॒प॒त्य॒प॒त्प॒। हो॒रु॒यि॒रु॒। श॒३म्ब॒३र॒४म्म॒४दा॒प॒६ए॒प॒।  
दि॒र॒वो॒र॒दा॒२सा॒२य॒२र॒न्ध॒२य॒२त्र॒या॒ः॒सा॒२३सो॒४। म॒४इ॒प॒।  
द्र॒३ता॒२३४। अ॒प॒हो॒प॒वा॒प॒। सू॒३२३४ता॒प॒ः। पि॒३बो॒३२-  
३४प॒यि॒प॒। डा॒प॒॥ २४ ॥

ऋषिः—नृमेधः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

३९३. <sup>१ २</sup>एन्द्र नो गधि <sup>३ १ २</sup>प्रिय सत्राजिदगोह्य । <sup>३ २ ३</sup>गिरिर्न <sup>३ १ २</sup>विश्वतः <sup>३ १</sup>पृथुः <sup>२ १ ३ २</sup>पतिर्दिवः ॥

१. ए०४द्र५ना४ः । ग२धिप्रा०२३या२ । सात्राजि२त्त् । अ२गोहा०  
२३या२३४ । गि३रा२३४यि४र्न३वा२यि२ । श्व२ताष्यार्थू२३ः ।  
पा०२ुता३२३४अ५हो५वा५ । दी३२३४वा५ः ॥ २५ ॥

२. ए०४द्र४नो४०५ग५धि५प्रा४या४ । सात्राजि२त्त् । अ२गोहायौ२ ।  
हो२३वा२ । गि२रायिर्न२वौ२ । हो२३वा२ । श्व२ता०२३ः ।  
पा०२ुर्थू३२३४अ५हो५वा५ । पति२ुर्दि३वा२००ः ॥ २६ ॥

ऋषिः—पर्वतः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

३९४. <sup>१ २</sup>य इन्द्र <sup>३ १ २ ३ १ २</sup>सोमपातमो <sup>३ १ २</sup>मदः <sup>३ १ २</sup>शविष्ठ चेतति ।

<sup>२ ३ २ ३ २ ३ १ २</sup>येना हंसि न्या३त्रिणं तमीमहे ॥

१. य४इ०४द्र५ । सो५मापा०२३ता४मा५ः । म२दा०श२वायि । ष्ठ२  
चे२ततायि । यायिना२३हा०४सी५ । नि२य२त्रिणाम् । ता२३  
मी४म५ । हा३२३४५यि५ ॥ २७ ॥

ऋषिः—इरिम्बिठिः ॥ देवता—आदित्याः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

३९५. <sup>३ १ २ २ ३ २ ३</sup>तुचे तुनाय <sup>३ १ २ ३ १ २ ३ १ २</sup>तत्सु नो द्राघीय आयुर्जीवसे ।

<sup>१ २ ३ १ २</sup>आदित्यासः <sup>३ १ २</sup>समहसः कृणोतन ॥

१. तु४चे३तु४ना५ । य३ता२३०तुसू३२३४ना५ः । द्रा२घी२ुया३२  
३४यू५ः । जी२वासा४२ुयि२ । आदी४२ुत्यासा४२ुः । सम२  
हसा०२ुः । कृ३णो२३ता४०५ । ना३२३४५ ॥ २८ ॥

ऋषिः — विश्वमनाः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — उष्णिक् ॥ स्वरः — ऋषभः ॥

३९६. वे<sup>२</sup>त्था<sup>३</sup> हि नि<sup>१</sup>र्ऋ<sup>२</sup>तीनां<sup>३</sup> वज्र<sup>१</sup>हस्त<sup>२</sup> परिवृ<sup>३</sup>जम् ।

अ<sup>१</sup>हर<sup>२</sup>हः शु<sup>३</sup>न्ध्युः<sup>१</sup> परि<sup>२</sup>पदा<sup>३</sup>मिव ॥

१. वे<sup>२</sup>त्था<sup>३</sup>पहि<sup>१</sup>नि<sup>२</sup>र्ऋ<sup>३</sup>पती<sup>१</sup>पना<sup>२</sup>म<sup>३</sup> । वाज्र<sup>१</sup>ह<sup>२</sup>स्त<sup>३</sup>प<sup>१</sup>रि<sup>२</sup>वृ<sup>३</sup>जाम् । अ<sup>१</sup>ह<sup>२</sup>र<sup>३</sup>र<sup>१</sup> । हाः । शु<sup>१</sup>न्ध्यु<sup>२</sup>ष्य<sup>३</sup>रि<sup>१</sup>र<sup>२</sup> । पदा<sup>१</sup>र<sup>२</sup>मा<sup>३</sup>प<sup>१</sup>यि<sup>२</sup>प<sup>३</sup>वा<sup>१</sup>प<sup>२</sup>प<sup>३</sup> ॥ २९ ॥

ऋषिः — इरिम्बिठिः ॥ देवता — आदित्याः ॥ छन्दः — उष्णिक् ॥ स्वरः — ऋषभः ॥

३९७. अ<sup>१</sup>पामी<sup>२</sup>वाम<sup>३</sup>प<sup>१</sup> स्त्रि<sup>२</sup>धम<sup>३</sup>प<sup>१</sup> से<sup>२</sup>धत<sup>३</sup> दु<sup>१</sup>र्म<sup>२</sup>तिम् ।

आ<sup>१</sup>दि<sup>२</sup>त्यासो<sup>३</sup> यु<sup>१</sup>यो<sup>२</sup>तना<sup>३</sup> नो<sup>१</sup> अ<sup>२</sup>हसः ॥

१. अ<sup>१</sup>पा<sup>२</sup>मी<sup>३</sup>वा<sup>१</sup>म<sup>२</sup>पा<sup>३</sup> । स्त्रि<sup>१</sup>धा<sup>२</sup>म् । अप<sup>३</sup>से<sup>१</sup>धत<sup>२</sup>दु<sup>३</sup>र्मा<sup>१</sup>र<sup>२</sup>ती<sup>३</sup>र<sup>१</sup>म<sup>२</sup> । आ<sup>१</sup>दी<sup>२</sup>रु<sup>३</sup>त्यासा<sup>१</sup>रुः । यु<sup>१</sup>र्यो<sup>२</sup>तना<sup>३</sup>न<sup>१</sup>ओ<sup>२</sup>वा<sup>३</sup>र<sup>१</sup>ओ<sup>२</sup>र<sup>३</sup>अ<sup>१</sup>प<sup>२</sup> । हा<sup>१</sup>प<sup>२</sup>सो<sup>३</sup>प<sup>१</sup>हा<sup>२</sup>प<sup>३</sup> ॥ ३० ॥

ऋषिः — वसिष्ठः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — त्रिपदा विराडनुष्टुप् ॥ स्वरः — गान्धारः ॥

३९८. पि<sup>२</sup>बा<sup>३</sup> सो<sup>१</sup>ममि<sup>२</sup>न्द्रं<sup>३</sup> मन्<sup>१</sup>दतु<sup>२</sup> त्वा<sup>३</sup> यं<sup>१</sup> ते<sup>२</sup> सु<sup>३</sup>षा<sup>१</sup>व<sup>२</sup> ह<sup>३</sup>र्य<sup>१</sup>श्वा<sup>२</sup>द्रिः ।

सो<sup>१</sup>तु<sup>२</sup>र्बा<sup>३</sup>हु<sup>१</sup>भ्यां<sup>२</sup> सु<sup>३</sup>यतो<sup>१</sup> ना<sup>२</sup>र्वा ॥

१. पि<sup>१</sup>बा<sup>२</sup> । सो<sup>३</sup>ममि<sup>१</sup>न्द्रं<sup>२</sup>मन्<sup>३</sup>दतु<sup>१</sup>त्वा<sup>२</sup>रुः । यं<sup>३</sup>रते<sup>१</sup>सु<sup>२</sup>षा<sup>३</sup>व<sup>१</sup>हरि<sup>२</sup>या । श्वा<sup>३</sup>र<sup>१</sup>र<sup>२</sup>द्री<sup>३</sup>र<sup>१</sup> । सो<sup>३</sup>र<sup>१</sup>तूर<sup>२</sup> । बा<sup>३</sup>हू<sup>१</sup>भी<sup>२</sup>र<sup>३</sup>या<sup>१</sup>र<sup>२</sup>म<sup>३</sup> । सु<sup>३</sup>या<sup>१</sup>रु<sup>२</sup>ता<sup>३</sup>र<sup>१</sup>र<sup>२</sup>अ<sup>३</sup>प<sup>१</sup>हो<sup>२</sup>प<sup>३</sup> वा<sup>१</sup>प । ए<sup>३</sup>र<sup>१</sup>र<sup>२</sup> । ना<sup>३</sup>र्व्वा<sup>१</sup>र<sup>२</sup>र<sup>३</sup> ॥ ३१ ॥

२. हा<sup>१</sup>उ<sup>२</sup>पि<sup>३</sup>बा<sup>१</sup>प । सो<sup>३</sup>ममि<sup>१</sup>न्द्रं<sup>२</sup>मा<sup>३</sup> । दतु<sup>१</sup>त्वा<sup>२</sup>र<sup>३</sup> । दतु<sup>१</sup>त्वा<sup>२</sup>र<sup>३</sup> । यं<sup>३</sup>रते<sup>१</sup>सु<sup>२</sup>षा<sup>३</sup>व<sup>१</sup>हरि<sup>२</sup>या । श्वा<sup>३</sup>र<sup>१</sup>द्री<sup>२</sup>रुः । श्वा<sup>३</sup>द्री<sup>१</sup>रुः । सो<sup>३</sup>र<sup>१</sup>तु<sup>२</sup>र्बा<sup>३</sup>हु<sup>१</sup>भ्याम् । सु<sup>३</sup>यता<sup>१</sup>र<sup>२</sup>र<sup>३</sup> । ना<sup>३</sup>रु<sup>१</sup>र्व्वा<sup>२</sup>र<sup>३</sup>अ<sup>१</sup>प<sup>२</sup>हो<sup>३</sup>प<sup>१</sup>वा<sup>२</sup>प । ई<sup>३</sup>र<sup>१</sup>र<sup>२</sup>र<sup>३</sup> ॥ ३२ ॥

ऋषिः—सोभरिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—ककुबुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

३९९. अ<sup>३</sup>भ्रा<sup>२</sup>तृ<sup>३</sup>व्यो<sup>१</sup> अना<sup>२२</sup> त्वमनापिरिन्द्र<sup>३१२३१२</sup> जनुषा<sup>३</sup> सनादसि<sup>१२</sup> ।  
युधेदापित्वमिच्छसे ॥

१. अ४भ्रा४तृ४व्यो४ऽ५अ५ना५तु४वा४म्४ । अ२ना५पि२रा-  
यिंद्रा४२ । ज२नुषा४२ । स३ना२३४५त्५ । आ३२३४सी५ ।  
यु२धेदा२रपि२ त्वामेछ२से२ । यु३धा२ऽ५ ॥ ३३ ॥

ऋषिः—सोभरिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—ककुबुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

४००. यो<sup>१२३१२३१</sup> न इदमिदं<sup>३१</sup> पुरा<sup>२२</sup> प्र वस्य<sup>३२३१२</sup> आनिनाय<sup>१२३१२३१२</sup> तमु<sup>३</sup> व स्तुषे । सखाय इन्द्रमूतये ॥

१. यो४नो४हा५उ५ । इ२दाम् । इदंपुरा४२३हा२उ२ । प्र२वा । प्रवस्य  
आ४२३हा२यि२ । नि२ना । निना५य तमु वा४२३हा२उ२ ।  
स्तु२षायि । सखाया४२३हा२यि२ । द्र२मूता४२३या२३४ऽ३-  
यि३ । ओ४२३४५यि५ । डा५ ॥ ३४ ॥

२. यो५ना४ऽ३इ२द३मि४दं४पु५रा५यो न इदमिदा२ऽम्पूर३रा२ ।  
प्रवस्यआनिना । य२ता२३मू४ऽ३व२स्तु३षा५यि५ । निना ।  
य२ता२३मू४ऽ३व२स्तु३षा५यि५ । स२खाया४२ुः । आ४२३  
यि३ । द्र३मूर३ता४ऽ५या५६५६यि६ ॥ ३५ ॥

[ इति ] दशमप्रपाठकः ॥

ऋषिः—सोभरिः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—ककुबुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

४०१. आ<sup>१२३१२३१</sup> गन्ता मा रिषण्यत<sup>३१२३१२</sup> प्रस्थावानो माप<sup>३१२</sup> स्थात समन्यवः ।  
दृढा चिद्यमयिष्णवः ॥

१. आ४गं५ता४ । मा२रि२षण्या४२३ता२ । प्रास्थावा२रनो२  
मापस्था२त२ । सामेन्यावा४२ुः । दृढाची२३द्या२३ । म४यो४  
वा५ । ष्णा४ऽ५वो५६हा५यि५ ॥ १ ॥

ऋषिः—सोभरिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—ककुबुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

४०२. आ<sup>१ २ ३ २ ३</sup> या<sup>३ १</sup> ह्य<sup>२ ३</sup> यमिन्दवे<sup>१ २ ३ १ २</sup> ऽ श्वपते गोपत उर्वरापते । सोमं<sup>१ २</sup> सोमपते पिब ॥

१. आ॒या॒प॒ही॒४ । अ॒र॒य॒मि॒न्द॒वे । श्व॒पा॒ऽ॒र॒३॒ता॒र॒यि॒२ । गो॒प॒त॒२॒उ॒२ ।  
व्वा॒रा॒२॒ऽ॒पा॒ता॒ऽ॒र॒३॒४॒यि॒४ । सो॒३॒मा॒२॒३॒म्॒३ । सो॒मा॒ऽ॒र॒३ । पा॒ऽ॒रु  
ता॒३॒२॒३॒४॒अ॒प॒हो॒प॒वा॒प । पी॒३॒२॒३॒४॒बा॒प ॥ २ ॥

२. आ॒या॒प॒हि॒प॒या॒४ । या॒२॒३॒मा॒यि॒न्दा॒२॒३॒वे॒२ । आ॒श्व॒प॒२॒ते॒२  
गो॒प॒ते । २ । ऊ । व्वा॒रा॒ऽ॒र॒३॒हा॒२॒३॒यि॒३ । पा॒२॒३॒ता॒र॒यि॒२ ।  
सो॒ऽ॒र॒३॒४॒म॒४ हा॒प॒यि॒प । सो । म । प॒ते॒२॒३॒हा॒२॒३॒यि॒३ । पा॒ऽ॒र॒३॒४  
यि॒४वा॒४ । ए॒प॒हि॒प॒या॒प॒६हा॒प । हो॒४ऽ॒प॒यि॒प । डा॒प ॥ ३ ॥

३. आ॒प॒या॒प॒ह्य॒प॒य॒मि॒प॒दा॒प॒६वा॒प॒यि॒प । अ॒२॒श्वा॒पा॒२॒ऽ॒ता॒४॒रु॒यि॒२ ।  
गो॒२॒पा॒ता॒ऊ॒२॒३ । व्वा॒रा॒ऽ॒रु॒पा॒३॒२॒३॒४॒ता॒प॒यि॒प । सो॒म॒२॒सो॒मा॒२॒३॒ऽ ।  
प॒२॒ता॒यि । पि॒बा॒२॒३॒ओ॒ऽ॒र॒३॒४॒वा॒प । ऊ॒३॒२॒३॒४॒पा॒प ।  
ऊ॒४॒पा॒प ॥ ४ ॥

ऋषिः—सोभरिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—ककुबुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

४०३. त्वया<sup>१ २</sup> ह<sup>३ २ ३ १</sup> स्विद्युजा<sup>२२ ३ १ २</sup> वयं<sup>३ १</sup> प्रति श्वसन्तं वृषभ ब्रुवीमहि ।  
संस्थे<sup>३ १</sup> जनस्य गोमतः ॥

१. त्व॒प॒या॒प॒ह॒प॒स्वी॒प॒त्प । यू॒जा॒व॒२॒य॒२॒म् । प्रा॒ति॒श्वा॒सा॒४॒रु ।  
त॒म्बृ॒ष॒२॒भ॒२ । ब्रू॒वी॒२॒ऽ॒मा॒हा॒ऽ॒र॒३॒४॒यि॒४ । स॒२॒३॒स्था॒२॒३॒यि॒३ ।  
जा॒न॒स्य॒२ गो॒ऽ॒र॒३॒४॒वा॒प । मा॒३॒२॒३॒४॒ता॒पः ॥ ५ ॥

ऋषिः—सोभरिः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—ककुबुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

४०४. गावश्चिद्धा<sup>१ २</sup> समन्यवः<sup>३क २२ ३२ ३ १ २</sup> सजात्येन मरुतः<sup>३ १ २ ३ १ २ ३ २</sup> सबन्धवः ।  
रिहते ककुभो मिथः ॥

१. गा॒प॒व॒प॒श्चि॒प॒द्घा॒प॒सा॒प॒६म॒प॒न्य॒प॒वा॒पः । स॒र॒जा॒र॒त्ये॒नम॒रु  
तस्स॒ब॒न्ध॒वाऽ॒र॒३हो॒यि । रि॒र॒ह॒ते॒का॒कू॒र॒३भो॒र । मि॒र॒था । अ॒र॒३  
हो॒४वा॒प । हो॒४ऽप॒यि॒प । डा॒प ॥ ६ ॥

ऋषिः—नृमेधः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—ककुबुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

४०५. त्वं न इन्द्रा भर ओजो नृम्णा शतक्रतो विचर्षणे । आ वीरं पृतनासहम् ॥

१. त्व॒४न्न॒प॒इं॒४ । द्र॒र॒आ॒भाऽ॒र॒३रा॒र । ओ॒जो॒नृ॒र॒म्णा॒र॒मृ॒र । शा॒त  
क्र॒ता॒र॒३उ॒३ । वी॒च॒र॒ऋ॒र॒षा॒३॒र॒३४णा॒प॒यि । आ॒वी॒रं॒पा॒र॒३  
हा॒र॒३ । ताऽ॒रु॒ना॒३॒र॒३४अ॒प॒हो॒प॒वा॒प । सा॒३॒र॒३४हा॒प॒म्प ॥ ७ ॥
२. त्व॒४न्न॒प॒इं॒प॒द्रा॒४ । आ॒भाऽ॒र॒३रा॒र । ओ॒जो॒नृ॒र॒म्णा॒र॒मृ॒र । शा॒त-  
क्र॒ता॒र॒३उ॒३ । वी॒च॒र॒ऋ॒र॒षा॒३॒र॒३४णा॒प॒यि॒प । आ॒र॒वी॒राऽ॒र॒३-  
म्पा॒रु । त॒३ ना॒३स॒र॒हाम् । अऽ॒र॒३हो॒४वा॒प । हो॒४ऽप॒यि॒प ।  
डा॒प ॥ ८ ॥

ऋषिः—नृमेधः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—ककुबुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

४०६. अथा हीन्द्र गिर्वण उप त्वा काम ईमहे ससृग्महे ।

उदेव गमन्त उदभिः ॥

१. अ॒४धा॒प॒हि॒प॒या॒४ । द्र॒र॒गि॒र्व्वाऽ॒र॒३णा॒रः । उ॒प॒त्वा॒र॒का॒र ।  
म॒र॒ई॒माऽ॒र॒३हा॒र॒यि॒र । स॒र॒सृ॒ग्माऽ॒र॒३हा॒र॒यि॒र । ऊ॒दे॒४रु ।  
व॒र॒ग्माऽ॒र॒३न्ता॒रः । उ॒दाऽ॒र॒३भा॒र॒यि॒र । इ॒४डा॒४ऽप॒भी॒पः ।  
हो॒४ऽप॒यि॒प । डा॒प ॥ ९ ॥
१. अ॒प॒धा॒प॒ही॒प॒न्द्र॒प॒गि॒प॒व्वा॒प॒६णा॒पः । ऊ॒प॒त्वा॒र॒का॒र । मा॒ई॒र॒ऽ-  
मा॒हा॒४रु॒यि॒र । सा॒सृ॒ग्मा॒हा॒४रु॒यि॒र । ऊ॒दे॒र॒वा॒ग्माऽ॒र॒३ ।  
त॒४ओ॒४वा॒प । दा॒४ऽप॒भो॒प॒६हा॒प॒यि॒प ॥ १० ॥

२. अ॒प॒धा॒प॒ही॒प॒न्द्र॒प॒गि॒प॒र्व॒प॒णा॒प॒द॒ए॒प॒ । उप॒त्वा॒र॒क्का॒र॒माई॒र॒ऽमा॒हा॒र॒३  
यि॒३ । सा॒सृ॒र॒ग्मा॒३२३४हा॒प॒यि॒प॒ । उ॒र॒दौ॒ई॒हो॒र॒३ । वा॒ई॒हा॒र॒३ ।  
ग्मा॒ऽरु॒ । त॒३ऊ॒र॒३४अ॒प॒हो॒प॒वा॒प॒ । द॒र॒भी॒र॒३ रे॒ऽर॒३४प॒ ॥ ११ ॥

ऋषिः—सोभरिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—ककुबुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

४०७. सी॒द॒न्त॒स्ते॒ व॒यो॒ य॒था॒ गो॒श्री॒ते॒ म॒धौ॒ म॒दि॒रे॒ वि॒व॒क्ष॒णे॒ ।  
अ॒भि॒ त्वा॒मि॒न्द्र॒ नो॒नु॒मः॒ ॥ ९ ॥

१. सा॒र॒३४यि॒४ । दं॒४त॒प॒स्ते॒प॒व॒४ । यो॒प॒या॒प॒द॒था॒प॒ । गो॒र॒श्रा॒यि॒ते॒र  
म॒ । धौ॒र॒म॒र॒दि॒रा॒यि॒ । वा॒र॒३यि॒३व॒४क्ष॒प॒ । णा॒३२३४प॒यि॒प॒ । अ॒र  
भि॒त्वा॒मा॒यि॒न्द्रा॒३नो॒४ऽ३ । नू॒र॒३४प॒ । मा॒३२३४प॒ः ॥ १२ ॥
२. सी॒३द॒४न्त॒प॒स्ते॒प॒व॒४य॒प॒ः । य॒३था॒२३ । गो॒ऽर॒३४ । श्री॒४ते॒प॒म॒४  
धौ॒प॒म॒प॒ । दि॒४रा॒प॒यि॒प॒ । वि॒३वा॒२३ । हा॒२३ । क्षा॒ऽर॒३४णा॒प॒-  
यि॒प॒ । अ॒३भी॒२३ । हो॒र॒३यि॒३ । त्वा॒ऽर॒३४मी॒प॒ । द्र॒३नो॒२३ ।  
नू॒ऽर॒३४ मा॒४ः । उ॒प॒हु॒प॒वा॒प॒द॒हा॒प॒उ॒प॒ । वा॒प॒ ॥ १३ ॥

ऋषिः—सोभरिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—ककुबुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

४०८. व॒य॒मु॒ त्वा॒म॒पू॒र्व्य॒ स्थू॒रं॒ न॒ क॒च्चि॒द्भ॒र॒न्तो॒ऽव॒स्य॒वः॒ ।  
व॒ज्रि॒ज्चि॒त्रं॒ ह॒वा॒म॒हे॒ ॥ १० ॥

१. व॒प॒य॒प॒मु॒३त्वा॒रु॒म॒३पू॒४र्वि॒प॒या॒प॒ । स्थू॒र॒र॒न्न॒क॒च्चि॒द्भ॒र॒न्त-  
आ॒वे॒स्या॒ वा॒ऽर॒३४ः । व॒४ज्रि॒प॒न्प॒ । चि॒३त्रा॒३मृ॒३ । हा॒ऽर॒३  
वा॒४ऽ३मा॒३४प॒हो॒प॒द॒हो॒प॒यि॒प॒ ॥ १४ ॥
२. व॒प॒य॒४मु॒प॒त्वा॒४म॒पू॒प॒र्व्य॒प॒स्थू॒प॒र॒४न्न॒४क॒४च्चि॒प॒द्भ॒प॒र॒प॒-  
त॒प॒ः । ओ॒४वा॒प॒ । हा॒२३हा॒रु॒यि॒रु॒ । अ॒३व॒र॒स्या॒वा॒ऽर॒३४प॒ः ।  
हा॒२३हा॒रु॒यि॒रु॒ । व॒३ज्रि॒३ज्चि॒र॒त्रा॒ऽर॒३४प॒म्प॒ । हा॒२३हा॒रु



यि२ । ह३वा२३ । माऽ२३४हा४यि४ । उ५हु५वा५६हा५उ५ ।  
वा५ ॥ १५ ॥

ऋषिः—गोतमः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

४०९. स्वादोरि३त्था वि३षूवतो म३धोः पिबन्ति गौ३र्यः ।

या इ३न्द्रेण स३यावरीवृ३ष्णा म३दन्ति शो३भथा व३स्वी र३नु स्व३राज्यम् ॥

१. स्वा३दो३रि३त्था३वि३षू५ । व३ता२३ः । माऽ२३४ । धो३षि५  
बं५ति५गौ५ । रि३या५ः । या३इ३न्द्रेण२ । स२या३वाऽ२३री२ः ।  
वृ३ष्णा२म३द२ । ति२शो३भाऽ२३था२ । व३स्वायि२रा२ऽनू४२ु ।  
स्वा३रा॒जि२य२म् । इ३डाऽ२३भा२३४ऽ३ । ओऽ२३४५यि५ ।  
डा ॥ १६ ॥

ऋषिः—गोतमः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

४१०. इ३त्था हि सोम इ३न्मदो ब्र३ह्म च३कार व३र्धनम् ।

श३विष्ठ व३ज्रि३न्नो३जसा पृ३थिव्या निः श३शा अ३हिमर्च३न्ननु स्व३राज्यम् ॥

१. इ३त्था५हि५सो५ । म३इ३न्माऽ२३दा२ः । ब्र३ह्म२च२का ।  
र२व३र्द्धाऽ२३ना२म् । श३विष्ठ२व२ । ज्रि३न्नो३जावो३जाऽ२३  
सा२ । पृ३थि२रव्या॒नि३श२शा॒अ३हि२म् । अ३र्च्वा॒ना२ऽनू४२ु ।  
स्व२रौ३हो४२ु । जि३यमोऽ२३४५यि५ । डा ॥ १७ ॥

२. इ३त्था५हि३सो३ऽऽ५म५इ३न्म३दा३ः । ब्र३ह्म२च२का । र२व३र्द्धाऽ  
२३ना२म् । शा२वि३र३३४वा५ । ज्रि३न्नो३जा३२३४सा५ ।  
पृ३थि२रव्या॒नि३श२शा॒अ३हि२म् । अ३र्च्वा॒३३न्३हो३यि ।  
अँनूऽ२३हो । स्वा३रा॒जि२य२म् । इ३डाऽ२३भा२३४ऽ३ ।  
ओऽ२३४५यि५ । डा ॥ १८ ॥

ऋषिः — गोतमः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — पङ्क्तिः ॥ स्वरः — पञ्चमः ॥

४११. इन्द्रो मदाय वावृधे शवसे वृत्रहा नृभिः ।

तमिन्महत् स्वाजिषूतिमर्भे हवामहे स वाजेषु प्र नोऽ विषत् ॥

१. इं२द्रो२म२दा२य२वा२३ । वा४वृ॒धे॑पि॒यि॒प । श२व२से२वृ२त्र२  
हा२३ । त्रे४भी॒पः । त२मि२न्म२ह२त्सू२वा२३ । जा४यि॒षु॒प ।  
ऊ२ति२मर्भे२ह२वा२३ । मा४हा॒पि॒यि॒प । सा४वा॒प । जा॒यि॒षु॒प्र२  
नोऽ२३४वा॒प । वा४ऽ॒पि॒प षो॒प॒द॒हा॒पि॒यि॒प ॥ १९ ॥

२. इं४द्रो॒म४दा४ऽ॒पि॒य॒वा॒प वृ॒धे॑पि॒यि॒प । श॒व॒से॒वृ॒त्र॒ ।  
त्र२हान्नेभी२३४ः । ता॒प॒म्प । इ२न्मा॒रु॒हा३२३४त्सु॒प॒वा॒प॒द ।  
हा॒प॒उ॒प । जा४ यि॒षु॒प । ऊ॒ति॒मर्भे॒ह॒वा२ऽऽ । मा२३हा॒यि॒प ।  
सा४वा॒प । जा॒यि॒षु॒प्र२ नोऽ२३४वा॒प । वा४ऽ॒पि॒प षो॒प॒द॒हा॒पि॒यि॒प ॥ २० ॥

३. इं४द्रो॒म४दा४ऽ॒पि॒य॒वा॒प वृ॒धे॑पि॒यि॒प श॒व॒से॒वृ॒त्र॒ । त्र२हा॒रु॒  
नृ॒भिः॒ । आ॒अ२३हो॒र । अ॒र॒हो॒वाऽ२३४प । ह॒ः३२३४प ।  
त२मिन्मह । त्सु॒र वा४रु॒जि॒षु॒र । आ॒अ२३हो॒र । अ॒र॒हो॒वाऽ२३४  
प । हा॒ः३२३४प । ऊ॒र॒ति॒मर्भे॒र । ह॒र॒वा४रु॒म॒हे॒र । आ॒अ२३  
हो॒र । अ॒र॒हो॒वाऽ२३४प । ह॒ः३२३४प । स॒वा॒जे॒षू । प्रा॒र३  
नो४ऽ३ । वा॒र३४पि॒प षो॒प॒द॒हा॒पि॒यि॒प ॥ २१ ॥

४. इं४द्रो॒म४दा॒पि॒य॒वा॒प वृ॒धे॑पि॒यि॒प श॒व॒से॒वृ॒त्र॒ । त्र२हान्ने२ऽ  
भी॒रुः । ता॒मि॒न्म॒र॒ह॒र । त्सू॒आ॒र॒जि॒षू॒र३ । ऊ॒ती॒रु॒मा३२३४  
र्भा॒पि॒यि॒प । ह॒र॒वा४रु॒मा॒हा॒यि । स॒वा॒जे॒षू॒प्रा॒र३नो४ऽ३ । वा॒र३  
४पि॒प षो॒प॒द॒हा॒पि॒यि॒प ॥ २२ ॥

५. इ३द्रो२३ऽ२३४। म४दा४। यवा॒वृधेश॒वाऽरुसा३२३४यि४  
वृ५। त्र२हो३। अ॒रहो२३वार। आ३अ॒रुहो३२३४वा५। नृ४  
भा४यि४। तमिन्महत्स्वा॒जिषूति॒माऽ२३भा३रयि२। हर॒वा३।  
अ॒रहो२३वार। आ३अ॒रुहो३२३४वा५। म४हा४यि४।  
सवा॒जेष्प्रना३। अ॒रहो२३वार। आ३। अ॒रुहो३२३४वा५।  
वा४ऽ५। यि५षो५६हा५यि५ ॥ २३ ॥

६. इ३द्रो२३४। म४दा४य४। वा॒५वा५६र्द्धा५यि५। शवसे॒रवृ२।  
त्र२हात्रेभी२३ः। हा४उ४हौ५। हो३वार। तामिन्म॒रह२।  
त्सूआ२ऽजिषू२३। हा४उ४हौ५। हो३वार। ऊ॒तिम॒रर्भे॒२।  
हर॒वामाहे२३। हा४उ४हौ५। हो३वार। सवा॒जेष्प्र॒ार३नो४ऽ३।  
वा२३४५ यि५षो५६हा५यि५ ॥ २४ ॥

७. ओ॒५हा५यि५। इ३द्रो२३४। म४दा४य४। वा॒५वा५६र्द्धा५यि५।  
शवसे॒रवृ२। त्र२हात्रेभी२३ः। आ॒४उ४हौ५। हो३वार।  
तामिन्म॒रह२। त्सूआ२ऽजिषू२३। आ॒४ओ४हौ५। हो३वार।  
ऊ॒रतिम॒र्भायि॑। हर॒वौ॒रहो२३वार। माहा४रु॒यि२। सवा॒जेष्प्र॒ार३  
नो२। वि॒रषात्। अऽ२३हो४वा५। हो४ऽ५यि५डा५ ॥ २५ ॥

ऋषिः—गोतमः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

४१२. इन्द्र तुभ्यमिदद्रिवोऽनुत्तं वज्रिन् वीर्यम् ।

यद्ध त्यं मायिनं मृगं तव त्यन्माययावधीरर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥

१. इ३द्र५तु५भ्य५मि५द५द्रि५वा५६ए५। आनुत्त॒रम्ब॒रजि॒रन्वी॒र  
रियम्। यद्धा॒त्या२ऽम्मा४रु। या॒यिनं॒मृ॒ग२मृ॒२। तवा॒त्या२ऽ-  
न्मा४रु। या॒याव॒धीः। अ॒र्चना॒रऽनू४रु। स्वा॒रा॒जि॒रय॒रमृ॒२।  
इडाऽ२३ भा२३४ऽ३। ओऽ२३४५यि५ ॥ डा५ ॥ २६ ॥

ऋषिः—गोतमः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

४१३. प्रेह्यभीहि धृष्णुहि न ते वज्रो नि यंसते ।

इन्द्र नृम्णां हि ते शवो हनो वृत्रं जया अपोऽर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥

१. प्रायिही४२ । अ२भीहिधृष्णुहाअ२३हो२ । नाता४२यि२ ।  
वज्रो॒नियंस॑ताअ२३हो२ । आयिंद्रा४२ । नृ२म्णां॑हि ते  
शवाअ२३हो२ । हाना४२ः । वृ२त्रञ्जया॒अपाअ२३हो२ ।  
आर्चा४२नु॒नानू४२ । स्वारा॒जि२य२मृ२ । इडाऽ२३भा२३४ऽ३ ।  
ओऽ२३४५यि५ । डा ॥ २७ ॥

ऋषिः—गोतमः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

४१४. यदुदीरत आजयो धृष्णावे धीयते धनम् ।

युङ्क्ष्वा मदच्युता हरी कं हनः कं वसौ दधोऽस्माँ इन्द्र वसौ दधः ॥

१. य४दु४दी४रा४ऽ५त५आ॒५ज४या४ः । धृ२ष्णावे॒रंधी॒२ । य२  
तायि॒धा२ऽना४२मृ२ । युं२क्ष्वा॒मदच्यु॒ता२३ । हा४री५ । क२२  
हन॒ष्कंवसा२३उ३ । दा४धा५ः । अ२स्माँ॑आऽ२३यिं३द्रा२ ।  
व२सौ॒दाऽ२३धा२३४ऽ३ । ओऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ २८ ॥

ऋषिः—गोतमः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

४१५. अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत ।

अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजा न्विन्द्र ते हरी ॥

१. अ३क्ष४न्न३मी४म५द५ । त३ही२३ । आऽ२३४ । व४प्रि५या४  
अ५धू५ । ष४ता५ । अस्तो॒रष२त२स्वभा॒२ । न२व२ः । विप्रा॒नाऽ  
२३वी२ । षाया॒म२ती॒२ । यो॒जानू२३वा२३यि३ । द्राऽ२ुता३२-  
३४अ॒५हो॒५वा५ । हा३२३४री५ ॥ २९ ॥

ऋषिः—गोतमः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

४१६. उ॒पो षु शृ॒णुही गि॒रो म॒घव॒न्मात॒थाइ॒व ।

क॒दा नः॑ सू॒नृता॒वतः॑ क॒र इ॒दर्थ॑या॒ इद्यो॒जा न्वि॒न्द्र ते ह॒री ॥

१. उ॒३पो॒४षु॒३शृ॒४णु॒४ही॒३गि॒४र॒५ः । ए॒२३ । अ॒२३हो॒४ऽप॒वा॒५ऽ ।  
मा॒घ॒२व॒२न्मा॒ । त॒थाआ॒२ऽयि॒वाऽ॒२३४ । क॒३दा॒२३४न्न॒३सू॒२ ।  
ना॒त्ता॒॒वि॒२त॒२ः । क॒र॒इ॒२द॒२ । था॒या॒२ऽसा॒ईऽ॒२३४त्॒४ । यो॒३जा॒-  
२३४नु॒३वा॒२३यि॒२ । द्राऽ॒रु॒ता॒३२३४अ॒५हो॒५वा॒५हा॒३२३४-  
री॒५ ॥ ३० ॥

ऋषिः—त्रितः ॥ देवता—विश्वेदेवाः ॥ छन्दः—पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

४१७. च॒न्द्रमा॑ अ॒प्स्वा॒३ऽन्तरा॑ सु॒पर्णो॑ धा॒वते॑ दि॒वि ।

न वो॑ हि॒रण्य॒नेम॑यः प॒दं वि॒न्दन्ति॑ वि॒द्युतो॑ वि॒त्तं मे॑ अ॒स्य रो॑दसी ॥

१. च॒॒न्द्रमा॑आ॒२उ॒२वा॒२ । प्सु॒२वा॒न्तारा॒२उ॒२वा॒२ । सु॒२प॒२र्णो॑धा॒२  
उ॒२वा॒२ । व॒२ते॒दि॒वि । न॒वो॒हि॒रा॒२उ॒२वा॒२ । ण्य॒२ना॒यि॒माया॒२  
उ॒२वा॒२ । प॒२दंवि॑न्दा॒२उ॒२वा॒२ । ति॒२वि॒द्युताः॑ । वि॒त्तंमा॑आ॒२उ॒२  
वा॒२ । स्य॒२रो॒दाऽ॒२३सा॒२३४ऽ३यि॒३ओऽ॒२३४५यि॒५ ।  
डा॒५ ॥ ३१ ॥

२. च॒॒न्द्रमा॑प॒५आ॒४ । प्सू॒२३आ॒न्ता॒२३रा॒२ । सू॒प॒र्णो॒॑२धा॒२व॒२ ।  
ताऽ॒२३यि॒३ । दि॒२वि॒३या॒२ । न॒वो॒२हि॒रण्य॒२ने॒२म॒२य॒२ष्य॒२  
दंवि॑न्द॒२ । ति॒२वि॒२द्यूतो॑ऽ॒२३४हा॒५यि॒५ । वि॒२त्तं॒हो॒यि ।  
मआऽ॒२३हो॑ । स्य॒२रो॒दाऽ॒२३सा॒२३४ऽ३यि॒३ । ओऽ॒२३४५  
यि॒५ । डा॒५ ॥ ३२ ॥

३. चंपद्रपमार३आ४प्सु५व४न्त४रा५ । सूपर्णो२धा२ । वरतायि-  
 दा२ऽयिवी४२ । नवो२रहिरण्य२ने२म२य२ष्य२दं विंद२ ।  
 ति२वि२द्यूता२३ः । वि२त्तःहोयि । मआ२३हो । स्य२  
 रोदा२३सा२३४२३यि३ । ओ२३४५यि५ । डा५ ॥ ३३ ॥
४. चंपद्र४मा५अ५प्सु५वा४ । तरा । सुपर्णो२धा२वरते२दा२३  
 यि३वी२ । नवा२३होयि । हिरण्य२ने२म२य२ष्य२दंविंद२ ।  
 ति२वि२द्यूता२३ः । वि२त्तःहोयि । मआ२३हो । स्य२रो२३ ।  
 दा२३सा३२३४ अ५हो५वा५ । ऊ२३२३४पा५ ॥ ३४ ॥
५. चंपद्रौ४हो५मा५अ५प्सु४वंप५त४रा४ । ओ५६वा५ । सुरपरर्णो  
 धा२वते२दायिवाये२३ । होवा२३हो२३यि२ । हु३वा२३४५यि५ ।  
 नवो२हायिरण्यनायिमाया२३ः । होवा२३हो२३यि२ । हु३वा२३  
 ४५यि५ । प२दंविंदति२वायिद्यूता२३ः । होवा२३हो२३यि२ ।  
 हु३वा२३४५यि५ । वि२त्तम्मेअस्यरोदासाये२३ । होवा२३  
 हो२३ । यि२ । हु३वा२३ओ४२५वा५६५६ । ऊ२३२३४  
 पा५ ॥ ३५ ॥

ऋषिः—अवस्युः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

४१८. प्रति प्रियतमं रथं वृषणं वसुवाहनम् । स्तोता वामश्विनावृषि  
 स्तोमेभिर्भूषति प्रति माध्वी मम श्रुतं हवम् ॥

१. प्रा२३४ । ति४प्रि५य४त५म५म् । रा४था५म् । वा२ऋषणं२  
 व२ । सु२वा॒हा२३ना२म् । स्तो॒तावा२३मा२३ । श्वि॒नारु॒वा३२

३४ऋ४षी५ः । स्तोमायिभी२३भू२३ । षाति२प्रा३२३४ती५ ।  
माध्वायिमा२३मा२३ । श्रूऽ२३ता४ऽ३म्३ । हा२३४५वो५६  
हा५यि५ ॥ ३६ ॥

[ इति ] अर्द्धप्रपाठकः ॥

ऋषिः—वसुश्रुतः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

४१९. आ ते अग्र इधीमहि द्युमन्तं देवाजरम् ।

यद्ध स्या ते पनीयसी समिद् दीदयति द्यवीषं स्तोतृभ्य आ भर ॥

१. आऽ२३४ । ते४अ५ग्र५इ५धी५ । मा४हा५यि५ । द्यु२मं२त२दे२  
वा२३ । आऽ२३ । ज२र३मा२ । यद्धास्या२३ता२३यि३ ।  
पानीऽ२या३२३४सी५ । स२मिद्दी२दय । ताऽ२३यि३ । द्य२वि३  
या२ । इषाऽस्तो२३त्रे२३ ।  
भ्याऽ२३आ४ऽ३भा२३४५रो५६हा५ यि५ ॥ १ ॥

२. आ३ते४अ५ग्र५इ५धी५ । मा२३हा४यि४ । द्यु५म५न्ता२३न्दे४  
व५अ४ज४र५म्५ । य३द्ध४ऽ५स्या३ते४प३नी४य५सी५ ।  
स४मि३ दी४द३य४ता५यि५ । हुं३हुं३ । द्या३२३४वी५ ।  
इषाऽस्तो३त्रे३भ्या२३आ२ । हुं३हुं३२३४ऽ३ । भा२३४५रो५६  
हा५यि५ ॥ २ ॥

ऋषिः—विमदः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

४२०. आग्निं न स्ववृक्तिभिर्होतारं त्वा वृणीमहे ।

शीरं पावकशोचिषं वि वो मदे यज्ञेषु स्तीर्णबर्हिषं विवक्षसे ॥

१. हा२उ२ । अ२हु३२३४वा५ । आ॒ग्नि॒न्न॒स्व॒वृ॒क्ति॒र॒भी॒३२३४५ः ।  
हा२उ२अ२हु३२३४वा५ । हो॒ता॒रं॒र॒त्वा॒३वृ॒णी॒म॒हे॒३२-



३४५ । हारउर । अरुहो३२३४वा५ । शी२रंपा२वरकशो२चिर  
षरुमरु । वि३वोरुमा३२३४दा५यि५ । हारउर । अरुहो३२३४  
वा५ । य२ज्ञायिषुरस्ती२र्णब२ऋ२हिरषा३२३४५म् । हार  
उर । अरुहो३२३४वा५ । विवक्ष२से३२३४५ ॥ ३ ॥

२. आ५ग्रि५न्न५स्व५वृ५क्ति५भि५रि५ह५द्व५हा५यि५ । हो॒ता॒रं॒र  
त्वा॒र॒वृ॒रणी॒रम॒रह॒रइ॒ह॒रइ॒हार॒३ । हारयि२ । शी२रंपा२वर-  
कशो२चिरष२मिह॒रइ॒हार॒३ । हारुयि२ । वि३वोरुमा३२३४दा५  
यि५ । य२ज्ञायिषुरस्ती२र्णब२ऋ२हिरष२मिह॒रइ॒हार॒३ । हार३  
यि३ । वाऽरुयि२वा३२३४अ५हो५वा५ । क्षा३२३४से५ ॥ ४ ॥

ऋषिः — सत्यश्रवाः ॥ देवता — उषाः ॥ छन्दः — पङ्क्तिः ॥ स्वरः — पञ्चमः ॥

४२१. महे३१ नो२ अद्य३ बो३धयो३षो२ रा३ये दि३वि३त्स३ती२ ।

यथा१२ चि३न्नो३ अबो३धयः२ सत्यश्रव३सि२ वा३य्ये सु३जा३ते अ३श्व३सू३नृ३ते ॥

१. म३ह३हार३४यि४ । म४हे४नो५अ५द्य४ । बो५धा५६या५ ।  
उषो२रारये२ । दि२वि॒त्साऽ२३ती२ । यथा॒ची॒र३न्ना॒र३ः । आ॒बो॒रु  
धा३२३४या५ः । स॒त्याश्रा॒र३वा॒र३ । सि॒वाऽरु॒या३२३४या५  
यि५ । सु॒जा॒ता॒र३आ॒र३ । श्वाऽ२३सू४ऽ३ । ना॒र३४५र्तो५६हा५  
यि५ ॥ ५ ॥

ऋषिः — विमदः ॥ देवता — सोमः ॥ छन्दः — पङ्क्तिः ॥ स्वरः — पञ्चमः ॥

४२२. भ३द्रं नो३ अपि३ वा३तय३ मनो३ दक्ष३मु३त क्र३तु३म् । अथा३ ते स३ख्ये३ अ॒न्ध॒सो  
वि॒वो म॒दे र॒णा गा॒वो न य॒वसे॒ वि॒वक्ष॒से ॥

१. भ॒र॒द्र॒न्नोऽ२३अ॒पि॒४वा॒५त॒५या॒५ । म॒नो॒रँद॒ । क्षा॒म् । ऊ॒त॒रु॒क्रा  
३२३४तू५म् । आ॒था॒र॒ते॒२ । सा । ख्ये॒रुअं३ध॒रसा॒रुः । वि॒३



वो२मा३२३४दा५यि५ । रणा२रगा२वा२नय । वसाये२३ । वाऽ२  
यि२वा३२३४अ५हो५वा५क्षा३२३४से५ ॥ ६ ॥

ऋषिः—गोतमः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

४२३. क्र१त्वा२ म३हा४ अनु५ष्व६ धं७ भी१म२ आ३ वा४वृ५ते६ श७वः८ ।

श्रि३य२ ऋ३ष्व२ उ४पा५क६यो७र्नि८ शि१प्री२ हरि३वां४ द५धे६ ह७स्त८यो॑र्व॒ज्र॒मा॒य॒सम्॥

१. क्र५त्वा५म५हा५ः५ । अ५नु५ष्व५धा५द५मे५ । भी२म२आ२  
वा२व्रे२३ता५यि२शा२ऽवा४२ः । श्रि२यऽऋ५ष्व२३ः । ऊ५पा२  
का३२३४यो५ः । नि२शि२प्री२र२ह२री२३वान्दा२ऽधा४२यि२ ।  
ह॒स्ता॒यो॒३॒व्वा॒३॒ज्र॒२मो॒ऽ२३४वा५ । या४ऽ५सो५द५हा५  
यि५ ॥ ७ ॥

ऋषिः—गोतमः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

४२४. स१घा२ तं३ वृ४षणं५ रथ६म७धि८ ति९ष्ठा॑ति॒ गो॒वि॒दम्॥

यः१ पा२त्रं३ हा४रि५यो॒ज॒नं॑ पूर्ण॒मिन्द्रा॑ चि॒कै॒त॒ति॑ यो॒जा॑ न्विन्द्र॒ ते॑ ह॒री॥

१. स३घा४तं३वृ३ष४ण५म् । र३था२३४अ३हो४वा५ । आ॒धि॒ति॒र  
ष्ट॒२ । ति॒र॒गो॒वा॒ऽयि॒दा४२मु॒२ । य॒र॒ष्पा॒त्रः॒२हा । रि॒यो॒ऽरु॒जा३२  
३४ना५म् । पू॒र॒णं॑ मि । द्रा । ची॒कै॒रु॒ता३२३४ती५ । यो॒जानू॒३  
वा॒३यि३ । द्राऽरु॒ता३२३४अ५हो५वा५ । हा३२३४री५ ॥ ८ ॥

ऋषिः—वसुश्रुतः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

४२५. अ३ग्निं१ तं२ म३न्ये४ यो॒ वसु॑रस्तं॒ यं॑ य॒न्ति॑ धे॒नवः॑ । अ॒स्तम॑र्वन्त

आ॒श॒वो॒ऽस्तं॑ नि॒त्या॒सो॒ वा॒जिन॑ इ॒षं॑ स्तो॒तृ॒भ्य॑ आ॒ भर॑ ॥

१. अ५ग्निं५ता२३म्३म४न्ये५यो४व४सू५ः । अ॒र॒स्तं॑ यं॒ या॒३३ ।  
ती॒धे॒रु॒ना३२३४वा५ः । अ॒र॒स्तम॑व्वा॒३३ । ता॒आ॒ऽरु॒शा३२३४-

वा५ः । अ२स्तंनित्या२३ । सो॒वाऽऽ॒जा३२३४यि४ना५ः । इषाः  
स्तो२३त्रे२३४ । हा॒३हो३२३४हा५ । भ्याऽ२३आ४ऽ३ ।  
भा२३४५रा५६हा५यि५ ॥ ९ ॥

ऋषिः—अंहोमुग्वामदेव्यः ॥ देवता—विश्वेदेवाः ॥ छन्दः—उपरिष्ठाद् बृहती ॥

स्वरः—मध्यमः ॥

४२६. न तमंहो न दुरितं देवासो अष्ट मर्त्यम् ।

सजोषसो यमर्यमा मित्रो नयति वरुणो अति द्विषः ॥

१. न४त४म४ः४हो५न४दु५रि५त४म्४ । ई४य५इ४या४हा५यि५ ।  
दा॒यि॒वा॒२सो॒२अष्ट॒२मर्त्ति॒य॒२मी॒ । य॒२इ॒याऽ॒२३हा॒२यि॒२ ।  
स॒२जो॒षसो॒२यम॒र्य॒२मा॒ई॒ । य॒२इ॒याऽ॒२३हा॒२यि॒२ । मा॒यि॒त्रो  
ना॒या॒२३ । ति॒वाऽ॒२रू॒३२३४५णा५६५६ः । अ॒ति॒२द्वि॒षा॒३२३  
४५ः ॥ १० ॥

ऋषिः—धिष्ण्या ऐश्वरयोऽग्रयः ॥ देवता—पवमानः ॥ छन्दः—द्विपदापङ्क्तिः ॥

स्वरः—पञ्चमः ॥

४२७. परि प्र धन्वेन्द्राय सोम स्वादुर्मित्राय पूष्णो भगाय ॥ १ ॥

१. प४रि५प्र४ध५न्वा४ । इं॒द्रा॒यसो॒मास्वा॒२ऽदू॒३२३४ः । हा५यि५ ।  
मि॒२त्रा॒या । पू॒२ष्णो॒भाऽ॒२३४हा५यि५ । गाऽ॒२३४यो५६हा५  
यि५ ॥ ११ ॥

२. प४रि५प्र४ध५न्वा४ । इं॒द्रा॒यसो॒मा । औ॒३ह॒२ । २ । स्वा॒२दु॒र्मि॒-  
त्रा॒या । ओ॒३ह॒२ । ओ॒३हा॒२ु । पू॒३ष्णा॒२३४अ॒५हो॒५वा॒५ ।  
भ॒२गा॒२३याऽ॒२३४५ ॥ १२ ॥

३. प३री२३होयि । प्र॒धा॒३२३४न्वा॒५ । इं॒३द्रा॒३हो॒ । य॒सो॒३२३४  
मा॒५ । स्वा॒३दू॒२३ऋ॒३हो॒यि । मि॒त्रा॒३२३४या॒५ । पू॒३ष्णो॒२३

होयि । भगा३२३४या५ । पू४ष्णे३भ३गा४य५ । पू३ष्णे२३४ऽ३ ।  
हो२३४ऽ३यि३ । भा२३गा४ऽ५या५६५६ । ए२३ । सुवर्च्च२  
ते३२३४५ ॥ १३ ॥

४. हा२३हा२यि२ । २ । प२रि२प्रा२३धान्वा२ । ए३२३४हि४या५ ।  
हा२३हा२यि२ । २ । इं२द्रा२या२३सोमा२ । ए३२३४हि५या५ ।  
हा२३ हा२यि२ । २ । स्वा२दु२र्मी२३त्राया२ । ए३२३४हि५  
या५ । हा२३ हा२यि२ । २ । पू२ष्णे२भा२३गाया२ । ए३२३४  
हि५या५ । हा२३हा२३४ऽ३यि३ । ओ२३४५यि५ । डा५ ॥ १४ ॥

५. प४र्ये४पा४री५ । प्र२धन्वा । होवा२३होयि । इं॒द्रा॒यसो॒मा ।  
होवा२३होयि । स्वा२दु२र्मि॒त्राया । होवा२३होये२३ । पू३ष्णौ२  
वा२ओ३२३४वा५ । भ४गा४ऽ५या५उ५ । वा५ ॥ १५ ॥

ऋषिः — त्र्यरुणत्रसदस्यू ॥ देवता — पवमानः ॥ छन्दः — त्रिपदापिपीलिका-  
मध्यानुष्टुप् ॥ स्वरः — गान्धारः ॥

४२८. <sup>२ ३ १</sup>प२र्यू <sup>२२ ३</sup>षु <sup>१ २</sup>प्र <sup>३ १ २</sup>धन्व <sup>३ १ २</sup>वाजसातये <sup>३ १ २</sup>परि <sup>३ १ २</sup>वृत्राणि <sup>३ १ २</sup>सक्षणिः ।

<sup>३ २ ३ १ २</sup>द्विषस्तर <sup>३ १ २</sup>ध्या ऋणया न ईरसे ॥

१. प२र्य्यू२षु२प्र२ध२न्वा२वा२जा२३सा । ताया२यि । ओयि ।  
पा२री । ओयि । वृ॒त्रा॒रणिः२ । सक्षणिः । द्वायिषस्ता२४२ ।  
धिया४२यि२ । अर्णाया४२ुः । ना४२ुः । ई॒रासा२३यि३ ।  
ओये२३र३सा२३४ऽ३यि३ । ओ२३४५यि५ । डा५ ॥ १६ ॥

२. प५र्यू५षू५ । प्र२धन्वा॒वा२३ । जासा२ुता३२३४या५यि५ ।  
प२रि२ वृ॒त्रा॒रणि२स२क्ष२रणि२ः । द्विषास्ता२३रा२ । धिया॒ऽ  
ऋणया२ऽना२३ई२ । हुं । रा२३४५सो५६हा५यि५ ॥ १७ ॥

३. प४ । र्ये४पा४री५ । ऊ॒षुप्रधन्वावाजसा॒तये॒परिवृ॒त्राणिसत्तणि  
द्वाऽ२३यि३षा२ः । ताऽ२३रा२ । धिया॒ऽरिणया॒नओवा२३  
ओऽ२३४ वा॒परा४ऽ५सो५६हा५यि५ ॥ १८ ॥

ऋषिः—धिष्ण्या ऐश्वरयोऽग्रयः ॥ देवता—पवमानः ॥ छन्दः—द्विपदापङ्क्तिः ॥  
स्वरः—पञ्चमः ॥

४२९. पवस्व सोम महान्त्समुद्रः पिता देवानां विश्वाभि धाम ॥ ३ ॥

१. प४व५स्व५सो५मा४ । माहा॒रन्समु॒द्राः । पि॒रता॒दे॒रँवा॒नाऽ२३  
म्३ । वाऽ२यि॒रुश्वा३२३४अ॒५हो॒५वा५ । भि॒रधा॒माऽ२३  
४५ ॥ १९ ॥

२. अ॒५हो॒५६वा५ । अ॒२हो॒२३वा॒२ । अ॒२हो॒ऽरुवा३२३४अ॒५हो॒५६  
वा५ । पवस्व॒रसो॒२म॒२ । म॒रहा॒न्त्समु॒द्रः । पि॒रता॒दे॒रँवा॒ना॒रँ  
म्२ । वि॒श्वा॒रभि॒धा॒माऽ२३४ । अ॒५हो॒५६वा५ । अ॒२हो॒२३वा॒२ ।  
अ॒२हो॒ऽरुवा३२३४अ॒५हो॒५६वा५ । ए॒२३ । ध॒र्म्माऽ२३  
४५ ॥ २० ॥

ऋषिः—धिष्ण्या ऐश्वरयोऽग्रयः ॥ देवता—पवमानः ॥ छन्दः—द्विपदापङ्क्तिः ॥  
स्वरः—पञ्चमः ॥

४३०. पवस्व सोम महे दक्षायार्श्वो न निक्तो वाजी धनाय ॥ ४ ॥

३. ओ॒५हो॒५६वा५ । ओ॒२हो॒२३वा॒२ । ओ॒२हो॒ऽरुवा३२३४ओ॒५हो॒५६  
वा५ । पवस्व॒रसो॒२म॒२ । म॒रहे॒दक्षा॒रय॒२ । अ॒श्वा॒रन॒नि॒रक्तः । वा॒रँ  
जी॒धना॒रँया३२३४ । ओ॒५हो॒५६वा५ । ओ॒२हो॒२३ । वा॒२ । ओ॒२  
हो॒ऽरुवा३२३४ओ॒५हो॒५६वा५ । ए॒२३वि॒ध॒र्म्माऽ३२३४५ ॥ २१ ॥

१. प४व५स्व५सो५मा४ । म२हे२दा२३क्षाया४२ु । अश्चो॒न-  
नित्तोऽ२३ । वा॒३जा२३४ । अ॒५हो५वा५ । ध२ना२३याऽ२३  
४५ ॥ २२ ॥

ऋषिः — धिष्ण्या ऐश्वरयोऽ ग्रयः ॥ देवता — पवमानः ॥ छन्दः — द्विपदापङ्क्तिः ॥  
स्वरः — पञ्चमः ॥

४३१. इ॒न्दुः<sup>१ २</sup> पविष्ट<sup>३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २</sup> चारु॒र्मदा॒यापा॒मुप॒स्थे<sup>२</sup> कवि॒र्भगा॒य ॥ ५ ॥

१. इ॒४दु५ष्य५वि५ष्टा४ । चाऽ२३रू२ः । म२दा॒२या । अ॒रपा॒२  
मुपाऽ२३स्था२३यि३ । काऽ२ुवा३२३४अ॒५हो५वा५ । भ२  
गा२३याऽ२३४५ ॥ २३ ॥

ऋषिः — त्र्यरुणत्रसदस्यू ॥ देवता — पवमानः ॥ छन्दः — त्रिपदापिपीलिका-  
मध्यानुष्टुप् ॥ स्वरः — गान्धारः ॥

४३२. अनु<sup>२ ३ १</sup> हि त्वा<sup>२ ३ १</sup> सु॒तं सोम॒ मदा॒मसि॒ महे॒ सम॒र्यरा॒ज्ये ।  
वा॒जा<sup>१ २ ३ १ २</sup> अ॒भि प॒वमान॒ प्र गा॒हसे ॥

१. अ॒४नु५ । अ॒५नू४ । हा॒यित्वा॒२सु॒रतः॒सो॒२म॒२दा॒२म॒३सि३ । म॒३  
दा॒३म॒२सा॒ये२३ । म॒३हा॒२३४ऽ३यि३ । सा॒२३४५मा५ । र्य॒२  
रा॒ज्ये॒२ । वा॒जा॒२२अ॒२भिप॒वमा॒२न्३ । प॒३व॒३मा॒२ना । प्रा॒गा॒२  
ह॒२सा । अ॒२३ हो४वा५ । हो४ऽ५यि५ । डा५ ॥ २४ ॥

ऋषिः — वसिष्ठः ॥ देवता — मरुतः ॥ छन्दः — द्विपदापङ्क्तिः ॥ स्वरः — पञ्चमः ॥

४३३. क ई<sup>१ ३ क २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २</sup> व्य॒क्ता न॒रः स॒नीडा रु॒द्रस्य॒ मर्या॒ अथा॒ स्व॒श्वाः ॥

१. क॒४ई५म्व्या४ऽ५क्ता४ः । न॒२२२स्सा॒२३ना॒यिडा॒४२ुः । रु॒२-  
द्रस्य॒मर्या॒ऽ२३ः । आऽ२ुथा३२३४अ॒५हो५वा५ । सु॒२वा॒२३-  
श्वाऽ२३४५ः ॥ २५ ॥

२. क३ई२३४५३म्३विरय३क्ता५ः । न३रा२३४५३स्स२नी३  
डा५ः । रु२द्रस्यामे१०र्या५२३ः । आ५रुथा३२३४अ५हो५वा५ ।  
सु२वा२३ श्वा५२३४५ः ॥ २६ ॥

३. का४ई५म् । विया५२३ । ओवा२३ । आ४क्ता५ः । ना४रा५ः ।  
सना५२३ । ओवा२३ । आ४यि४डा५ः । रू४द्रा५ । स्यमा५२३ ।  
ओवा२३ । आ४र्या५ः । आ४था५ । सुवा५२३ । ओवा२३ ।  
आ४श्वा५ः । हो४५५यि५ । डा५ ॥ २७ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—पदपङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

४३४. अ२ग्रे तमद्याश्वं न स्तोमैः क्रतुं न भद्रं हृदिस्पृशम् ।  
ऋ३ध्या३मा त ओ३हैः ॥

१. अ५ग्रे५त५मा४द्या५ । अ२श्व२न्न२स्तोमायिः । क्र२तु२न्ना२३  
भाद्रा४रुम् । हार्दि२स्पृ२शीम् । ऋ२ध्या५रुमा३२३४अ५हो५  
वा५ । त२ओ॒हा३२३४५यि५ः ॥ २८ ॥

२. अ५ग्रे५ । हो२३४५३यि३ । त२म३द्या५ । अ२श्व२न्न२स्तोमायिः ।  
क्र२तुं२न्ना२३भाद्रा४रुम् । हार्दि२३ओयि । स्पृ५श२म् । ऋ२  
ध्या५रुमा३२३४अ५हो५वा५ । त२ओ॒हो३२३४ यि५ः ॥ २९ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—वाजिनां स्तुतिः ॥ छन्दः—पुरउष्णिक् ॥  
स्वरः—ऋषभः ॥

४३५. आ३वि३र्म३र्या आ वाजं वाजिनो अ३गं दे३वस्य स३वितुः स३वम् ।  
स्व३र्गा अ३र्वन्तो जयत ॥

१. आ॒रवि॒र्माऽ२३४य्या॑ऽ५ । आ॒वा॒ज॒म्व॒ाजि॒नो॒अ॒ग्मा॒न् । दे॒रव॒स्य॒र  
स॒र । वि॒रतु॒स्साऽ२३४वा॑ऽ५म् । स्व॒र्गाऽ॒अ॒र्व्वाऽ२३४५न्ता॑ऽ५६  
५६ः । ज॒यता॑ऽ२३४५ ॥ ३० ॥

ऋषिः—धिष्ण्या ऐश्वरयोऽग्रयः ॥ देवता—पवमानः ॥ छन्दः—द्विपदापङ्क्तिः ॥  
स्वरः—पञ्चमः ॥

४३६. प॒वस्व॑ सोम॒ द्यु॒म्नी सु॒धारो॑ म॒हा॒ अवी॑नामनुपूर्व्यः ॥

१. प॒व॒स्व॒स्व॒सो॒मा॒४ । द्यु॒३म्नी॒२३४ऽ३सु॒रधा॒॑३र॒५ । मा॒हा॒२  
अवी॑नाम् । अनु॒पू॒रु । र्वि॒३यो॒२३४५यि॒॑५डा॒५ ॥ ३१ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—द्विपदाविराट्पङ्क्तिः ॥  
स्वरः—पञ्चमः ॥

४३७. वि॒श्वतो॑दावन् वि॒श्वतो॑ न आ भ॒र य॑ त्वा शविष्ठमीमहे ॥

१. वि॒५श्व॒५तो॒५हा॒५उ॒५ । दा॒२व॒रन्वि॒२श्वतो॑ना॒२ः । ओ॒२३ । हा॒२ु ।  
ओ॒३२३४हा॒॑५यि॒॑५ । आ॒२ । भ॒२रा॒२ । भा॒५२३रा॒२ । या॒न्त्वा॒२-  
शवि॑ष्ठ॒२मा॒यि । मा॒हा॒२ु । अ॒३हो॒३२३४वा॒॑५ । ऐ॒२ही॒२यै॒३-  
ही॒२ऽ ॥ ३२ ॥

२. वि॒४श्व॒५तो॒५दा॒५व॒५न्वि॒५श्व॒४तो॒५न॒५आ॒४ । भ॒२रा॒२ । भा॒५२३  
रा॒२ । या॒न्त्वा॒२शवि॑ष्ठ॒२मा॒यिम॒२ । हा । अ॒२३हो॒४वा॒॑५ । हो॒४ऽ५  
यि॒॑५ । डा ॥ ३३ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—द्विपदाविराट्पङ्क्तिः ॥  
स्वरः—पञ्चमः ॥

४३८. एष॒ ब्र॒ह्मा॒ य ऋ॒त्वि॒य इन्द्रो॑ नाम श्रुतो गृणो ॥ २ ॥

१. ए४षा५ः । ब्राह्म५य २आ२३ऽउवाऽ२३ । ए२३ । त्वि२य३आ२ ।  
आऽ२३यिं३द्रा२ः । नामश्रु२ता२३ऽउवाऽ२३ । ए२३ । गृ२ण३  
आ२ ॥ ३४ ॥
२. ए४षा५ए४षा५ः । ब्राह्मा४२ुब्राह्मा४२ु । य२ । ऋ॒त्वि॒यो॒वा॒२ ।  
ओ॒वा॒२ । आ॒यि॒न्द्रा४२ुआ॒यि॒न्द्रा४२ुः । ना॒मश्रु॒तो॒वा॒२ । ओ॒वा॒२ ।  
गृ॒२णा । अ२३हो४वा५हो४ऽ५यि५ । डा५ ॥ ३५ ॥
३. ए४षा५ः । ओ४ । ओ४वा५ । ब्रह्मा॒२याः । ऋ॒त्वि॒या४२ुः ।  
आ॒यि॒न्द्रो२३हा२३यि३ । ना२३मा२ । श्रूऽ२३तो२ । गृ॒२णा ।  
अ२३हो४वा५ । हो४ऽ५यि५ । डा५ ॥ ३६ ॥
४. ओ३हो२३४ऽ३ओ२३४हा५ । ए॒२षा॒ब्रा॒ह्मा॒२३४ऽ३ । या॒२३४ः ।  
ऋ॒५त्वि॒५या४ः । ओ३ँहा२३४ऽ३ । ओ॒२३४हा५ । इं॒२द्रो॒ना  
मा॒२३४ऽ३ । श्रू॒२३४ । तो॒५गृ॒५णा४यि४ । ओ३ँहा२३४ऽ३ ।  
ओ॒२३४५ हा५६५६ । ए॒२३सु॒वर्च॒ते३२३४५ ॥ ३७ ॥
५. ए॒२ष॒२ब्रह्मौ॒हो । या॒२ऽऋ॒त्वि॒याः । इं॒२द्रो॒२ना॒मौ॒हो । श्रु॒२तो॒गृ॒णा  
२३उवाऽ२३ । ऊ॒२३४पा५ ॥ ३८ ॥

[ इति ] एकादशः प्रपाठकः ॥ ११ ॥

ऋषिः—अवस्युः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—द्विपदाविराट्पङ्क्तिः ॥

स्वरः—पञ्चमः ॥

४३९. ब्रह्माण इन्द्रं महयन्तो अकैरवर्धयन्नहये हन्तवा उ ॥

१. हा॒५उ॒५स्व॒५र॒५ता॒५ । ब्र॒२ह्मा॒णा४२ुः । इं॒२द्रम् । आ । म॒२ह॒याऽ२ु  
न्तो३२३४ । कै॒५ः । अ॒वा४२ुर्द्ध॒२या॒न् । अ॒२ह॒२ये॒२ह॒२ु ।  
त३वा॒२३४५ यि५ । ऊ॒५६५६ । श्लो॒२क॒य॒ताऽ२३४५ ॥ १ ॥



२. हा॒पउ॒प । अ॒पभि॒पस्व॒प॒र॒पता॒प । ब्र॒ह्म॒णआ॒यि॒न्द्रा॒४२॒मु॒२ । म॒२  
ह॒याऽ॒नु॒न्तो॒३२३४ । कै॒पः । अ॒र॒व॒र॒ब्दा॒या॒४२॒नु॒२ । अ॒र॒ह॒र॒ये॒२  
ह॒र॒न्त॒वाऽ॒२३४५ऊ॒प॒६५६ । श॒ल्लो॒३२३४का॒पः ॥ २ ॥

ऋषिः — अवस्युः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — द्विपदाविराट्पङ्क्तिः ॥  
स्वरः — पञ्चमः ॥

४४०. <sup>१ २</sup>अ॒न॒व॒स्ते <sup>३ २ ३ १</sup>रथ॒म॒श्वा॒य <sup>२</sup>तक्षु॒स्त्व॒ष्टा <sup>३ २ ३ १ २</sup>वज्रं <sup>३ १ २</sup>पुरु॒हूत॒ द्यु॒म॒न्त॒म् ॥

१. हा॒पउ॒पस्व॒प॒र॒पता॒प । स्व॒२र॒२त॒२स्व॒राऽ॒२३ता॒२ । आ॒न॒व॒र॒स्ते॒२  
रथ॒२म॒२ । श्वा॒२या॒ता॒२ऽक्षूऽ॒२३४ः । हा॒पउ॒पस्व॒प॒र॒पता॒प ।  
स्व॒२र॒२त॒२स्व॒राऽ॒२३ता॒२ । त्व॒ष्टा॒२व॒ज्र॒२म्पु॒रु॒हू॒२ । ता॒प॒द्यु॒मा॒न्ता  
ऽ॒२३४म्४ । हा॒पउ॒पस्व॒प॒र॒पता॒प । स्व॒२र॒२त॒२स्वा॒राऽ॒२ । ता॒३२  
३४ । अ॒प॒हो॒प॒वा॒प । स्व॒२रा॒२३ता॒ऽ॒२३४५ ॥ ३ ॥

ऋषिः — वामदेवः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — द्विपदाविराट्पङ्क्तिः ॥  
स्वरः — पञ्चमः ॥

४४१. <sup>२ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १</sup>शं प॒दं म॒घं र॒यी॒षि॒णो न॒ <sup>२२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २</sup>का॒म॒म॒व्र॒तो हि॒नो॒ति न॒ स्पृ॒श॒द्र॒यि॒म् ॥

१. अ॒३हो॒२यि॒२ । शं॒३प॒४दा॒५म्५ । म॒२घ॒२र॒या॒२३ऽ॒२३४यि॒४ ।  
षि॒४ णा॒४यि॒४ । न॒का॒म॒म॒व्र॒तो हि॒नो॒ति न॒स्पृ॒श॒२त् २ । र॒२यि॒२  
मो॒३२३४५ यि॒५ । डा॒५ ॥ ४ ॥

ऋषिः — वामदेवः ॥ देवता — विश्वेदेवाः ॥ छन्दः — द्विपदाविराट्पङ्क्तिः ॥  
स्वरः — पञ्चमः ॥

४४२. <sup>२ ३</sup>स॒दा गा॒वः <sup>२ ३ १ २</sup>शु॒च॒यो <sup>३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २</sup>वि॒श्व॒धा॒य॒सः स॒दा दे॒वा अ॒रे॒प॒सः ॥

१. सा॒४दा॒५ । गा॒वः रँ॒शु॒च॒यो॒वि॒श्व॒२धा॒याऽ॒२३सा॒२ः । सा॒३२३४  
दा॒५ । दा॒यि॒वा॒अ॒२रोऽ॒२३४वा॒५ । पा॒३२३४सा॒५ः ॥ ५ ॥

ऋषिः—संवर्तः ॥ देवता—उषाः ॥ छन्दः—द्विपदाविराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

४४३. आ<sup>१</sup> या<sup>२</sup> हि<sup>३</sup> वन<sup>१</sup> सा<sup>२</sup> सह<sup>३</sup> गा<sup>३</sup> वः<sup>२</sup> सच<sup>२</sup> न्त<sup>१</sup> वर्त<sup>२</sup> नि<sup>१</sup> यदू<sup>२</sup> धभिः<sup>२</sup> ॥

१. अ॒३हो॒२३यि॒३ । आ॒४या॒ही॒५ । वना॒४रु॒सा॒सहा । गाव॒स्स॒२च॒२ ।  
ताव॑र्त्तानी॒४रु॒म्॒२ । यात् । ऊ॒२३ । ध॒२भि॒२रो॒३२३४यि॒५ ।  
डा॒५ ॥ ६ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—द्विपदाविराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

४४४. उ॒प प्र॒क्षे म॒धुम॒ति क्षि॒यन्तः पु॒ष्ये॒म रयिं॑ धी॒महे॑ त इन्द्र ॥

१. ओ॒४वा॒४ । उ॒४प॒५ प्र॒५क्षे॒४म॒४धु॒५म॒५ति॒५क्षि॒५यं॒४त॒५ ।  
ओं॒४वा॒४ । ओं॒यि । पु॒ष्ये॒मरयिं॑धी॒महे॑तआ॒५२३ । यिं॒३द्रा॒२ । ओ ।  
वाओ॒वा॒२ओ । वा॒२ हा॒२३उ॒वा॒२३ । उ॒२३४पा॒५ ॥ ७ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—द्विपदाविराट्पङ्क्तिः ॥  
स्वरः—पञ्चमः ॥

४४५. अ॒र्चन्त्य॑र्कं मरु॒तः स्व॑र्का आ स्तो॒भति॑ श्रु॒तो यु॒वा स इन्द्रः॑ ॥ ९ ॥

१. अ॒४र्च्चा॒५ति॒५या॒४ । क॒म्मरु॒तस्सु॒२वा॒५२३ । क्का॒२ः । आ॒स्तो॒२  
भ॒२ ता॒यि । श्रु॒२तो॒यु॒वा॒सआ॒यिं॒द्रा॒३वा॒२३ । ऊ॒२३४पा॒५ ॥ ८ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—द्विपदाविराट्पङ्क्तिः ॥  
स्वरः—पञ्चमः ॥

४४६. प्र॒ व इन्द्रा॑य वृ॒त्रह॑न्तमा॒य वि॒प्राय॑ गा॒थं गा॒यत॑ यं जु॒जोष॑ते ॥

१. प्र॒५वा॒४ः । आ॒यिं॒द्राय॑वृ॒त्रहा॑न्त॒मा॒५२३या॒२ । वा॒यि॒प्रा॒यगा॑थं  
गा॒२५या॒२३ता॒२ । गा॒ज्जु॒जौ॒२वा॒२३ । उ॒२पृ॒२ । षा॒५२तो॒२३५  
हा॒२यि॒२ ॥ ९ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—द्विपदागायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

४४७. अचेत्यग्निश्चिकितिर्हव्यवाङ् न सुमद्रथः ॥

१. अ४च्चे५ती४ । अ२ग्निः । चिकाऽ२३यि३ति२३४ः । हाऽ२३-  
व्या२३ । वाऽ२ । इना३२३४अ५हो५वा५ । सुरमद्रथा३२-  
३४५ः ॥ १० ॥
२. अ४च्चे५ति५या४ । ग्रायिश्चायिक । यितीऽ२३ः । हौहोयि ।  
अ२३हो३२३४५ । हव्याऽ२३ । वाऽ२इना३२३४अ५हो५वा५ ।  
ए२३ । सुर म२द्रथा३२३४५ः ॥ ११ ॥

ऋषिः—बन्धुः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—द्विपदापङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

४४८. अग्ने त्वं नो अन्तम उत त्राता शिवो भुवो वरूथ्यः ॥

१. ओ४ग्रा५यि५ । त्वन्नोऽ२३आ२ । हुम्माऽ२३ । ता३२३४मा५ः ।  
उ२तत्रा२ता॒शि२वो॒भुर॒वरः । शि२वो॒भुवाऽ२३ः । व४रो४वा५ ।  
था४ऽ५ यो५६हा५यि५ ॥ १२ ॥
२. अ५ग्रौ५ । हो५यि५ । त्वौ५हो५यि५ । नो२अन्तमा२३ऽ  
उवाऽ२३ । ऊ३२३४ता५ । त्रा३ता२ुओ३२३४वा५ ।  
शि२वो॒भुर॒वा३२३४५ः ॥ १३ ॥
३. अ५ग्रे५ । तू२३व४न्नो५अ४ । न्त४मा५ः । उ२तत्रा२ता॒शि२-  
वो॒भुर॒वरः । वराऽ२३अ३हौ२ुहो३२३४वा५ । था४ऽ५ यो५६  
हा५यि५ ॥ १४ ॥
४. अ५ग्रे५ । हो२३यि३ । त्व४न्नो५अ४ । त४मा५ः । उ२ता४२ु ।  
हा४२ुयि२ । अ३हो२३ऽयित्राताऽ२ु । शि३वो२३४५ । भू३२-  
३४वा५ः ॥ १५ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—द्विपदागायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

४४९. भगो न चित्रो अग्निर्महोनां दधाति रत्नम् ॥

१. भा४गा५ः । नचित्रः । अग्निर्महोऽ२३ना२३म्३ । दाऽरुधा३२  
३४अ५हो५ । वा५ । तिररत्ना३२३४५म् ॥ १६ ॥

२. भ४गो५न४चि५त्रा४ः । अ२ग्निर्महोऽ२३ना२३म्३ । दाऽरु  
धा३२३४अ५हो५ । वा५ । ए२३ । तिररत्ना३२३४५म् ॥ १७ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—द्विपदागायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

४५०. विश्वस्य प्र स्तोभ पुरो वा सन् यदि वेह नूनम् ॥

१. वि५श्च५स्या५ । प्र२स्तोभा४रु । पुरो२रवा२सार३न्३ ।  
यदिवे३२३४हा५ । नूऽ२३ । नोऽ२रुमा३२३४अ५हो५वा५ ।  
धा३२३४ना५म् ॥ १८ ॥

२. अ५हो५यि५वि५श्च५स्या५ । प्र२स्तोभा४रु । पुरो२रहो२वा२३  
हारयि२ । वासा४रुन्२ । यदिवेहा । नूऽ२३ । नाऽरुमा३२३४  
अ५हो५वा५ । धा३२३४र्मा५ ॥ १९ ॥

ऋषिः—संवर्तः ॥ देवता—उषाः ॥ छन्दः—द्विपदापङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

४५१. उषा अप स्वसुष्टमः सं वर्तयति वर्तनिं सुजातता ॥

१. उ५षा५अ५पा५ । स्वासुरष्टा३२३४मा५ः । सम्वा४रुर्त्त२या ।  
तिवाऽरुर्त्ता३२३४नी५म् ॥ सूऽरुजा३२३४अ५हो५वा५ ।  
ए२३ । तता३२३४५ ॥ २० ॥

ऋषिः—भुवन आप्त्यः ॥ देवता—विश्वेदेवाः ॥ छन्दः—द्विपदापङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

४५२. इमा नु कं भुवना सीषधेमेन्द्रश्च विश्वे च देवाः ॥

१. इ॒प॒मा॒नु॒ठकं॒॑प॒भू॒ऽप॒व॒ना॒४ । सी॒र॒ष॒धा॒ऽरु॒यि॒रु॒मा॒३उ॒३  
वा॒२३ । ई॒२३॒४हा॒५ । इं॒२३॒४वा॒ऽरु॒यि॒रु॒श्वा॒३उ॒३वा॒२३ ।  
ई॒२३॒४हा॒५ । च॒३ दे॒२३ । वा॒ऽरु॒पा॒३२३॒४अ॒५हो॒५वा॒५ । वी॒३२  
३॒४शा॒५ ॥ २१ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—विश्वेदेवाः ॥ छन्दः—द्विपदागायत्री ॥  
स्वरः—षड्जः ॥

४५३. वि स्तुतयो यथा पथ इन्द्र त्वद्यन्तु रातयः ॥

१. वि॒ऽस्रु॒५वि॒ऽस्रू॒५ । ता॒या॒ऽरु॒स्ता॒या॒ऽरुः॑ । य॒२था॑<sup>१</sup>॒२प॒थः॑ ।  
आ॒यि॒न्द्रा॒ऽरु॒त्वा॒द्या॒ऽ२३ । न्तु॒२रो॒ऽ२३॒४वा॒५ । ता॒ऽप॒यो॒५६हा॒५  
यि॒५ ॥ २२ ॥

ऋषिः—भरद्वाजः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—द्विपदात्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

४५४. अया वाजं देवहितं सनेम मदेम शतहिमाः सुवीराः ॥

१. अ॒५या॒५वा॒५जा॒५म्॒५ । दा॒यि॒व॒हि । त॒२रु॒स॒३ने॒४मा॒५ ।  
म॒२दे॒२म॒२<sup>२</sup>शा॒२३ता॒हि॒मा॒ऽरुः॑ । श॒२ता॒ऽ२३ । हा॒ऽरु॒यि॒रु  
मा॒३२३॒४अ॒५हो॒५वा॒५ । सु॒२वी॒२३रा॒ऽ२३॒४५ः॑ ॥ २३ ॥

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—विश्वेदेवाः ॥ छन्दः—द्विपदात्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

४५५. ऊर्जा मित्रो वरुणः पिन्वतेडाः पीवरीमिषं कृणुही न इन्द्र ॥

१. ऊ॒४ज्जा॒५ । मि॒त्रो॒व॒रु॒ण॒ष्पि॒न्व॒२ता॒ऽ२३यि॒३डा॒२ः॑ । पी॒व॒री॒मि॒षं  
कृ॒णु॒ही॒नआ॒यि॒न्द्रा॒३उ॒३वा॒२३ । ऊ॒२३॒४पा॒५ ॥ २४ ॥

१. 'था' इत्यस्य स्थाने मूलगानपाठे 'व्या' इति लिखितम् ।

२. मूलगानग्रन्थेऽत्र 'शा' इत्यस्य स्थाने 'सा' इति लिखितम्—सम्पादकः

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—एकपदागायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

४५६. इन्द्रो<sup>२ ३ १ २</sup> विश्वस्य राजति ॥

१. इं३द्रो२३४ । वि३श्व४स्य५रा५ । ज२ति२हो३२३४५यि५ ।  
डा५ ॥ २५ ॥

२. इंद्रा४रुहो२यि५ । वा४रुयि२श्वा । स्य२रा४रुजति२ । होवा५२३  
हो५२३४५यि५डा५ ॥ २६ ॥

ऋषिः—गृत्समदः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अष्टिः ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

४५७. त्रि१क२द्रुकेषु<sup>३ १ २२</sup> महिषो<sup>३ २ ३ १ २२</sup> यवाशिरं<sup>३ १ २</sup> तुविशुष्मस्तृप्सोममपिबद् विष्णुना<sup>३ २ ३ १ २</sup>  
सुतं<sup>३ १ २ ३ २ १ २</sup> यथावशम् । स ई१ ममाद महि१ कर्म२ कर्त३वे४ महामुरुं५ सैनं५ सश्च३दे३वो३  
दे३वं३ सत्य३ इन्द्रुः५ सत्यमिन्द्रम् ॥

१. ओ२रुयि२रुत्रि३क५ । द्रुकायि । षू२३महि२षो५ । यवा२-  
शि३र५म् । तु३वी२रुशु३ष्म५ । ओ२रुयि२रुत्रे३२३४म्पा५त् ।  
सो॒माम् । अपिबा२३ द्वि । ण्णुना२रुसु३त५म् । य१३था२रुव३-  
श५म् । ओ२रुयि२रुसा३२३४ ई५म् । ममा । दा२३महि२क ।  
मक२रुर्त्त३वे५ । म३हा२रुमु३रु५म् । ओ२रु यि२रुसा३२३४  
यि३ना५म् । सश्वा । त् । दे२वो॒दे२वाम् । स४त्य४इं४दुः४  
स४त्या४ऽ५मिं५द्रा५उ५ । वा५ ॥ २७ ॥

ऋषिः—गौराङ्गिरसः ॥ देवता—सूर्यः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

४५८. अयं३ सह३स्त्र३मान३वो३ दृशः३ क३वीनां३ म३ति३ज्यो३ति३र्वि३ध३र्म । ब्र३ध्नः३  
समी३ची३रुष३सः३ समै३रय३दरे३प३सः३ स३चे३त३सः३ स्व३सरे३ म३न्यु३मन्त३श्चि३ता३ गोः३ ॥

१. अत्र यकारस्थाने 'मु' इति पाठो मूलगानपुस्तके । —सम्पादकः

- ऋषिः—परुच्छेपः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अत्यष्टिः ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

१. ए०न्द्र५या५ह्यु०प०ना०ः । पारा०रुवा३२३०ता५ः । ना५यमच्छा ।  
 वि२दथा५नायि । वास२त्या३२३०ती५ः । अस्तारा२३जे२३ ।  
 वास२त्या३२३०ती५ः । ह०वा५म५हे५त्वा५प्र०य५स्व५ता०ः ।  
 सु२तायिषु२३वा२ । पु२त्रा५सो५ना । पि२तरम्वा । जा५सा२ता३२  
 ३०या५यि५ । म०हायि०ष्टा२३म्वा२३ । जा०र३सा००३ ।  
 ता२३०य५यो५०हा५यि५ ॥ ३० ॥

ऋषिः—रेभः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

४६०. तमिन्द्रं<sup>१ २</sup> जोहवीमि<sup>३ १ २ ३ २ ३ १ २ २ ३ १ २</sup> मघवानमुग्रं<sup>३ १ २ ३ १ २</sup> सत्रा दधानमप्रतिष्कृतं<sup>३ १ २ ३ १ २</sup> श्रवांसि भूरि।  
मंहिष्ठो<sup>१ २</sup> गीर्भिरा<sup>३ १ २ २ ३ १ २</sup> च यज्ञियो<sup>३ १ २</sup> ववर्त राये<sup>३ १ २ ३ १ २</sup> नो विश्वा सुपथा कृणोतु<sup>३ २</sup>  
वज्री ॥

१. त४मिं४द्रं५जो५ह५वी५मि५म५घ४वा५ना४म्४। उ३२३४ग्रा५  
म्५। स२त्रा॒होइ। द४धा॒नमप्र॒ताऽरु॒यिरु॒ष्कू३२३४ता५म्५।  
श्र॒वाऽ२३३साऽरु॒यिरु॒। भू३२३४री। मंहिष्ठो॒गीर्भिरा॒।  
च॒याऽरु॒ज्ञा३२३४या५ः। वा॒र॒वा॒र्ता४२। रा॒रये॒होयि॒। नो॒२  
वि॒रश्वा॒रसु॒रपा३२३४था५। कृ३णो॒र३। तूऽरु॒वा३२३४अ५  
हो५वा५। ऊ३२३४ पा५ ॥ ३१ ॥\*

ऋषिः—परुच्छेपः ॥ देवता—विश्वेदेवाः ॥ छन्दः—अत्यष्टिः ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

४६१. अस्तु<sup>२ ३</sup> श्रौषट् पुरो<sup>३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १</sup> अग्निं धिया दध आ नु<sup>२ ३</sup> त्यच्छब्दो<sup>३ १ २</sup> दिव्यं<sup>३ १ २</sup> वृणीमह<sup>३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २</sup>  
इन्द्रवायू<sup>३ १ २</sup> वृणीमहे। यद्ध<sup>३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २</sup> क्राणा विवस्वते नाभा सन्दाय नव्यसे।  
अध<sup>२ ३ २ ३ १ २ २</sup> प्र नूनमुप यन्ति<sup>३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २</sup> धीतयो देवा अच्छा न धीतयः ॥

१. अ५स्तु५श्रौ५षा५ट्५। पु॒र॒रोअग्नि॒न्धि॒रया॒दधे॒२। हा। अ॒२३  
हो३२३४वा५। आ॒नु॒त्यछ॒ब्दो॒रदि॒। व्याम्। वृ॒णाऽ२३हा॒रु॒यिरु॒।  
मा३२३४हे५। इ॒न्द्रावा॒र३यू॒२३। वृ॒णीऽरु॒मा३२३४हा॒यि॒५।  
यद्ध॒क्रा॒णावि॒वा॒रऽस्वा॒र३ता॒रयि॒२। ना॒२भा॒संदा॒यना॒२३।  
व्या४ सा॒यि॒५। अध॒प्र॒नू॒नमु॒पया॒। ति॒र॒धी॒रता॒याऽ२३ः। हा।  
अ॒२३हो३२३४वा५। दा॒यि॒वा॒र३रऽअ॒च्छाऽ२३। हा। अ॒२३हो३२  
३४वा५। न॒२धोऽ२३४वा५। ता४ऽयो॒५६हा॒यि॒५॥ ३२ ॥

\* वज्रीति पदे 'ज्री' इत्यस्य पाठो गाने नास्ति, ज्रायि-इति पाठः स्यात्। —सम्पादकः



ऋषिः — एवयामरुत् ॥ देवता — मरुतः ॥ छन्दः — जगती ॥ स्वरः — निषादः ॥

४६२. प्र वो महे मतयो यन्तु विष्णावे मरुत्वते गिरिजा एवयामरुत् ।  
प्र शर्धाय प्र यज्यवे सुखादये तवसे भन्ददिष्टये धुनिव्रताय शवसे ॥

१. प्राऽ२३४ । वोऽमपहेऽमऽतऽयोऽयंऽतुऽविऽष्णुऽवोऽ । हाऽ  
यिऽ । मऽरुऽत्वऽताऽ३यिऽगिरिजाऽ२३४ः । हाऽहोऽयिऽ ।  
एऽवायाऽ२ । माऽ३२३४रूपतूऽ । प्राऽर्द्धायाऽ२ । प्रायज्यावाऽ-  
२३यि । सूखाऽ२ दाऽ२३४याऽयिऽ । तवसेऽभरन्ददिष्टयेऽ ।  
धुनायिव्राऽ२३ ताऽ२३ । याऽ२शाऽ२३४अऽहोऽवाऽ ।  
वाऽ२३४सेऽ ॥ ३३ ॥

ऋषिः — अनानतः पारुच्छेपिः ॥ देवता — पवमानः ॥ छन्दः — अत्यष्टिः ॥

स्वरः — गान्धारः ॥

४६३. अया रुचा हरिण्या पुनानो विश्वा द्वेषांसि तरति सयुग्वभिः सूरौ न  
सयुग्वभिः । धारा पृष्ठस्य रोचते पुनानो अरुषो हरिः । विश्वा यद्रूपा  
परियास्यृक्वभिः सप्तास्येभिर्ऋक्वभिः ॥

१. आऽयाऽ । रुचा । हरि । ण्याऽपुऽनाऽनाऽ । विश्वाऽद्वेषाऽंसित-  
रतीऽ२३साऽ४ऽयुऽग्वभिऽ । सूरौऽ२३नाऽ२३ । साऽ२यूऽ२  
३४अऽहोऽवाऽ । ग्वाऽ२३४भिऽः ॥ ३४ ॥

२. अऽयाऽरुऽचाऽरुहऽरिऽण्याऽ । पुऽनाऽनऽ । विश्वाऽद्वाऽ२३यिऽ  
षाऽ । सायितरऽ । त्यौऽहोऽ । वाऽ३हाऽ३यिऽ । सायूऽ२  
ग्वाऽ२३४भीऽ । सूरौऽ२३नाऽ२ । सऽयूऽ२ग्वाऽ४ऽ  
भाऽ५६५६यिऽः ॥ ३५ ॥

ऋषिः—नकुलः ॥ देवता—सविता ॥ छन्दः—अतिशक्वरी ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

१. अपभ्रष्ट्यष्टपवः८सपविपता८रपम्प । अपहौ८हो८वा८  
हापयिप । ओणाऽ२३४योपः । करविक्राऽ२३४तूपम्प ।  
आ२र्च्चारुमी३२३४साप । त्या२सरुवा३२३४राप ।  
त्त२धामाऽ२३४भीप । प्रि२यम्माऽ२३४तीपम्प । अ२होअ२  
होवाऽ२३४हापउप । ऊ२द्ध्वारु या३२३४स्याप । आ२मारु  
ती३२३४र्भापः । अ२दिद्यूऽ२३४तापत्प । स२वीमाऽ२३४  
नीप । अ२होअ२होवाऽ२३४हापउप । ही२र२ ण्या३२३४पाप ।  
णी२रारुमी३२३४मीप । त२सुक्राऽ२३४तूपः । अ२होअ२  
होवाऽ२३४पहापउप । वाप । ए२३ । कृ२पासुवाऽ२३४  
पः ॥ ३७ ॥

\* मूलगानग्रन्थेऽत्र 'सावि' इति लिखितम् । 'सि' इत्यस्य गानं 'सायि' इति भवति । —सम्पादकः.

ऋषिः—परुच्छेपः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—अत्यष्टिः ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

४६५. अग्निं होतारं मन्ये दास्वन्तं वसोः सूनुं सहसो जातवेदसं विप्रं न  
जातवेदसम् । य ऊर्ध्वया स्वध्वरो देवो देवाच्या कृपा । घृतस्य  
विभ्राष्टिमनु शुक्रशोचिष आजुह्वानस्य सर्पिषः ॥

१. अ५ग्नि५ः५हो५ता५ । १२म्म२न्ये३दास्व२त२म् । ओ२३ वा२३ ।  
वासो२ुस्सू३२३४नू५म् । स२ह२सो२जा३तावे२ऽदासा४२  
म् । वि२प्र२न्न२जा२ । ओ२३ वा२३ । तवे२ुदा३२३४ सा५म् ।  
य२ऊर्ध्वा२ऽया४२ । सु२वाध्वा२ऽरा२ः । दे२वो२ दे२वा२ ।  
ओ२३ वा२३ । चि२या२ऽरुका३२३४र्पा५ । घृ५तो४ वा४ । स्य२  
विभ्रा२ष्टि२म् । अ२नु२शु२क्र२शा२ । ओ२३ वा२ । चिषः ।  
आ॒जुह्वा२३ना२ । स्य२सा२ । ओ२३ वा२३ । पा२ऽरु२यि२रुषा३२  
३४अ५हो५वा५ । ऊ३२३४पा५ ॥ ३८ ॥

२. अ४ग्निः३हो३ता४र५म्म५न्ये५ । दा२३४ । स्व३त५म्ब४सो५  
स्सू५नु४म् । स२ह२सो२जा३तावे२ऽदासा४२म् । वि२प्र२  
न्न२जा३तावे२ऽदासा४२म् । यै२ऊ२र्ध्व२ या३सू२वै२-  
ध्वा४२ः । दे२वो२दे२वा३चा२या२ऽकृ५पा४२ । घृ२ता२स्य२  
विभ्रा२ष्टि२मनु२शु२ । क्रा२शो२ऽचिषा४२ः । आ३जूह्वा२३  
ना२३ । स्या२३ सा४२३ । पा२३४५यि५षो५दहा५ यि५ ॥ ३९ ॥

३. अ३हा२वो२ुहा३२३४वा५ः । अ२ग्निष्ट५ [ प५ ] ती । प्र३ति२  
द३ह४ति५ । अ२ग्निः३हो । ता२र२म्मा२३न्ये४ऽ३दा२स्व३त५

म्प । वरसोः । सूरनु२२सरहरसो२जा२३ता४५३वे२द३  
 स५म्प । वि२प्राम् । न२जा२३ता४५३वे२द३स५म्प । य२ऊ ।  
 ध्व२या२३सू४५३व२ ध्व३र५ः । दे२वो । दे२वा२३ची४५३  
 या२रु३कृ३पा५ । घृ२ता । स्य२ वि२भ्रा२ष्टि२म२नु२शू२३  
 क्रा४५३शो२रु३चि३ष५ः । आ२जू । ह्य२ ना२३स्या४५३स२  
 र्पि३ष५ः । अ३हा२वो२हा३२३४वा५ः । ३ । अ२ग्रि३ष्टपती ।  
 प्र३ति२द३हा४५५ता५६५६यि६ । ए२३वि३श्वः२स२म२त्रि३णं२द२  
 हर । २ । ए२३ । वि३श्वः२स२म२त्रि३णं२द२हा३२३४५ ॥ ४० ॥

४. त्य२ग्ना२रु३यि२रुः । प्र३ति२द३ह४ति५ । हा२उ२रु३हो३५हा५उ५ ।  
 अ२ग्रि३हो । ता२र२म्मा२३न्ये४५३दा२रु३स्वं३त५म्प । वरसोः ।  
 सूरनु२२सरहरसो२जा२३ता४५३वे२द३स५म्प । वि२प्राम् ।  
 न२जा२३ता४५३वे२द३स५म्प । य२ऊ । ध्व२या२३सू४५३  
 व२ध्व३र५ः । दे२वो । दे२वा२३ची४५३या२रु३कृ३पा५ । घृ२  
 तास्य२वि२भ्रा२ष्टि२म२नु२ शू२३क्रा४५३शो२रु३चि३ष५ः ।  
 आ२जू । ह्य२ना२३स्या४५३स२र्पि३ष५ः । त्य२ग्ना२रु३यि२रुः ।  
 प्र३ति२द३ह४ति५ । हा२उ२रु३हो३५हा५उ५ । वा५ । ए२३ ।  
 वि३श्वः२स२म२त्रि३णं२द२हर । ए२३ । वि३श्वः२व्य३त्रि३णं२द२हर ।  
 ए२३ । वि३श्वः२न्य३न्त्रि३णं२द२हा३२३४५ ॥ ४१ ॥

ऋषिः—गृत्समदः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अष्टिः ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

४६६. तव<sup>२३</sup> त्यन्न<sup>१</sup>र्यं<sup>२</sup> नृतो<sup>३</sup>ऽप<sup>४</sup> इन्द्र<sup>३२</sup> प्रथमं<sup>३</sup> पूर्व्यं<sup>२</sup> दिवि<sup>३२</sup> प्रवाच्यं<sup>३</sup> कृतम्<sup>३</sup> । यो<sup>२</sup>  
 देवस्य<sup>३२</sup> शवसा<sup>३</sup> प्रारिणा<sup>३१२</sup> असु<sup>३</sup> रिणन्नपः<sup>३१२</sup> । भुवो<sup>२३</sup> विश्वमभ्यदेवमोजसा<sup>३१२</sup>  
 विदेदूर्जं<sup>३१</sup> शतक्रतुर्विदेदिषम्<sup>२२</sup> ॥

१. ताऽ२३४व४त्य४न्ना४ऽ५रि५य५नृ४ता४उ४ । अ२पइंद्रा४२ ।  
 प्रथमंपूऽ२ । वि३य२न्दि३वि५ । प्र३वा२ । चि३य२ङ्कृ३त५  
 म्५ । यो२दे॒वास्या४२ । शवसाप्राऽ२ । रि३णा२अ३सु५ ।  
 रि३ण२न्न३प५ः । भु२वो॒विश्वा४२म्२ । अभ्यदा२यि२ ।  
 व३मो॒रुज३सा५ । वि३दे॒रुदू३र्ज५म्५ । श३ता२क्का३२३४  
 तू५ः । वि४दा४ऽ५यि५दि५षा५ उ५ । वा५ ॥ ४२ ॥

[ इति ] अर्द्धप्रपाठकः ॥ १ ॥ [ इति ] ऐन्द्रपर्व ॥

## अतः परं पावमानम् [ काण्डम् ]

ऋषिः—अमहीयुः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

४६७. उच्चा ते जातमन्धसो दिवि सद्भूम्या ददे । उग्रं शर्म महि श्रवः ॥

१. उपच्चा४ । ते२जा३तामन्धासा४रुः । दि२विसद्भूम्या॒ददायि ।  
उ२ग्रं॑शाऽ२३र्मा॑र३ । माऽरुही३२३४औ॒पहो॑प वा॒प ।  
उ२पूर । श्रा३२३४वा॒पः ॥ १ ॥
२. उ२च्चा॒तेऽ२३४जा॒प । त२मन्धाऽ२३४सा॒पः । दि२वायिसाऽ  
२३४द्भू॒प । मि२या॒ददायि । उ२ग्रं॑शाऽ२३र्मा॑र । म२हाये२३ ।  
श्राऽरु वा३२३४अ॒पहो॑पवा॒प । वा३२३४पयि॒प ॥ २ ॥
३. हा॒पहा॒पउ॒पच्चा॒पते॒पजा॒प । हा२३ । हा२३यि३ । तामाऽरुन्धा३२  
३४सा॒पः । दि२विसद्भूमि॒या२ऽदा२३दे२ । उ२ग्रं॑रुशा३२३४  
र्मा॒पि । ओंमो२३ । म४हो४वा॒प । श्रा४ऽपवो॒पदहा॒पयि॒प ॥ ३ ॥
४. ऊऽ२३४च्चा॒४ते॒४जा॒४ऽप । त॒पमौ॒पहो॒४ऽन्धा॒४सा॒पः । दि२  
विसद्भूमि॒या२ऽदा२३दे२ । उ२ग्रं॑रुशा३२३४र्मा॒पि । माहा३ँ  
उ३वा२३४ऽ३ । श्रा२३४पवो॒पदहा॒पयि॒प ॥ ४ ॥
५. उपच्चा॒पते॒पजा॒प । त२म । धासाऽ२३ः । ओमो३ँवा२ । दि॒विस२  
द्भू॒र । मि२या॒दा२ऽदे॒ऽ२३ । ओमो३ँवा२ । उ॒ग्रां॑शा॒२ऽर्मा॑ऽ  
२३ । ओमो३ँवा२३ । माऽरुहा३२३४अ॒पहो॑पवा॒प । अ२वा२३  
ईऽ२३४प ॥ ५ ॥

६. उ॒च्छा॒प॒ते॒प॒जा॒प । त॒र॒म॒न्धाऽ॒र॒३सा॒रः । दि॒वि॒स॒र॒द्भू॒र ।  
मि॒र॒या॒दाऽ॒र॒३दा॒र॒यि॒र । ऊ॒ग्रा॒र॒३ऽ॒र॒३हा॒र॒यि॒र । शा॒र्म्मा॒र॒३  
हा॒रु । यि॒रु । म॒३हा॒र॒३ हो॒ये॒र॒३ । श्राऽरु॒वा॒३र॒३४अ॒प॒हो॒प॒वा॒प ।  
ग्वा॒३र॒३४भी॒पः ॥ ६ ॥
७. उ॒प॒च्चा॒४ते॒प॒जा॒प॒त॒४मा॒४ । धा॒साऽ॒र॒३ः । ओं॒मो॒३ँवा॒र ।  
दि॒वि॒स॒र॒द्भू॒र । मि॒र॒या॒दा॒र॒ऽदे॒ऽर॒३ । ओ॒मो॒३ँवा॒र । उ॒ग्रा॒ऽशा॒र  
ऽर्म्मा॒ऽर॒३ । ओ॒मो॒३ँवा॒र । म॒र॒हा॒यो॒र॒३ । श्राऽरु॒वा॒३र॒३४अ॒प  
हो॒प॒वा॒प । ऊ॒र॒३ऽर॒३४ पा॒प ॥ ७ ॥
८. उ॒प॒च्चा॒प॒ते॒प॒जा॒प॒त॒प॒मं॒प॒धा॒४सा॒पः । दि॒र॒वि॒स॒द्भू॒म्या॒द॒दा॒यि॒ ।  
उ॒र॒ग्र॒ऽशा॒ऽर॒३४र्म्मा॒पि । म॒३हा॒र॒३यि॒३श्रा॒४ऽप॒वा॒प॒६५६ः ॥ ८ ॥
९. उ॒प॒च्चा॒प॒ते॒प॒जा॒प॒त॒प॒म॒प॒न्धा॒प॒६सा॒पः । दि॒र॒वि॒स॒द्भू॒ । म्या॒दाऽ  
र॒३दा॒र॒ यि॒र । उ॒र । ग्र॒ऽशा॒ऽर॒३र्म्मा॒र । म॒ही॒४रु । हा॒४रु॒यि॒र ।  
अ॒३ँहो॒र॒३यि॒ । श्र॒वा॒४रुः । हा॒४रु॒यि॒र । अ॒३ँहो॒र॒३यि॒ । इ॒३या  
र॒३हो॒यि । इ॒३यो॒३र॒३४प॒वा॒प॒६५६ । ऊ॒३र॒३४प ॥ ९ ॥
१०. उ॒३च्चा॒र॒३४अ॒३हो॒४वा॒प । ते॒जाऽरु । त॒३मा॒र॒३४प । धा॒३र॒३४  
सा॒पः । दि॒र॒वि॒स॒द्भू॒म्या॒द॒दे॒र । ऊ॒र्ग्र॒ऽशा॒ऽर॒३र्म्मा॒ऽरु । म॒३हि॒३  
श्र॒र॒वा । अ॒र॒३हो॒४वा॒प । हो॒४ऽप॒यि॒प । डा॒प ॥ १० ॥
११. उ॒प॒च्चा॒प॒ते॒प॒जा॒प॒त॒प॒म॒प॒न्ध॒प॒सो॒प॒दो॒प॒हा॒प॒यि॒६ । दो॒प॒हा॒प॒ए॒प ।  
दि॒र॒वि॒स॒द्भू॒म्या॒द॒दे॒र । दो॒३ँहा॒र॒यि॒र । दो॒३ँहा॒र॒३ए॒र । उ॒र॒ग्र॒ऽ  
शा॒ऽर॒३र्म्मा॒र । दो॒३ँहा॒र॒यि॒र । दो॒३ँहा॒र॒३ए॒र । म॒र॒हि॒श्राऽर॒३  
वा॒र॒३४ऽ३ । ओ॒ऽर॒३४प॒यि॒प । डा॒प ॥ ११ ॥

१२. उ३च्चा२ते३जा॒४त४म॒५न्ध॒५सा॒५ः । दि॒२वा॒यि॒सा॒ऽ२३४द॒भू॒५ ।  
मि॒२या॒४२ुद॒दे॒२ । ओं॒म् । ओं॒३ँवा॒२ । २ । ववा॒ऽ२३हो॒यि ।  
उ॒२ग्र॒ःशा॒ऽ२३र्मा॒२ । ओ॒३ँवा॒२ । ववा॒ऽ२३हो॒यि । म॒२हि॒३  
श्र॒२वो॒ऽ२ । या॒३२३४अ॒५हो॒५वा॒५ । य॒२यु॒२रे॒३२३४५ ॥ १२ ॥

१३. उ॒४च्चा॒५ता॒२३यि॒३जा॒४त४मं॒५न्ध॒५सा॒५ः । दि॒२वा॒यि॒सा॒ऽ२  
द॒भू॒४२ु । मि॒५या॒ऽ२३द॒३दा॒२यि॒२ । उ॒२ग्र॒ःश॒२र्मा । म॒हा॒ऽ२३  
यि॒३श्र॒२वा॒२उ॒२ । वा॒२३स्वौ॒षे॒२३४५ ॥ १३ ॥

ऋषिः — मधुच्छन्दाः ॥ देवता — पवमानः सोमः ॥ छन्दः — गायत्री ॥

स्वरः — षड्जः ॥

४६८. स्वादि॒ष्टया॑ मदि॒ष्टया॑ पवस्व सोम धा॒रया॑ । इन्द्रा॒य पा॒तवे॑ सु॒तः ॥

१. स्वा॒दा॒यि॒ष्टाया॒२म॒दा॒यि॒ष्टाया॒२ । पव॒स्व॒२सो॒२ । मा॒धा॒२ऽरा॒ऽ२३  
या॒२ । इं॒द्रा॒यापा॒२ । त॒२वा॒यि॒सू॒ऽ२३ता॒२३४५३ः । ओ॒ऽ२३४५  
यि॒५ । डा॒५ ॥ १४ ॥

२. स्वा॒२दि॒२ष्टया॒४२ु । इ॒या॒४२ुइ॒या॒ । म॒२दि॒२ष्टाया॒४२ु । प॒२व॒२  
स्व॒सो॒४२ु । इ॒या॒४२ुइ॒या॒ । म॒२धा॒॒२रा॒या॒४२ु । इं॒२द्रा॒॒२यपा॒४२ु ।  
इ॒या॒४२ुइ॒या॒ । त॒२वा॒यि॒सू॒ऽ२३ता॒२३४५३ः । ओ॒ऽ२३४५यि॒५ ।  
डा॒५ ॥ १५ ॥

३. स्वा॒२दि॒२ष्टयौ॒हो॒४२ु । इ॒या॒ । म॒२दि॒२ष्टाया॒४२ु । प॒२व॒२  
स्व॒सौ॒हो॒४२ु । इ॒या॒ । म॒२धा॒॒२रा॒या॒४२ु । इं॒२द्रा॒॒२ययौ॒हो॒४२ु । इ॒या॒ ।  
[ पा॒२ ] त॒२वा॒यि॒सू॒ऽ२३ता॒२३४५३ः । ओं॒ऽ२३४५यि॒५ ।  
डा॒५ ॥ १६ ॥



४. ओंरुयिरुस्वा३२३४दि५ । षरया३मादिष्ठया२ । ओ३२३४  
वा५ । पवस्वरसोरमरधारया२३ । ओंरुई३२३४न्द्रा५ । याऽरु  
पा३२३४अ५हो५हो५वा५ । तरवेरुसु३ता२ऽः ॥ १७ ॥
५. उ३हु३वारुयिरु । स्वा३२३४दि५ । षरया३मादिष्ठया२ । ओं३२  
३४वा५ । पवस्वरसोरमरधारया२३ । उ३हु३वारुयिरु । इं४द्रा४ऽ  
५य५पा५ । ताऽरुवा३२३४अ५हो५वा५ । सू३२३४ता५ः ॥ १८ ॥
६. स्वा४दा४यि४ष्ठ५या५ । मरदि२ष्ठ२या२३ । पावा२३स्वा४  
सो५ । मरधा२र२या२३ । आयिंद्रा२३या४पा५६ । हा५उ५ ।  
त४वा४ऽ५यि५सु५ता५उ५ । वा५ ॥ १९ ॥
७. स्वा४दि५ष्ठ५या५म४दि५ष्ठ५या५प४व५स्व५सो५म५धा४  
र५या५इ४ । द्रा४ऽ५य५पा४ । तरवा४रुयिरु । ऊ४रु । तर  
वा४रुयिरु । ऊऽरत३वार३४अ५हो५वा५ । सू३२३४  
ता५ः ॥ २० ॥
८. अ५हो५हुं५ । हा५ए४हि४या५ । हार३हारुयिरु । स्वा४दायिष्ठा  
या२ु । मा३२३४दि५ । ओरु यि४रुमा३२३४दि५ । अ५हो५हुं५  
हा५ए४हि४या५ । हार३हारुयिरु । षयापावरु । स्वा३२३४सो५ ।  
ओरुख३२३४सो५ । अ५हो५हुं५हा५ए४हि४या५ । हार३हार  
यिरुमधारया२ु । इ३२३४न्द्रा५ । ओरुइ३२३४न्द्रा५ । औ५हो५  
हुं५ । हा५ए४हि४या५ । हार३हारुयिरु । यपातवारुयिरु ।  
सू३२३४ता५ः । ओरुयिरु । सू३२३४ता५ः । अ५हो५हुं५हा५  
ए४हि४या५हार३हार३४ । अ५हो५वा५ । ई३२३४५ ॥ २१ ॥

९. स्वा॒ऽदि॒प॒ष्ठ॒प॒या॒प॒म॒प॒ । दा॒ऽऽप॒यि॒प॒ष्ठ॒प॒ या॒ऽ । प॒र॒वा॒ऽऽ॒रु॒ ।  
 स्वा॒ऽऽ॒र॒३सो॒२ । म॒धा॒ऽऽ॒रु॒रा॒या । आ॒ऽऽ॒र॒३यिं॒३द्रा॒२ । या॒ऽऽ॒रु॒पा ।  
 तै॒वा॒ऽऽ॒र॒३ । हा॒२उ॒२वा॒२३ । सू॒३२३॒ऽता॒पः ॥ २२ ॥

ऋषिः—भृगुर्वारुणिः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥

स्वरः—षड्जः ॥

४६९. <sup>१ २</sup>वृषा <sup>३</sup>पवस्व <sup>१२</sup>धारया <sup>३१ २</sup>मरुत्वते च <sup>३२</sup>मत्सरः । <sup>२</sup>विश्वा <sup>३ १ २ ३</sup>दधान <sup>१ २</sup>ओजसा ॥

१. वृ॒षा॒प॒प॒वा॒प॒ । स्व॒र॒धा॒२रा॒या॒ऽऽ॒रु॒ । म॒रु॒त्व॒ता॒यि॒ । च॒म॒त्सा॒ऽ-  
 २३रा॒२ः । वा॒यि॒श्वा॒ऽऽ॒र॒३ । दा॒ऽऽ॒रु॒धा॒३२३॒ऽअ॒प॒हो॒प॒वा॒प॒ । न॒२  
 ओ॒ज॒सा॒३२३॒ऽप॒ ॥ २३ ॥
२. वृ॒षा॒ऽहा॒प॒उ॒प॒ । पा॒३२३॒ऽवा॒प॒ । स्वा॒र॒धा॒रु॒रा॒३२३॒ऽया॒प॒ ।  
 मा॒३२३॒ऽरू॒प॒ । त्वा॒३२३॒ऽता॒प॒यि॒प॒ । चा॒र॒म॒रु॒त्सा॒३२३॒ऽरा॒पः ।  
 वा॒यि॒श्वा॒२द॒र॒धा॒ऽऽ॒र॒३ । ना॒ऽऽ॒रु॒ओ॒३२३॒ऽओ॒प॒हो॒प॒वा॒प॒ ।  
 जा॒३२३॒ऽसा॒प॒ ॥ २४ ॥
३. वृ॒षा॒प॒प॒व॒ऽ । स्व॒प॒धा॒प॒रा॒प॒द॒या॒प॒ । मा॒रु॒त्व॒ता॒२३यि॒३ ।  
 चा॒मा॒ऽरु॒त्सा॒३२३॒ऽरा॒पः । वि॒श्वा॒दा॒र॒ऽधा॒ऽऽ॒रु॒ । न॒३ओं॒२३ ।  
 जा॒ऽऽ॒र॒३सो॒प॒द॒ हा॒प॒यि॒प॒ ॥ २५ ॥
४. आ॒ऽयि॒ऽवृ॒षा॒ऽ । प॒र॒वा॒ । इ॒३हा॒२अ॒३हो॒२ । स्व॒र॒धा॒रा॒ऽ-  
 २३या॒प॒ । म॒२ । रू॒ । त्व॒ते॒२३हा॒२यि॒२ । च॒२ । मा॒ । त्सै॒रा॒ऽ-  
 २३हा॒२३यि॒ऽ । वि॒प॒श्वा॒प॒ द॒ऽधा॒प॒हा॒प॒उ॒प॒ । न॒प॒ओ॒प॒ज॒प॒-  
 सा॒प॒हा॒प॒उ॒प॒ । ओ॒२वा॒२३॒ऽऽ॒र॒३ ओ॒२३॒ऽप॒वा॒प॒द॒प॒द॒ ।  
 अ॒२स्मे॒रा॒यि॒२उ॒२त॒श्र॒वा॒ऽऽ॒र॒३प॒ः ॥ २६ ॥

५. वृ५ । षा५ । प३वार३ । ए४हि४या५ । स्वर३धाऽ२ । र३या२३-  
४अ३हो४वा५मा३रु२३४ । अ३हो४वा५ । त्व३ते॒चमा२ऽ-  
त्सा२३रा२ः । अ३हो२३ये२३ । अ३हो३२३४५वा५६५६ ।  
विश्वा२दधा२ न२ओजसा३२३४५ ॥ २७ ॥
६. वृषापावाऽ२३ । हौहोयि । अ२३हो३२३४५ । स्व३धाराऽ२३ ।  
हौहोयि । अ२३हो३२३४५ । म३रु॒त्वा॒तेऽ२३हौहोयि । अ२३-  
हो३२३४५ । च॒मा॒त्सा॒राऽ२३ः । हौहोयि । अ२३हो३२३४५ ।  
विश्वा॒दा॒धाऽ२३ । हौहोयि । अ२३हो३२३४५ । न॒ओजसाऽ२  
३ । हौहोयि । अ२३हो२३४५३ । ओऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ २८ ॥
७. वृ२षापावा२ । अ३हौ३हो३२३४वा५ । स्व३धाराया२ ।  
अ३हौ३हो३२३४वा५ । म३रु॒त्वा॒ता॒रु । अ३हौ३हो३२३४  
वा५ । च॒मा॒त्सा॒रा॒रु । अ३हौ३हो३२३४वा५ । वि॒श्वा॒दा॒वा॒रु ।  
अ३हौ३हो३२३४वा५ । न॒ओजा॒सा॒रु । अ३हौ३हो३२३४  
वा५ । हो४ऽ५यि५ । डा५ ॥ २९ ॥
८. अ५हो४हो४हा५यि५ । वृ४षा५ । प२व२स्वा२३धाराया२३ ।  
मा३रुऽ२ु॒त्वा॒३२३४ता५यि५ । ओयि । चै॒माऽ२३ । चै॒माऽ२ु  
त्सा३२३४राः५ः । अ५हो४हो४हा५यि५ । वि॒श्वा॒५ । दधाऽ२ु  
ना३२३४ओ५ । जा॒रुसा३२३४अ५हो५वा५ । ओ२यि२ ।  
१ज्व२र३आ२ ॥ ३० ॥
९. वृ५षा५अ५हो४हो४हा५यि५ । प२वा२३स्वा॒धा॒रा॒या॒२३ ।  
मा३रुऽ२ु॒त्वा॒३२३४ता५यि५ । च३मा२३ । ओयिचै॒माऽ२ुत्सा३२  
३४ रा५ः । वि॒श्वा॒५अ५हो४हो४हा५यि५ । दधाऽ२ुना३२-

३४ओ५ । जाऽरुसा३२३४अ५हो५वा५ । ओरुयिरु । जू३२-  
३४वा५ ॥ ३१ ॥

[ इति ] द्वादशः प्रपाठकः ॥

ऋषिः—अमहीयुः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

४७०. यस्ते<sup>२ ३ २ ३ १२ ३ १ २ ३ १ २</sup> मदो<sup>३</sup> वरेण्यस्तेना<sup>१२ ३ २</sup> पवस्वान्धसा । देवावीरघशंसहा ॥

१. या४स्ता५यि५ । मादो । वारा२ओ३२३४वा५ । णी३२३४  
या५ः । ता४ यि४ना५ । पा५वा । स्वा३आ२ओ३२३४वा५ ।  
धा३२३४सा५ । दा४यि४वा५ । वायिरा । घाशा२ओं३२३४  
वा५ । सा३२३४ हा५ ॥ १ ॥
२. य४स्ते४म५दा५ः । व२रा२यिरुणि३या२ः । तायिनापावा२३  
स्वा२३ । अं२ुध३सार । दायिवावायिरा२३४ । हा५उ५ । घ४  
शा४ऽ५२५स५हा५ । हो४ऽ५यि५ । डा५ ॥ २ ॥
३. य३स्ता२३ऽरु । यिरु । मा३२३४दा५ः । व२रायिणाया२ु ।  
ओं३२३४ वा५ । हा२ु । ओ३२३४वा५ । हा२यिर । तायिनाप२  
व२ । स्वर२ आन्धासा२ु । ओ३२३४वा५ । हा२ु । ओ३२३४  
वा५ । हा२यिर । दायिवावायिरा२ु । ओ३२३४वा५ । हा२ु ।  
ओ३२३४वा५ । हा२३यि३ । घाऽरुशा३२३४अ५हो५वा५ ।  
सरहो२र२यी२३ष्टाऽ२३४५ः ॥ ३ ॥
४. य२स्तायिमाऽ२३दो४व४रे५णि५या५ः तायिनाप२व२ ।  
स्वर२आन्धा२ऽसा४रु । दायिवा४रुवायिराऽ२३ । घ२शोऽ२३४  
वा५ । सा४ऽ५हो५६हा५यि५ ॥ ४ ॥

५. य॒प॒स्ते॒प । मा॒र॒३दो॒४ । वा॒प । ई॒४या॒प । रा॒यिणा॒र॒५या॒४रुः ।  
ता॒यिना॒प॒र व॒र । स्व॒र । औ॒३हो॒२ । वा॒३हा॒र । ध॒सा॒४रु ।  
दा॒यिवा॒ऽर॒३ । वा॒ऽरु॒यि॒रुरा॒३ १३४अ॒प॒हो॒प॒वा॒प । घ॒र॒शः॒२-  
स॒३हा॒र॒ऽऽ ॥ ५ ॥

६. य॒प॒स्ते॒प॒म॒प॒दो॒प॒व॒रे॒प॒णि॒प॒या॒प॒६ए॒प । ते॒२ना॒प॒व॒स्वा॒न्ध॒सा॒दे॒२  
वा॒वी॒रा॒ऽर॒३हा॒र॒यि॒र । घा॒शा॒र॒उ॒रवा॒र । सा॒हा॒र॒उ॒रवा॒र॒३ ।  
ऊ॒र॒३ऽर॒३४पा॒प ॥ ६ ॥

ऋषिः—त्रितः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

४७१. ति॒स्त्रो॒ वा॒च॒ उ॒दी॒रते॒ गा॒वो॒ मि॒मन्ति॒ धे॒नवः॑ । ह॒रिरे॒ति॒ क॒निक्र॒दत् ॥

१. ति॒प॒स्त्रो॒प॒वा॒प॒चा॒पः । उ॒दा॒यि । उ॒र॒दा॒र॒३ऽउ । वा॒ये॒र॒३ । रा॒३र॒  
३४ते । गा॒प॒वो॒प॒मि॒प॒मा॒प । ति॒र॒धा॒यि । ति॒र॒धा॒र॒३ऽउ ।  
वा॒ये॒र॒३ । ना॒३र॒३४वा॒पः । हा॒प॒रि॒प॒रे॒प॒ति॒प । क॒र॒ना॒यि ।  
क॒र॒ना॒र॒३ऽउ॒वा॒ये॒र॒३ । क्रा॒३र॒३४दा॒पत् ॥ ७ ॥

२. ति॒प॒स्त्रो॒प॒वा॒प॒चा॒पः । उ॒दा॒यि॒रा॒र॒३ते॒र । गा॒वो॒मि॒मन्ति॒धा॒र॒ऽ  
यि॒ना॒र॒३वा॒रः । ह॒रि॒रि॒रे॒रतो॒३र॒३४हा॒प॒यि॒प । का॒ऽरु॒ना॒३र॒३४  
अ॒प॒हो॒प॒वा॒प । क्रा॒३र॒३४दा॒प । त्प ॥ ८ ॥

३. ति॒र॒स्त्रो॒र॒वा॒चो॒ऽर॒३४हा॒प॒यि॒प । उ॒र॒दी॒र॒ता॒यि । गा॒र॒वो॒र  
मि॒मा॒ऽर॒३४हा॒प॒यि॒प । ति॒र॒धे॒र॒न॒वा॒४ः । हा॒रि॒रि॒रा॒ऽये॒तो॒ऽर॒३४  
हा॒प॒यि॒प । क॒र॒ना॒ये॒र॒३ । क्रा॒ऽरु॒ दा॒३र॒३४अ॒प॒हो॒प॒वा॒प ।  
अ॒र॒स्मत्प॒र...२<sup>१</sup>तु॒र॒वि॒न्त॒र॒मा॒३र॒३४प॒म्प ॥ ९ ॥

४. ति॒प्स्त्रो॒ऽवा॒ऽच॒प॒उ॒दी॒पर॒प्तो॒ऽ । वा॒ऽहा॒प॒यि॒प् । गा॒र॒वो॒र॒मि॒र  
मा॒र॒३ । ती॒धे॒रु॒ना॒३२३॒ऽवा॒पः । हा॒ऽरि॒पर॒ऽयि॒ऽती॒प् । का॒ऽरु  
ना॒३२३॒ऽअ॒प॒हो॒प॒वा॒प् । क्रा॒३२३॒ऽदा॒प॒त् ॥ १० ॥
५. ति॒ऽस्त्रो॒३ऽप॒वा॒प् । चा॒ऽऽ३उ॒दी॒३र॒ऽता॒प॒यि॒प् । गा॒वो॒मि॒म॒र  
ति॒र॒धा॒यि॒ना॒र॒ऽवा॒ऽर॒३ः । हो॒वा॒र॒३हा॒र॒यि॒र । ह॒रा॒यि॒रा॒र॒ऽ  
यि॒ती॒ऽर॒३ । हो॒वा॒र॒३हा॒र॒यि॒र । क॒र॒ना॒ये॒र॒३ । क्रा॒ऽरु॒दा॒३२३  
[ ४ ] । अ॒प॒हो॒प॒वा॒प् । दी॒३२३॒ऽशा॒पः ॥ ११ ॥
६. ति॒ऽस्त्रो॒ऽवा॒ऽचा॒ऽऽप॒उ॒दी॒पर॒ऽता॒ऽयि॒ऽ । गा॒र॒वो॒मि॒म॒न्ति॒र  
धे॒न॒वः । ह॒रि॒रा॒ऽर॒३यि॒ऽती॒र । क॒र॒नौ॒ऽरु । हु॒वा॒यि । हो॒वा॒र॒३ ।  
क्रा॒ऽरु॒दा॒३२३॒ऽअ॒प॒हो॒प॒वा॒प् । हा॒र॒ओ॒वा॒३२३॒ऽप ॥ १२ ॥

ऋषिः—कश्यपः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

४७२. <sup>१ २</sup>इन्द्रायेन्दो <sup>३१ २३ १२ ३ १२</sup>मरुत्वते पवस्व <sup>३ २ ३ १ २ ३ १२</sup>मधुमत्तमः । अ॒र्क॒स्य॒ यो॒नि॒मा॒स॒द॒म् ॥

१. इ॒प॒न्द्र॒प॒ये॒प॒न्दा॒प॒उ॒प् । म॒रु॒र॒त्वा॒ता॒यि । प॒र॒व॒स्वा॒मा॒ऽरु ।  
धु॒र॒म॒र॒त्त॒मः । अ॒र॒क्क॑र॒स्या॒यो॒ऽरु॒नि॒र॒मा॒ऽर॒३ । सा॒ऽरु॒दा॒३२  
३॒ऽअ॒प॒हो॒प॒वा॒प् । इ॒र॒षो॒वृ॒धे॒र॒ऽऽ ॥ १३ ॥
२. आ॒३२३॒ऽयि॒ऽन्द्रा॒प । या॒३२३॒ऽयि॒ऽन्दो॒प । म॒रु॒त्वा॒ते॒र॒३ ।  
पा॒३२३॒ऽ । वा॒प । स्वा॒३२३॒ऽमा॒प । धु॒र॒मा॒त्त॒मा॒र॒३ः । आ॒३२  
३॒ऽक्का॒प । स्या॒३२३॒ऽयो॒प । नि॒र॒मा॒स॒दा॒३२३॒ऽप॒म् ॥ १४ ॥
३. इ॒र॒न्द्रा॒र॒या॒यि॒न्दो॒ऽर॒३ । हा । अ॒र॒३हो॒३वा॒र । म॒रु॒र॒त्वा॒ते॒ऽ  
र॒३ । हा । अ॒र॒३हो॒३वा॒प॒र॒वा॒र॒स्वा॒मा॒ऽर॒३ । हा । अ॒र॒३ ।  
हो॒३वा॒र । धु॒र॒म॒र॒त्ता॒मा॒ऽर॒३ः । हा । अ॒र॒३हो॒३वा॒र । अ॒र॒क्क॑र॒  
स्या॒यो॒ऽर॒३ । हा । अ॒र॒३हो॒३वा॒र । नि॒र॒मा॒स॒दा॒ऽर॒३म् ॥ हा ।  
अ॒र॒३हो॒३वा॒र॒३ऽऽ । ओं॒ऽर॒३॒ऽप॒यि॒प् । डा॒प ॥ १५ ॥

४. इं॒ष्ट्रा॒प॒ये॒प॒न्दो॒प । ए॒ष्ट॒प । म॒ष्ट॒रू॒ष्ट । त्व॒ता॒यि । प॒व॒स्व॒म॒धु॒र-  
म॒त्ता॒ऽ॒२३॒ मा॒रः । हु॒र॒वा॒यि । हो॒र्वा॒र । अ॒र॒क्का॒स्या॒ऽ॒२३॒यो॒र ।  
हु॒र॒वा॒यि । हो॒र्वा॒र । नि॒र॒मा॒सा॒ऽ॒२३॒दा॒र३॒ष्ट॒३॒म् । ओ॒ऽ॒२३  
४॒प॒यि॒प । डा॒प ॥ १६ ॥
५. इं॒ष्ट्रा॒प॒ये॒प॒न्दो॒प॒हा॒प॒उ॒प । म॒र । रू । त्व॒ते॒र३॒हा॒र॒उ॒र । प॒व॒स्व॒र  
म॒र॒धु॒र । मा । त्ता॒मा॒ऽ॒२३॒हा॒र॒उ॒र । अ॒र । का । स्य॒यो॒ऽ॒२३ ।  
हा॒र३॒यि३ । नि॒मा॒ऽ॒२३ । हो॒३॒र३॒ष्ट॒वा॒प । सा॒ष्ट॒प॒दो॒प॒६॒हा॒प  
यि॒प ॥ १७ ॥
६. इं॒ष्ट्रा॒प॒ये॒प॒दो॒ष्ट॒वा॒प । ओं॒ष्ट॒वा॒प । म॒र॒रु॒र॒त्व॒तो॒वा॒र । ओं॒वा॒र ।  
प॒र॒व॒र स्व॒मो॒वा॒र । ओ॒वा॒र । धु॒र॒म॒र॒त्त॒मो॒वा॒र । ओ॒वा॒र३ ।  
अ॒र॒क्का॒ष्ट॒हा॒प॒उ॒प । स्य॒ष्ट॒यो॒ष्ट॒हा॒प॒उ॒प । नि॒र॒मो॒वा॒र३॒ओं॒ऽ॒२३॒ष्ट  
वा॒प । सा॒ष्ट॒प॒दो॒प॒६॒हा॒प॒यि॒प ॥ १८ ॥
७. इं॒ष्ट्रा॒प॒ये॒प॒न्दो॒प॒म॒रु॒ष्ट॒त्व॒प॒ते॒प । ओं॒ष्ट॒हा॒ष्ट॒यि॒ष्ट । प॒व॒स्व॒र॒म॒धु॒र  
म॒र॒त्त॒र॒म॒रः । ओं॒र्वा॒र३॒ष्ट॒३॒ओ॒र३॒ष्ट । हा॒प । आ॒र॒क्का॒स्या॒यो॒ऽ  
२३ । ना॒ऽ॒रु॒यि॒रु॒मा॒३॒र३॒ष्ट औ॒प॒हो॒प॒वा॒प । उ॒र॒प्र॒र । सा॒३॒र३॒ष्ट  
दा॒प॒म् ॥ १९ ॥
८. इं॒ष्ट्रा॒प॒ये॒प॒दो॒प॒म॒रु॒ष्ट॒त्वा॒प॒६॒ता॒प॒यि॒प । प॒व॒स्व॒र॒म॒र । धु॒र  
मा॒त्ता॒र॒मा॒ऽ॒२३॒ष्टः । अ॒प॒क्का॒प॒स्य॒प॒यो॒प॒नि॒प॒मा॒प॒६॒हा॒प॒उ॒प ।  
सा॒ष्ट॒प॒दो॒प॒६॒हा॒प॒यि॒प ॥ २० ॥

ऋषिः—जमदग्निः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

४७३. अ॒सा॒व्यं॑ शु॒र्म॒दा॒या॒प्सु॑ दक्षो गिरि॒ष्ठाः । श्ये॒नो॑ न यो॒नि॒मा॒स॒दत् ॥

१. आ४सा५ । वियःशु२र्म्मा२३ऽउवाऽ२३ । दा३२३४या५ ।  
आ४प्सू५ दा४क्षा५ः । गिररा२३ऽउवाये२३ । छा३२३४५ः ।  
श्ये२नो॒नाऽ२३ यो२ । नि२मा२३ऽउवाऽ२३ । सा३२३४-  
दा५त् ॥ २१ ॥
२. अ४सा५वि५या४ । शूर्म्मदा४२ु । य२ । आप्सुदाक्षा४२ुः ।  
गायिरिष्ठा२ः । श्यायिनो२ऽनायोऽ२३ । नि२मोऽ२३४वा५ ।  
सा४ऽ५दो५६ हा५यि५ ॥ २२ ॥
३. अ५सा५ । वि३या२ुओ३२३४वा५ । शूर्म्मदाया२ु । ओ३२३४  
वा५ । आप्सा२ुओ३२३४वा५ । दक्षोगिरायिष्ठा २ु । ओ३२३४  
वा५ । श्ये२नो॒नयो॒निमा॒सरदा३२३४५त् ॥ २३ ॥
४. अ५सा५ । वि३यौ२वा२ुओ३२३४वा५ । शु२र्म्मदायौ२ । वा२ु  
ओ३२३४वा५ । अ५प्सु५ । द३क्षौ२वा२ुओ३२३४वा५ ।  
गिरायि । छौ२वा२ुओ३२३४वा५ । श्ये५न५ः । न३यौ२वा२ु  
ओं३२३४वा५ । निमा । सा । दो२वा२ु । ओं३२३४वा५ ।  
हो४ऽ५यि५डा५ ॥ २४ ॥
५. अ४सा५ । व्यु५हु४वा४हा५यि५ । अः२शु२र्म्मदाया५प्सुदक्षौ-  
गिरिष्ठा उहुवाऽ२३होयि । श्याऽ२३यि३नो२३ । नाऽ२ुयो३२३४  
औ५हो५वा५ । नि२मा॒सरदा३२३४त् ॥ २५ ॥
६. अ४सा५व्य५ः५शु४ः । अ५हो४वा४हा५यि५ । मदाऽ२३या२ ।  
आप्सुद२क्षो२गिरि२ष्ठा२ः । श्यायिनो॒ना२३यो२३ । नाऽ२ुयि२ु  
मा३२३४औ५हो५वा५ । उ२प२ । सा३२३४दा५त् ॥ २६ ॥



७. इं३हार३५२३४। इ४हा४। सा५व्य५ः५शु४र्म४दा५य५।  
इ४हा४। अ२प्सुदक्षो॒गिरि॒ष्ठा२३४५ः। ई३२३४हा५। श्ये२नो॒न-  
योऽरु॒नि३मा२३४५। ई३२३४हा५। आऽरुस३दा२३४५-  
त्पई३२३४ हा५ ॥ २७ ॥

८. अ३सा३२३४। वि४य५ः५शु५ः। म३दा३२३४या५६। हा५उ५।  
आ२प्सू॒रुदा३२३४क्षा५ः। गि२रायि॒ष्ठाऽ२३४हा५यि५।  
श्यायि॒नोना२३यो२३। नायिमाऽ२३हार३४ऽ३यि३। साऽ२  
३४दो५६हा५यि५ ॥ २८ ॥

ऋषिः—दृढच्युत आगस्त्यः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥

स्वरः—षड्जः ॥

४७४. प१व२स्व दक्षसा३धनो दे३वे१भ्यः पी३तये हरे। म३रुद३भ्यो वा३यवे म३दः ॥

१. प४व५स्व५दौ५। हौ४हो४वा४हा५यि५। क्षासा॒२ध२र्ना३ः।  
औ२३हो२३४यि४। औ४हो५। वा॒३हा२यि२। दे॒२वे॒भ्य२  
ष्पायि। त२ये३ह२रा३यि३। अ२३हो२३४यि४। अ॒४हो५।  
वा॒३हा२यि२। म२रुद३भ्यो॒२वा३। अ२३हो२३४यि४। अ॒४  
हो५। वा॒३हा२३यि३। याऽरुवा३२३४अ॒५हो५वा५। मा३२३४  
दा५ः ॥ २९ ॥

२. प४व५स्व५द५क्ष५सा॒४ध५न५ः। ओ५६वा५। दे॒२वे॒भ्य॒ष्पीत-  
या४रु ओयि। ह२रा४रुयि२। म॒२रुद३भ्यो॒२वा४रु। ओऽ२३।  
य४वो४वा५। मा४ऽ५दो५६हा५यि५ ॥ ३० ॥

ऋषिः—काश्यपोऽसितः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥

स्वरः—षड्जः ॥

४७५. प१रि स्वा३नो गि३रि॒ष्ठाः प३वि॒त्रे सो३मो अक्षरत्। म३देषु स३र्वधा३ असि ॥

१. पा४री५ । स्वा२नो२गिररि२ष्टा२ः । परवाऽरुयिरुत्रे३२३४ सो५ । मो२अ२क्षारा४रुत् । मदायिषूसा२३ । ई३या२३ । र्व्व२धोऽ२३४वा५ । आ४ऽ५सो५६हा५यि५ ॥ ३१ ॥
२. प४र्ये४पा४री५ । स्वा२नो२गिररि२ष्टा२ः । परवाऽरुयिरुत्रे३२ ३४सो५ । मो२अ२क्षारा४रुत् । मदायिषूसा२३हा२३ । र्व्वाऽरुधा३२३४ अ५हो५वा५ । ए२३ । असी३२३४५ ॥ ३२ ॥
३. पा३ऽ५रि५ । स्वा५नो४ऽ३गा२३यि३रि४ष्टा५ः । परवित्रे२सो । मो२अ३क्षररात् । परवित्रे२ । सोमोऽ२३ । क्षा४रा५त् । ओयि । मदौ२ । वा२३४ऽ३अ२३४वा५ । षु५वा४ । सरर्व्व२धाः । असाये२३ । माऽरुदा३२३४अ५हो५वा५ । षू२३ । षुरसरर्व्व२ धाअसी३२३४५ ॥ ३३ ॥
४. अ३हो२यिर । इह२हा३हरहायि । अऽरुहो३२३४वा५ । पररा२रु यिरुस्वा३२३४नो५ । गिररा३२३४यि४ष्टा५ः । पारविरु- त्रे३२३४सो५ । मो२अ२रुक्षा३२३४रा५त् । मरदारुयिरु षू३२३४सा५ । र्व्व२धारुआ३२३४सी५ । अ३हो२यिर । इह२ हा३हरहायि । अऽरुहो३२३४५वा५६५६ । ए२३ । उपा३२३ ४५ ॥ ३४ ॥
५. प४ । र्ये४स्वा४ना५ः । गा४रुयिर । रि२ष्टा४रुया । हा३हारयिर । उवाऽ२३होयि । पावित्रेसो२ । मोअ३क्षाराऽरुत् । हा३हारयिर । उवाऽ२३होयि । मदाऽरुयिरुषु३सारु । हा३हारयिरु । उवाऽ२३ हो । र्व्व२धोऽ२३४वा५ । आ४ऽ५सो५६हा५यि५ ॥ ३५ ॥

ऋषिः—काश्यपोऽसितः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥  
स्वरः—षड्जः ॥

२. प४रि४प्रि४या४ऽ५दि५व५ष्क४वा४यि४ः । वया॒रँहो॒र॒वा॒ः  
सि॒रन॒प्यो॒वो॒ऋ॒हि॒रतः । स्वा॒नैर्या॒ऽ२३ती॒र । हु॒रवा । हो॒वा॒र ।  
२ । हु॒वा॒४रु॒यि॒र । इ॒इँया॒रु । क॒३वि॒३क्र॒रतो॒ऽ२ु । या॒३२३४अ॒५  
हो॒५वा॒५ । ई॒२३या॒ऽ२३४५म् ॥ ३८ ॥

१. प्र२सो२मा३२३४सा५ः । म२द२च्युत२ः । औ२२३हो३वा२३ ।  
 श्रवा२रुसा३२३४यि४ना५ः । ओयि२मैघोना४रुम२ । सुता२  
 २३ः । वा२रुयि२रुदा३२३४अ५हो५वा५ । थे२अ२क्र२मू३२३-  
 ४५ः ॥ १ ॥

ऋषिः—त्रितः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

४७८. <sup>१ २</sup>प्र सोमासो <sup>३ २ ३</sup>विपश्चितोऽ <sup>१ २</sup>पो नयन्त ऊर्मयः । <sup>३ १ २</sup>वनानि <sup>१ २</sup>महिषा <sup>३ १ २</sup>इव ॥

१. प्र५सो५मा५सा५ः । वायिपश्चि२तरः । आपो२ऽनाया४२ ।  
ताऊ२र्म२य२ः । वाना२ऽनिमा४२ । आऔ२३हो२ । हिषा२  
इ२वर । इडा२३ भा२३४२३ । ओं२३४५यि५ । डा५ ॥ २ ॥

ऋषिः—अमहीयुः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

४७९. <sup>१ २</sup>पवस्वेन्दो <sup>३ १ २ ३ २</sup>वृषा सुतः <sup>३ १ २ ३ २ ३ १ २</sup>कृधी नो यशसो जने ।

<sup>२ ३ २ ३ १ २</sup>विश्वा अप द्विषो जहि ॥

१. प४व४स्वे४न्दो४ऽप५वृ५षा५सु४ता४ः । कृ२धीनो॒यशसो॒जनाये  
२३ । वा२यि२श्वा२आ३२३४पा५ । द्वा२ऽयि२रुषा३२३४औ५  
हो५वा५ । जा३२३४ही५ ॥ ३ ॥

ऋषिः—भृगुः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

४८०. <sup>२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २</sup>वृषा ह्यसि भानुना <sup>१ २</sup>द्युमन्तं त्वा <sup>३ १ २</sup>हवामहे । पवमान स्वर्दृशम् ॥

१. वृ४षा५हि५या४ । सि२भानू२३ना२ । द्यु२मन्तंत्वा॒हावा२ऽ  
माहा२३४यि४ । प३वा२३ । मानसु२वो२३४वा५ । द्रे३२३४  
शा५म् ॥ ४ ॥

२. वृ४षा५हि४या४ऽप५सि५भा५नु४ना४द्यु२मन्तंत्वा॒रहवा॒रम२हे२ ।  
हा४रुयि२ । ऊ४२ु । हो३ँवा२ । पवमा२न२सु२वर२र्दृश२म् ॥  
हा४रुयि२ । ऊ४२ु । हो३ँवा२ु । हु३वो२३४५यि५ । डा५ ॥ ५ ॥

ऋषिः—कश्यपः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

४८१. <sup>१ २</sup>इन्दुः पविष्ट चेतनः <sup>३ १ २</sup>प्रियः <sup>३ १ २ ३ २ ३ २</sup>कवीनां मतिः । <sup>३ १ २ २ ३ १ २</sup>सृजदश्वं रथीरिव ॥

१. इं३दू२रौ३हो४वा४हा५यि५ । पा४वी५ । ष्ट२चा५रयि२ । त२-  
नो३२३४हा५ । हा२होयि । हो३ँहा२ । प्रि२याष्क२वी२ ।  
ना॒माति२रो३२३४हा५ । हा२होयि । हो३ँहा२ । सृजा५रत् २ ।  
अ२श्चो३२३४हा५ । हा२होयि । हो३ँहा२३ । रा५रुथा३२३४  
औ५हो५वा५ई३२३४ वा५ ॥ ६ ॥
२. इं४दु५ष्य५वि५ष्ट५चे४त५न५षि५य४ष्क५वा४यि४ ।  
हुं३म्३हुं२ । ना२ुम्मा३२३४ती५ः । सृजादा५र३श्चा२म् २ । हूँ३ ।  
हुं२३ । रा५रुथा३२३४ औ५हो५वा५ । ई३२३४वा५ ॥ ७ ॥
३. इं४दु५ष्य५वि५ष्ट५चे४त५न५षि५य४ष्क५वी५ना४म्म५  
ति४सृ५ । जा४ऽप५द५श्चा४म् ४ । ओवा५र३ । २ । रा५रुथा३२  
३४औ५हो५वा५ । ई३२३४वा५ ॥ ८ ॥

ऋषिः—कश्यपः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

४८२. <sup>१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ २</sup> असृक्षत प्र वाजिनो गव्या सोमासो अश्वया । शुक्रासो वीरयाशवः ॥

१. अ५सृ५क्ष२ता४प्र५वा४जि४ना५ः । गाव्या४रुसोमा४रु ।  
सो२र अ२ । श्वया । शूर५क्रा४रुसोवी४रु । र२या४रुशव२ः ।  
ओं५र३४यि५ । डा५ ॥ ९ ॥
२. अ५सृ५क्ष५ता५प्रा५द५वा५जि५ना५ः । गरव्या५सोमा५सोअश्वया५  
२३होयि । शु२क्रा५सोवा२३यि । र२या५र३ । शा५रुवा३२३४  
अ५हो५ वा५ । ग्वा३२३४भी५ः ॥ १० ॥
३. अ३सृ४क्ष४त४प्र३वा४जि४न५ः । ए२३ । ग४व्या४सो५मा५ ।  
सो२३ आश्वा२३या२ । शुक्रा५रुसो३२३४वी५ । र२यो५र३४  
वा५ । शा४ऽप५वो५द५हा५यि५ ॥ ११ ॥

ऋषिः—निधुविः काश्यपः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥

स्वरः—षड्जः ॥

४८३. <sup>१ २</sup>पवस्व <sup>३ १</sup>देव <sup>२ ३ १</sup>आयुषगिन्द्रं <sup>२२</sup>गच्छतु <sup>३ १ २</sup>ते मदः । <sup>३ १</sup>वायुमा <sup>२२ ३ १ २</sup>रोह धर्मणा ॥

१. पा४व५स्वा४दे५ । व३या२३ । वाऽरुया३२३४अ५हो५वा५  
यू३२३४षा५क्५ । आ४यिं४द्रं५ग४छा५ । तु३ता२३यि३ ।  
तूऽरुता३२३४अ५हो५वा५ । मा३२३४दा५ः । वा२यू४रु२२  
हो२ऽयि । आऽर३रो२ु । ह३धा२३ । हाऽरुधा३२३४अ५हो५  
वा५ । ओलिमा३२३४णा५ ॥ १२ ॥

२. प३व४स्व५दे५व५ऐ५ । ही२ऐ२ुही३२३४या५ । आ॒युषागै४रु  
हीऐ४रुही३ँया२ । इंद्रंगच्छतुतेमदऐ४रुहीऐ४रुही३या२ । वायू-  
मारो२३ऽर३ । ह२धोऽर३४वा५ । मा४ऽप५णो५६हा५  
यि५ ॥ १३ ॥

ऋषिः—अमहीयुः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

४८४. <sup>१ २</sup>पवमानो <sup>३ २</sup>अजीजनद् <sup>३ १</sup>दिवश्चित्रं <sup>२२ ३ २</sup>न तन्यतुम् । <sup>१ २</sup>ज्योतिर्वैश्वानरं <sup>३ ३ ३ २</sup>बृहत् ॥

१. पा४वा५ । मा॒नो । अ३जी२ुजा३२३४ना५त्५ । दि२वश्चित्रा॒म् ।  
नतन्यतू॒म् । ज्योति२र्वै॒श्वाऽर३ । नाऽरु३२३४अ५हो५वा५ ।  
ब्रे३२३४हा५त्५ ॥ १४ ॥

२. प५व५मा५ना५ः । अजायिजा२३ना२त्२ । दि२वश्चि२त्राऽर३  
३२३हा२३यि३ । नात२न्या३२३४तू५म् । ज्यो३२३४ती५ः ।  
वा३२३४ यि४श्वा५ । न४रो४वा५ । ब्रे४ऽप५हो५६हा५  
यि५ ॥ १५ ॥

ऋषिः—काश्यपोऽसितः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥

स्वरः—षड्जः ॥

५८५. परि स्वानास इन्दवो मदाय बर्हणा गिरा । मधो अर्षन्ति धारया ॥

१. पा४री५ । स्वा२ना२स२इ२न्द२वो२म२दा२य२ब२ । हणाऽ२३  
गि३ रा२३४ । म३धो२३४अ३ऋ३षा२३ । ति२धोऽ२३४वा५ ।  
रा४ऽ५ यो५६हा५यि५ ॥ १६ ॥

२. पा४री५ । स्वा२ना२सइन्दवाउवाऽ२३होवाऽ२३हा४२२ईया ।  
मदा॒यब॒ऋहणा॒गिराउवाऽ२३होवाऽ२३हा४२२ईया ।  
मधो॒अर्ष॑तिधा॒रयाउवाऽ२३होवाऽ२३हा४२२ईयाऽ२ ।  
वा३२३४ औ॒५हो॒५वा५ । ऊ३२३४ पा५ ॥ १७ ॥

३. पा३ऽ५रि५ । स्वा॒५ना४ऽ३सा२३इं४द४वा५ः । मदा॒इंय२ब२  
ऋ२हणा॒इंगि२राऽ । मधोऽ२३ऋ३षा२ । ऊ॒र्मि॒रिवा४२ु ।  
ई॒रं॒या२ु । ति३धा॒३ र२या । अ२३हो४वा५ । हो४ऽ५यि५ ।  
डा५ ॥ १८ ॥

ऋषिः—काश्यपोऽसितः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥

स्वरः—षड्जः ॥

५८६. परि प्रासिष्यदत् कविः सिन्धोरूमावधि श्रितः ।

कारुं बिभ्रत् पुरुस्पृहम् ॥

१. प५रि५प्रा५सी५ । ष्य२द२त्कावी४२ुः । सिन्धो॒रूमा॒वाधि॑-  
श्रिता४२ुः । का॒रूऽ२३म्३ । बाऽ२ुयि२ुभ्रा३२३४औ॒५हो॒५  
वा५ । पु२रु२ स्पृहा३२३४५म् ॥ १९ ॥

ऋषिः—अमहीयुः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

४८७. उपो<sup>२ ३ २ ३ २ ३ ३ १ २ ३ १ २ २</sup> षु जातमसुरं<sup>१ २ ३ १ २</sup> गोभिर्भङ्गं<sup>२ २</sup> परिष्कृतम् । इन्दुं<sup>१ २ ३ १ २</sup> देवा अयासिषुः ॥

१. ई२हा४रुइ२हा । उपो<sup>२ ३ २ ३ २ ३ ३ १ २ ३ १ २ २</sup> षुजा॒तमा४रुप्तु२राम् । इहा । इ२हा४रु  
इ२हा । गो॒भिर्भङ्ग॒म्परा४रुयि२ष्कृ॒ताम् । इहा । इ२हा४रुइ२हा ।  
इन्दु॒न्देवा॒अया४रुसि२षूः । इहा२५५ ॥ २० ॥

२. ऊपो<sup>२ ३ २ ३ २ ३ ३ १ २ ३ १ २ २</sup> षुजा॒तमा४रुसु२राम् । उपा । गो॒भाऽ२३यि३ऋ३होयि ।  
भंग॒म्परा४रुयि२ष्कृ॒रताम् । उपा । इन्दू॒ऽ२३३होयि । देवा॒-  
अया४रु । सिषु२रा२३ऽउवाऽ२३ । ऊ२३ऽ२३४ या५ ॥ २१ ॥

३. उ४पो५षौ४ । हो४यि४जा४ता५म् । आसू<sup>१</sup>२३रा२म् ।  
अँ३हो२३ वा२३ । गोभि२र्भा३२३४ङ्गा५म् । ओंयिपा॒रिष्कृ॒-  
ता४रुम् । इन्दू॒ऽ२३म् ३दे३वा२३४औ५हो५वा५ । अ॒रया॒-  
सि२षू३२३४५ः ॥ २२ ॥

ऋषिः—बृहन्मतिराङ्गिरसः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥  
स्वरः—षड्जः ॥

४८८. पु॒ना॒नो<sup>३ १ २ ३ २३ ३ २ ३ १ २</sup> अ॒क्रमी॒दभि॒ विश्वा॒ मृ॒धो॒ वि॒चर्ष॑णिः ।

शु॒म्भन्ति॒ वि॒प्रं॒ धी॒ति॒भिः॑ ॥

१. पु॒प॒ना॒नो॒पा५ । क्रा॒मी॒रु॒दा३२३४भी५ । वि॒श्वाऽरु॒मा॒-  
३२३४र्द्धा५ः । वी॒र॒च॒र॒ऋ॒रु॒षा३२३४णी५ः । शु॒म्भाऽरु॒न्ता३२  
३४यि४वी५ । प्राऽरु॒न्धा३२३४अ॒प॒हो५वा५ । ती३२३४-  
भी५ः ॥ २३ ॥



ऋषिः—जमदग्निः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

४८९. आ<sup>३</sup>वि<sup>२</sup>शन्<sup>३</sup> कल<sup>१</sup>शं<sup>२</sup> सु<sup>३</sup>तो<sup>१</sup> वि<sup>३</sup>श्वा<sup>१</sup> अ<sup>३</sup>र्ष<sup>२</sup>न्ना<sup>३</sup>भि<sup>१</sup> श्रि<sup>२</sup>यः ।

इ<sup>२</sup>न्दुरि<sup>३</sup>न्द्राय<sup>१</sup> धी<sup>२</sup>यते ॥

१. आ४वि५श५न्का५ला५द५श५ः५सु५ता५ः । वा५यिश्वा२अ२ऋष२  
न२ । अ२भा५यिश्वा५या२३ः । ओ३ँहा२३ । ओ५वा२ । ओ३२३४  
हा५यि५ । इ२न्दू२३ः । आ२रु५यिं२द्रा३२३४ओ५हो५वा५ । य२  
धी२य२ते३२३४५ ॥ २४ ॥

२. आ४वि४श३न्क४ल४श५म् । सु३ता२३ः । वा४यि४श्वा५ः ।  
अ२ऋष२न२ । अ२भा५यिश्वा५या२ । अ३हौ३हो३२३४वा५ ।  
अ३हौ२हो२ऽयि । इ२दू२रा२ऽयिं२द्रा४२ । य२ । धी५या२रु५ता३२३४  
अ५हो५ वा५ । ऊ३२३४पा५ ॥ २५ ॥

ऋषिः—प्रभूवसुः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

४९०. अ१स२र्जि३ र३थ्यो३ य३था३ प३वि३त्रे३ च३म्बो३ः सु३तः ।

का१र्ष्मन् वा३जी न्य३क्र३मीत् ॥

१. अ५स५र्जि५रा५ । थि२ । यो५या२३था२ । प२र५वि३त्रे२ । चा ।  
मु५वो२रु२स्सू३२३४ता५ः । का२र्ष्मन्वा२३जी२ । नि५य५क्र२  
मा५यि५त् । अ२३हो४वा५ । हो४ऽयि५डा५ ॥ २६ ॥

ऋषिः—मेध्यातिथिः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥

स्वरः—षड्जः ॥

४९१. प्र२ य३द्वा३वो३ न३ भू३र्ण३य३स्त्वे३षा३ अ३या३सो३ अ३क्र३मुः ।

म्न३न्तः कृ३ष्णाम३प३ त्व३च३म् ॥

१. प्र४य४ब्दा५उ५ । गा२वो२ना२३भूणा२ऽया२३४ः । त्वे३  
षा२३ः । आया२ँसो२अ२क्र२मूरः । घं२ताष्का२३ष्णा२मूर ।  
अ२पात्वच२मूर । अ२हो२रुहा३२३४अ५हो५वा५ । ऊ२३ऽ  
२३४पा५ ॥ २७ ॥

२. प्र२यद्गा२३वो४न४भू५र्ण५या५ः । त्वायिषा॒अ२या॒२ ।  
सोअ॑क्रमू२३ः । घ्रा२३४न्तो४हा५यि५ । का२रुष्णा३२३४  
अ५हो५वा५ । अप२त्वचा३२३४५म् ५ ॥ २८ ॥

ऋषिः—निधुविः काश्यपः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥  
स्वरः—षड्जः ॥

४९२.अ३प१घ्नन् पव२से मृ३धः क्र३तु१वि२त् सोम३ मत्स१रः । नु३दस्वा१देव२युं ज३न१म् ॥

१. अ५प५घ्नौ४ । हो४यि४पा४वा५ । सायिमा२ऽर्द्धा४रुः । क्रातु-  
वि२त्सो॒२म२मात्सा२ऽरा४रुः । नुदा२३ । स्वा२रुदा३२३४  
अ५हो५वा५ । व२यु२ञ्जना२३४५म् ५ ॥ २९ ॥

ऋषिः—निधुविः काश्यपः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥  
स्वरः—षड्जः ॥

४९३.अ३या पव१स्व धा२रया३ यया३ सूर्य१मरोच२यः । हि३न्वानो१ मा२नु३षी१रपः ॥

१. ए५अ५या५प५वा५ । स्वर२धा४रु । रया२३ऽउवा२३ । ऊ२३४  
पा५ । यया॒सूर्य१मरो४रु । चया२३ऽउवा२३ । ऊ२३४पा५ ।  
हि॒न्वा॒नो॒मा॒नु॒षा२३यि३ऋ३होयि । आप२आ२३ऽउवा२३ ।  
ऊ२३ऽ२३४पा५ ॥ ३० ॥

ऋषिः—अमहीयुः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

४९४.स१ पव२स्व य३ आवि१थेन्द्र३ वृ२त्राय३ हन्त१वे । व३त्रिवा१स३ मही१रपः ॥

१. स३हो२३४ऽ३यि३ । प२व३स्व५ । यआ४शुवि२थाऽ । इं२द्रं  
वृ३त्रा२३ । याहं२ता३२३४वे५ । ओवा२३ओ४वा५ । व२त्रिवाऽ  
२३५३सा२म् । माही२र२पा । अ२३हो४वा५ । हो४ऽ५यि५  
डा५ ॥ ३१ ॥

ऋषिः—अमहीयुः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

४९५. अया<sup>३ २ ३ १ २२</sup> वीती<sup>३ १ २</sup> परि<sup>३ २ ३ २</sup> स्रव<sup>३ १ २ ३ १ २२</sup> यस्त<sup>३ १ २ ३ १ २२</sup> इन्दो मदेष्वा । अवाहन्नवतीर्नव ॥

१. अ५या५वी५ती५ । पा२रि॒स्रवा । य२स्त२इं॒दाउ । मा॒रदायि  
षुवा । अवाहा२३न्ना२३ । व२तोऽ२३४वा५ । ना४ऽ५वो५६हा५  
यि५ ॥ ३२ ॥
२. अ२या॒वीती२ु । अ॒३होवा२ु । अ॒३हो२३४यि४ । अ॒२ । होऽ२ु ।  
वा३२३४ । अ॒५हो५वा५ । परि॒स्रव२ । य२स्तइन्दा२ु । अ॒३  
होवा२ु । अ॒३हो२३४यि४ । अ॒२ । होऽ२ु । वा३२३४ । अ॒५हो५  
वा५ । मदे॒रँषु२वा । अवाहन्ना२ु । अ॒३होवा२ु । अ॒३हो२३४  
यि४ । अ॒२ । होऽ२ु । वा३२३४ । अ॒५हो५वा५ । व२ती॒र्नवाऽ२  
३४५ ॥ ३३ ॥
३. अ४या३ऽ५वी५ । ता॒४ऽ३यि३पा२३रि॒४स्र४वा५ । यास्तइ२  
दो॒२ । म॒रदायिषू२ऽवा४२ु । अवाहा२३न्ना२ु । व३ती॒र्न२वा ।  
अ२३हो४वा५ । हो४ऽ५यि५डा५ ॥ ३४ ॥

ऋषिः—उचथ्यः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

४९६. परि<sup>१ २ ३ १ २२ ३ २३</sup> द्युक्षं<sup>३ १ २ ३ १ २</sup> सनद्रयिं<sup>३ १ २ ३ २ ३ १</sup> भरद्वाजं<sup>३ १ २ ३ २ ३ १</sup> नो अन्धसा । स्वानो अर्ष पवित्र आ ॥

१. प५रि५द्यु५क्षा५म्५ । ओयि । सनद्रायी४२ुम्२ । ओयि ।  
भरद्वाजा४२ुम्२ । ओयि । नोअन्धासाऽ२३४ । स्वा॒३नो२३४  
अ३ऋ३षा२३ । प४वो४वा५ । त्रा४ऽ५यो५६हा५यि५ ॥ ३५ ॥

[ इति ] त्रयोदशः प्रपाठकः ॥

ऋषिः—मेधातिथिः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥

स्वरः—षड्जः ॥

४९७. अ<sup>१</sup>चि<sup>२</sup>क्र<sup>३</sup>द<sup>२</sup>द<sup>३</sup> वृ<sup>२</sup>षा<sup>३</sup> ह<sup>२</sup>रि<sup>३</sup>र्म<sup>२</sup>हान्<sup>३</sup> मि<sup>२</sup>त्रो<sup>३</sup> न<sup>२</sup> दर्श<sup>३</sup>तः । स<sup>१</sup> सूर्ये<sup>२</sup>ण<sup>३</sup> दि<sup>२</sup>द्यु<sup>३</sup>ते ॥

१. अ२चि२क्र२दा२३त्३ । आःचि२क्र२दा२३त्३ । अ४चि४क्र४-  
दा४ऽप५दे५ । वृ२षा२२हर२रा२३यि३ । वा२क्र२षा२३यि३ । वृ४षा४  
ह४रा४ऽप५ए५याम२हा२न्मि२त्रा२३ । मा२हा२न्मि२त्रा२३ । म४हा४  
न्मि४त्रा४ऽप५ए५ । न२द२र२क्र२श२ता२३ । ना२द२क्र२-श२ता२३ ।  
न४द४क्र४श४ताः४ऽप५ए५ । स२र२सूरि२रि२या२३यि३ । सा२र२  
सूरि२या२३यि३ । स२र२सूरि२रि२या२३यि३ । ए५ । ण२दि२  
द्यु२ता२३ । यि३ । णा२दि२द्यु२ता२३यि३ । ण४दा४ऽप५यि५ द्यु५  
ता५उ५ । वा५ ॥ १ ॥

ऋषिः—भृगुः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥

स्वरः—षड्जः ॥

४९८. आ<sup>२</sup> ते<sup>३</sup> दक्षं<sup>१</sup> मयो<sup>२</sup>भुवं<sup>३</sup> वह्नि<sup>२</sup>मद्या<sup>३</sup> वृणी<sup>२</sup>महे । पान्त<sup>२</sup>मा<sup>३</sup> पुरु<sup>२</sup>स्पृहम्<sup>३</sup> ॥

१. आ५ते५द५क्षा५म् । म२यो२भू२३वा२म् । वह्नि२म२ । द्या ।  
वृ२णी२रु२मा२३३४हा५यि५ । पान्त२मा२३ । ई३र्या२ । पुर२रु२३३ ।  
स्प्रे२रु२हा२३३४अ५हो५वा५ । ऊ२३३२३४ पा५ ॥ २ ॥

२. आ२ते२रु२दा२३३४क्षा५म् । मा२यो२रु२भू२३३४वा५म् । व३-  
ह्नि४म४द्या३वृ४णी५ । म३हो३३३४हा५यि५ । पान्त२मा२३ ।  
ई३र्या२३ । पू२रु२३३३४अ५हो५वा५ । स्प्रे३३३४हा५  
म् ॥ ३ ॥

३. आ३ते४द३क्षं४म५य५ः । भु३वो३२३४हा५यि५ । व३ह्नि४म४  
द्या३वृ४णी५ । म३हो३२३४हा५यि५ । पान्ता२ऽमा४२ु ।  
पुरुस्पृ२ह२म् । इडाऽ२३भा२३४ऽ३ । ओऽ२३४५यि ।  
डा५ ॥ ४ ॥

ऋषिः—उचथ्यः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

४९९. अ१ध्व२र्यो३ अ१द्रि२भिः सु३तं सोमं पवि२त्र आ नय । पु३नाहीन्द्रा१य पा२तवे ॥

१. अ२ध्व२र्यो३ऽ२३४आ५ । द्रि२भा५यि॒स्सू२३ता२३म् । सो॒माऽ२ु  
मू॒रुपा३२३४वी५ । त्राआ२ऽनाया४२ु । पुनाऽ२३ । ही३द्रा२३४  
अ॒पहो॑५वा५ । य२पा॒त२वे३२३४ ॥ ५ ॥

२. अ४ध्व५र्यो॑५ । हो४अ४द्री५ । भि२स्सु२रतम् । अ॒इ॒हो२३वा२३ ।  
सो॒माऽ२ुमू॒रुपा३२३४वी५ । ओ॒त्राआ२ऽनाया४२ु । पुनाऽ२३ ।  
हाऽ२ुयि॒रुन्द्रा३२३४अ॒पहो॑५वा५ । य२पा॒त२वे३२३४५ ॥ ६ ॥

ऋषिः—अवत्सारः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥

स्वरः—षड्जः ॥

५००. त२रत् स मन्दी१ धावति२ धा३रा सु२तस्यान्ध१सः । त२रत् स मन्दी१ धावति२ ॥

१. त५र५त्स५मा५ । दी२धावा२ऽताऽ२३यि३ । धा॒राऽ२ुसू३२३४-  
ता५ । स्य२आऽ२३ । धाऽ२ुसा३२३४अ॒पहो॑५वा५ । त२त्स  
मन्दी॒धा॒र॒व॒ती३२३४५ ॥ ७ ॥

ऋषिः—निधुविः काश्यपः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥

स्वरः—षड्जः ॥

५०१. आ१ पव२स्व स३ह॒स्त्रि॒णं रयिं॑ सोम सु॒वीर्य्य॑म् । अ॒स्मे श्रवांसि॑ धारय ॥

१. आ॒प॒प॒व॒प॒स्वा॒प । स॒र॒ह॒र॒स्त्रि॒णाम् । हु॒वा॒यि । हु॒वाऽ॒र॒३हो ।  
 र॒र॒यि॒र॒सो॒मा । सु॒र॒वी॒र॒रि॒याम् । हु॒वा॒यि । हु॒वाऽ॒र॒३हो॒यि ।  
 अ॒र॒स्मे॒र॒श्र॒वा । सि॒र॒धा॒र॒र॒या । हु॒वा॒यि । हु॒वाऽ॒र॒३होऽ॒रु ।  
 वा॒३॒र॒३४अ॒प॒हो॒प॒वा॒प । ऊ॒३॒र॒३४पा॒प ॥ ८ ॥

ऋषिः—असितः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

५०२. अनु॑ प्र॒त्ना॒स आ॒यवः॑ प॒दं न॒वी॒यो अ॒क्रमुः॑ । रु॒चै॑ ज॒नन्त॑ सूर्य॒म् ॥

१. अ॒प॒नु॒प॒प्र॒त्ना॒प॒स॒प॒आ॒प॒या॒प॒द॒वा॒पः । प॒र॒द॒न्न॒वी॒यो॒अ॒क्र॒मूः ।  
 रु॒चा॒यि॒जे॒ना । ता॒र॒३सू॒र । हु॒म्मा॒ये॒र॒३ । री॒३॒र॒३४या॒प॒म् ॥ ९ ॥

ऋषिः—भृगुः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

५०३. अ॒र्षा सोम॑ द्यु॒मत्त॑मोऽ॒भि द्रो॑णानि रौरु॒वत् । सी॒दन् यो॒नौ व॑नेष्वा ॥

१. अ॒र॒ऋ॒र॒षा । इ॒हा । सो॒म॒द्यु॒मा॒रु॒त्त॒र॒मा । इ॒हा । अ॒र॒भा॒यि । इ॒हा ।  
 द्रो॒णा॒नि॒रो॒रु॒र॒वा । इ॒हा । सी॒र॒दा । इ॒हा । यो॒नौ॒व॒ना॒रु॒-  
 यि॒र॒षु॒र॒वा । इ॒हा॒र॒ऽऽ ॥ १० ॥

२. अ॒र॒ऋ॒र॒षा॒रु॒हा॒प॒उ॒प । सो॒म॒द्यु॒मत्त॑मो । भि॒द्रोऽ॒र॒३णा॒र । नि॒र॒रा  
 औ॒र॒३हो॒र । रू॒वाऽ॒र॒३त्॒३ । सी॒र॒दा॒र॒उ॒र॒वा॒र । यो॒नौ॒वा॒र॒३ने॒र ।  
 हु॒म्मा॒ये॒र॒३ । षू॒३॒र॒३४वा॒प ॥ ११ ॥

३. अ॒र॒ऋ॒र॒षा॒रु॒सो॒प॒म॒प॒द्यु॒प॒म॒प । त॒३मा॒रुः । अ॒र॒ऋ॒र॒षा॒रु॒सो॒प  
 मा॒प । द्यु॒मत्त॑र॒म॒रः । अ॒भि॒र॒द्रो॒र॒णाऽ॒र॒३हा॒र । नि॒र॒रो॒रु॒व॒र॒त्त॒र ।  
 सा॒यि॒द॒न्यो॒र॒नाऽ॒र॒३उ॒र॒हा॒र॒यि॒र । व॒र॒ना॒यि॒षूऽ॒र॒३वा॒र॒३४ऽ॒३ ।  
 ओं॒ऽ॒र॒३४॒प॒यि॒प । डा॒प ॥ १२ ॥

ऋषिः—कश्यपो मारीचः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥

स्वरः—षड्जः ॥

५०४. वृषा<sup>१ २</sup> सोम<sup>३ ४</sup> द्युमा<sup>२ ३</sup> असि<sup>१ २</sup> वृषा<sup>३ ४</sup> देव<sup>१ २</sup> वृषत्रतः<sup>२ ३</sup> । वृषा<sup>१ २</sup> धर्माणि<sup>२ ३</sup> दध्रिषे ॥

१. वृषा<sup>५</sup> सो<sup>५</sup> मा<sup>५</sup> । द्यु<sup>२</sup> मा<sup>४</sup> आ<sup>४</sup> सा<sup>४</sup> रु<sup>२</sup> यि<sup>२</sup> । वृषा<sup>२</sup> देवा<sup>३</sup> हार<sup>३</sup> यि<sup>३</sup> । वा<sup>३</sup> ऋष<sup>२</sup> त्रा<sup>३</sup> २३४ ता<sup>५</sup> । वृषा<sup>२</sup> धर्मा<sup>३</sup> ई<sup>३</sup> या<sup>२</sup> । णा<sup>२</sup> यि<sup>२</sup> दध्रि<sup>२</sup> षे<sup>२</sup> । इडा<sup>५</sup> २३ भा<sup>३</sup> ४५ ३ । ओं<sup>५</sup> २३ ४५ यि<sup>५</sup> । डा<sup>५</sup> ॥ १३ ॥

ऋषिः—कश्यपो मारीचः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥

स्वरः—षड्जः ॥

५०५. इषे<sup>३ १ २</sup> पवस्व<sup>३ १ २</sup> धारया<sup>३ १ २</sup> मृज्यमानो<sup>३ १ २</sup> मनीषिभिः<sup>३ १ २</sup> । इन्दो<sup>१ २ ३</sup> रुचाभि<sup>१ २</sup> गा<sup>२ २</sup> इहि ॥

१. इषे<sup>५</sup> प<sup>५</sup> वा<sup>५</sup> । स्वर<sup>२</sup> धा<sup>२</sup> र<sup>२</sup> यौ<sup>२</sup> र<sup>२</sup> हो<sup>२</sup> वा<sup>२</sup> ३ हा<sup>२</sup> ३४ । अ<sup>५</sup> हो<sup>५</sup> वा<sup>५</sup> । मृ<sup>२</sup> ज्यमा<sup>२</sup> र<sup>२</sup> नो<sup>२</sup> र<sup>२</sup> म<sup>२</sup> नी<sup>२</sup> षिभि<sup>२</sup> रुः । इं<sup>३</sup> । दो<sup>२</sup> रु<sup>२</sup> रु<sup>३</sup> चा<sup>५</sup> । अ<sup>२</sup> भि<sup>२</sup> र<sup>२</sup> गौ<sup>२</sup> र<sup>२</sup> हो<sup>२</sup> वा<sup>२</sup> ३ हा<sup>२</sup> ३४ । अ<sup>५</sup> हो<sup>५</sup> वा<sup>५</sup> । उपू । इ<sup>२</sup> ही<sup>३</sup> २३४५ ॥ १४ ॥

ऋषिः—असितः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

५०६. मन्द्रया<sup>३ १ २</sup> सोम<sup>३ १ २</sup> धारया<sup>३ १ २</sup> वृषा<sup>३ २</sup> पवस्व<sup>२ ३</sup> देवयुः<sup>१ २</sup> । अव्या<sup>३ २</sup> वारे<sup>२ ३</sup> भिरस्मयुः<sup>३ २</sup> ॥

१. म<sup>५</sup> द्र<sup>५</sup> या<sup>५</sup> सो<sup>५</sup> । म<sup>२</sup> धा<sup>२</sup> रया<sup>२</sup> । वृषा<sup>५</sup> पा<sup>५</sup> २३ वा<sup>२</sup> । स्वर<sup>२</sup> दा<sup>२</sup> यिवा<sup>२</sup> २३ यू<sup>२</sup> । अव्या<sup>५</sup> २३ । वा<sup>५</sup> २ रा<sup>३</sup> २३४ अ<sup>५</sup> हो<sup>५</sup> वा<sup>५</sup> । भि<sup>२</sup> र<sup>२</sup> रु<sup>२</sup> स्म<sup>३</sup> यू<sup>२</sup> २५ ॥ १५ ॥

ऋषिः—कविः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

५०७. अया<sup>३ १ २</sup> सोम<sup>३ १ २</sup> सुकृत्यया<sup>३ २ ३</sup> महान्तसन्न<sup>३ २ ३</sup> भ्यवर्धथाः<sup>३ १ २</sup> । मन्दान<sup>३ २</sup> इद्<sup>२</sup> वृषायसे ॥



१. अपया४ऽ३सो२३म४सु४कृ५त्य५या५ । म२हान्त५स३न्ना । भ्य३वा५  
 रु३र्द्धा३२३४था५ः । मा॒न्दा॒र॒न॒र॒आये२३त्३ । वृ३षा२३या४ऽ५  
 सा५६५६यि६ ॥ १६ ॥

ऋषिः—जमदग्निः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

५०८. अयं विचर्षणिर्हितः पवमानः स चेतति । हिन्वान आप्यं बृहत् ॥

१. आ२ । अ॒३हौ४हो४वा४हा५यि५ । अ५य५म्वि५चा५ । ष२णा  
 यि३ऋहायिता२ । अ॒३हौ४हो४वा४हा५यि५ । प५व५मा५ना५ः ।  
 स२चायिताता२ । अ॒३हौ४हो४वा४हा५यि५ । हि५न्वा५न५  
 आ५ । पि२यौ३हौ२३ । ह४वो४वा५ । ब्रे४ऽ५हो५६हा५  
 यि५ ॥ १७ ॥

ऋषिः—अयास्य आङ्गिरसः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥  
 स्वरः—षड्जः ॥

५०९. प्र न इन्दो महे तु न ऊर्मि न बिभ्रदर्षसि । अभि देवा अयास्यः ॥

१. प्र३न४इ५न्दो५ऐ५ । ही२ऐ२ुही३२३४या५ । म२हेतुनऐ४२ुही-  
 ऐ४२ुही३या२ । ऊ॒र॒र्मि॒न्न॒बि॒भ्र॒द॒ऋष॒स॒ऐ४२ुहीऐ४२ुही३या२ ।  
 अ॒भाये२३ । दा५२ुयि२ुवा३२३४अ५हो५वा५ । अ॒र॒या॒सि॒र-  
 या३२३४५ः ॥ १८ ॥

२. प्र३न४इ५न्दो५\* । इ॒र॒या॒३४ऽ३ई२३४या५ । म२हेतुनइया४२ु  
 ई३या२ । ऊ॒र॒र्मि॒न्न॒बि॒भ्र॒द॒ऋष॒स॒इ॒या॒४२ुई३या२ । अ॒भाये२३ ।  
 दा५२ुयि२ुवा३२३४अ५हो५वा५ । ए॒र३ । अ॒र॒या॒सि॒र-  
 या३२३४५ः ॥ १९ ॥

\* 'न्द्रो' इति मूलगानग्रन्थे पाठः । स तु न मन्त्रानुकूलः । —सम्पादकः



ऋषिः—अमहीयुः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

५१०. <sup>३ १ २ ३ २३ ३ २ ३ १ २ २ ३ १ २ ३ २</sup>अपघ्नन् पवते मृधोऽप सोमो अराव्णाः । गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम् ॥

१. होरुई३२३४या५ । २ । इ४या४हा५यि५ । अ२पघ्नाऽ२३न्-  
पा२३४५ । होरुई३२३४या५ । २ । इ४या४हा५यि५ । व२तायि ।  
माऽ२ । धा३२३४ । अ५हो५वा५ । अपसोमो२ँअरा२ँव्णा२३  
४५ः । होरुई३२३४या५ । २ । द्र४या४हा५यि५ । ग२छन्नाऽ२३  
यिं३द्रा२३४५ । होरुई३२३४या५ । २ । इ४या४हा५यि५ ।  
स्य२नायिः । काऽ२ । ता३२३४ । अ५हो५वा५ । ई३२३  
४५ ॥ २० ॥

ऋषिः—भरद्वाजः कश्यपो गोतमोऽत्रिर्विश्वामित्रो जमदग्निर्वसिष्ठः \* ॥

देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

५११. <sup>३ १ २ ३ १२ ३ १ २२</sup>पुनानः सोम धारयापो वसानो अर्षसि ।

<sup>१ २ ३ १ २२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २</sup>आ रत्नधा योनिमृतस्य सीदस्युत्सो देवो हिरण्ययः ॥

१. पु५ना५न५स्सो५ । माऽ२ुधा३२३४अ५हो५वा५ । रा३२३४  
या५ । अ२पो५वसा२नो२अ२ऋ२ष२सि२ । आ२रत्ना२३धा२ः ।  
यो५नायिमा२३र्त्ता२३ । स्याऽ२ुसा३२३४अ५हो५वा५ । दा३२  
३४सी५ । उत्सोदे२३वो२३ । हाऽ२ुयिरु२३३४अ५हो५वा५ ।  
ण्या३२३४या५ः ॥ २१ ॥

२. इ५या४२ुइ३ँया२ । पु५ना५नस्सोऽ२ु । १म४ऽ३धा२ुरा३४या५ ।  
अ२पो५वसा२नो२अ२ऋषाऽ२३सी२ । आ२रत्नधा५यो५निमृतस्य२  
सी५दाऽ२३सी२ु । उ३त्सो३दे२वोऽ२३ । हाऽ२ुयिरु२३३४अ५  
हो५वा५ । ण्या२३ याऽ२३४५ः ॥ २२ ॥

३. पु॒प॒ना॒प॒न॒ऽस्सो॒प॒म॒प॒धा॒ऽर॒प॒या॒४ । अ॒र॒पो॒व॒सा॒२नो॒२अ॒र॒ ऋ॒र॒  
ष॒२ । स्यो॒ऽह॒र॒ । औ॒ऽह॒र॒ । आ॒र॒त्न॒२धा॒यो॒निमृ॒तस्य॒२ सी॒२  
द॒२ । स्यो॒ऽह॒र॒ । औ॒ऽह॒र॒ । उ॒त्सो॒दा॒२ऽयि॒वा॒४रुः । औ॒ऽह॒र॒ ।  
२ । हि॒२र॒ण्या॒ऽ२३या॒२३४ऽ३ः । ओं॒ऽ२३४५यि॒५ ।  
डा॒५ ॥ २३ ॥
४. पु॒४ना॒४न॒ऽस्सो॒४ऽप॒म॒प॒धा॒५र॒४या॒४ । आ॒पो॒४रु॒वासा॒४रुः । नो॒२  
अ॒र्षसी॒ । आ॒रा॒४रु॒त्ताधा॒४रुः । यो॒२नि॒२मा॒र्त्ता॒४रुः । स्य॒२सी॒दसी॒ ।  
ऊ॒त्सो॒४रु॒दायि॒वा॒४रुः । हि॒२र॒ण्या॒ऽ२३या॒२३४ऽ३ः । ओं॒ऽ२३-  
४५यि॒५ । डा॒५ ॥ २४ ॥
५. आ॒४यि॒४पु॒प॒ना॒४ । ना॒स्सो॒म॒२ऽ । धा॒र॒या । आ॒पो॒व॒सा॒२३ऽ । नो॒२  
अ॒ऋष॒सी । आ॒र॒त्न॒धा॒२३ऽ । यो॒निमृ॒ता । स्य॒२सी॒दसी॒ । ऊ॒त्सो-  
दे॒वा॒२३ऽ । हि॒२र॒ण्या॒ऽ२३४ऽ३ः । ओं॒ऽ२३४५यि॒५ ।  
डा॒५ ॥ २५ ॥
६. पु॒प॒ना॒प॒न॒ऽस्सो॒प॒म॒प॒धा॒४र॒प॒या॒५ । पो॒प॒व॒प॒सो॒४वा॒५ ।  
नो॒अ॒ऋष॒२-सि॒२ । आ॒र॒त्न॒२ । धा॒उवा॒ऽ२३ । हो॒वा॒२३हा॒रयि॒२ ।  
यो॒निमृ॒त-तस्य॒२सी॒२द॒२ सि॒२ । उ॒त्सो॒२दे॒२ । वा॒उवा॒ऽ२३ ।  
हो॒वा॒२३हा॒र यि॒२ । हि॒२र॒ण्या॒ऽ२३या॒२३४ऽ३ः ।  
ओ॒ऽ२३४५यि॒५ । डा॒५ ॥ २६ ॥
७. पु॒प॒ना॒प॒न॒ऽस्सो॒प॒म॒प॒धा॒४ । हो॒४ऽप॒र॒प॒या॒४ । अ॒र॒पो॒व॒सा॒न॒२  
आ॒हो॒४रुः । षा॒सी॒४रुः । आ॒र॒त्न॒धा॒यो॒निमृ॒तस्य॒२सा॒हो॒४रु॒यि॒२ ।  
दा॒सी॒४रुः । उ॒त्सा॒४रु॒हो॒२ऽयि॒ । दा॒ऽ२३यि॒३वो॒२३ । हि॒२रो॒ऽ२-  
३४वा॒५ । ण्या॒४ऽप॒यो॒५६हा॒५यि॒५ ॥ २७ ॥

८. पु॒प॒ना॒प॒न॒प॒स्सो॒प॒म॒प॒धा॒प॒हा॒प॒उ॒प॒हो॒वा॒प॒ । रा॒या॒रु॒आ॒३॒२॒३॒४  
पो॒प॒ । व॒सा॒ऽरु॒ । न॒३॒आ॒२॒३॒४॒प॒ । षा॒३॒२॒३॒४॒सी॒प॒ । आ॒रा॒२॒३॒४ ।  
अ॒३॒हो॒वा॒प॒ । त्र॒धा॒यो॒नि॒मृ॒ता॒ऽरु॒ । स्य॒३॒सा॒२॒३॒४॒प॒यि॒प॒ ।  
दा॒३॒२॒३॒४॒सी॒प॒ । उ॒त्सा॒२॒३॒४ । औ॒हो॒वा॒प॒ । दा॒यि॒वो॒ऽरु॒ ।  
हि॒३॒रा॒२॒३॒४॒प॒ । ण्य॒३॒२॒३॒४॒या॒प॒ः ॥ २८ ॥
९. पु॒प॒ना॒प॒न॒प॒स्सो॒प॒म॒प॒धा॒र॒प॒या॒४ । अ॒र॒पो॒व॒सा॒ । नो॒२॒३॒आ  
ऋ॒षा॒२॒३॒सी॒२ । आ॒र॒र॒र॒त्र॒र॒धा॒र॒यो॒र॒नि॒र॒मृ॒र॒त॒र॒स्या॒र॒सी॒र॒द॒र  
सा॒३॒२॒३॒४॒ऐ॒प॒ही॒प॒ । उ॒र॒त्सो॒दा॒ऽर॒३॒४॒यि॒वा॒प॒ः । हि॒३॒रा॒२॒३॒४  
उ॒वा॒ऽर॒३॒ । ए॒२॒३॒ । ण्य॒२॒य॒३॒आ॒२ ॥ २९ ॥
१०. पु॒ठ॒ना॒ठ॒न॒३॒स्सो॒ठ॒म॒४॒धा॒३॒र॒४॒या॒प॒ । ए॒२॒३॒ । अ॒र॒३॒हो॒४॒ऽप॒वा॒प॒ऽ ।  
आ॒पो॒२॒३॒ । व॒सा॒ऽरु॒ । न॒३॒आ॒२॒३॒४॒प॒ । षा॒२॒३॒सी॒रु॒४॒२ । आ॒र॒त्र॒र  
धाः । यो॒नि॒मृ॒र॒ता॒ । स्या॒सा॒२॒३॒आ॒ । अ॒र॒३॒हो॒४॒ऽ३॒ । दा॒३॒२॒३॒४  
सी॒प॒ । उ॒र॒त्सा॒अ॒र॒३॒हो॒२ । दा॒यि॒वो॒ऽरु॒ । हि॒३॒रा॒२॒३॒४॒प॒ । ण्य॒३॒२॒३  
या॒ऽर॒३॒४॒प॒ः ॥ ३० ॥
११. पु॒प॒ना॒प॒न॒प॒स्सो॒प॒म॒प॒धा॒प॒र॒प॒या॒प॒ओ॒प॒हा॒प॒ओ॒प॒हा॒प॒६॒ए॒प॒ ।  
अ॒प॒हो॒प॒अ॒प॒हो॒प॒६॒वा॒प॒ । अ॒र॒पो॒व॒सा॒२॒नो॒२॒अ॒र॒ऋ॒र॒ष॒२ ।  
स्यो॒३॒हा॒२ । ओ॒३॒हा॒२॒३॒ ए॒२ । औ॒३॒हो॒२॒यि॒२ । अँ॒३॒हो॒२॒३॒वा॒२ ।  
आ॒र॒त्र॒र॒धा॒यो॒नि॒मृ॒र॒ त॒स्य॒र॒सी॒र॒द॒र । स्योँ॒३॒हा॒२ । ओ॒३॒हा॒२॒३  
ए॒२ । अँ॒३॒हो॒२॒यि॒२ । अँ॒३॒हो॒२॒३॒वा॒२ । उ॒त्सो॒दा॒र॒ऽयि॒वा॒४॒रुः ।  
ओ॒३॒हा॒२ । ओ॒३॒हा॒२॒३॒ए॒२ । अँ॒३॒हो॒२॒यि॒२ । अँ॒३॒हो॒२॒३॒वा॒२ ।  
हि॒३॒र॒ । ण्य॒३॒ऽरु॒या॒३॒२॒३॒४॒अ॒प॒हो॒प॒वा॒प॒ । प॒र॒दो॒र॒वि॒सा॒३॒२॒३  
४॒प॒ः ॥ ३१ ॥

१२. ओं४रुहोरऽ । वाओवार । २ । ओ४रुहोरऽ । वाओवार३ ।  
 ओऽरुवा३२३४अ५हो५वा५ । पुरना२नस्सोरम२धारया२  
 पोवसा२नोर अ२ऋ२ष२सिर । आ२त्त२धा२यो॒निमृ२तस्य२सी२  
 द२सिर । उत्सो२ दे२वाः । ओं४रुहोरऽ । वाओवार । २ ।  
 ओ४रुहो३ऽ । वाओवार३ । अऽरुवा३२३४अ५हो५वा५ ।  
 ए२३ । हिर२रण्ययाऽ२३४५ः ॥ ३२ ॥

१३. ओ२३ । हो२ऽ । वाओवार३ । ओऽरुवा३२३४अ५हो५वा५ ।  
 पुरना२नस्सोरम२धारया॒ । पोवसा२नोर अ२ऋ२ष२सिर ।  
 आ२त्त२धा२यो॒निमृ२तस्य२सी॒रद२ । स्यो२३ । हो२ऽ ।  
 वाओवार३ । ओऽरुवा३२३४अ५हो५वा५ । उत्सो२दे२वो॒हिर  
 र२ण्य२य२ः । इडाऽ२३भा२३४ऽ३ । ओंऽ२३४५यि५ ।  
 डा५ ॥ ३३ ॥

१४. हा२ । वो२३हा२ । वो२३ । हा२३ । हा२ु । ओ३२३४वा५ ।  
 हा२यि२ । पू२नारुना३२३४स्सो५ । मा२धारु३२३४या५ ।  
 आ२पोरुवा३२३४सा५ । नो२रुअ२ऋ२षा३२३४सी५ ।  
 आ२रु२त्ता३२३४धा५ । यो२नी२रुमा३२३४त्ता५ । स्या२सी२रु  
 दा३२३४सी५ । उ२त्सो२रुदा३२३४यि४ वो५ । हा२यि२रु  
 ण्या३२३४या५ । हा२ । वो२३हा२ । वो२३ हा२३ । हा२ु ।  
 ओं३२३४वा५ । हा२३४ । अ५हो५वा५ । ए२३ । अति२विश्वा२  
 नि२दु२रि२ता॒त२रे२मा३२३४५ ॥ ३४ ॥

१५. पुरना२न२स्सोरम्मा२३धाराऽ२३४या५ । आपोवसानो॒अ२ऋष-  
 स्या॒रत्त२धा२यो॒निमृ२तस्यसाऽरुयि२रुद३सारयि२ । ओहा२३उ३  
 वार । उत्सो॒दे॒वो॒हिराऽ२३हा२यि२ । ओहा२३उ३वार । ण्य२या ।  
 अ२३हो४वा५ । हौ४ऽ५यि५डा५ ॥ ३५ ॥

१६. पु३नार३ऽ। नार३स्सो४। म५। धा३रु३३३४या५। आपो३३।  
वसाऽ३। न३आ३३४५। षा३३३४सी५। आ३ररात्न३धाः। यो३३।  
निमृताऽ३। स्य३सा३३४५यि५। दा३३३४सी५। उ३रत्सा४३ः।  
दायिवोऽ३। हि३रा३३४५। ण्या३३३४या५ः ॥ ३६ ॥

[ इति ] अर्द्धप्रपाठकः ॥

ऋषिः—भरद्वाजः कश्यपो० ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—बृहती ॥

स्वरः—मध्यमः ॥

५१२. <sup>२ ३ १ २</sup>परीतो <sup>३ २३</sup>षिञ्चता <sup>३ १ २ ३ २ ३ २</sup>सुतं सोमो य उत्तमं हविः ।

<sup>३</sup>दधन्वा <sup>३</sup>यो नर्यो <sup>३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २</sup>अप्स्वा३न्तरा सुषाव सोममद्रिभिः ॥ २ ॥

१. प५री५तो५षी५। च३रता३३ऽउवाऽ३३। सू३३३४ता५म५।  
सो५मो३ यउत्त३मःह३रवीऽऽः। सो५मो५य५उ५। त३रमा३३ऽ  
उवाऽ३३। हा३३३४वी५ः। द३रध३न्वाऽइ३यो३नर्यो३रप्सु३वंत३रा।  
द५ध५ न्वा५इ३या५ः। नर्यो३र। आ। प्सु३रवा३३ऽउवाऽ३३।  
ता३३३४रा५। सु३रषा५वसो३ममद्रि३भी३३३४ः। सु५षा५व५सो५।  
म३रमा३३ऽउवाऽ३३। द्रा३३३४यि४भीः ॥ १ ॥

२. प५री५तो५षी५। च३रतासू३र३ता३म३र। अ३हो३र३वा३र। २।  
ई३यार। ई३यार३४। हा५। हा३उ३रवा३र। सो५मो३यउत्त३  
मःह३रवीऽः। सो५मो५य५उ५। त३रमाऽहा३र३वी३रः।  
अ३हो३र३वा३र। २। ई३यार। ई३यार३४। हा५। हा३उ३रवा३र।  
द३रध३न्वाऽइ३यो३नर्यो३र प्सु३वंत३रा। द५ध५न्वा५इ३या५ः।  
नर्यो३र। आ। प्सू३र३आन्ता३र३रा३र। अ३हो३र३वा३र। २।  
ई३यार। ई३यार३४। हा५। हा३उ३रवा३र। सु३रषा५वसो३ममद्रि  
भी३३३४ः। सु५षा५व५सो५। म३रमा३द्री३र३भा३र यि३र।

अ३हो२३वार । २ । ई३यार । ई३यार३४ । हार । हारउ२  
वार३ । ऊ२३ऽ२३४पा५ ॥ २ ॥

३. औ५हो५यि५प५री५तो५षी५ । च२ता२सु२तम् । अ३हो२यि२ ।  
अ३हो२यि२ । आ३ । अ२हो२३वार । सो॒मो॒र॑यउत्त२मः॒ह२  
विः । अ३हो२यि२ । अ३हो२यि२ । आ३ । अ२हो२३वार । द२  
ध२न्वा॑ऽइ॒यो॒न॒र्यो॑र॒प्सु॒व॒न्त॒रा । अ३हो२यि२ । अ३हो२यि२ ।  
आ३ । अ२हो२३वार । सु॒र॒षा॒व॒सो॒म॒म॒द्रि॒भिः॒२ । अ३हो२यि२ ।  
औ३हो२यि२ । आऽ२३४ । उ५ हु५वा५६हा५उ५ । वा५ ॥ ३ ॥

४. प४ । र्ये४पा४री५ । तो॒र॒षि॒च॒तो॒र॒सु॒तम् । आउवाऽ२३ । हार  
उ३हारउ३ । हो३वार । सो॒मो॒र॑यउत्त२मः॒ह२विः । आउवाऽ  
२३ । हारउ३हारउ३हो३वार । द२ध२न्वा॑र॒यो॒न॒र्यो॑र॒प्सु॒व॒न्त॒रा  
उ३ । वाऽ२३ । हारउ३हारउ३ । हो३वार । सु॒र॒षा॒वाऽ२३  
सो॒र३ । हारउ३हारउ३ । हो३वारु । म३म२ । द्राऽ२३४यि४  
भा४यि४ [ : ] । उ५हु५वा५६हा५उ५ । वा५ ॥ ४ ॥

५. प५री५तो५षि५च५ता५सु५त५म् । ए५ । सो॒र॒मो॒र॒य॒  
उ॒र॒उ॒त्ता॒मै॒हा॒वि॒रुः । दा३२३४धा५ । हारयि२ । न्वा॑ऽइ॒यो॒न॒र्यो॑  
अ॒प्सू॒अ॒न्ता॒रा॒रु । सू३२३४षा५ । हारयि२ । वा॒सो॒म॒र॒मोऽ२३४  
वा५ । द्रा४ऽ५यि५ भो५६हा५यि५ ॥ ५ ॥

६. प५री५तो५षि५च५ता५सु५त५म् । ए५ । ए५ । सो॒र॒मो॒र॒  
य॒र॒उ॒त्ता॒मै॒हा॒वि॒रुः । दा३२३४धा५ । हार३हारयि२ । न्वा॑ऽ  
इ॒यो॒न॒र्यो॑ अ॒प्सू॒अ॒न्ता॒रा॒रु । सू३२३४षा५ । हार३हारयि२ ।  
वा॒सो॒म॒र॒मोऽ२३४ वा५ । द्रा४ऽ५यि५ भो५६हा५यि५ ॥ ६ ॥

७. प४री५तो४षिं५च५ता५सु५त४म्४ । इ४हा४सो५मो५यउत्त२मः  
हाऽ२३वि२ः । इ४हार । द२ध२न्वाः३ङ्५यो५नर्यो५अप्सु२वन्ताऽ२३  
रा२ । इ४हार । सु२षा५वाऽ२३सो२ । इ४हार । म२माऽ२३ । द्राऽ२  
यि२भा३२३४औ५हो५वा५ । ई३२३४हा५ ॥ ७ ॥
८. इ४हा४प४री५तो४षिं५च५ता५सु५त४म्४ । इ४हा४ । सो५मो५य  
उत्त२मः३हाऽ२३वी२ः । इ४हारउ२वार३ । ऊ२३४पा५ । द२ध२  
न्वाः३ङ्५यो५नर्यो५अप्सु२वन्ताऽ२३रा२ । इ४हारउ२वार३ । ऊ२३४  
पा५ । सु२षा५वाऽ२३सो२ । इ४हारउ२वार३ । ऊ२३४पा५ ।  
म२मद्राऽ२३यि३भी२ः । इ४हारउ२वार३ । ऊ२३२३४पा५ ॥ ८ ॥
९. प४री५तो४षिं५च५ता५सु५ता४म्४ । सो२मो५य२उऽ । त२मः३  
ह२वायिः । दा४धा२ओ३२३४वा५ । ऊ३२३४पा५ । न्वाः३ङ्५यो  
नर्यो५अप्सु२वन्ताऽ२३रा२ । सु२षा५वाऽ२३सो२ । मा५मद्रि२भि२ः ।  
इ४डाऽ२३ भा२३४ऽ३ । ओऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ ९ ॥
१०. प४री५तो४षिं५च५ता५सु५त४म्४ । ओ५६वा५ । सो५मो५र  
यउत्त२मः३ह२विः । द४धान्वाः३ङ्५यो२३ । हा२३हा२यि२ । नर्यो५र  
प्सु२वत२रा । सु४षा५वा५सो२३ । हा२३हा२ । मा५मद्रि२भि२ः । इ४डाऽ  
२३भा२३४ऽ३ । ओऽ२३४५यि५डा५ ॥ १० ॥
११. प४री५तो४षिं५च५ । ता४ऽ५सु५ता४म्४ । सो५मो५यउत्ता५मा४२ुऽ  
२म्२ । हा५वी४२ुः । द२ध२न्वाः३ङ्५यो५नर्यो५अप्सु२वा४२ुऽ२ ।  
ता५रा४२ु । सु२षा५वाऽ२३सो२३ । म२मोऽ२३४वा५ । द्रा४ऽ५  
यि५भो५६हा५ यि५ ॥ ११ ॥



१२. प॒रीतो॒षा॒रु॒यि॒र । च॒ता॒सु॒ता॒रु॒मू॒र । ऐ॒ही॒रु॒ । २ । ऐ॒हि॒र॒हा॒रु॒  
यि॒र । उ॒वा॒रु॒यि॒र । ई॒र्ये॒या॒र । सो॒मो॒य॒ऊ॒रु॒ । त॒मः॒ह॒वी॒रु॒ः ।  
ऐ॒ही॒रु॒ । २ । ऐ॒ही॒र॒हा॒रु॒यि॒र । उ॒वा॒रु॒यि॒र । ई॒र्ये॒या॒र ।  
द॒ध॒न्वाः॒ऽयो॒न॒र्यो॒रु॒ । प्सु॒वं॒तरा॒रु॒ । ऐ॒ही॒रु॒ । २ । हा॒रु॒यि॒र ।  
उ॒वा॒रु॒यि॒र । ई॒र्ये॒या॒र । सु॒षा॒व॒सो॒रु॒ । म॒म॒द्रि॒भा॒रु॒यि॒र ।  
ऐ॒ही॒रु॒ । २ । ऐ॒ही॒र॒हा॒रु॒यि॒र । उ॒वा॒रु॒यि॒र । ई॒र्ये॒या॒र ३४५३ ।  
ओ॒ऽर॒३४५५ि॒प । डा॒प ॥ १२ ॥

१३. उ॒र॒पा॒रु॒उ॒र॒प॒प । उ॒र॒या॒र॒३५ । उ॒र॒पा॒रु॒उ॒र॒य॒प । प॒र॒री॒र॒तो॒र  
षिं॒रु॒च॒र ता॒रु॒सु॒र॒त॒रु॒मू॒रु । उ॒र॒पा॒रु॒उ॒र॒प॒प । उ॒र॒पा॒र॒३५ । उ॒र॒पा॒रु॒  
उ॒र॒प॒प । सो॒र॒मो॒र॒य॒र॒उ॒र॒त्त॒र॒मः॒रु॒ह॒र॒वि॒रुः । उ॒र॒पा॒रु॒उ॒र॒प॒प ।  
उ॒र॒पा॒र॒३५ । उ॒र॒पा॒रु॒उ॒र॒प॒प । द॒र॒ध॒र॒न्वा॒र॒ः॒र॒इ॒यो॒र॒न॒र र्यो॒ई  
प्सु॒र॒वं॒रु॒त॒र॒रा॒रु । उ॒र॒पा॒रु॒उ॒र॒प॒प । उ॒र॒पा॒र॒३५ । उ॒र॒पा॒रु॒उ॒र॒प॒प ।  
सु॒र॒षा॒र॒व॒र॒सो॒रु॒म॒र॒म॒रु॒द्रि॒र॒भि॒रुः । उ॒र॒पा॒रु॒उ॒र॒प॒प । उ॒र॒पा॒र॒  
३५ । उ॒र॒पा॒र॒३ऊ॒४५५ पा॒प६५६ । ऊ॒र॒३२३४ पा॒प ॥ १३ ॥

१४. हा॒प॒उ॒प । २ । हा॒प॒उ॒प॒वा॒प । प॒री॒तो॒षिं॒च॒र॒ता॒र॒सु॒र॒त॒म् । उ॒पा॒३२-  
३४५ । हा॒प॒उ॒प॒३वा॒प । प॒री॒तो॒षिं॒च॒र॒ता॒र॒सु॒र॒त॒म् । इ॒हा । उ॒पा॒३२  
३४५ । हा॒प॒उ॒प॒३वा॒प । प॒री॒तो॒षिं॒च॒र॒ता॒र॒सु॒र॒त॒म् । श्र॒वो॒बृ॒र॒ह॒त् ।  
उ॒पा॒३२३४५ । हा॒प॒उ॒प॒३वा॒प । प॒री॒तो॒षिं॒च॒र॒ता॒र॒सु॒र॒त॒म् ।  
सो॒मो॒र॒य॒उ॒त्त॒र॒मः॒ह॒र॒विः । द॒र॒ध॒र॒न्वाः॒इ॒यो॒न॒र्यो॒रँप्सु॒वं॒त॒र॒रा ।  
सु॒षा॒व॒सो॒३२३४५ । हा॒प॒उ॒प॒३वा॒प । ए॒र॒३ । म॒र । म॒द्रि॒भी॒३२  
३४५ः ॥ १४ ॥



१५. हा२ओ३२३४वा५ । २ । हा२३ओ५२३४वा५ । हा२उ२वा२ ।  
 परी॒तो॒षिंच॒रता॒२सु॒रतम् । सो॒मो॒र्यउ॒त्त॒रम॒ःह॒रविः । द॒रध॒र  
 न्वा॒ऽइ॒यो॒नर्यो॒र्यप्सु॒वंत॒ररा । सु॒षा॒वसो॒ममा । हा२ओ३२३४वा५ । २ ।  
 हा२३ओं५२३४वा५ । हा२उ२वा२३द्रा२३यि३भी५२३-  
 ४५ः ॥ १५ ॥

ऋषिः—भरद्वाजः कश्यपो० ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—बृहती ॥

स्वरः—मध्यमः ॥

५१३. आ सोम स्वानो अद्रिभिस्तिरो वाराण्यव्यया ।

जनो न पुरि चम्बोर्विशद्भरिः सदो वनेषु दधिषे ॥

१. आ३२३४सो५ । म२स्वा॒रनो॒३आ । द्रा॒यिभा॒रुओ३२३४वा५ ।  
 ति॒र रो॒वा॒रा॒रणि॒रअ॒रव्यया५२३ । जा॒ना॒रुओ३२३४वा५ ।  
 ना॒पा॒रुओ३२३४वा५ । रि॒चमु॒वो॒रर्वि॒रश॒रब्दरी५२३ः । सा॒दा॒रु  
 ओं३२३४वा५ । वा॒ना॒रुओ३२३४वा५ । षु॒४दा॒४५५धि॒५षा॒५  
 यि॒५ । हो॒४५५यि॒५ डा॒५ ॥ १६ ॥

२. हा॒५वा॒५सो॒५म॒५स्वा॒५ । नो॒२अ॒रुद्रा३२३४यि४भी५ः । ति॒ररो॒रु  
 वा३२३४रा५ । णि॒रया॒३उ॒वा५२३ । व्या३२३४या५ । ज॒र  
 नो॒रुना३२३४पू५ । रा॒रयि॒रचा॒रुमू३२३४वो५ः । वि॒रशा॒२३५  
 उ॒वा५२३ । हा३२३४री५ः । स॒रदो॒रुवा३२३४ने५ । षु॒रदा॒२३५  
 उ॒वा५२३ । धी३२३४षे५ ॥ १७ ॥

३. आ॒४सो॒५म॒५स्वा॒५नो॒४अ॒४द्रि॒५भा॒४यि॒४ः । ति॒ररो॒वा॒रा॒णि  
 आ॒व्या॒२५या॒४रु । ज॒नो॒नपु॒रिचा॒मूर॒५वो॒४रुः । वि॒रशा॒ब्दा॒२५-  
 री॒५रुः । स॒३दो॒३व॒रना॒यि । षू॒५रु॒द३॒ध्रि॒रषो॒५२३४५यि॒५ ।  
 डा॒५ ॥ १८ ॥

४. आ३सो४म४स्वा४नो३अ३द्रि४भिः५ । ति५रो५वा२३रा४णि५  
अ४व्य४या५ । ज॒नो॒न॒पु॒री॒च॒मु॒वो॒र्वि॒र॒श॒ब्द॒रिः । औ४रु । हुवायि ।  
हो३ँवा२ । स॒दो॒व॒ने॒षु॒र॒दौ४रु । हुवायि । हो३ँवा२ । धि२षा ।  
औ२३हो४वा५ । हो४ऽ५यि५डा५ ॥ १९ ॥

ऋषिः — भरद्वाजः कश्यपो० ॥ देवता — पवमानः सोमः ॥ छन्दः — बृहती ॥

स्वरः — मध्यमः ॥

५१४. प्र<sup>१</sup> सोम<sup>२</sup> देव<sup>३</sup>वीतये<sup>१</sup> सिन्धुर्न<sup>२</sup> पिष्ये<sup>३</sup> अर्णसा<sup>१</sup> ।

अंशोः<sup>३</sup> पयसा<sup>१</sup> मदिरो<sup>२</sup> न जागृविरच्छा<sup>३</sup> कोशं<sup>१</sup> मधुश्चुतम्<sup>२</sup> ॥

१. प्र५सो५म५दा५ । वा२वीरुता३२३४या५यि५ । सिं२धूर्त्रापा  
यिष्य२आ२३ऽउवाऽ२३ । णा३२३४सा५ । आ२शोरुष्या३२३४  
या५ । सा२मदायिरो३न२जा२३ऽउवाऽ२३ । ग्रे३२३४वी५ः ।  
आ२च्छा२रुको३२३४शा५म् । म२धा२३ऽउवाऽ२३ । श्चू३२  
३४ता५म् ॥ २० ॥
२. प्र३सो४म५दे५व४वी५ । त३यो३२३४हा५यि५ । सिं३धुरर्त्र३  
पि४ष्ये५अ५ । ण३सो३२३४हा५यि५ । आ२शा२रुओ३२३४  
वा५ । पाया२रुओ३२३४वा५ । सा४म४दि४रो३न४जा५ । ग्रे३२  
३४ । वी५द्दु३ऋ३हा५ यि५ । आ३च्छा२रुओं३२३४वा५ । कोशा२  
ओ३२३४वा५ । म४धू४ऽ५श्चु५ता५म् । हो४ऽ५यि५  
डा५ ॥ २१ ॥
३. प्र२सो॒माऽ२३दे४व४वी५त५या५यि५सायिंधुर्नीपिष्ये अर्णसां  
शोष्यसा॒मदिरो॒न२जौ३हो२३ । हुम्मा४रु । ग्रेऽ२३वी२ः ।  
अच्छा॒कोशाम्म२धौ३हो२३ । हुम्मा४रु । श्चुरताम् । औऽ२३  
हो४वा५ । हो४ऽ५यि५ । डा५ ॥ २२ ॥

४. प्र३सो४म४<sup>१</sup>दे४व३वी४त५ये५ । सि५न्धु५ः । न३पा२३४औ३  
हो४ वा५ । प्ये२अ२र्णसा५ऽ२ । हा२३ऽउवा५ऽ२३ । ऊ२३४पा५ ।  
अ२३शो२३ष्य४या४ । औ५हो४वा४हा५यि५ । सामदि२रो ।  
न२जा२रगृवि२ः । हा२३ऽउवा२३ । ऊ२३४पा५ । अ३च्छा२३  
को४श४म्४ । औ५हो४वा४हा५यि५म३धूर३श्चू४ऽ५ता५६  
५६म्६ । ऊ३२३४५ ॥ २३ ॥

५. प्र५सो५म५दा५यि५वा५६वी५त५या५यि५ । सिं२धूर्न२पायि ।  
प्ये२अ२र्णसा४२ु । इहा२३ । आ२शो२३ष्या४या५ । हा२ु  
हो३२३४हा५ । सामदि२रो । न२जा२रग्रे५२३वी२ः । इहा२३ ।  
आच्छा२३को४शा५म्५ । हा२ुहो३२३४हो५ । म३धूर३श्चू४ऽ  
५ता५६५६म्६ । हे३२३४५ ॥ २४ ॥

ऋषिः — भरद्वाजः कश्यपो० ॥ देवता — पवमानः सोमः ॥ छन्दः — बृहती ॥

स्वरः — मध्यमः ॥

५१५. सोम१ उ१ प्वा३णः२ सो३तृ३भि३र३धि३ ष्णु३भि३र३वी३नाम्२ ।

अ१श्व१ये३व३ ह३रि३ता३ या३ति३ धा३र३या३ म३न्द्र३या३ या३ति३ धा३र३या३ ॥

१. हा३उ४सो४मा५ः । उ२र५वा२रणा२३स्सो३त्रे२५भी४२ुः । आधि२-  
ष्णुभि२ रवी२रँना२रम्२ । आश्वौ३हो२ । ये॒वह॒रि॒ता॒या॒ता॒यि॒धा॒र॒ऽ  
रा॒या४२ु । मं॒द्रा॒या॒र॒३या॒र॒३४ । हा५ओ४वा५ । ति॒रधा॒र॒या॒३२-  
३४५ ॥ २५ ॥

२. सो५म५ऊ२३ष्वा४ण५स्सो४तृ४भा५यि५ः । आधिष्णु२भि२  
र२वी२रना२रम्२ । आश्वे॒ये५२३४वा५ । ह॒रि॒ता॒या॒ति॒धा॒र॒ऽ  
रा॒र॒३या॒ । मं॒द्रा॒रु॒या॒३२३४या५ । ता३२३४यि४धा५र२या ।  
अ२३हो४वा५हो४ए५यि५ । डा५ ॥ २६ ॥

३. सो॒ऽम॒प॒उ॒प॒ष्वा॒प॒ण॒ऽस्सो॒प॒तृ॒ऽभि॒पः । प॒ऽऽ॒अ॒धी॒ऽष्णु॒भि॒र॒-  
 रा॒३२३॒उवा॒ऽ३ । वी॒३२३॒ऽना॒प॒म् । आ॒ऽ३२३ । श्वा॒२ । ये॒व॒ह॒रि॒  
 ता॒या॒ति॒र॒धा॒३३॒उवा॒ऽ३ । रा॒३२३॒ऽया॒प । मा॒ऽ३२३॒न्द्रा॒२ ।  
 या॒या॒ति॒र॒धा॒३३॒उवा॒ऽ३ । रा॒३२३॒ऽया॒प ॥ २७ ॥
४. सो॒ऽम॒प॒उ॒प॒ष्वा॒प॒ण॒ऽस्सो॒प॒तृ॒ऽभि॒पः । ए॒ऽऽ॒अ॒धी॒ऽ ।  
 ण्णु॒भि॒र॒वी॒रँ । ना॒म् । आ॒श्व॒ये॒र॒व॒र । हा॒रि॒ता॒या॒ऽ३२ । ता॒यि॒धा॒र॒२  
 या॒२ । मा॒न्द्र॒या॒यौ॒र॒वा॒३२ । ती॒३२३॒ऽधा॒प । र॒२या॒ । अ॒३३॒हो॒ऽ  
 वा॒प । हो॒ऽऽ॒यि॒प । डा॒प ॥ २८ ॥
५. सो॒ऽम॒प॒उ॒प॒ष्वा॒प॒ण॒ऽस्सो॒प॒तृ॒ऽभि॒पः । भा॒ऽयि॒ऽ । अ॒ऽधि॒प॒ष्णु॒ऽभि॒प  
 र॒ऽवी॒प । ना॒प॒म् । आ॒धि॒र॒ष्णु॒भि॒र॒वी॒रँ । ना॒म् । अ॒श्व॒ये॒वा ।  
 ह॒रि॒ता॒या॒ता॒ऽ३३यि॒ऽधा॒२ । र॒२या॒३३॒उवा॒ऽ३ । मा॒३२३॒ऽ  
 द्रा॒प । या॒२या॒३ती॒३३॒ऽधा॒प । र॒३या॒३औ॒३३॒हो॒ऽवा॒प । हो॒ऽऽ॒  
 यि॒प॒डा॒प ॥ २९ ॥
६. सो॒३म॒ऽउ॒ऽष्वा॒ऽण॒३स्सो॒ऽतृ॒ऽभि॒पः । अ॒३३॒हो॒३यि॒ऽ । आ॒ऽ३  
 ३३ । धि॒ऽष्णु॒ऽभि॒प॒र॒ऽवी॒प॒ना॒प॒म् । आ॒श्व॒ये॒र॒व॒र॒ह॒रि॒र॒ ता॒२  
 या॒२ । ति॒र॒ धा॒रा॒यौ॒२ । वा॒३ओ॒३३॒ऽवा॒प । मं॒३द्र॒या॒या॒ती॒३३  
 धा॒२ । हुं॒३ । हुं॒३३॒ऽ३म् । रा॒३३॒ऽयो॒३३हा॒प यि॒प ॥ ३० ॥

[ इति ] चतुर्दशः प्रपाठकः

ऋषिः — भरद्वाजः कश्यपो० ॥ देवता — पवमानः सोमः ॥ छन्दः — बृहती ॥

स्वरः — मध्यमः ॥

५१६. त॒वा॒हं॑ सोम रा॒रण स॒ख्य इ॒न्दो दि॒वेदि॒वे ।

पु॒रू॒णि ब॒भ्रो नि च॒रन्ति॑ मा॒मव॑ परि॒धी र॒ति ताँ॑ इ॒हि ॥

१. त॒प॒वा॒प॒हः॒प॒सो॒प । म॒र॒रा॒४॒रु॒र॒णा । र॒ण । स॒ख्य॒इ॒न्दो॒दि॒वा॒४॒रु  
यि॒र॒दि॒र॒वा॒यि । दि॒वे । पु॒रू॒णि॒ब॒भ्रो॒वि॒च॒रं॒ति॒मा॒४॒रु॒म॒र॒वा ।  
अ॒वा॒प । प॒रि॒धीः॒र॒ति॒ताः॒४॒रु॒इ॒र॒हा॒ऽ॒र॒३॒यि॒३ । आ॒ऽ॒रु॒यि॒रु ।  
हा॒३॒२॒३॒४ । अ॒प॒हो॒प॒वा॒प । ऊ॒र॒३॒ऽ॒र॒३॒४॒पा॒प ॥ १ ॥
२. त॒४॒वा॒प । त॒प॒वा॒४ । अ॒र॒हः॒सो॒म॒रा॒र॒ण । स॒ख्य॒ाई॒र॒३॒न्दो॒र ।  
दि॒र॒वा अ॒र॒३॒हो॒र । दा॒यि॒वे॒४॒रु । पू॒र॒रू॒णि॒ब॒भ्रो॒नि॒च॒रं॒ति॒मा॒र॒ऽ  
मा॒र॒३॒वा॒र । प॒र॒रा॒अ॒र॒३॒हो॒र । धा॒यिः॒र॒ति॒र॒तो॒ऽ॒र॒३॒४॒वा॒प ।  
आ॒४॒ऽ॒प॒यि॒प॒हो॒प॒६ हा॒प॒यि॒प ॥ २ ॥
३. त॒प॒वा॒प॒हः॒सो॒प॒मा॒प॒६॒रा॒प॒र॒णा॒प । सा॒र॒ख्य॒ा॒रु॒ई॒३॒२॒३॒४॒न्दो॒प ।  
दि॒र वे॒रु॒दा॒३॒२॒३॒४॒यि॒४॒वे॒प । पु॒४॒रू॒३॒णि॒४॒ब॒४॒भ्रो॒४॒नि॒३॒च॒४  
र॒प॒न्ति॒प॒मा॒प॒म्प । आ॒वा॒ऽ॒र॒३॒४॒हा॒प॒यि॒प । पा॒४॒री॒प॒धा॒४॒यिः॒४  
रा॒प । ति॒र॒तो॒ऽ॒र॒३॒४ वा॒प । आ॒४॒ऽ॒प॒यि॒ । हो॒प॒६॒हा॒प । यि॒प ॥ ३ ॥
४. त॒४॒वा॒प॒हः॒४॒सो॒प॒म॒प॒रौ॒प । हो॒४॒ऽ॒प॒र॒णा॒४ । सा॒ख्य॒र॒इ॒न्दो॒ऽ॒रु ।  
दि॒३ वा॒र॒३॒४॒प॒यि॒प । दी॒३॒२॒३॒४॒वे॒प॒पू॒रू॒४॒रु॒णा॒यि॒बा ४॒रु॒भ्रौ॒नि॒  
च॒रा॒रु । ति॒३मा॒र॒३॒४॒प॒म्प । आ॒३॒२॒३॒४॒वा॒प । पा॒री॒४॒रु॒धा॒यिः  
रा॒ऽ॒रु॒ति॒३ । ताः॒२॒३॒४॒प । ई॒३॒२॒३॒४॒ही॒प ॥ ४ ॥
५. त॒३॒वा॒४॒हः॒३॒सो॒४॒म॒प॒रा॒प॒र॒णा॒प । स॒प॒ख्य॒प॒ई॒र॒दो॒३॒दि॒४॒वे॒४  
दि॒प॒वा॒प॒यि॒प । स॒र॒ख्य॒इ॒न्दो॒दि॒र॒वे॒दा॒ऽ॒र॒३॒यि॒३॒वे॒र । पु॒र॒रू॒णि  
ब॒भ्रो नि॒च॒रं ति॒र॒मा॒मा॒ऽ॒र॒३॒वा॒र । प॒र॒रा॒यि॒धा॒ऽ॒र॒३॒यिः॒३॒रा॒र ।  
ति॒र॒ताः॒ऽ॒र॒३॒इ॒३॒हा॒र॒३॒४॒ऽ॒र॒३॒यि॒३ । ओ॒ऽ॒र॒३॒४॒प॒यि॒प । डा॒प ॥ ५ ॥

ऋषिः—भरद्वाजः कश्यपो० ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—बृहती ॥

स्वरः—मध्यमः ॥

५१७. मृ॒ज्य॒मा॒नः सु॒ह॒स्त्या॒ स॒मु॒द्रे॒ वा॒च॒मि॒न्व॒सि ।

र॒यि॒ पि॒श॒ङ्गं॒ ब॒हु॒लं पु॒रु॒स्पृ॒हं प॒व॒मा॒ना॒भ्य॒र्ष॒सि ॥

१. मृ॒प॒ज्य॒प॒मा॒प॒ना॒पः । सु॒र॒ह॒र॒स्ति॒र॒या॒र॒३ । सा॒मू॒र॒३॒द्रा॒४॒यि॒४  
वा॒प । च॒र॒मि॒र॒न्व॒र॒सा॒र॒३॒यि॒३ । रा॒यी॒र॒३॒म्पा॒४॒यि॒४॒शा॒र । ग॒र  
म्ब॒र॒हु॒र॒ला॒र॒३॒म्॒३ । पू॒रू॒रु॒स्प्रे॒३॒२॒३॒४॒हा॒प॒म्प । प॒व॒मा॒र । ना ।  
अ॒र॒३॒हो॒र । भि॒र॒यो॒ऽर॒३॒४॒वा॒प । षा॒४॒ऽप॒सो॒प॒६॒हा॒प॒यि॒प ॥ ६ ॥
२. मृ॒प॒ज्य॒प॒मा॒प॒ना॒पः । सु॒र॒ह॒र॒स्ता॒या॒४॒रु । स॒मु॒द्रे॒र॒वा॒र । चा॒र्मि॒न्वा-  
सा॒ऽर॒३॒४॒यि॒४ । र॒३॒या॒र॒३॒४॒यि॒४ । म्पि॒३॒शा॒र । ग॒ब॒हु॒लं॒पू॒रु॒स्पृ॒हा-  
४॒रु॒म् । प॒वा॒ऽर॒३ । मा॒ऽरु॒ना॒३॒२॒३॒४॒अ॒प॒हो॒प॒वा॒प । भि॒या॒रँ॒ऋ॒र  
ष॒र॒सी॒३॒२॒३॒४॒प ॥ ७ ॥
३. मृ॒प॒ज्य॒प॒मा॒प॒ना॒पः । सु॒र॒ह॒र । स्ति॒या । सा॒र॒ऽमू॒४॒रु॒द्रा॒यि॒वा॒४॒रु ।  
च॒र॒मि॒र । न्व॒सा॒यि । रा॒र॒ऽयी॒४॒रु॒म्पा॒यि॒शा॒४॒रु । ग॒म्ब॒हु॒र  
लं॒पु॒रु॒र । स्पृ॒हाम् । पा॒र॒ऽवा॒४॒रु॒मा॒ना॒ऽर॒३ । भा॒ऽरु॒या॒३॒२॒३॒४  
अ॒प॒हो॒प॒वा॒प । षा॒३॒२॒३॒४॒सी॒प ॥ ८ ॥
४. मृ॒प॒ज्या॒प॒६॒ए॒प । मा॒न॒स्सु॒ह॒स्ति॒या॒औ॒र॒३॒हो॒र । स॒र॒मु॒र॒द्रे॒वा॒च-  
मि॒न्व॒सा॒औ॒र॒३॒हो॒र । १॒र॒यि॒म्पि॒श॒ङ्ग॒म्ब॒हु॒लं॒पु॒रु॒स्पृ॒हा॒औ॒र॒३  
हो॒र । प॒र॒व॒मा॒ऽर॒३॒ना॒र॒३ । भि॒र॒यो॒ऽर॒३॒४॒वा॒प । षा॒४॒ऽप॒सो॒प॒६  
हा॒प॒यि॒प ॥ ९ ॥
५. मृ॒प॒ज्य॒४॒मा॒प॒न॒प॒स्सु॒प॒ह॒प॒स्त्यो॒४ । वा॒४॒हा॒प॒यि॒प । स॒र॒मु॒र॒द्रा  
यि॒वा । चँ॒मी॒ऽरु॒न्वा॒३॒२॒३॒४॒सी॒प । र॒३॒या॒र॒३॒४॒म्पि॒३॒शा॒र ।  
ग॒म्ब॒हु॒र॒लं॒२ । पु॒रु॒स्पृ॒हा॒ऽर॒३॒४॒मू॒४ । प॒३॒वा॒र॒३॒४॒मा॒३॒ना॒र॒३ ।  
भि॒र॒यो॒ऽर॒३॒४॒वा॒प । षा॒४॒ऽप॒सो॒प॒६॒हा॒प॒यि॒प ॥ १० ॥

६. मृ४ज्य४मा॒प॒ना४ऽप॒स्सु॒प॒हा॒प॒स्ति४या४ । समू४रु॒द्रायि॒वा४रु॒ ।  
चमा४रु॒यि॒र॒न्वासी४रु॒ । र॒रयि॒म्पि॒शङ्गं॒ बहु॒लं॒पुरु॒स्पृहा॒अ॒र॒३  
हो॒र । प॒रव॒माऽ॒र॒३ । ना॒र॒३ । भि॒रयोऽ॒र॒३४वा॒प । षा४ऽप॒  
सो॒प॒द॒हा॒प॒यि॒प ॥ ११ ॥

७. मृ॒प॒ज्य४मा॒प॒न॒प॒स्सु॒प॒ह॒प॒स्त्या॒प । स॒प॒मु॒प॒द्रे॒प॒वो४वा॒प । चा॒मि॒न्व॒र  
सि॒र । रा॒यि॒म्पि॒शा॒र॒३ । हा॒र॒३हा॒र । ग॒म्ब॒हु॒र॒लं॒पुरु॒र॒स्पृह॒र॒मृ॒र ।  
प॒व॒मा॒ना॒र॒३ । हा॒र॒३हा॒भि॒र॒य॒ऋ॒षाऽ॒र॒३सा॒र॒३४ऽ॒रि॒३ओं॒ऽर॒  
३४॒प॒यि॒प॒डा॒प॒ऽ ॥ १२ ॥

८. मृ॒प॒ज्य४मा॒प॒न॒प॒स्सु॒प॒हा॒४ । स्ति॒या॒४रु॒ । समू४रु॒हो । द्रे॒वा॒४रु॒हो ।  
चा॒र॒मि॒न्व॒सा॒यि । र॒या॒४रु॒यि॒र॒३॒हो॒यि । पि॒शा॒४रु॒हो । गं॒र  
ब॒हु॒ल॒म् । पू॒र॒रु॒स्पृहा॒म् । प॒वा॒४रु॒हो । मा॒ना॒४रु॒हो । भी॒र॒य॒ऋ॒षसा  
॒र॒३ऽउ॒वाऽ॒र॒३ । वा॒र॒जी॒जिगी॒र॒३वा॒३॒र॒ऽऽ ॥ १३ ॥

ऋषिः—भरद्वाजः कश्यपो० ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—बृहती ॥

स्वरः—मध्यमः ॥

५१८. अ॒भि॒ सो॒मा॒स आ॒यवः॒ प॒व॒न्ते॒ मद्यं॒ म॒द॒म् ।

स॒मु॒द्र॒स्या॒धि वि॒ष्ट॒पे म॒नी॒षि॒णो म॒त्स॒रा॒सो म॒द॒च्युतः॒ ॥

१. हा॒र॒३हा॒र॒यि॒र । अ॒र॒भि॒र॒सो॒र॒मा॒र॒सा॒र॒३आ॒या॒र॒ऽवा॒र॒३ ।  
हा॒र॒३हा॒र॒यि॒र । प॒र॒वं॒र॒ते॒र॒म॒दी॒र॒३या॒म्मा॒र॒ऽदा॒ऽर॒३मृ॒३ ।  
हा॒र॒३हा॒र॒यि॒र । स॒र॒मु॒र॒द्र॒र॒स्या॒र॒धि॒र॒वि॒र॒ष्ट॒र॒पे॒र॒मा॒र॒३  
ना॒यि॒षा॒र॒ऽयि॒णाऽ॒र॒३ । हा॒र॒३हा॒र॒यि॒र । म॒र॒त्स॒र॒रा॒सो॒र  
मा॒र॒३दा॒च्यूर॒ऽताऽ॒र॒३ । हा॒र॒३हा॒र॒३४ऽ॒रि॒३ । ओऽ॒र॒३४॒प  
यि॒प॒डा॒प ॥ १४ ॥

२. आ४भी५सो४मा५ । सर२आ२३उवा२३ । या३२३४वा५ः ।  
पा४व५न्ता४यि४मा५ । दि२या२३उवा५२३ । मा३२३४-  
दा५म् । सा४मु५ द्र४स्या५ । धि२विष्टा५मे२न२३उवाये२३ ।  
षी३२३४णा५ः । मा४त्सा५ रा४सा५ः । म२दा२३उवा५२३ ।  
च्यू३२३४ता५ः ॥ १५ ॥
३. अ२भिसो२३मा४स४आ५य५वा५ः । पवन्ते२मदि२य२म्मादा ।  
अ२३हो२ । आअ२३हो२ । स२मु२द्रस्या५धिवि२ष्ट५मे२नी२षि ।  
णा । अ२३हा२ । आऔ२३हो२ । म२त्स२रा५सो५म२द२च्यु । ता ।  
अ२३हो२ । आअ२३हो२३४५३ । ओ५२३४५यि५ । डा५ ॥ १६ ॥
४. अ५भि४सो४मा५स५आ५ । हो४५य५ । वा४ः । पवन्ते२म-  
द्यम्मदम्पवन्ते२म । दि२या५हो५यि । मा५२३दा२म् । स२मु२द्रस्या५  
धिविष्ट५मे२नी५षिणाः । म२नाहो५यि । षा५२३यि३णारः । म२त्स२  
रा५सो५मदच्युताः । म२दाहो५यि । च्यू५२३तार३४५३ः । ओं५२३  
४५यि५ । डा५ ॥ १७ ॥
५. अभा५रु५यि५सो३मार३४ । अ३हो४५स५आ५य४वा४ः ।  
पवा५रुन्ते३मार३४ । अ३हो४५दि५य५म्म४दा४म् । समु५रु  
द्र३स्या२३४अ३हो४५धि५वि५ष्ट४पा४यि४ । ओये२३ ।  
मा५रुना३२३४अ५हो५वा५ । षी३२३४णा५ः । ऊ३२३४पा५ ।  
२ । म३त्स३रा२ सो५२३ । मा५रुदा३२३४अ५हो५वा५ । च्यू३२  
३४ता५ः ॥ १८ ॥
६. औ४हो५वा४ । अ५भि४सो४मा५स५आ५य४व५ः । औ४हो५  
वा४ । पवा५रु । ते३मार३ओं४५वा५६५६ । दि२य२म्मद२  
म् । समु५रु । द्र३स्या२३ओ४५वा५६५६ । धि२वि२ष्ट५मे२म२



नी२ षिणारैः । अ३हो२३ऽयि । मत्साऽरु । रा३सा२३ओ४ऽप  
वा५६५६ । म२द२च्युता३२३४५ः ॥ १९ ॥

७. अ५भि५सो५मा५स५आ५या५६वा५ः । पवाऽरु । ते३मा२३  
ओ४ऽपवा५६५६ । दि२य२म्मद२म२ । समूऽरु । द्र३स्या२३  
ओ४ऽपवा५६५६ । धि२वि२ष्टे२म२नी२षिणा२ऽ । मत्साऽरु ।  
रा३सा२३ओ४ऽपवा५६५६ । म२द२च्युता३२३४५ः ॥ २० ॥

८. अ५भि५सो५मा५स५आ५या५६वा५ः । पवंतायिमा । दि॒याऽरु  
मा३२३४दा५म् । स३मु३द्र२स्या । धि२वि२ष्टपायि ।  
मना२३यि३षा४यि४णा५ः । मात्स२रा२सोऽरु३ । माऽरुदा३२  
३४अ५हो५वा५ । च्यू३२३४ता५ः ॥ २१ ॥

ऋषिः — भरद्वाजः कश्यपो० ॥ देवता — पवमानः सोमः ॥ छन्दः — बृहती ॥

स्वरः — मध्यमः ॥

५१९. पु॒ना॒नः सोम जागृ॑वि॒रव्या वा॒रैः परि प्रि॑यः ।

त्वं वि॒प्रो अ॒भवोऽङ्गि॑रस्तम म॒ध्वा य॒ज्ञं मि॒मिक्ष णः ॥

१. पु॒ना॒नः सो॒म जा॒गृ॒वि॒रव्याः । वा॒रैर्ष्यारि॑प्रि॒याऽरुः ।  
त्वं वि॒प्रो अ॒भवोऽङ्गा॑यिराऽरु३४ । स्त३मा२३ । मा॒ध्वा॒रय॒र  
ज्ञाऽरु३म् । माऽरु॒यि॒रुमा३२३४अ५हो५वा५ । क्षा३२३४  
णा५ः ॥ २२ ॥

ऋषिः — भरद्वाजः कश्यपो० ॥ देवता — पवमानः सोमः ॥ छन्दः — बृहती ॥

स्वरः — मध्यमः ॥

५२०. इन्द्रा॑य पवते म॒दः सोमो मरु॑त्वते सु॒तः ।

सह॑स्रधारो अत्य॒व्यम॑र्षति तमी मृ॒जन्त्या॑यवः ॥

१. इ॒प॒द्रा॒प॒य॒पा॒ । व॒र॒ता॒रु॒यि॒र॒मा॒दा॒रुः । सो॒मो॒म॒रु॒त्व॒ता॒रु॒  
यि॒र॒सू॒ता॒रुः । स॒र । हा॒स्त्र॒धा॒र॒र॒रः । अ॒ति॒अ॒व्य॒मा॒रु॒ऋ॒र  
षा॒ती॒रु । त॒र॒मा॒रु॒यि॒मा॒ज्जा॒रु । ति॒र॒आ॒या॒ऽर॒३वा॒र॒३४ऽ३ः ।  
ओ॒ऽर॒३४॒प॒यि॒प॒डा॒प ॥ २३ ॥
२. इ॒प॒द्रा॒प॒य॒पा॒ । व॒र॒ते॒र॒म॒दाः । सो॒र॒मो॒र॒मा॒रु॒रु॒ । त्व॒ते॒हो॒रु॒  
यि॒र । सू॒ता॒रुः । स॒र । हा॒स्त्र॒धा॒र॒र॒रः । अ॒ति॒अ॒व्य॒मा । षा॒ता॒रु  
ओं॒३र॒३४वा॒प । ऊ॒३र॒३४पा॒प । त॒मी॒हो॒रु॒यि॒र । मा॒ज्जा॒रु ।  
ति॒र आ॒या॒ऽर॒३वा॒र॒३४ऽ३ः । ओं॒ऽर॒३४॒प॒यि॒प॒डा॒प ॥ २४ ॥
३. इ॒प॒द्रा॒प॒या॒र॒३पा॒व॒पा॒ता॒रु॒यि॒म॒रु॒दा॒पः । सो॒मो॒म॒रु॒त्व॒ता॒रु॒ऽ-  
यि॒सू॒र॒३ ता॒रः । स॒र । हा॒स्त्र॒धा॒र॒र॒रः । अ॒ति॒अ॒व्य॒मा॒र॒३ । षा॒रु  
ती॒प । त॒र॒मा॒अ॒र॒३हो॒र॒३यि॒३ । मा॒रु॒ज्जा॒प । ता॒ऽरु॒या॒३र॒३४  
अ॒प॒हो॒प॒वा॒प । या॒३र॒३४वा॒पः ॥ २५ ॥

ऋषिः—भरद्वाजः कश्यपो० ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—बृहती ॥  
स्वरः—मध्यमः ॥

५२१. प॒व॒स्व वा॒ज॒सा॒त॒मो॒ऽभि॒ वि॒श्व॒ानि॒ वा॒र्या॒ ।

त्वं स॒मु॒द्रः प्र॒थ॒मे वि॒ध॒र्म दे॒वे॒भ्यः सोम॒ मत्स॒रः ॥

१. प॒व॒प॒स्व॒पा॒ज॒पा॒सा॒रु॒ । इ॒रु॒हा॒रु॒ता॒३र॒३४मा॒पः । अ॒रु॒भि  
वि॒श्वा॒रु॒नि॒र॒वा॒रि॒या॒रु । त्व॒ःसा॒ऽरु॒मू॒३र॒३४अ॒प॒हो॒प॒वा॒प । द्र॒ष्ट॒र  
थ॒र॒मे॒वि॒ध॒रु॒र्म॒रु॒नु॒र॒ । दा॒यि॒वा॒ये॒र॒३ । भ्या॒ऽरु॒स्सो॒३र॒३४अ॒प  
हो॒प॒वा॒प । म॒रु॒म॒रु॒त्स॒३रा॒रु॒ऽः ॥ २६ ॥

१. सामवेदेऽत्र 'विधर्म' इति पाठः । तमनुसृत्य 'विधरुर्मरुनु' इति पाठः स्यात् । परमत्रगाने  
नकारान्तो धर्मन्शब्दः पठितः, सोऽप्युकारसहितः । —सम्पादकः

ऋषिः—भरद्वाजः कश्यपो० ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—बृहती ॥

स्वरः—मध्यमः ॥

<sup>१ २</sup> ५२२. <sup>३ २ ३ २ ३</sup> पवमाना असृक्षत <sup>१ २</sup> पवित्रमति धारया ।

<sup>३ १ २</sup> मरुत्वन्तो <sup>३ १ २</sup> मत्सरा <sup>३ १</sup> इन्द्रिया <sup>२ २ ३ २ ३ १</sup> हया मेधामभि <sup>२ २</sup> प्रयांसि च ॥

१. प४व५मा५ना५अ५सृ५क्ष५त५प५वा४यि४ । त्रामतिधारयामरु  
त्वन्तोमत्सराइंद्री२३या२ः । हया२ः । माऽ२३यि३धा२मृ२ ।  
अभाये२३ । प्राऽरुया३२३४अ५हो५वा५ । सी३२३४चा५ ॥ २७ ॥

ऋषिः—उशनाः काव्यः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥

स्वरः—धैवतः ॥

<sup>१ २ २ ३ २ ३</sup> ५२३. प्र तु <sup>२ ३</sup> द्रव <sup>२ ३</sup> परि <sup>१ २ ३ १ २</sup> कोशं <sup>३ २ ३ १</sup> नि <sup>२ २</sup> षीद <sup>३ २ ३ १</sup> नृभिः <sup>२ ३ १ २ ३ १</sup> पुनानो <sup>२ ३ १ २ ३ १</sup> अभि <sup>२ ३ १ २ ३ १</sup> वाजमर्ष ।

<sup>२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १</sup> अश्वं <sup>२ ३ १ २ ३ १</sup> न त्वा <sup>२ ३ १ २ ३ १</sup> वाजिनं <sup>२ ३ १ २ ३ १</sup> मर्जयन्तोऽच्छा <sup>२ ३ १ २ ३ १</sup> बर्ही <sup>२ ३ १ २ ३ १</sup> रशनाभिर्नयन्ति ॥

१. ओरुयिरुप्र३तु५ । इ३हार३ऽद्र२वा । परिको२३ । शरु त्रिषी४  
दा५ । ओरुयिरुनृ३भि५ः । इ३हार३ऽ५ । पुरना । नो२३अभि ।  
वारुज३म४ऋ४षा५ । ओरुअ३श्व५म्५ । इ३हार३ऽ । न२  
त्वा । वार३जिनम् । म२र्ज३य४न्ता५ः । ओंरुअ३च्छ५ ।  
इ३हार३ऽ । ब२ऋ२हायिः । र२शना । भा२३४ऽ३यि३ः ।  
ना२३या४ऽ५न्ता५६५६ । यि६ ॥ २८ ॥

२. प्र४तु५ । ए४प्र४तू५ । द्र२वा । २ । परिको२३ । शरु त्रि३षी४  
दा५ । नृ४भि५ः । ए४नृ४भि५ः । पुरना । २ । नो२३अभि । वारु  
ज३म४ऋ४षा५ । अ४श्व५म्५ । ए४अ४श्वा५म्५ । न२त्वा ।  
२ । वार३जिनम् । म२र्ज३य४ता५ः । अ४च्छ५ । ए४अच्छा५ ।  
ब२ऋ२हायि । ब२ऋ२ हायिः । र२श२नाभि२ुः । न३ये२३४  
हि५या५६हा५उ५वा५ । ता३२३४५यिपा ॥ २९ ॥

३. प्र४तु५द्रा४ । वापरिकोशाम् । निषी२३दार । सायिदा४२ ।  
 अ३हो२यि२ । अ३हो३वार । नृभिष्युना॒नो॒अभिवा । जैमा५२३  
 ऋ३षार । आ३रुषा२ । अ३हो२यि२ । अ३हो३वार । अ॒श्वन्न॒त्वा  
 वा॒जिन॒म्मा । जैया५२३ न्ता२ः । यांता२ । अ३हो२यि२ ।  
 अ३हो३वार । अ॒रच्छा॒ब॒र॒ऋ॒हायिः । र॒श॒ना॒भि॒रुः ।  
 न३ये२३४ । हि॒प॒या॒प॒द॒हा॒प॒उ॒प॒वा॒प । ता३२३४५यि५ ॥ ३० ॥
४. हा॒प॒ओं॒प॒द॒हा॒प । उ३हु३वार३४ । ओ॒प॒द॒हा॒प । प्र॒र॒तु॒द्र॒वा ।  
 परि॒को॒र३ । श॒रु॒न्नि॒षी॒४दा॒प । नृ॒भ॒या॒यि॒ष्यु॒र॒ना । नो॒र३अ॒भि ।  
 वा॒रु॒ज३म४ऋ४षा५ । अ॒र॒श्व॒न्न॒त्वा । वा॒र३जि॒नम् । म॒र॒र्ज३-  
 य४न्ना५ः । हा॒प॒ओं॒प॒द॒हा॒प । उ३हु३वार३४ । अ॒प॒द॒हा॒प ।  
 अ॒र॒च्छा॒ब॒र॒ऋ॒हायिः । र॒श॒ना॒ । भा॒र३४५३यि३ः । ना॒र३-  
 या४५५न्ता५६५६यि६ ॥ ३१ ॥
५. प्रा४तू५ । द्र॒वा॒परि॒को॒शाम् । नी॒षी॒२३दा॒र । नृ॒भ॒या॒यि॒ष्यु॒र॒ना ।  
 नो॒र३अ॒भि । वा॒रु॒ज३म४ऋ४षा५ । अ॒श्व॒न्न॒त्वा॒वा॒जि॒न॒म्मा ।  
 जैया५२३न्ता२ः । अ॒र॒च्छा॒ब॒र॒ऋ॒हायिः । र॒श॒ना॒ । भा॒र३  
 ४५३यि३ः । ना॒र३या४५ ५न्ता५६५६यि६ ॥ ३२ ॥

ऋषिः—वृषगणो वासिष्ठः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥  
 स्वरः—धैवतः ॥

५२४. प्र काव्यमुशनेव ब्रुवाणो देवो देवानां जनिमा विवक्ति ।

महिब्रतः शुचिबन्धुः पावकः पदा वराहो अभ्येति रेभन् ॥

१. प्रा४का॒विया४२ुम्२ । उ॒शने॒वा४२ु । ब्रु॒र॒वा५२३णा२ः । दे॒वो-  
 दे॒वा४२ु । ना॒ज्ज॒नि॒मा४२ु । वि॒र॒वा५२३क्ती२ । म॒हि॒ब्रा॒ता४२ुः ।

शुचिबन्धूऽऽः । पा<sup>१</sup>२वाऽऽ३काऽः । पदावाराऽऽः । होअभि-  
याऽऽयिऽः । ति३रा२३४ अ५हो५वा५ भा३२३४५न् ॥ ३३ ॥

२. प्रकावियाऽऽम् । उशनेवाऽऽः । ब्रुवाणाऽऽः । देवोदेवाऽऽः ।  
नाञ्जनिमाऽऽः । वि२वाक्तीऽऽः । महिब्राताऽऽः । शुचिबन्धूऽऽः  
पा<sup>\*</sup>२वाकाऽऽः । पदावाराऽऽः । होऽऽः । भि३या२३४अ५  
हो५वा५ । ति२रेभा३२३४५न् ॥ ३४ ॥

३. प्र२का२व्य२मु२श२ने२व२ब्रू२३वाणोऽऽः । दे३२३४वा५ः । दे२  
वा२ना२ञ्ज२नि२मा२वी२३वाक्तीऽऽः । मा३२३४हि५ । व्र२त२  
शु२चि२बन्धु२रष्या२३वाक्तीऽऽः । पा३२३४दा५ । व२रा२हो२अ२  
भ्ये२ति२राऽऽ३ । हा२उ२वा२३ । भा३२३४५न् ॥ ३५ ॥

४. हा५उ५हु२ । प्र२का२वियाम् । उ२शने । व२ब्रू३वा४णा५ः ।  
दे२वोदेवा । ना२३ञ्जनि । मा२ुवि३व४क्ति५ । म२हिब्रताः ।  
शुचिबा२३ । धु२रष्या३३वा४का५ः । हा५उ५ । २ । हु२ ।  
प२दावरा । हो२३अभि । आ२३४ऽ३यि३ । ती२३रा४ऽ५यि५  
भा५६५६न् ॥ ३६ ॥

[ इति ] अर्द्धप्रपाठकः ॥

ऋषिः—पराशरः शाक्त्यः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥

स्वरः—धैवतः ॥

५२५. ति३स्त्रो वाच ई१रयति प्र व३ह्निर्ऋ३तस्य धी१तिं ब्र३ह्म३णो मनी३षाम् । गा१वो  
यन्ति गो३पतिं पृ३च्छमा३नाः सोमं यन्ति म३तयो वाव३शानाः ॥ ३ ॥

१. मूलगानग्रन्थेऽत्र 'पर' इति लिखितम् 'पा२' इति पाठः स्यात्, 'पावकः' इति मूलपाठत्वात् ।

२. मूलगानग्रन्थेऽत्र 'धु२रष्य३ वा४का५ः' इति पाठोऽस्ति, मूलवेदे तु पावकः । —सम्पादकः

१. होयि । हो । हार३होयि । तिरस्त्रोवाचाः । ई२३रय । तिरुप्र३  
व४ह्लीपः । होइयाऽ२३होयि । तिरस्त्रोवाचाः । ई२३रय । तिरुप्र३  
व४ह्लीपः । आ२ । होइयाऽ२३होयि । तिरस्त्रोवाचाः । ई२३रय ।  
तिरुप्र३व४ह्लीपः । होइहा । इ२होईहा । अ३हो२३यि । इहा ।  
तिरस्त्रोवाचाः । ई२३रय । तिरुप्र३व४ह्लीपः । होइया । ई२योइया ।  
अ३हो२३यि । इया । तिरस्त्रोवाचाः । ई२३रय । तिरुप्र३  
व४ह्लीपः ॥ १ ॥
२. इ३हो२ुइ३हप । इ२हो२इ२हार३होऽ । वा३हो२ुइ३हप । तिरस्त्रो  
वाचाः । ई२३रय । तिरुप्र३व४ह्लीपः । इ५हो४वा४ऽ५ । इ२  
होवाऽ२३ । ई२३४ह४हापयिप । ई४ऽ५ई४हा४ । तिरस्त्रो-  
वाचाः । ई२३रय । तिरुप्र२व४ह्लीपः । इ२होवाऽ२३ । ई२३४ह४  
हापयिप । इ४हा४ । तिरस्त्रोवाचाः । ई२३रय । तिरुप्र३व४  
ह्लीपः । आअ२३हो२ । आअ२३हो२३४ । अ५हो५वाप । हार३  
हारयि२ । तिरस्त्रोवाचाः । ई२३राय । तिरुप्र३व४ह्लीपः । आ ।  
अ२३हो३वा३हार३४ । अ३हो४वाप । तिरस्त्रोवाचाः । ई२३  
रय । तिरुप्र३ व४ह्लीपः ॥ २ ॥
३. ओ३हार३ । ओ४हाप । २ । ऋ२तस्यधायि । ती२३म्ब्रह्म ।  
गो२ुम३नी३षा५म्प । हह२होयि । हह२हा३ह२होयि । गा२  
वोयन्तायि । गो२३पतिम् । पृ२च्छ३मा४नापः । इह२होयि । इह२  
हा३ह२होयि । सो२मंयन्तायि । म२तयः । वा२३४ऽ३ ।  
वा२३शा४ऽ५ नाप६५६ः ॥ ३ ॥

ऋषिः—वसिष्ठो मैत्रावरुणः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥

स्वरः—धैवतः ॥

५२६. अस्य प्रेषा हेमना पूयमानो देवो देवेभिः समपृक्त रसम् ।

सुतः पवित्रं पर्येति रेभन् मितेव सद्य पशुमन्ति होता ॥

१. अ३स्या२३४अ३हो४वा५ । प्रेषा । हे२३मना । पू२य३मा४  
ना५ः । उ३हु३वा२यि२ । अ३स्या२३४अ३हो४वा५ । प्रेषा ।  
हे२३मना । पू२य३मा४ना५ः । हा२यि२ । उ२हुरवा२ । दे३वा२३  
४औ३हो४वा५ । दे॒वायि । भी२३स्सम । पृ२क्त३र४सा५म् ।  
हा२उ२ । हो२यि२ । सु३ता२३४अ३हो४वा५ । प॒वायि । त्रा२३  
म्परि । ए२ति३रे४भा५न् । हा५ । हा२अ२हो२यि२ । मि३  
ता२३४अ३हो४वा५ । वसा । द्या२३पशु । मं२ति३हो४ ता५ ।  
पशु । मा२३४ऽ३ । ती२३हो४ऽ५ता५६५६ ॥ ४ ॥

२. अ॒हो२वा३हा२३होयि । इ३हार । अ२स्यप्रेषा । हे२३मना ।  
पू२य३मा४ना५ः । दे॒वोदे॒वायि । भी२३स्सम । पृ२क्त३र४  
सा५म् । सु२तष्यवायि । त्रा२३म्परि । ए२ति३रे४भा५न् ।  
अ॒हो२वा३हा२३होयि । इ३हार । मि॒रते॒वसा । द्या२३पशु ।  
मा२३४ऽ३ । ती२३हो४ऽ५ता५६५६ ॥ ५ ॥

ऋषिः—प्रतर्दनो दैवोदासिः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥

स्वरः—धैवतः ॥

५२७. सोमः पवते जनिता मतीनां जनिता दिवो जनिता पृथिव्याः ।

जनिताग्नेर्जनिता सूर्यस्य जनितेन्द्रस्य जनितोत विष्णोः ॥

१. सो॒रम२ष्य२व२ते२ज२नि२ता॒रमा२३तायिना४रु२म् । ज२  
नि२ता॒रदि२वो॒रज२नि२ता॒रप्रे२३थायिव्या४रुः । ज२नि२ता॒ऽ

ग्नेर्जनितासू । रियाऽ२३ स्या२ । ज२निर२तेऽन्द्रा । स्या२३जनि ।  
तो२३४ऽ३ । ता२३वा४ऽ५यि५ष्णो५६५६ः ॥ ६ ॥

२. सो३म४ष्य५व५ते५ज५नि५ता५ । ए२३ । अ२३हो४ऽ५वा५ऽ ।  
माताऽ२३४५यि५ना५६५६म् । ज२निर२ता२दि२वो॒जनि२ता॒-  
पृथि२व्याः । जनाऽ२यि२ता३२३४ग्ने५ः । ज२निर२ता॒२ ।  
सू२३४ऽ३ । री२३ या४ऽ५स्या५६५६ । ज२नितेंद्रस्य२ज२निर॒  
तो॒तवि॒ष्णो३२३४५ः ॥ ७ ॥

३. हा५उ५ज४न४त् ४ । ३ । ज४न४द्धा५उ५ । ३ । होयि । जनत् । २ ।  
होयि । जनात् । सो॒२म॒ष्यवा । ते२३जनि । तारुम३ती४ना५म् ।  
ज२निर२ता॒दायि । वो२३जनि । तारुपृ४थि३व्या५ः । ज२निर॒  
ता॒ऽग्रायिः । ज२निता । सू॒रि३य४स्या५ । हा५उ५ज४न४त् ४ ।  
३ । ज४न४द्धा५उ५ । ३ । होयि । जनत् । २ । होयि । जनात् ।  
ज२निर२तेंद्रा । स्या२३जनि । तो२३४ऽ३ । ता२३वा४ऽ५  
यि५ष्णो५६५६ः ॥ ८ ॥

४. ज४न४द्धा५उ५ । ३ । ज४न४दा५उ५ । ३ । जनत । होइ । ३ ।  
सो॒२म॒ष्यवा । ते२३५जनि । तारुम३ती४ना५म् । ज२निर॒  
ता॒दायि । वो२३जनि । तारुपृ३थि४व्या५ः । ज२निर२ता॒ऽग्रायिः ।  
ज२निता । सू॒रि३य४स्या५ । ज४न४द्धा५उ५ । ३ । ज४न४दा५  
उ५ । ३ । जनत् । होयि । ३ । ज२निर२तेऽन्द्रा । स्या२३जनि ।  
तो२३४ऽ३ । ता२३वा४ऽ५यि५ष्णो५६५६ः ॥ ९ ॥

ऋषिः—वसिष्ठो मैत्रावरुणः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥

स्वरः—धैवतः ॥

५२८.अभि त्रिपृष्ठं वृषणं वयोधामङ्गोषिणमवावशन्त वाणीः ।

वना वसानो वरुणो न सिन्धुर्वि रत्नधा दयते वार्याणि ॥



१. ओ२३हायि । ओ३ँहा२ । ओ३हा२ । इया४२ । ओ३ँहा२३ए२ ।  
 अ२भि॒त्रि॒पा । ष्ठा२३म्३वृष । ण२ुम्ब३यो४धा५म् । अ२ङ्गो-  
 षि॒णाम् । अ२वा॒व । श२ु । न्त३वा४णी५ः । व२न्ना॒वसा । नो२३  
 वरु । णो२ुन३सिं५धू५ः । ओ२३हायि । ओ३ँहा२ । ओ३हा२ ।  
 इया४२ । ओ३ँहा२३ए२ । वि२रत्न॒धाः । द२यते । वा२३४५३ ।  
 री२३या४५५ णा५६५६यि६ ॥ १० ॥

ऋषिः—पराशरः शाक्त्यः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥  
 स्वरः—धैवतः ॥

५२९. अक्रान्त्समुद्रः प्रथमे विधर्म जनयन्प्रजा भुवनस्य गोपाः ।  
 वृषा पवित्रे अधि सानो अव्ये बृहत्सोमो वावृधे स्वानो अद्रिः ॥

१. हो । होयि । अक्रा२न्स२मु२द्र२प्र२थ२मे॒वि॒ध२ । मा॒न् । हो ।  
 होयि । ज२न॒यन्प्र२जा॒भु॒वन॒स्य॒गो॒२ । पाः । हो । होयि । वृ॒षा॒२  
 प॒र॒वि॒त्रे॒अ॒धि॒सा॒नो॒रँ॒अ । व्या॒यि । हो । हो । बृ॒ह॒त्सो॒मो॒रँ॒वा॒२  
 वृ॒ह्दे॒स्वा॒र॒नो॒अ । द्रा । अ॒र॒हो॒३वा॒३हा॒२ उ॒र॒वा॒२३ । ए॒र॒३ ।  
 स्वा॒र॒नो॒अ । द्री॒ऽ२३४५ः ॥ ११ ॥

ऋषिः—प्रस्कण्वः काण्वः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥  
 स्वरः—धैवतः ॥

५३०. कनिक्रन्ति हरिरा सृज्यमानः सीदन् वनस्य जठरे पुनानः ।  
 नृभिर्यतः कृणुते निर्णिजं गामतो मतिं जनयत स्वधाभिः ॥

१. का४नी५ । क्रान्ती४२क्रान्ती४२ । ह२रि२रा२सृ२ज्यमा२२३-  
 ना२३ः । सा४यि॒दा५न् । वा॒ना४२वा॒ना४२ । स्य२ज२ठ२रे२  
 पु॒ना२३ना२३ः । त्रे४भी५ः । या॒ता४२या॒ता४२ः । कृ२णु॒ते२

निरणिजाऽ२३३गा२३म्३ । आ४ता५ः । माती४रुम्माती४रु  
म्२ । जनयताऽ२३ । स्वाऽरुधा३२३४अ५हो५वा५ । भी३२३  
४५ः ॥ १२ ॥

२. क३नि४क्र५न्ती५हा५ । हो२यि२हरि३रा२सृ३ज्य२ । मा३२  
३४ना५ः । हा२होयि । सी॒दन्वनस्यजठरे॒पुरनाऽ२३ना२ः । हा२  
होयि । नृभिर्यतष्कृणुतेनिर्णि२जाऽ२३ङ्गा२म्२ । हा२होयि ।  
अ॒तो॒मतायिम् । जैनयताऽ२३स्वाऽरुधा३२३४अ५हो५वा५ ।  
भी३२३४५ः ॥ १३ ॥

ऋषिः—उशनाः काव्यः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥  
स्वरः—धैवतः ॥

५३१. एष स्य ते मधुमाँ इन्द्र सोमो वृषा वृष्णाः परि पवित्रे अक्षाः ।  
सहस्रदाः शतदा भूरिदावा शश्वत्तमं बहिरा वाज्यस्थात् ॥

१. ए४षा५ए४षा५ः । स्य३ता२३ऽ२३४यि४ । म४धु५मा५ऽ५इं५  
द्र५सो४म५ः । वृ५षा५वृ५षा५६ए५ । वृ३ष्णा२३ऽ२३४ः । प४  
रि५प५वि४त्रे५अ५क्षा५ः । स५ह५स५हा५६ए५ । स्र३दा२३ऽ  
२३४ः । श४त५दा४भू५रि५दा४वा५ । श५श्व५च्छ५श्वा५६  
दे५ । त३मा२३ऽ२३४म्४ । ब४ऋ४हि४रा४वा५जि४ये४ऽ५ ।  
हि५या५६हा५उ५ वा५ । स्था३२३४५त् ॥ १४ ॥

ऋषिः—प्रतर्दनो दैवोदासिः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥  
स्वरः—धैवतः ॥

५३२. पवस्व सोम मधुमाँ ऋतावापो वसानो अधि सानो अव्ये ।  
अव द्रोणानि घृतवन्ति रोह मदिन्तमो मत्सरः इन्द्रपानः ॥

१. हारुओ३२३४हा५यि५ । इ३हार३५ । परवस्वसो । मार३मधु ।  
 मा२रु५ऋ३ता४वा५ । अ२पोवसा । नो२३अधि । सारुनो३  
 अ४व्या५यि५ । अ२वद्रोणा । नि२३घृत । वंरुति३रो४हा५ ।  
 हारुओ३२३४हा५यि५ । इ३हार३५ । म२दिंतमो । म२त्सरः ।  
 आ२३४५३यि३ । द्रा२३पा४५५ना५६५६ः ॥ १५ ॥

ऋषिः—प्रतर्दनः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

५३३. प्र<sup>१ २ ३ २३</sup> सेनानीः शूरो<sup>३ २ ३ १ २</sup> अग्रे<sup>३ १ २ ३ १ २</sup> रथानां<sup>३ १ २</sup> गव्यन्नेति<sup>३ १ २</sup> हर्षते<sup>३ १ २</sup> अस्य<sup>३ १ २</sup> सेना ।

भद्रान्कृण्वन्निन्द्र-हवान्त्सखिभ्य आ सोमो वस्त्रा रभसानि दत्ते ॥

१. हो३५४वा५ । उ३हु३वार३ । हो४वा५ । प्र२सेना२[ ना ]यिः ।  
 शूरो॒आ२३ । ग्ना२यि२र३था४ना५म् । ग२व्यन्ने२तायि ।  
 ह२ऋषता२३यि३ । अ२स्य३से४ना५ । भ२द्रान्कृ२ण्वान् ।  
 इन्द्रहा२३ । वा२नु३न्स३खि४भ्या५ः । आ॒२सो॒मो॒२वा ।  
 स्त्रा२३रभ । सा२नुनि३द४त्ता५यि५ । हो३५४वा५ ।  
 उ३हु३वार३ । हो४ वा५६ । हा५उ५ वा५ ॥ १६ ॥

२. अ॒५हो४५३वार३४५ । प्र२सेना॒२नायिः । शूरो॒आ२३ । ग्ना२  
 यि२र३था४ना५म् । ग२व्यन्ने२तायि । ह२ऋषता२३यि३ ।  
 अ२स्य३से४ना५ । भ२द्रान्कृ२ण्वान् । इन्द्रहा२३ । वा२नुन्स३  
 खि४भ्या५ः । अ॒५हो४५३वार३४५ । आ॒२सो॒मो॒२वा । स्त्रा२३  
 रभ । सा२३४५३ । नी२३दा४५५त्ता५६५६यि६ ॥ १७ ॥

३. अ॒५हो४५३वार३४५ । प्र३से३ना॒२नायिः । शूरो॒आ५३ । ग्ना२  
 यि२र३था४ना५म् । ग३व्य३न्ने२तायि । ह२ऋषता२३यि३ ।  
 अ२स्य३से४ना५ । भ३द्रा३न्कृ२ण्वान् । इन्द्रहा२३ । वा२नु३न्स३

खि४भ्या५ः । ओ५हो४ऽ३वार३४५ । आ३सो३मो२वा । स्त्रा२  
३रभ । सा२३४ऽ३ । नी२३दा४ऽ५ । ता३२३४५ यि५ ॥ १८ ॥

ऋषिः—पराशरः शाक्त्यः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥  
स्वरः—धैवतः ॥

५३४. प्र ते धारा मधुमतीरसृग्रन् वारं यत्पूतो अत्येष्यव्यम् ।  
पवमान पवसे धाम गोनां जनयन्त्सूर्यमपिन्वो अर्कैः ॥

१. हा२उ२हो२वार३हा२यि२ । प्र२ते२धा२रा२म२धु२मा२३  
तायिरसृग्राऽ२३४५न्५ । हा२उ२हो२वार३हा२यि२ । वा२रं२  
य२त्पू२तो२अ२ती२३यायिषिआव्याऽ२३४५म्५ ।  
हा२उ२हो२वार३हा२यि२ । प२व२मा२न२प२व२से३धामे  
गोनाऽ२३४५म्५ । हा२उ२हो२वार३यि२ । ज२न२य२न्त्सू२  
र्य२मा२३पायिन्वो॒अ॒र्क्काऽ२३४५यि५ः । हा२उ२हो२वार३  
हा२उ२ । वा२३४५ ॥ १९ ॥

ऋषिः—इन्द्रप्रमतिर्वासिष्ठः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥  
स्वरः—धैवतः ॥

५३५. प्र गायताभ्यर्चाम देवान्त्सोमं हिनोत महते धनाय ।  
स्वादुः पवतामति वारमव्यमा सीदतु कलशं देव इन्दुः ॥

१. प्र२गा॒यता । अ२भि॒य । चा२मु३दे४वा५न्५ । सो॒२मः॑हि॒नो ।  
ता२३म॒ह । ते॒रु॒ध३ना४या५ । स्वा॒२दु॒ष्प॒वा । ता२३म॒ति । वा॒रु  
र३म४व्या५म्५ । आ॒२सी॒दतू॒क॒रल॒शम्दा२३४ऽ३यि३ । वा२३  
आ४ऽ५यिं५दू५६५६ः ॥ २० ॥

ऋषिः—वसिष्ठो मैत्रावरुणः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥

स्वरः—धैवतः ॥

५३६. प्र<sup>२ २ ३ १ २ ३ १ २२ ३ २ ३ १ २२ ३ १ २</sup>हिन्वानो जनिता रोदस्यो रथो न प्राजं सनिषन्नयासीत् ।

<sup>२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २</sup>इन्द्रं गच्छन्नायुधा संशिशानो विश्वा वसु हस्तयोरादधानः ॥

१. हा२उ२हो२वा२३हा२यि२ । प्र२हिं२न्वा२नो२ज२नि२ता२  
रो२३४५३द२सी३यो५ः । हा२उ२हो२वा२३हा२यि२ । र२थो२  
न२वा२ज२२स२नि२षा२३४५३न२या३सी५त् । हा२उ२हो२  
वा२३हा२यि२ । इं२द्रं२ग२च्छ२न्ना२यु२धा२सा२३४५३२३शि२  
शा३न५ः । हा२हो२वा२३हा२यि२ । वि२श्वा२व२सु२ह२स्त२  
यो२रा२३४५३द२धा३न५ः । द४धा४५५ना५उ५ । वा५ ॥ २१ ॥

ऋषिः—मृडीको वासिष्ठः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥

स्वरः—धैवतः ॥

५३७. तक्षद्यदी मनसो वेनतो वाग् ज्येष्ठस्य धर्म द्युक्षोरनीके ।

<sup>१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २२ ३ १ २ ३ १ २२</sup>आदीमायन् वरमा वावशाना जुष्टं पतिं कलशे गाव इन्दुम् ॥

१. त३क्ष४द्य४दी५ । हो३२३४५यि५ । म३न४सो४वे३न४त५ः ।  
वा३२३४५क् । ज्ये३ष्ठ४स्य५धा५ । हो३२३४५ । मं४द्यु४  
क्षो३र४नी५ । का३२३४५यि५ । आ३दी४मा५य५न् । हो३२  
३४५यि५ । व३र४मा३वा४व५शा५ । ना३२३४५ः । जु३ष्टं४  
प४ति५म् । हो३२३४५यि५ । क४ल४शे४गा४५व५ः । इ५ ।  
दा५उ५ । वा५ ॥ २२ ॥

२. त२क्षद्यदा२३५२३४यि४ । म३न४सो४वे३न४त५ः । वा३२३  
४५क् । ज्ये२ष्ठस्यधा२३५२३४ । म४द्यु४क्षो३र४नी५ । का३२  
३४५यि५ । आ२दा॒यिमा॒या२३५२३४न् । व३र४मा३वा४व५

शा५ । ना३२३४५ः । जु२ष्टम्पता२३५२३४यि४म्४ । क४ल४  
शे४गा४५५वः । इ५ । दा५उ५ । वा५ ॥ २३ ॥

ऋषिः—नोधा गोतमः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥  
स्वरः—धैवतः ॥

५३८. सा<sup>३</sup>क<sup>१</sup>मु<sup>२</sup>क्षो<sup>३</sup> म<sup>३</sup>र्ज<sup>१</sup>यन्त<sup>२</sup> स्व<sup>३</sup>सारो<sup>१</sup> दश<sup>२</sup> धी<sup>३</sup>रस्य<sup>१</sup> धी<sup>२</sup>तयो<sup>३</sup> धनु<sup>१</sup>त्रीः ।  
हरिः<sup>२</sup> पर्य<sup>१</sup>द्रव<sup>२</sup>ज्जाः<sup>३</sup> सूर्य<sup>१</sup>स्य<sup>२</sup> द्रोणं<sup>३</sup> नन<sup>१</sup>क्षे<sup>२</sup> अत्यो<sup>३</sup> न वा<sup>१</sup>जी ॥

१. सा४का५म्५ । उक्षो॒मर्जयन्तस्व॒रसा॒ऽ२३२३२ः । दाशा४२ु ।  
धी॒रस्य॒धी॒तयो॒ध॒रनू॒ऽ२३३त्री२ः । हारी४२ुः । पर्य॒द्रव॒ज्जास्सू-  
रि॒या॒ऽ२३स्या२ । द्रोणा४२ुम्२ । ननक्षे॒अत्यो॒नवा॒ऽ२३ । हा२उ२  
वा२३ । जी३२३ ४५ ॥ २४ ॥

२. सा५क५मु५क्षा५६ए५ । ए२३५२३४ । म४र्ज५यं५त५स्व४-  
सा५र५ः । द५श५धी५रा५६ए५ । ए२३५२३४ । स्य४धी५त४  
यो५ध४नु५त्री५ः । ह५रि५ष्य५र्या५६ए५ । ए२३५२३४ । द्र४  
व५ज्जा४स्सू४र्य५स्य५ । द्रो५ णं५न५ना५६ए५ । ए२३५२३४ ।  
क्षे४अ४त्यो५न४वा५६ । हा५उ५वा५ । जी३२३४५ ॥ २५ ॥

ऋषिः—कण्वो घौरः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥  
स्वरः—धैवतः ॥

५३९. अ॒धि<sup>२</sup> य॒दस्मिन्<sup>१</sup> वा॒जिनी॒व शु॒भः<sup>३</sup> स्पर्ध॑न्ते धि॒यः<sup>१</sup> सू॒रे न वि॒शः<sup>२</sup> ।  
अ॒पो<sup>३</sup> वृ॒णानः<sup>१</sup> प॒वते॑ क॒वीया॒न् ब्रजं॑ न प॒शुव॑र्धनाय मन्म ॥

१. अ४धि५य५दा४ । स्मायि॒र्वा॒जिनी॒र॒व॒रशु॒ । भाः । स्पर्द्ध॑रन्ते॒  
धि॒यस्सू॒ । रा॒रुयि॒रुन॑वि४शा५ः । अ॒रपो॒वृणा॒नष्य॑वतायि ।  
क॑वी॒ऽ२३ । या॒रन्॒२ । ब्र॒जन्ना॒ । पा । शु॒रव॑र्द्ध । ना॒२३४५३ ।  
या॒२३मा॒४५५न्मा॒५६५६ ॥ २६ ॥

ऋषिः—मन्युर्वासिष्ठः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

५४०. इन्दुर्वाजी पवते गोन्योघा इन्द्रे सोमः सह इन्वन्मदाय ।

हन्ति रक्षो बाधते पर्यरातिं वरिवस्कृण्वन् वृजनस्य राजा ॥

१. इ॒न्द्रदू॒र३व्वाजी४२ । पव॒ते॒गो॒नियो॒घा॒रः । इ॒न्द्रा॒यि॒सोऽ॒र३४  
मा॒पः । सा॒हइ॒न्वन्म॒दाया॒र । हं॒रता॒यि॒राऽ॒र३४क्षा॒पः । बा॒धते  
प॒र्य॒राति॒र॒मू॒र । व॒ररा॒यि॒वाऽ॒र३४स्कृ॒प । ण्व॒रन्वृ॒रजा॒नाऽ॒र३ ।  
स्या । रा॒इँजौ॒रवा॒रुओ॒र३२३४वा॒प । हो॒ऽप॒यि॒प॒डा॒प ॥ २७ ॥
२. इ॒न्द्रदु॒प॒व्वा॒पि॒जी॒प॒प॒व॒तौ॒प । हो॒हो॒हो॒वा॒हा॒प॒यि॒प । गो॒र्नि॒-  
यो॒घौ॒र । वा॒रुओ॒र३२३४वा॒प । इ॒न्द्रे॒रँसो॒मा॒रँस्स॒ह॒र॒इ । न्वा॒न्म  
दा॒यौ॒र । वा॒रुओ॒र३२३४वा॒प । हन्ति॒र॒क्षो॒रबा॒ध॒र॒ते॒र । पा॒र्य॒रा ।  
तौ॒र । वा॒रुओ॒र३२३४वा॒प । वरि॒व॒र॒स्कृ॒ण्वन्वृ॒जना॒र३ । स्या ।  
रा॒रँजौ॒रवा॒रुओ॒र३२३४वा॒प । हो॒ऽप॒यि॒प । डा॒प ॥ २८ ॥
३. इ॒न्द्रदु॒प॒रौ॒प॒हो॒प॒वा॒प॒हा॒प॒ई॒या॒प । वा॒र॒जा॒र॒उ॒र । वा॒र३ ।  
हा॒र॒उ॒रवा॒र । प॒र॒व॒र॒ते॒रगो॒र॒नियो॒घा॒र॒उ॒र । वा॒र३ । हा॒र॒उ॒र  
वा॒र । इ॒न्द्रा॒यि॒सोम॒रः । स॒र॒हइ॒न्वा॒र॒उ॒र । वा॒र३ । हा॒र॒उ॒र  
वा॒र३ । मा॒ऽरु॒दा॒र३२३४अ॒प॒हो॒प॒वा॒प । या॒र३२३४प॒ । ह॒र॒न्ता-  
यि॒र॒क्षो॒र । बा॒र॒धा॒ता॒यि॒पा॒र॒उ॒र । वा॒र३ । हा॒र॒उ॒रवा॒र३ ।  
र्या॒ऽरु॒रा॒र३२३४अ॒प॒हो॒प॒वा॒प । ती॒र३२३४प॒म्प । व॒र॒रा॒यि-  
व॒स्कृ॒र । ण्व॒रन्वृ॒जना॒र॒उ॒र । वा॒र३ । हा॒र॒उ॒रवा॒र३ । स्या॒ऽरु  
रा॒र३२३४अ॒प॒हो॒प॒वा॒प । जा॒र३२३४पः ॥ २९ ॥
४. ई॒न्द्रदु॒प॒व्वा॒पि॒जी॒प॒प॒व॒ते॒गो॒प॒नि॒यो॒घा॒पः । इ॒न्द्रे॒सो॒प॒म॒प  
स्स॒प॒ह॒प॒इ॒न्व॒न्म॒प॒दा॒या॒प । हं॒प॒न्ति॒प॒र॒क्षो॒प॒बा॒ध॒ते॒प  
प॒र्य॒रा॒ती॒प॒म्प । व॒रि॒व॒प॒स्कृ॒ण्व॒प॒न्वृ॒ज॒प॒न॒स्य॒प



रा४जा५ । रा३जा२३४औ५हो५वा५ । ए२३ । स्य२रा३जा३२३  
४५ ॥ ३० ॥

[ इति ] पंचदशः प्रपाठकः ॥

ऋषिः — कुत्स आङ्गिरसः ॥ देवता — पवमानः सोमः ॥ छन्दः — त्रिष्टुप् ॥

स्वरः — धैवतः ॥

५४१. अया पवा पवस्वैना वसूनि माँश्चत्व इन्दो सरसि प्र धन्व ।  
ब्रध्नश्चिद्यस्य वातो न जूतिं पुरुमेधाश्चित्तकवे नरं धात् ॥

१. औ५हो४हा५यि५ । अ५यो४हो५यि५ । पवा५पवस्वैना५वर  
सू५२३नी२ । अ३हो२रुयि२ । इ३हार । ई३या२ । मा२श्च२त्व२  
इ॒न्दो॒सरसिप्र२धा५२३न्वा२ । अ२३हो२रुयि२ । इ३हार । ई३या२ ।  
ब्र२ध्नश्चिद्यस्यवा॒तो॒न२जू५२३ती२म् । अ३हो२रुयि२ । इ३हार ।  
ई३या२ । पु२रु२मे॒धा॒श्चित्तक॑वे॒न२रा५२३न्धा२त् । औ३हो२  
यि२ । इ३हार । ई५२ । या३२३४ । अ५हो५वा५ । ए२३ । दी२  
दि३ही२ऽऽ ॥ १ ॥

२. अ५यो४हा५यि५ । प५वो४हा५यि५ । पवस्वैना५वरसू५२३नी२ ।  
इ॒र॒हो॒र॒इ॒र॒या॒३ । ई३या२ । मा२श्च२त्व२इ॒न्दो॒सरसिप्र२धा५२३  
न्वा२ । इ॒र॒हो॒र॒इ॒र॒या॒३ । ई३या२ । ब्र२ध्नश्चिद्यस्यवा॒तो॒न२  
जू२३ती२म् । इ॒र॒हो॒र॒इ॒र॒या॒३ । ई३या२ । पु२रु२मे॒धा॒श्चित्त-  
क॑वे॒न२रा५२३न्धा२त् । इ॒र॒हो॒र॒इ॒र॒या॒३ । ई५२ । या३२३४ ।  
औ५हो५वा५ । ए२३ । दी२ दया५२३४५त् ॥ २ ॥

३. हा२ओ३२३४वा५ । २ । हा२३ओ५२३४वा५ । हा२उ२वा२ ।  
अ२या॒प२वा॒प२ व२स्वै॒र॒ना॒वसू॒र॒नि॒र । इ॒ह॒र॒इ॒र । हि॒या॒४२ ।  
इ॒हा॒र । २ । मा२श्च२त्व२इ॒न्दो॒र॒सरसि॒र॒प्र॒ध॒र॒न्व॒र । इ॒ह॒र॒इ॒र ।



हिया४२। इहार। २। इ४हार३। हारुओ३२३४वा५। २। हार३  
ओ५२३४वा५। हारउ२वार। ब्र२ध्नश्चि२द्यस्य२वा॒तो॒नजू२  
तिं। इहइ२हिया४२। इहारपु२रु२मे॒धा॒र॑श्चि२त्तकवे२नरन्धा॒र  
त्२। इह२इ२। हिया४२। इहार। इहा३२३४५ ॥ ३ ॥

ऋषिः—पराशरः शाक्त्यः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥  
स्वरः—धैवतः ॥

५४२. <sup>३१</sup>महत् <sup>२२</sup>तत् <sup>३१</sup>सोमो <sup>२</sup>महिषश्चकारापां <sup>३१</sup>यद्गर्भोऽ <sup>२२</sup>वृणीत <sup>३२</sup>देवान्।  
<sup>१२</sup>अदधादिन्द्रे <sup>३२</sup>पवमान <sup>३</sup>ओजोऽ <sup>२२</sup>जनयत् <sup>२३</sup>सूर्ये <sup>२</sup>ज्योतिरिन्दुः ॥

१. म२ह२त्त२त्सो॒रमो॒रम२हि२ष२श्चा२३कारा४२। अ२पां२य२  
द॒ग२र्भो॒रवृ२णी॒रता२३दायिवा४२नु२। अ२द२धा॒रदि॒रद्रे२  
प२व२मा॒रना२३ओजा४२। अ२ज२न२य२त्सूर्ये॒रज्योऽ२३।  
ति॒ररि॒रि॒दा॒उ॒वा॒३। ए२३। अ॒ज॒न॒य॒त्सूर्ये॒रज्यो॒ति॒ररि॒।  
दू५२३४५ः ॥ ४ ॥

ऋषिः—कश्यपो मारीचः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥  
स्वरः—धैवतः ॥

५४३. <sup>१२</sup>असर्जि <sup>३२</sup>वक्वा <sup>३२</sup>रथ्ये <sup>३२</sup>यथाजौ <sup>३२</sup>धिया <sup>३२</sup>मनोता <sup>३१</sup>प्रथमा <sup>३२</sup>मनीषा।  
<sup>२३</sup>दश <sup>१२</sup>स्वसारो <sup>२३</sup>अधि <sup>२३</sup>सानो <sup>३१</sup>अव्ये <sup>२३</sup>मृजन्ति <sup>३२</sup>वह्निं <sup>३२</sup>सदनेष्वच्छ ॥

१. अ२साअ२३हो२। जि२वाक्का४२। रथ्ययिया२३४। त्या५।  
जा३२३४५। उ५। धि२याअ२३हो२। म२नोता४२। प्रथमा  
मा२३४। नी५। षा३२३४५। द२शाअ२३हो२। स्वर सारा४२।  
अधिसानो२३४। अ५। व्या३२३४५यि५। मृ२जाअ२३हो२।  
ति॒रवा॒ह्नी४२मु२। स॒द॒ना॒यिषू२३४। अ४च्छ५५२उ२।  
वा२३४५ ॥ ५ ॥

ऋषिः—प्रस्कण्वः काण्वः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥

स्वरः—धैवतः ॥

५४४. <sup>३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २</sup>अपामिवेदूर्मयस्तर्तुराणाः <sup>३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २</sup>प्र मनीषा ईरते सोममच्छ ।

<sup>३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ २</sup>नमस्यन्तीरुप च यन्ति स चाच विशन्त्युशतीरुशन्तम् ॥

१. अ५पा४मि५वे४दूर्म५य५स्ती४ । हो४वा४हा५यि५ । तु३रा३  
णा३२३४ः । हा३हो२यि२ । प्रमनी२ । षाः । ई३र२र२ते२३ । सो३  
म३म५ । च्छा२३४हा३हो२यि२ । न२म२स्य । तायिः ।  
उपचा२३ । य३रुन्ति३स५म् । चा२३४ । हा३हो२यि२ । चाच२  
वि२ । शा । ति२ । यु२श३ती३रु३श५ । ता२३४म् । हा३  
हा२३४ । अ५हो५वा५ । वा२३हा३र३४५ः ॥ ६ ॥

ऋषिः—अन्धीगुः श्यावाशिवः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥

स्वरः—गान्धारः ॥

५४५. <sup>३ १ २</sup>पुरोजिती वो <sup>३ १ २</sup>अन्धसः <sup>३ १ २</sup>सुताय <sup>३ १ २</sup>मादयित्वे ।

<sup>२ ३ १ २</sup>अप श्वानं <sup>३ १ २</sup>श्नथिष्टन <sup>३ १ २</sup>सखायो दीर्घजिह्व्यम् ॥

१. पु५रो५जि५ती५ । वो३अं२धा३२३४सा५ः । सु३र३ता३यामा३र३द३  
या३३३वा३यि३३ । त्वा३३३४वे५ । अपश्चाना३र३श्न३  
था३३३उवा३ये३३ । ष्ठा३३३४ना५ । सखा३योदी३र३र्घ३र३जी३३३  
उवा३ये३३ । ह्री३३३४या५ म् ॥ ७ ॥
२. पु५रो५जि५ती५ । वो३३ओं३न्धा३३सा३ः । सू३ता३र३य३मा३रु३ ।  
ऊ३रु३ । हा३रु३यि३३ । ऊ३रु३ । दा३३या३यि३त्ता३३वे३ । आपश्चा३र३-  
ना३रु३म् । २ । ऊ३रु३ । हा३रु३यि३३ । ऊ३रु३ । श्रा३३था३यि३ष्टा३३  
ना३ । साखा३र३यो३रदा३रु३यि३३ । ऊ३रु३ । हा३रु३यि३३ । ऊ३रु३३ ।  
घा३रु३जी३३३३अ५हो५वा५ । ए३र३३ । ह्रि३या३र३३३३३३ ॥ ८ ॥

३. पु॒प॒रो॒प॒हा॒प॒हा॒उ॒प । जा॒३२३४यि॒४ती॒प । वो॒२आऔ॒२३हो॒२३ ।  
धा॒४सा॒पः । सु॒२ताअ॒२३हो॒२३ । या॒४मा॒प॒६ । हा॒प॒उ॒प॒वा॒प ।  
द॒२यि॒२त्त॒वे॒२ । उपा॒२ । अप॒श्चानः॑श्च॒था॒२ऽयि॒ष्टा॒२३ना॒२ । स॒२  
खाऔ॒२३हो॒२३ । यो॒४दा॒प॒६ । हा॒प॒उ॒प॒वा॒प । घ॒२जि॒२ह्वि॒यम् ।  
उपा॒३२३४प ॥ ९ ॥
४. पु॒प॒रो॒४जि॒५ती॒५वो॒५अं॒४ध॒५स॒५ः । उ॒४वा॒४हा॒५यि॒५ । सु॒२ता॒य  
मा॒दयि॒त्त॒वउ॒वाऽ॒२३हो॒यि । अप॒श्चानः॑श्च॒थि॒ष्टनउ॒वाऽ॒२३हो॒यि ।  
सा॒खा॒२यो॒२दा॒यि । घा॒जि॒२ह्वा॒३२३४प॒या॒५६५६म् । सु॒२वृ॒२  
क्ति॒भि॒२र्नृ॒२मा॒दनं॒२भ॒रे॒२षु॒३वा॒२ऽऽ ॥ १० ॥
५. पु॒३रो॒२३ऽ । जी॒२३ती॒४ । वो॒४अ॒५ । धा॒२३स॒४ः । ए॒४हि॒४या॒५ ।  
सू । ता॒यमा॒दा । यि॒२ । त्वा॒४रु॒यि॒२ । ए॒हिया॒४रु । अ॒२ प॒२  
श्चा॒नाः॑श्चा॒२३थी॒४ऽ३ । ष्टा॒३२३४ना॒५ । ऐ॒२हा॒४रु॒यि॒२ ।  
ए॒हिया॒४रु । स॒२खा॒२यो॒दा॒यिर्घा॒२३जी॒४ऽ३ । ह्वी॒२३४प॒यो॒५६  
हा॒५ यि॒५ ॥ ११ ॥
६. पु॒प॒रो॒५जि॒५ती॒५वो॒५ऽ४धा॒४सा॒५ः । सु॒२ता॒यामा॒दाऽ॒२३या॒२ ।  
हु॒म्मा॒४रु॒ऽ२ । त्वा॒वे॒अप॒श्चानः॑श्च॒रथि॒२ष्ट॒२न॒२ । सा॒खा॒२३उ॒२  
वा॒२ । यो॒४रु॒दी । घाऽ॒२३जी॒२ । ह्वि॒याम् । अऽ॒२३हो॒४वा॒५ ।  
हो॒४ऽ५यि॒५डा॒५ ॥ १२ ॥

ऋषिः—नहुषो मानवः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥

स्वरः—गान्धारः ॥

५४६. अ॒यं पू॒षा र॒यिर्भ॒गः सोमः पु॒ना॒नो अ॒र्षति॑ ।  
प॒तिर्वि॒श्वस्य॑ भू॒मनो॑ व्य॒ख्यद्रो॒दसी॑ उ॒भे ॥

१. अ॒रयं॑र॒पूषो॑हो । रा॒रयि॑र्भगाः । सो॒रम॑र॒ष्पुन॑र॒ना॒र॒३ । नोआ॑र॒३  
 ऋ॒३षा॑ऽप॒ता॒प॒६५६यि॑६ । प॒रति॑र॒र्वि॒श्वा॒र॒हो । स्या॒र  
 भू॒मनाः॑ । वि॒रय॑र॒ख्य॒र॒द्रो॒र॒३ । दा॒सी॒र॒३ऊ॑ऽप॒भा॒प॒६५६  
 यि॑६ ॥ १३ ॥
२. अ॒प॒य॒प॒म्पू॒षा॒प॒ । २ । र॒रयि॑र॒भगाः॑ । सो॒रम॑र॒ष्पूना॑ऽरु । नो॒र  
 अ॒र॒ऋ॒र॒षता॑यि॒र॒पति॑र॒र्व्या॑यि॒श्वा॑ऽरु । ओ॒स्या॒भूर॑ऽमा॒ना॑ऽरुः ।  
 ओ॒यि॒वि॒य॒ख्या॑ऽर॒३द्रो॒र॒ । दा॒सी॒उ॒र॒भ॒र । इ॒डा॑ऽर॒३भा॒र॒३ऽऽ॒३ ।  
 ओ॑ऽर॒३ऽऽ॒प॒यि॒॑डा॒प॒ ॥ १४ ॥
३. अ॒४यं॒॑३पू॑ऽषा॒प॒ । हो॒रु । र॒३यि॑ऽर्भ॒४गा॑प॒६ए॒प॒ । सो॒मा॑ऽरु  
 ष्पूना॑ऽरु॒न॒३आ॒र॒३ऽऽ॒प॒ । षा॒३॒र॒३ऽति॑प॒ । प॒ति॒र्वि॒श्च॒स्य॒र  
 भू॒मन॑रः । वि॒रय॑ख्या॒ऽर॒३द्रो॒र॒ । द॒र॒सी॒ऊ॑ऽर॒३भा॒र॒३ऽऽ॒३  
 ओ॑ऽर॒३ऽऽ॒प॒यि॒॑डा॒प॒ ॥ १५ ॥

ऋषिः—ययातिर्नाहुषः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥

स्वरः—गान्धारः ॥

५४७. सु॒ता॒सो॒ म॒धु॒म॒त्त॒माः॑ सु॒मा॒ इन्द्रा॑य म॒न्दि॒नः॑ ।

प॒वि॒त्र॒व॒न्तो॑ अक्ष॒र॒न्दे॒वा॒न्गच्छ॑न्तु वो॒ म॒दाः॑ ॥

१. सु॒प॒ता॒प॒सो॒प॒मा॒प॒धु॒र॒मा॒र॒३त्त॑र॒मा॒रः॑ । सो॒मा॒इं॒र॒द्रा॒र॒३य॒र  
 मा॒र॒३ । ए॒र॒३ । दि॒र॒न॒३आ॒र । प॒वा॒यि॒त्र॒र॒वा॒र॒३न्तो॑र॒३ । ए॒र॒३  
 क्ष॒र॒र॒३न्ता॒र । दा॒यि॒वा॒ऽन्गा॒र॒च्छा॑र॒३तु॑र॒वा॒र॒३ः । ए॒र॒३ ।  
 म॒र॒दा॒३आ॒र ॥ १६ ॥

२. सु॒प॒ता॒४सो॒५म॒४धु॒५म॒५त्त॒५मा॒४ः । सो॒मा॒४रु । इं॒द्रा॒ऽरु ।  
 य॒३मा॒२३४५ । दी॒३२३४ना॒५ः । प॒२वि॒त्रवं॒२तो॒२अ॒२क्ष॒२र॒२रु  
 न॒२रु । दे॒३वा॒३न्ग॒२च्छा । तु॒२वो॒मा॒ऽ२३दा॒२३४ऽ३ः । ओं॒ऽ२३४५  
 यि॒५ । डा॒५ ॥ १७ ॥
३. सु॒प॒ता॒४सो॒५म॒४धु॒५म॒५त्त॒५मा॒५ः । सो॒४मा॒४इ॒५न्द्रा॒५ । य॒२मं॒२-  
 दिनः । पा॒र्वि॒त्रावा॒४रु । तो॒अ॒क्ष॒२र॒२न॒२र । दा॒यिवा॒न्ग॒च्छौ॒२वा॒रु ।  
 तू॒३२३४वा॒५ः । म॒२दा । अ॒२३हो॒४वा॒५ । हो॒४ऽ५यि॒५  
 डा॒५ ॥ १८ ॥
४. सु॒प॒ता॒४सो॒५म॒४धु॒५म॒५त्त॒५मा॒५ः । सो॒४मा॒४हा॒५उ॒५ । ई॒२र्द्रा॒३-  
 यार्म॑न्दिना॒ऽरुः । इं॒३द्रा॒२३हो॒यमा॒ऽरु॒न्दा॒३२३४यि॒४ना॒५ः ।  
 प॒२वि॒२त्र॒२वा॒३न्तो॒अ॒क्षारा॒ऽरु॒न॒२रु । त्र॒३वा॒२३हो॒तो॒ऽरु॒क्षा॒३२  
 ३४ रा॒५न् । दे॒२वा॒२न्ग॒२च्छा॒२३न्तू॒वो॒३मा॒दा॒ऽरुः । दे॒३वा॒२३  
 न॒३ हो॒यि । ग॒च्छो॒३२३४हा॒५ । तु॒ऽरु॒वा॒३२३४अ॒५हो॒५वा॒५म॒२  
 दा॒२३आ॒ऽ२३४५ ॥ १९ ॥
५. सु॒प॒ता॒५सो॒५म॒५धु॒५म॒५त्त॒५मा॒५६ए॒५ । सो॒२मा॒२इं॒२द्रा॒३ंया  
 र्म॑न्दिना॒४रुः । दा॒यिना॒४रुः । प॒२वि॒२त्र॒२वा॒३न्तो॒अ॒क्षारा॒४रु  
 न॒२र । क्षा॒रा॒४रुन् । दे॒२वा॒२न्ग॒२च्छा॒२३न्तू॒वो॒३मा॒दा॒४रुः ।  
 मा॒दा॒ऽरुः । दे॒३वा॒२३न॒३हो॒यि । ग॒च्छो॒३२३४हा॒५ । तू॒ऽरु  
 वा॒३२३४अ॒५हो॒५वा॒५ । म॒२दा॒२ईं॒ऽ२३४५ ॥ २० ॥
६. सु॒ता॒सो॒मा॒२३हा॒रु । धु॒३म॒२त्ता॒मा॒४रुः । सो॒मा॒इं॒द्रा॒२३हा॒रु ।  
 य॒३मं॒३दा॒यिना॒४रुः । प॒वि॒त्रवा॒२३हा॒रु । तो॒३अ॒क्षारा॒४रु॒न॒२र ।  
 दे॒वा॒न्ग॒च्छा॒२३हा॒रु । तु॒३वो॒२३हो॒ऽ२३४ । वा॒५ । मा॒४ऽ५दो॒५६  
 हा॒५यि॒५ ॥ २१ ॥

७. सु॒प॒ता॒प । सो॒३मा॒२३ । हा॒२३हा॒२ । धु॒३म॒२त्ता॒माऽ२३४ः ।  
 सो॒४मा॒५ः । इं॒३द्रा॒२३ । हा॒२३हा॒२ । य॒३मं॒२दा॒यिनाऽ२३४ः ।  
 प॒४वि॒५ । त्र॒३वा॒२३ । हा॒२३हा॒२ । तो॒३अ॒२क्षा॒राऽ२३४न्॒४ ।  
 दे॒४वा॒५ न्॒५ । ग॒३च्छा॒२३ । हा॒२३हा॒२ । तु॒३वो॒२३होऽ२३४ ।  
 वा॒५ । मा॒४ऽ५ दो॒५६हा॒५यि॒५ ॥ २२ ॥
८. सु॒प॒ता॒प सो॒२३मा॒४धु॒५म॒४त्त॒४मा॒५ः । सो॒२मा॒इं॒२द्रा । य॒२मं॒२  
 दि॒नः । पा॒वा॒२ओं॒३२३४वा॒५ । त्र॒२वं॒२तो॒२अ॒२क्ष॒२र॒२नु॒२ ।  
 दे॒३वा॒३न्ग॒२च्छा । तु॒२वो॒माऽ२३दा॒२३४ऽ३ः । ओं॒ऽ२३४५  
 यि॒५ । डा॒५ ॥ २३ ॥

ऋषिः—मनुः सांवरणः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥  
 स्वरः—गान्धारः ॥

५४८. सो॒माः प॒वन्त॑ इ॒न्दवो॑ऽस्म॒भ्यं गा॑तु॒वित्त॑माः ।  
 मि॒त्राः स्वा॑ना अ॒रेप॑सः स्वा॒ध्यः स्व॒र्वि॒दः ॥

१. हा॒४उ॒४सो॒४मा॒५ः । प॒२वा॒३न्ता॒इन्दा॑वा॒२उ॒२ । वा॒२३ । हा॒२उ॒२  
 वा॒२ । अ॒२स्म॒भ्यङ्गा॑तूँ॒वित्तो॑मा॒२उ॒२ । वा॒२३ । हा॒२उ॒२वा॒२ ।  
 मि॒२त्रा॒स्वा॒ना॒आ॒रे॒२पा॑सा॒२उ॒२ । वा॒२३ । हा॒२उ॒२वा॒२३४ ।  
 सु॒४वा॒५ । धि॒३या॒२३ः । सू॒ऽ२३वा॒४ऽ३ः । वा॒२३४५यि॒५दो॒५६  
 हा॒५यि॒५ ॥ २४ ॥
२. सो॒५मा॒५ष्य॑वं॒२त॒३इ॒न्द॒५वा॒५ः । अ॒२स्मा॒भ्य॒२ङ्गा । तु॒२वि॒३  
 त्त॒२मा॒५ः । मा॒यि॒त्रा॒२ओ॒३३३४वा॒५ । स्वा॒२ना॒अ॒रे॒२प॑स॒४२ुः ।  
 सु॒३वा॒३धि॒२ । यः । सु॒२व॒र्वाऽ२३यि॑दा॒२३४ऽ३ः । ओ॒ऽ२  
 ३४५यि॒५ । डा॒५ ॥ २५ ॥

१. 'गातूँ' इति मूलगानपाठः ।

२. अत्र कतमा संख्येति हस्तलेखेऽस्पष्टत्वान्न ज्ञायते । —सम्पादकः

ऋषिः—रेभसून् काश्यपौ ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—बृहती ॥

स्वरः—मध्यमः ॥

५४९. अ<sup>३</sup>भी<sup>१</sup> नो<sup>२</sup> वाजसातमं<sup>३</sup> रयिमर्ष<sup>१</sup> शतस्पृहम्<sup>२</sup> ।

इ<sup>१</sup>न्दो<sup>२</sup> सहस्रभर्णसं<sup>३</sup> तुविद्युम्नं<sup>१</sup> विभासहम्<sup>२</sup> ॥

१. अ५भी५नो५वा५ । जाऽरुसा३२३४अ५हो५वा५ । ता३२३४  
मा५म् ५ । र२यिमऋ२ष२श२त२स्पृह२म् २ । इ॒न्दोसहस्रभाऽ२३  
हो । णैसा४रुम् । २ । तुविद्युन्म्वि \*भाऽ२३होये२३ । स२ह२  
मो३२३४५यि५डा५ ॥ २६ ॥

२. अ५भी५नो५वा५ । जासात२म२म् २ । र२यिमाषाउवाऽ२३ ।  
होवा२३हारयि२ । श२त२स्पृह२म् २ । इ॒न्दोरँस२ । हाउवाऽ२३ ।  
होवा२३हार । स्रभर्णसम् । तुवायो२३ । द्यूऽरुम्ना३२३४  
अ५हो५वा५ । वि२ भा२सहा३२३४५म् ॥ २७ ॥

३. अ२भी४रुहोयि । नो२वा२जा२३सा४ऽ३ । हा२रुता३२३४  
मा५म् ५ । र२यी४रु२होयि । अ२ऋ२ष२शा२३ता४ऽ३ । हा२रु  
स्प्रे३२३४हा५म् ५ । इ॒न्दो४रुहोयि । स२ह२स्वा२३ भा४ऽ३ ।  
हा२रुणा३२३४ सा५म् ५ । तु२वा४रु । होयि । द्यु२ म्नी२३  
भा४ऽ३ । हा२३ सा४ऽ५हा५६५६म् ॥ २८ ॥

४. अ२भीनोवा२३ऽ२३४ । ज४सा५ । त३मा२३म् ३ । र२यिम-  
ऋषा२३ऽ२३४ । श४त५ । स्पृ३हार३म् ३ । इ॒न्दोसाहार३ऽ  
२३४ । स्र४भ५ । ण३सा२३म् ३ । तु२वायिद्युम्ना२३ऽ२३म् ३ ।  
वि४ भा४ऽ५स५हा५उ५ । वा५ ॥ २९ ॥

\* 'तुविद्युन्म्विभा' इति मूलगानपाठः । —सम्पादकः

५. अ४भी४नो४वौ४हो४ऽ५ज५सा५त४मा४म्४ । र४यि४म४  
 ऋ४षौ४हो४ऽ५श५त५स्पृ४हा४म्४ । इं४दो४स४हौ४हो४ऽ५  
 स्त्र५भ५र्ण४सा४म्४ । तु४वि४द्यु४म्रौ४हो४ऽ५वि५भा५स४  
 हा४म्४ । स४ह५म्५ । तु५वि५द्यु५म्रं४वि५भा५६ । हा५उ५  
 वा५ । स२हा२३ मेऽ२३४५ ॥ ३० ॥

ऋषिः — ऋजिष्वाम्बरीषौ ॥ देवता — पवमानः सोमः ॥ छन्दः — अनुष्टुप् ॥

स्वरः — गान्धारः ॥

५५०. अ३<sup>३ १ २</sup>भी नवन्ते अ३<sup>३ १ २</sup>द्रुहः प्रि३<sup>३ १ २</sup>यमिन्द्रस्य का३<sup>३ १ २</sup>म्यम् ।  
 वत्सं न पूर्व आयुनि जातं रिहन्ति मातरः ॥

१. आ३२३४भी५ । ओयिनवन्तआद्रू२ऽहा४रुः । ओयिप्रिय  
 मिन्द्रस्य कामा२ऽया४रुम्२ । ओयिवत्सन्नपूर्वआयू२ऽनी४रु ।  
 ओयि । जा॒तःरिहंतिमो२ऽ२३४ । वा५ । ता४ऽ५रो५६हा५  
 यि५ ॥ ३१ ॥

२. अ५भी५ । न३वा२३२ । त४आ४ऽ५द्रु५हा५ । प्रि२या२मिं२-  
 द्रा२३ । स्याका२मा३२३४या५म्५ । व२त्स२न्न२पूर३ ।  
 र्वा॒आ२यू३२३४नी५जा । ता२३ः३होयि । रिहा२३हो ।  
 ति२मा॒ताऽ२३रा२३४ऽ३ । ओऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ ३२ ॥

३. अ५भी४न४वंप॒ते५अ५द्रु४ह५ । ओ४हा४यि४ । प्रि५य४मिं४-  
 द्र५स्य५ का४मि५य५म्५ । ओ४हा४यि४ । व५त्स४न्न४पू४-  
 र्व५आ४यु५नि५ । अ५ हो४वा४हा५यि५ । जा॒तःरिहौ२वा२ु ।  
 ती३२३४मा५ । त२रा । अ२३हो४वा५ । हो४ऽ५यि५ ।  
 डा५ ॥ ३३ ॥



ऋषिः—प्रजापतिर्वाच्यो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥

स्वरः—गान्धारः ॥

५५१. आ<sup>१ २ ३</sup> ह॒र्यताय॑ धृ॒ष्णावे॑ ध॒नुष्ट॑न्वन्ति पौंस्यम् ।

शु॒क्रा वि॑ यन्त्यसुराय॑ नि॒र्णिजे॑ वि॒षाम॑ग्रे महीयुवः ॥

१. आ३हा२३ । ओं५२३४वा५ । र्य२ता॒यधृ॒रष्णावे॑रु । ध३नूर३ः ।  
ओं५२३४वा५ । त२न्वं२ति॒रपौंसि॑य॒रुम॒रु । शु३क्रा२३ः ।  
ओं५२३४वा५ । वि॒यन्त्यसुरा॒रय॒रनि॒रुणि॑र्जैरु । वि३पा२३ ।  
ओ५२३४ वा५ । अ॒ग्रेरँ॒म॒र ही॒रयु॑वा५२३४५ः ॥ ३४ ॥
२. हा२३हा२यि२ । आह॒र्यता॑रु । या३२३४धृ५ । हा२३हा२३४ ।  
अ॒प॒हो॒प॒वा॒प । ष्णा३२३४वे५ । हा२३हा२यि२ । ध॒नू॒ष्टान्वा॑रु ।  
ती३२३४पौ५ । हा२३हा२३४ । अ॒प॒हो॒प॒वा॒प । सी३२३४या५  
म्प । हा२३हा२यि२ । शु॒क्रावि॒रय॒र । ता॒अँसुरा॑रु । या३२३४  
नी५ । हा२३हा२३४ । अ॒प॒हो॒प॒वा॒प । णी३२३४जे५ । हा२३हा२  
यि२ । वि॒षाम । ग्रा॒रुयि॑रु । मा३२३४ही५ । हा२३हा२३४ ।  
अ॒प॒हो॒प॒वा॒प । यू३२३४वा५ः ॥ ३५ ॥
३. आ॒४ह॒प॒र्य॒प॒ता॒४य॒प॒धृ॒प॒ष्णा॒४व॒प॒आ॒४ । ध॒नु॒ष्टा॒र॒ज्न्वा॒४रु ।  
ति॒पौंस॑र॒या॒४रु॒म॒र । शु॒क्रा॒रवि॒रय॒र । ता॒अँसुरा॑र३ ।  
या॒नी॒रु॒णा॒३२३४यि॒४जा॒प॒यि॒प । वि॒षा । मा॒र॒ग्रा॒४रु॒यि॒र ।  
ओ॒यि । मा॒र॒३ ही॒४र॒३ । यू॒र॒३४प॒वो॒प॒६हा॒प॒यि॒प ॥ ३६ ॥
४. आ३४ह॒प॒र्य॒प॒ । ता३४य॒प॒धृ॒प॒ । ष्णा॒र॒३४वे॒४ । ध॒नु॒ष्टान्वा॑  
न्वा॒प । ति॒र पौंसि॑र॒या॒र॒मूर॑ । शु॒क्रावि॒रय॒र । ता॒अँसुरा॑रु ।  
य३ना॒र उ॒रवा॒र३ । णी३२३४जे५ । वा॒यि॒पा॒र॒३३हा॒रयि॒र ।  
आ॒ग्रे॒र॒३हा॒रयि॒र । म॒रही॒यू॒र॒३वा॒र॒३४र॒३ः । ओ॒५२३४५  
यि॒प । डा॒प ॥ ३७ ॥

ऋषिः—कविभार्गवः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—जगती ॥

स्वरः—निषादः ॥

५५२. परि<sup>२ ३</sup> त्यं<sup>१ २ ३ १</sup> हर्यं<sup>२ ३ १</sup> हरिं<sup>२ ३ १</sup> बभ्रुं<sup>२ ३ १</sup> पुनन्ति<sup>२ ३ १</sup> वारेण<sup>२ ३ १</sup> ।

यो<sup>२ ३ २ ३</sup> देवान्विश्वा<sup>३ २ ३</sup> इत्परि<sup>३ १ २</sup> मदेन<sup>३ १ २</sup> सह<sup>२ ३</sup> गच्छति ॥

१. प३रि४त्यः३ह४र्य४तः३ह४रि५म् । पा५२३४ । रि४त्यः४हौ४  
हो४ऽप५र्य५त५ः५ह४रा४यि४म् । ब४भ्रुं३पु४नं४ति४वा३रे४  
ण५ । बा५२३४ । भ्रुं४पु४नौ४हो४ऽप५न्ति५वा५रे४णा४ । यो३  
दे४वा३न्वि३श्वाः४इ३त्प४रि५ । यो५२३४ । दे४वा४न्वौ४  
हो४ऽप५आ५ः५इ५त्प४ रा४यि४ । म३दे४न४स४ः३स४ह३  
ग३च्छ४ति५ । मा५२३४ । दे४न४सौः३हो४ऽप५ह५ग५ ।  
च्छा४ऽप५तो५द५हा५यि५ ॥ ३८ ॥

ऋषिः—कविभार्गवः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—जगती ॥

स्वरः—निषादः ॥

५५३. प्र<sup>१ २ ३ १</sup> सुन्वानाया<sup>२ ३ १</sup> न्धसो<sup>२ ३ १</sup> मर्तो<sup>२ ३ १</sup> न<sup>२ ३ १</sup> वष्ट<sup>२ ३ १</sup> तद्वचः<sup>२ ३ १</sup> ।

अप<sup>२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १</sup> श्वानमराधसं<sup>२ ३ १</sup> हता<sup>२ ३ १</sup> मखं<sup>२ ३ १</sup> न भृगवः<sup>२ ३ १</sup> ॥

१. प्र२सुन्वा५२३ना४य४अ५न्ध५सा५ः । मर्त्त२ः । नवा५२ु । ष्ट३  
त२द्वा३२३४चा५ः । अ२प२श्वा२न२म३रा२ु । धा३२३४ सा५  
म् । ह२ता५मा५२३ख२ुम् । न३भ्रे२३गा४ऽप५ वा५द५दः ॥ ३९ ॥

[ इति ] अर्द्धप्रपाठकः ॥

ऋषिः—कविभार्गवः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—जगती ॥

स्वरः—निषादः ॥

५५४. अभि<sup>३ २ ३ १ २</sup> प्रियाणि<sup>३ १ २</sup> पवते<sup>३ १ २</sup> चनोहितो<sup>३ २ ३</sup> नामानि<sup>३ १ २</sup> यद्वा<sup>३ २ ३ १ २</sup> अधि<sup>३ २ ३ १ २</sup> येषु<sup>३ २ ३ १ २</sup> वर्धते ।

आ<sup>१ २ ३ २ ३ २ ३</sup> सूर्यस्य<sup>३ २ ३ २ ३</sup> बृहतो<sup>३ २ ३</sup> बृहन्नधि<sup>३ २ ३</sup> रथं<sup>१ २</sup> विष्वञ्चमरुहद्<sup>३ २</sup> विचक्षणः ॥

१. आ२भिर२प्री३२३४या५ । णी२पा२वा३२३४ता५यि५ । चा२  
नो॒हिताऽ२३ः । ना२मा२नी३२३४या५ । ह्यो२अ२धी३२३४  
ये५ । षू२वर्द्धताये२३ । आ२सू२री३२३४या५ । स्या२ब्रे२हा३२  
३४ता५ः । ब्रे२हन्नधाये२३ । रा२थ२वा३२३४यि४ष्वा५ । चा२  
मा२रु३२३४हा५त् ५ । वि२चा२३ऽउवाऽ२३ । क्षा३२३४  
णा५ः ॥ १ ॥

२. ए४ऽ५ । अ४भि४प्रि५या५ऽ२ । णि३प४व४ता५यि५ । ए४ऽ५ ।  
च४नो॒४ हि५ता५ः । ए४ऽ५ । ना॒४मा॒४नि५या५ऽऽ२ । ह्यो३अ४ ।  
धि४य५ यि५ । ए४ऽ५ । षु४व४र्द्ध५ता५यि५ । ए४ऽ५ । आ॒४  
सू॒४रि५या५ऽ२ । स्य३बृ४ह४ता५ः । ए४ऽ५ । बृ४ह४न्न४धी५ ।  
ए४ऽ५ । र४थं४वि५ ष्वा५ऽ२ । च३म४रु४हा५तू५ । ए४ऽ५ ।  
वि४च४क्ष५णा५ः । हो४ऽ५ यि५ । डा५ ॥ २ ॥

३. अ५भ्यौ५हो५वा५हा५यि५प्रि५या४णी५ । पवता२यि२रुचा३२-  
३४नो५ । हि२ताः । ना॒२मानि२य२ह्यो२अ२धि२ये२षु२वर॒र्द्ध२  
तायि । आ॒२सूर्य२स्य२बृ२ह२तो२बृ२ह२न्न२धा॒यि । र२थम् ।  
वायिष्व२ञ्च२म२रु२ह२त् । वि२चा२३ऽउवाऽ२३ । क्षा२३  
णाऽ२३४५ः ॥ ३ ॥

४. अ२भिर२प्रिया । णी॒२पवतायि । होयिहोवा२३होये२३४ । च४  
नो५हि५ता४ः । हा५हो४ । वा४हा५यि५ । ना॒२मा॒२न्या । ह्यो२  
अधियायि । होयिहोवा२३होये२३४ । षु४व५र्द्ध५ता४यि४ ।

हा॒प हो॒४ । वा॒४हा॒पयि॒५ । आ॒२सू॒२रि॒या । स्या॒२बृ॒हताः ।  
 हो॒यिहो॒वा॒२३ हो॒ये॒२३४ । बृ॒४ह॒५न्न॒५धी॒४ । हा॒५हो॒४ । वा॒४  
 हा॒५यि॒५ । र॒२थं॒२ वि॒ष्वा । चा॒२म॒रुहा॒त् । हो॒यिहो॒वा॒२३  
 हो॒ये॒२३४ । वि॒४च॒५क्ष॒५ णा॒४ः । हा॒५हो॒४ । वा॒५६हा॒५उ॒५ ।  
 वा॒५ । वा॒२जी॒जिगी॒२३ वा॒२२२२ ॥ ४ ॥

५. अ॒२भि॒२प्रि॒या । णी॒२प॒वता॒यि । चा॒२नो॒हिताः । हो॒वा॒२३हो॒यि ।  
 ना॒२मा॒२नि॒या । ह्यो॒२अ॒धिया॒यि । षू॒२व॒र्द्धता॒यि । हो॒वा॒२३हो॒यि ।  
 आ॒२सू॒२रि॒या । स्या॒२बृ॒हताः । ब्रे॒२ह॒न्नधा॒यि । हो॒वा॒२३हो॒२३ । र॒२-  
 थं॒२म्वि॒ष्वा\* । चा॒२म॒रुहा॒त् । वी॒२च॒क्षणाः । हो॒वा॒२३हो॒२३ ।  
 वा॒३२३४अ॒५हो॒५वा॒५ । वा॒२जी॒जिगी॒२वावि॒श्वार॒धना॒२ नी॒३२  
 ३४५ ॥ ५ ॥

६. अ॒५भ्यो॒४वा॒४ । प्रि॒२या॒णिप॒वता॒यि । च॒२नो॒२हा॒यिता॒४२ुः ।  
 ना॒॒मा॒नि॒यह्यो॒२अ॒धिया॒यि । षु॒२व॒२र्द्धा॒ता॒४२ुयि॒२ । आ॒॒सूर्य॒स्य  
 बृ॒हतो॒ । बृ॒२ह॒२न्ना॒धी॒२३ । रा॒था॒२३म्३वा॒४यि॒४ष्वा॒५ । च॒२म॒२  
 रू॒हा॒२३त्३ । वा॒यि॒चा॒२३क्षा॒४२५णा॒५६५६ः ॥ ६ ॥

ऋषिः—ऋषिगणः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—जगती ॥

स्वरः—निषादः ॥

५५५. अ॒३चो॒१द॒२सो नो ध॒न्वन्त्वि॒न्दवः॒३ प्र स्वा॒नासो॒३ बृ॒हद् दे॒वेषु॒३ ह॒रयः॒१२ ।  
 वि॒१चि॒द॒२श्ना॒ना इ॒षयो॒३ अ॒रा॒तयो॒३२ यो॒१ नः सन्तु॒३ स॒निषन्तु॒३ नो धि॒यः॒१२ ॥

१. अ॒२चो॒२दा॒सो॒२३ । नो॒२ध॒२नू॒वा॒२३ । तू॒२इ॒न्दवाः । प्र॒२स्वा॒२  
 ना॒सो॒२३ । बृ॒२ह॒२द्दा॒यि॒वे॒२३ । षू॒२ह॒रयाः । वि॒२चि॒२

\* 'न्विष्वा' इति मूलगानग्रन्थे पाठः । —सम्पादकः

दाशनाऽ२३ । ना२इ२षायाऽ२३ । आ२रा२तयाः । अ२र्यो२  
नास्साऽ२३ । तूरसर नायिषाऽ२३ । तूरनो॒धिया२३ऽउवाऽ२३  
४५ ॥ ७ ॥

२. आचो॒रद३सो॒रु । नो॒३ध४नु४वं४तू५ । इ॒४द४वा५ः । प्रास्वा॒र-  
ना॒३सो॒रु । बृ३ह४द्दे४वे४षु५ । ह४र४या५ः । वायिचि॒रद३  
श्ना॒रु । ना॒३इ४ष४यो॒४अ५ । रा॒४त४या५ः । आर्या॒रन३स्सा॒रु ।  
तु३स४नि४ष५ । तु४नो॒४ऽ५धि५या५उ५ । वा५ ॥ ८ ॥

३. हा॒रउ॒रहो॒रवा॒र३हा॒रयि॒र । अ॒रचो॒रद॒रसो॒रनो॒३धा । नु॒र  
वा॒र३न्तू४ऽ३ । ई॒रद॒रवा॒र३२३४५ः । हा॒रउ॒रहो॒रवा॒र३हा॒र  
यि॒र । प्र॒रस्वा॒रना॒रसो॒रब्रे॒र३हात् । दे॒रवे॒र३षू४ऽ३ । ह॒रर॒र  
या॒३२३४५ः । हा॒रउ॒रहो॒रवा॒र३हा॒रयि॒र । वि॒रचि॒रद॒रश्ना॒र  
नो॒३आयि । ष॒रयो॒र३आ४ऽ३ । रा॒रत॒रया॒३२३४५ः । हा॒रउ॒र  
हो॒रवा॒र३हा॒रयि॒र । अ॒र्यो॒रन॒रस्सं॒रतूर३सा । नि॒रषा॒र३  
न्तू४ऽ३ । नो॒रधि॒रया॒३ऽउ॒रवा॒र३४५ ॥ ९ ॥

४. अ५चो॒४हा॒४यि॒४ । दासो॒नो॒धनु॒वा । तु॒रई॒रदा॒वा॒४रुः । प्रस्वा॒ना-  
सो॒बृह॒द्दे॒वायि । षु॒रह॒ररा॒याऽरुः । वि॒३चो॒३२३४हा॒५यि॒५ ।  
अ३श्नो॒३२३४हा॒५यि॒५ । ना॒२इ॒रष॒रय॒रुः । अ३रो॒३२३४हा॒५  
यि॒५ । ता॒या॒रः । अ॒र्यो॒३२३४हा॒५यि॒५ । न३स्सो॒३२३४हा॒५ ।  
तूरसा॒रुनी॒३२३४षा॒५ । तू॒नो॒३ उ॒३वा॒र३ । धी॒३२३४  
या॒५ः ॥ १० ॥

५. अ५चौ॒५हो॒४वा॒५ । दासो॒नो॒धनु॒वा । तु॒रई॒रदा॒वा॒४रुः । प्रस्वा॒ना-  
सो॒बृह॒द्दे॒वायि । षु॒रह॒ररा॒याऽ२३ः । वायिची॒र३दा॒४श्रा॒५ । ना॒रु  
इ॒रषा॒३२३४या॒५ः । हो॒रुयि॒रु । अ३रा॒रुता॒३२३४या॒५ः । हो॒र३

यि३ । आर्यो२३ना४स्सा५ । तूरसा२नी३२३४षा५ । हो२ ।  
तु३नो२३धा४ऽपया५६५६ः ॥ ११ ॥

६. अ५चो४ । वा४हा५यि५ । दासो॒नो॒धनु॒वा । तु२इ२न्दावा४२ुः ।  
प्रास्वा॒ना॒सो॒बृह॒द्दे॒वायि । षु२ह२रायाऽ२३ः । वाऽ२३यि३ची२  
त२ । आऽ२३श्ना२३४ । ना३इ४ष३यो४अ४रा५ । ता२३या२ः ।  
आऽ२३र्यो२ । नाऽ२३स्सा२३४ । तु४स३नि४ष५ । तु३नो२३  
धा४ऽपया५६५६ः ॥ १२ ॥

ऋषिः—कविर्भार्गवः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—जगती ॥  
स्वरः—निषादः ॥

५५६. ए३ष प्र को३शे म३धुमाँ अ३चि३क्र३द३दि३न्द्रस्य व३ज्रो व३पु३षो व३पु३ष्टमः ।  
अ३भ्यु३तस्य सु३दु३घा घृ३त३श्चु३तो वा३श्रा अ३र्ष३न्ति प३यसा च धे३नवः ॥

१. ए२षप्रकोशे४२ु । म२ । धुमाः५२ु । अ३चा२ुयि२ुक्रा३२३४  
दा५त्प । इं२द्रास्य२वाज्रा४२ुः । व२ । पु३षोऽ२ु । व३पु२ष्टा३२  
३४मा५ः । अ२भाऽऋ२तास्या४२ु । सु२ । दु३घाऽ२ु । घृ३ता२ु  
श्चू३२३४ता५ः । वा॒२श्राअ२ऋ२षा॒न्ती४२ु । प२ । यसाऽ२३ ।  
च३धा२३यि३ना४ऽपवा५६५६ः ॥ १३ ॥

ऋषिः—ऋषिगणः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—जगती ॥  
स्वरः—निषादः ॥

५५७. प्रो३ अ३या३सीदि३न्दुरि३न्द्रस्य नि३ष्कृ३तं स३खा स३ख्यु३र्न प्र मि३नाति स३ङ्गि३रम् ।  
म३र्य३इव यु३वति३भिः स३मर्ष३ति सोमः क३ल३शे श३तया३मना प३था ॥

१. प्रो२या३२३४सी५त्प । इं३दुरि३न्द्राऽ२३ । स्या४ऽ३नि२ष्कृ३  
त५म्प । स३खा२ुस२ख्यु५ः । नप्रमिनाऽ२३ । ती४ऽ३स२ङ्गि३  
र५म्प । म३र्य्य२इ३व५ । यु३वति३भाऽ२३यि३ः । सा४ऽ३म२ऋ२

ष३ति५ । सो३म२ष्क३ला५ । शे३शतयाऽ२३ । म३ना२३पा४ऽ५  
था५६५६ ॥ १४ ॥

२. प्रो३या४सी४दिं३दु४रिं३द्र४य५नि५ः । कृ३ता२मृ२ । कृ२  
ता३२३४५म् । स३खा२३ऽ२३४ । स४ख्यु५र्त्त४प्र४ मि५ना५  
ति५स५म् । गि४रा५ः५गि४रा५म् । म३र्य्या२३ऽ२३४ः ।  
इ४व५यु५व५ति४भि५सा४म५ । ष४ता५यि५ष४ ता५यि५ ।  
सो३मा२३ऽ२३४ः । क४ल४शे५श५ त४या५ । म३ना२३  
पा४ऽ५था५६५६ ॥ १५ ॥

३. प्रो२अ२या५सायित् । ई२दु२रिं३द्रा । स्या४रुनिष्कृताम् । स२खा२  
स४ख्युः । न२प्रमिना । ता४रुयि२स३ङ्गिराम् । म२र्य्य२इवा । यु२व२  
तिभा३यिः । सा४रुम३रृषतायि । सो२म२ष्कला । शे२शतया ।  
मा४रुना पथार३ऽ । ऊवाऽ२३४५ ॥ १६ ॥

४. प्रो२अ२या५सायित् । इं२दु२रिं३द्रा । स्या२रुनिष्कृताऽ२३मृ३ ।  
स३खा२रुस३ख्युः । न३प्रा२रु मि३ना५ । ति३सं२गा३२३४-  
यि४रा५म् । म२र्य्य२इव । यु२व२तिभायिः । सा२म३रृष  
ताये२३ । सो३म२ष्क३ला५ । शे३शा२रुत३या५म३ना२३  
पा४ऽ५था५६५६ ॥ १७ ॥

५. आ४रुयि२ । इया । प्रो२अ२या५सायिर्दिन्दुरिन्द्राऽ२३ । स्या४ऽ३  
नि२ष्कृ३त५म् । स४खा२स४ख्यूर्न३प्रमिनाऽ२३ । ती४ऽ३स२ङ्गि५-  
र५म् । ५अम३र्य्यइवायैवतिभाऽ२३यि३ः । सा४ऽ३म३रृष३ति५ ।

१. मूलगानग्रन्थेऽत्र 'त४' इत्यस्य स्थाने 'न४' इत्यशुद्धं लिखितम् ।

२. मूलगानग्रन्थेऽत्र 'था' इत्यस्यस्थाने 'या' इत्यशुद्धं लिखितम् ।

३. अत्र 'तिभा' इत्यस्य स्थाने 'विना' इत्यशुद्धपाठो लिखितः ।

४. 'था' इत्यस्य स्थाने 'या' इति पाठो गानग्रन्थे, स च लिपिकरप्रमादजन्य एव ।

५. 'मर्य' इति पाठो मूलवेदे । —सम्पादकः



आ४२यिर । इया । सोमष्वत्प्रशे२ऽशतयाऽ२३ । म३नार३पा४ऽ५-  
था५६५६ ॥ १८ ॥

ऋषिः—रेणुर्वैश्वामित्रः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

५५८. ध३२र्ता दि३१वः प२वते कृ३२त्व्यो र३सो द३क्षो दे३वानामनु३माद्यो नृ३भिः ।

ह१२रिः सृ३जानो अ३त्यो न स३त्वभिर्वृ३था पा३जांसि कृ३णुषे न३दीष्वा ॥

१. ध२र्त्तादायिवा२३ । ओ४वा४ऽ५ए५ । प२व२ते२कृ२त्वी२३-  
योरासा२३ । ओ४वा४ऽ५ए५ । द२क्षोदायिवा२३ । ओ४वा४ऽ५  
ए५ । ना२म२नुरमा२दी२३योत्रेभा२३ । ओ४वा४ऽ५ए५ ।  
ह२रायिस्सार्जा२३ । ओ४वा४ऽ५ए५ । नो२अ२ति२यो२ नार३  
सात्वाभा२३ । ओ४वा४ऽ५ए५ । वृ२थापाजा२३ । ओ४वा४ऽ५  
ए५ । सि२कृ२णु२ षा२यि२न२दायिषूवा२३ । ओ४वा४ऽ५  
ए५ । हो४ऽ५यि५ । डा५ ॥ १९ ॥

२. ध५र्त्ता५अ५हो४हो४हा५यि५ । दि२वः । प२वतेका२ । अ३र्हो३  
हार३ । हार३ । त्वि२यो२सो । द२क्षोदेवा२ । अ३र्हो३हार३ । हार३ ।  
ना॒मनु॒मा । दि२यो॒नृभा॒यिः । ह२रायिःसा॒र्जा॒ २ । अ३र्हो३हार३ ।  
हार३ । नो॒अति॒यो । न२स॒त्वभा॒यिः । वृ॒थापा॒जा॒ २ । अ३र्हो३  
हार३ । हार३ । सि२कृ२णूषा॒ २ । अ३र्हो३हार३ । हार॒यि॒ २ ।  
न३दी३षु॒रवा॒ । अ३र्हो३हार३ । हार३४ । अ५हो५वा५ । ए२३ ।  
न२दी३षुवा२ऽऽ ॥ २० ॥

ऋषिः—वेनो भार्गवः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—जगती ॥

स्वरः—निषादः ॥

५५९. वृ१षा म३तीनां प२वते वि३चक्ष३णः सोमो अ३ह्नां प्र३तरीतोषसां दि३वः ।

प्रा३णा सि३न्धूनां क३लशां अ३चि३क्रददि३न्द्रस्य हा३द्या वि३शन्मनी३षिभिः ॥



१. वृषा॒रमातीऽ२३ । ना॒रम्प॒रवाताऽ२३यि३ । ए२३ । वि॒रच॒र  
क्ष॒रण॒रए२३ । सो॒रमो॒रआह्वाऽ२३म्३ । प्र॒रत॒ररायिताऽ२३ ।  
ए२३ । उ॒रष॒रसा॒रन्दि॒रवर॒ए२३ । प्रा॒रणा॒रसायिन्धूऽ२३ ।  
ना॒रङ्क॒रलाशाः॑ऽ२३ । ए२३ । अ॒रचि॒रक्र॒रद॒रदे॒र३ । इं॒रद्र॒र  
स्याहाऽ२३ । दि॒रया॒र वायिशा॒र३म्३ । ए२३ । म॒रनी॒रषि॒र  
भि॒ररे॒र३४ऽ३ । ओंऽ२३४५ यि५ । डा५ ॥ २१ ॥
२. वृषा॒रम॒रती॒रना॒म्पव । ता॒यिवा॒रऽयि॒चाऽ२३४ । क्ष५ । णा३२-  
३४५ः । सो॒मो॒रअह्वा॒रम॒रप्र॒तरी॒र । तो॒वा॒रऽसाऽ२३४म्४ ।  
दि५ । वा३२३४५ः । प्रा॒रणा॒सिंधू॒रना॒रङ्क॒रल । शाः॑आ॒रऽ  
चाऽ२३४यि४ । क्र५ । दा३२३४५त्५ । आ॒यिंद्र॒स्य॒रहा॒र्दिया॒वि ।  
शा॒न्मा॒रऽनाऽ२३४ यि४ । षि४भा५ऽ२ । उ । वा॒र३४५ ॥ २२ ॥
३. वृषा॒रुम॒ता॒रुयि॒र । ना॒म्पव॒तेवि॒रच॒क्षाऽ२३णा॒रः । सो॒मो॒रु  
अह्वा॒रुम्॒र । प्र॒तरि॒ । तो॒ष॒रसान्दाऽ२३यि३वा॒रः । प्रा॒णा॒रु  
सिंधू॒रु । ना॒ङ्कल॒रशाः॑अ॒रचि॒क्राऽ२३दा॒रत्॒र । इं॒द्रा॒रु  
स्यहा॒रु । दि॒यावि॒शन्म॒रनी॒षाऽ२३यि३भा॒र३४ऽ३यि५ः ।  
ओऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ २३ ॥

ऋषिः—वसुभारद्वाजः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—जगती ॥

स्वरः—निषादः ॥

५६०. <sup>१२</sup>त्रि॒रस्मै <sup>३२</sup>सप्त <sup>३१२</sup>धे॒नवो <sup>३</sup>दु॒दुहि॒रे <sup>३२३१२</sup>स॒त्यामा॒शिरं <sup>३१२</sup>पर॒मे <sup>२</sup>व्यो॒मनि ।

<sup>३२३</sup>च॒त्वार्य॒न्या <sup>१२२</sup>भु॒वनानि <sup>३२३</sup>नि॒र्णिजे <sup>३१२</sup>चा॒रूणि <sup>३२३१२२</sup>च॒क्रे य॒दृतै॒रव॒र्धत ॥

१. त्राऽ२३४यि४ः । अ॒रस्मै॒रस॒प्त॒रधे॒न॒रवो॒रदु॒रदौ॒र । हो॒रहा॒र  
यि४रा५यि५ । स॒रत्या॒रमा॒शिरं॒पर॒मायि । वि॒रयो॒रमानी॒रु ।

च२त्वा॒र्यन्या॒ भुवना । नि२नि२र्णा॒यिजाऽ२३यि३ । चा२रू२  
णा३२३४यि४चा५ । क्रे॒रयदृ॒तैः२ । आवा२३र्द्धा४ऽ५ता५६  
५६ ॥ २४ ॥

ऋषिः—वत्सप्रीः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

५६१. इन्द्राय सोम सुषुतः परि स्रवापामीवा भवतु रक्षसा सह ।

मा ते रसस्य मत्सत द्वाविनो द्रविणस्वन्त इह सन्तिवन्दवः ॥

१. इ॒न्द्रा । य॒रसो॒रम॒रसु॒रषु॒रता॒र३ष्पा४ऽ३रि॒रस्त्र३व५ । अ॒रपा ।  
मी॒रवा॒रभ॒रव॒रतु॒ररा॒र३क्षा४ऽ३सा॒रुस३ह५ । मा॒रता॒यि ।  
र॒रस॒रस्य॒रम॒रत्स॒रता॒र३द्वा४ऽ३या॒रुवि३न५ । द्र॒रवा॒यि । ण॒र  
स्व॒रत॒रइ॒रह॒रस॒रु । तु॒रवा॒र३यिं३दा४ऽ५वा५६५६ः ॥ २५ ॥

२. इ॒न्द्रा॒पय॒पसो॒पम॒पसु॒षुप॒तप॒ष्य४र्यो॑५ । हो॒यि॒स्त्रा॒वा॒प ।  
अपा॒मीवा॒भवतु॒रक्षसा॒रऽसा॒र३हा॒र । मा॒ ते रसस्य मत्सत  
द्वा॒रा॒वी॒र३नो॒रु । द्रा॒र३॒रवी॒प । णा॒र३॒रस्वा॒प । ता॒इ॒रह॒र  
सा॒र३ । हा॒ऽर३ । तु॒रवा॒र३यिं३दा४ऽ५वा५६५६ः ॥ २६ ॥

ऋषिः—अत्रिर्भौमः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—जगती ॥

स्वरः—निषादः ॥

५६२. असावि सोमो अरुषो वृषा हरी राजेव दस्मो अभि गा अचिक्रदत् ।

पुनानो वारमत्येध्यव्ययं श्येनो न योनिं घृतवन्तमासदत् ॥

१. अ॒रसा॒रवि॒सो । मो॒रअ॒रुषो॒ऽर३४ । वृ॒षा॒पह॒रा॒यि॒ः ।  
रा॒रजे॒रव॒दा । स्मो॒रअ॒भिगा॒ऽर३४ः । अ॒चि॒क्र॒दा॒त् ।  
पु॒रना॒रनो॒वा । रा॒र म॒ति॒या॒ऽर३४यि॒ः । षि॒अ॒प॒व्य॒या॒म् ।

श्ये२नो२नयो । निं२घृतवाऽ२३ । त४मा४ऽ५स५दा५त्५ ।  
हो४ऽ५यि५डा५ ॥ २७ ॥

२. आ२सा२वु३२३४सो५ । मो२रुअ२रू३२३४षा५ । वा२ऋ२-  
षा२हराये२३ः । रा२जे२रुवा३२३४दा५ । स्मो२अ२भी३२३४  
गा५ । आ२रचि२क्रदाऽ२३त्३ । पू२रना२रुनो३२३४वा५ । रा२मा२रु  
ती३२३४ये५ । षी२अ२व्ययाऽ२३म्३ । श्ये२नो२रु ना३२३४  
यो५ । निं२घा२रुत्ता३२३४वा५ । त३मा२३ । साऽ२रु दा३२३४  
अ५हो५वा५ । दे२३ । दि॒वीऽ२३४५ ॥ २८ ॥

३. अ४सा५वि५सो४मो५अ५रुषो४वृ४षा५ह४ । रा४यि४ः । रा४  
जे५व५द५स्मो४अ५भि४गा४अ५चि५क्र५ । दा४त्४ । पु५ना५  
नो४वा४र५म४त्ये५ष्य४व्य । या४म्४ । श्ये५नो४न४ यो४निं५  
घृ५त४ । वा४ । त३मा२३ । साऽ२रुदा३२३४अ५हो५ वा५ ।  
ए२३ । दि॒वीऽ२३४५ ॥ २९ ॥

ऋषिः — पवित्र आङ्गिरसः ॥ देवता — पवमानः सोमः ॥ छन्दः — जगती ॥  
स्वरः — निषादः ॥

५६३. प्र दे॒वम॒च्छा मधु॒मन्त इ॒न्दवो॑ऽसि॒ष्यदन्त॑ गा॒व आ न धे॒नवः॑ ।  
ब॒र्हिषदो॑ व॒चना॒वन्त ऊ॒धभिः॑ परि॒स्रुतमु॒स्त्रिया नि॒र्णिजं॑ धिरे ॥

१. प्रा४दे५ । व२म॒च्छा॒रमधु॒रम२ । त२आ४रु॒यिं२द२वाः । आ॒सि॒र  
ष्या३२३४दा५ । त२गा॒वआ॒२ । न२धा४रु॒यि॒रन२वाः । ब॒ऋ॒हि॒र  
षा३२३४दा५ । व२च॒रना॒वा॒रं । त२ऊ४रु॒ध॒रभा॒यिः । पा॒रि॒र  
स्त्रू३२३४ता५म्५ । उ॒रस्त्रि॒यानि॒र्णिजि॒न्धा॒यि॒वाये२३ । धा३यि३  
रा२३४अ५हो५वा५ । धा२३यि३राऽ२३४५ यि५ ॥ ३० ॥

ऋषिः—अग्निश्चाक्षुषः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

५६४. अञ्ज ते व्यञ्जते समञ्जते क्रतुं रिहन्ति मध्वाभ्यञ्जते ।

सिन्धोरुच्छ्वासे पतयन्तमुक्षणं हिरण्यपावाः पशुमप्सु गृभ्णते ॥

१. अंरजतायि । विरयंरजतायि । सरमंरजाताऽरुयिर । क्ररतुःर  
रिहा । तीरमधुवा । भिरयरज्जाताऽरुयिर । सिंरधोररुच्छ्वा ।  
सेरपतया । तरमुरक्षाणाऽरुमूर । हिरररण्यपा । वारष्य  
शुमाप्सूरगृभ्णतारऽउवाऽरऽ४५ ॥ ३१ ॥

२. अंरजाररहो । तेररहोयि । विरयंरजरतेररसाऽरमंरजर-  
तापयिप । क्ररतूररऽरहोयि । रिरहाररहो । तिरमरधुर वारर  
भीऽरअंरुजरतापयिप । सिंरधोररऽरहोयि । उरछ्वाऽर  
होऽर । सेरपरतरयाररन्ताऽरमुरक्षरणपम्प । हिररारर  
हो । णयरपाररहो । वारष्यरशुरमरु । प्सुरगारर भ्णा । ऽऽप  
ताप६५६ । यि६ ॥ ३२ ॥

३. हाऽवाऽञ्जाप । ताऽरऽरयिऽ । विरयं ऽजपतेपसरमंऽ जप  
तेप । एहिरयार । एहिरयारऽऽ । हाऽउऽक्राऽतूपम्प । राऽर  
रयिऽ । हंऽतिऽमरधुऽ वाऽभिरयंऽजपतेप । एहिरयार ।  
एहिरयार । एहिरयारऽऽ । हाऽउऽसाऽयिंऽधोपः । ऊऽरऽऽ  
तू । श्वाऽसेऽपऽतयऽन्तपमुपक्षरणपम्प । एहिरयार ।  
एहिरयारऽऽ । हाऽउऽहाऽयिऽराप । णयाऽरऽऽ । पाऽवाऽ  
ष्यऽशुऽमऽप्सुऽगृऽभ्णपतेप । एहिरयार । एहिरया रऽऽ ।  
हापउप । होऽपयिप । डाप ॥ ३३ ॥

ऋषिः — चक्षुर्मानवः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — उष्णिक् ॥ स्वरः — ऋषभः ॥

५६५. पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः ।

अतस्तनूर्न तदामो अश्नुते शृतास इद् वहन्तः सं तदाशत ॥

१. परवित्रंतेरविततंरब्रह्मणरस्परतेर३ । हुवेऽर३ । २ । होवार३  
हार३ । हारयिर । प्ररभुर्गात्रारणिरपरियेरषिरविरश्वताऽ  
र३ः । हुवेऽर३ । २ । होवार३हार३ । हारयिर । अतस्तरनूर  
न्नेतदारॅमोअश्नुरतेर३ । हुवेऽर३ । २ । होवार३हार३ । हार  
यिर । शृरतासरइद्वहरन्तरस्संतदारॅ । शरतर । हुवेऽर३ । २ ।  
होवार३हार३ । होर३४अ५ हो५वा५ । अरक्कोदेवानारॅम्पर  
ररमेवियोरॅमा३२३४५न् ॥ ३४ ॥

२. परवित्रंतेरविततंरब्रह्मणरस्परतेर३ । हुवायि । अ२होवा४२ ।  
प्ररभुर्गात्रारणिरपरियेरषिरविरश्वताऽर३ः । हुवायि । अ२  
होवा४२ । अतस्तरनूरर्नतदारॅमोअश्नुरतेर३ । हुवायि । अ२  
होवा४२ । शृरतार[ सर ]इद्वहंरतरस्संतदारॅशरतर । हुवायि ।  
औ२ । होऽ२ । वा३२३४ । अ५हो५वा५ । अरक्कस्यर  
देरवाष्यरररमेवियोरॅमा३२३४५न् ॥ ३५ ॥

[ इति ] षोडशप्रपाठकः ॥

ऋषिः — पर्वतनारदौ ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — उष्णिक् ॥ स्वरः — ऋषभः ॥

५६६. इन्द्रमच्छ सुता इमे वृषणं यन्तु हरयः । श्रुष्टे जातास इन्द्रवः स्वर्विदः ॥

१. इ५द्र५म५च्छा५ । सुरताइमारु । अ३हो३२३४वा५ । वृषणंर  
यर । तूर्हरयारु । अ३हो३२३४वा५ । श्रुष्टायिजारता । सरइं३

दरवाः । सुरवर्वाऽरयिदर३४ऽ३ । ओऽर३४५यि५ ।  
डा५ ॥ १ ॥

२. इ५द्र५म५च्छा५ । सुरताइमा२३यि३ । ताई२३मा२यि२ ।  
वृषणं२य२ । तूह॑रया४२ुः । हारा२३या२ः । श्रु२ष्टे२जा२र्ता३  
साइ॑न्दवा४२ुः । आयि॑दार३वा२३ः । सुवरा२३४ । अ५हो५  
वा५ । वि२दो२वी२३दाऽर३४५ः ॥ २ ॥

३. इ४द्र५म् । इ५द्रा४म् । अ२च्छा२३सूता२ऽइमे४२ु । आयिमे४२ु ।  
वृषणं२य२ । तूह॑रया४२ुः । राया४२ुः । श्रु२ष्टे२जा२र्ता३सा  
इ॑न्दवा४२ुः । दाऽर२वा३ः । सुवरा२३४ । अ५हो५हा५वा५ ।  
वि२दो२३विदाऽर३४५ः ॥ ३ ॥

४. इ३द्र४म३च्छ४सु४ता३इ४मे३वृ३ष४णं५यं५तु५हा५ ।  
हो२३४ऽ३ । र२य३आ२ । श्रू२ष्टा२उ२वा२ । जा॒ता२उ२वा२३४ ।  
स४इ३द४व५स्सु५वा५ । हो२ । वि२द३ओ२३४५यि५ । डा ॥ ४ ॥

५. इ२द्रा॒मा२३च्छ४सु५ । ता॒रुई३२३४मा५यि५ । वृ॒षा॒णं२या ।  
तूहा॒रु३२३४या५ः । श्रु॒ष्टा॒यिजा॒ता । सई॑ऽरु॒न्दा३२३४५ ।  
वा५६५६ः । सुर॒व॒र्विदा३२३४५ः ॥ ५ ॥

ऋषिः — पर्वतनारदौ ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — उष्णिक् ॥ स्वरः — ऋषभः ॥

५६७. प्र<sup>१ २</sup> धन्वा सोम<sup>३</sup> जागृवि॒रिन्द्रा॒येन्दो<sup>१ २ ३ १ २</sup> परि॒ स्रव॒ ।

द्युमन्तं<sup>३ २ ३ २ ३ १ २</sup> शुष्ममा भर स्वर्विदम्<sup>३ १ २</sup> ॥

१. प्र२ध॒रन्वा॒सौहो॒यि । अ॒र३हो३२३४वा५ । म॒रजा॒गृ॒रवि॒रः ।  
इ॒र॒द्रा॒रये॒न्दौहो॒यि । अ॒र३हो३२३४वा५ । परि॒स्र॒व॒र । द्यु॒रम॒र

- त्तःशौहोयि । अ२३हो३२३४वा५ । ष्म२मा॒भ२२२ । सुर२वर  
 वि॒दौहोयि । अ२३हो३२३४५वा५६५६ । ऊ३२३४पा५ ॥ ६ ॥
२. प्र२ध॒न्वा॒सौहो । वा२३हो । म२जा॒र॒गृवी४२ुः । इं२द्रा॒र  
 ये॒न्दौहो । वा२३होयि । प२रि॒र॒स्त्रावा४२ु । द्यु२मं॒र॒ताःशौहो ।  
 वा२३हो । ष्म२मा॒र॒भारा४२ु । सुर२वर॒वि॒दौहो । वा२३होऽ२ु ।  
 वा३२३४अ॒प॒हो५वा५ । ऊ३२३४पा५ ॥ ७ ॥
३. अ॒र॒हौहोयि । प्र२ध॒न्वा॒सो४२ु । अ॒र॒हौहो । म२जा॒र॒गृवी४२ुः ।  
 अ॒र॒हौहोयि । इं२द्रा॒र॒यायि॑दो४२ु । अ॒र॒हौहोयि । प२रि॒र॒  
 स्त्रावा४२ु । अ॒र॒हौहोयि । द्यु२मं॒र॒ताःशू४२ु । अ॒र॒हौहो ।  
 ष्म२मा॒र॒भारा४२ु । अ॒र॒हौहोयि । सुर२वरः । वाऽ२ुयि२ु ।  
 दा३२३४ । अ॒प॒हो५वा५ । ऊ३२३४पा५ ॥ ८ ॥
४. हुवा४२ुयि२ । २ । हुवाऽ२३होयि । प्र२ध॒न्वा॒सो४२ु । म२जा॒र॒-  
 गृवी४२ुः । इं२द्रा॒र॒यायि॑दो४२ु । प२रि॒र॒स्त्रावा४२ु । द्यु२मं॒र॒ताः  
 शू४२ु । ष्म२मा॒र॒भारा४२ु । सुर२वर॒व्या॒दि॒दा४२ुम् । हुवा४२ु  
 यि२ । २ । हुवाऽ२३होऽ२ु । वा३२३४अ॒प॒हो५वा५ । ऊ३२३४  
 पा५ ॥ ९ ॥
५. प्र२ध॒न्वाऽ२३सो॒म॒जा॒प॒गृ॒वि॒पः । इं॒द्राऽ२ुया३२३४यि॑ं४  
 दो५ । ओयि । पा२३रायि॒स्त्रा२३वा२ । द्युमाऽ२ुन्ता३२३४ः४  
 शू५ । ओष्म॑माऽ२ुभा३२३४५रा५६५६ । सुर२वर॒वि॒दाऽ२३४५  
 म्प ॥ १० ॥

ऋषिः—त्रित आप्त्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

५६८. सखाय आ नि षीदत पुनानाय प्र गायत ।

शिशुं न यज्ञैः परि भूषत श्रिये ॥



१. सरखा<sup>१</sup>इया<sup>२</sup>आ<sup>३</sup>४२ । निर<sup>४</sup>षी<sup>५</sup>दता । पुना<sup>६</sup>ना<sup>७</sup>ऽ२३या<sup>८</sup>२ । प्र२गा<sup>९</sup>यता । शिशु<sup>१०</sup>न्ना<sup>११</sup>ऽ२३या<sup>१२</sup>२ । जै<sup>१३</sup>र<sup>१४</sup>ष्प<sup>१५</sup>२रा<sup>१६</sup>यि<sup>१७</sup>भू<sup>१८</sup>४२ । ष२ता<sup>१९</sup>श्रा<sup>२०</sup>ऽ२३या<sup>२१</sup>२३४ऽ३यि<sup>२२</sup>३ । ओ<sup>२३</sup>ऽ२३४५यि<sup>२४</sup>५ । डा<sup>२५</sup> ॥ ११ ॥
२. सा<sup>२६</sup>४खा<sup>२७</sup>५या<sup>२८</sup>४आ<sup>२९</sup>५ । निर<sup>३०</sup>षी<sup>३१</sup>रु<sup>३२</sup>दा<sup>३३</sup>३२३४ता<sup>३४</sup>५ । पुना<sup>३५</sup>ऽरु<sup>३६</sup>ना<sup>३७</sup>३२३४या<sup>३८</sup>५ । प्रा<sup>३९</sup>ऽरु<sup>४०</sup>गा<sup>४१</sup>३२३४अ<sup>४२</sup>५हो<sup>४३</sup>५वा<sup>४४</sup>५ । या<sup>४५</sup>३२३४ता<sup>४६</sup>५ । शि२-शू<sup>४७</sup>न्न<sup>४८</sup>२या । जै<sup>४९</sup>रु<sup>५०</sup>ष्प<sup>५१</sup>३रि२भू<sup>५२</sup>ऽ२३ । षा<sup>५३</sup>ऽरु<sup>५४</sup>ता<sup>५५</sup>३२३४औ<sup>५६</sup>५हो<sup>५७</sup>५वा<sup>५८</sup>५ । श्रि२ये२ऽऽ ॥ १२ ॥
३. स४खा<sup>५९</sup>५य<sup>६०</sup>५आ<sup>६१</sup>४नि<sup>६२</sup>४ । षी<sup>६३</sup>५दा<sup>६४</sup>५दता<sup>६५</sup>५ । पु२ना<sup>६६</sup>२ना<sup>६७</sup>यप्रगा<sup>६८</sup>याता । शिशु<sup>६९</sup>न्नय<sup>७०</sup>जै<sup>७१</sup>ष्परा<sup>७२</sup>४रु<sup>७३</sup>यि२ । भू<sup>७४</sup>षा<sup>७५</sup>ऽ२३ता<sup>७६</sup>२३ । श्रा<sup>७७</sup>ऽ२३या<sup>७८</sup>२३४ऽ३यि<sup>७९</sup>३ । ओ<sup>८०</sup>ऽ२३४५यि<sup>८१</sup>५ । डा<sup>८२</sup> ॥ १३ ॥
४. ओं<sup>८३</sup>५हा<sup>८४</sup>५यि<sup>८५</sup>५ । स४खा<sup>८६</sup>५य<sup>८७</sup>५आ<sup>८८</sup>४नि<sup>८९</sup>४ । षी<sup>९०</sup>५दा<sup>९१</sup>५दता<sup>९२</sup>५ । पु२ना<sup>९३</sup>२नौ<sup>९४</sup>हो<sup>९५</sup>यि । पु२ना<sup>९६</sup>२नौ<sup>९७</sup>हो<sup>९८</sup>ये२३ । या<sup>९९</sup>४प्रा<sup>१००</sup>५या<sup>१०१</sup>४प्रा<sup>१०२</sup>५ । गा<sup>१०३</sup>२यतौ<sup>१०४</sup>हो<sup>१०५</sup>यि । गा<sup>१०६</sup>२यतौ<sup>१०७</sup>हो<sup>१०८</sup>ये२३ । शा<sup>१०९</sup>४यि<sup>११०</sup>४शू<sup>१११</sup>५२५शा<sup>११२</sup>४यि<sup>११३</sup>४शू<sup>११४</sup>५म् । न२य<sup>११५</sup>ज्ञौ<sup>११६</sup>हो<sup>११७</sup>यि । न२य<sup>११८</sup>ज्ञौ<sup>११९</sup>हो<sup>१२०</sup>ये२३ । पा<sup>१२१</sup>४री<sup>१२२</sup>५ । पा<sup>१२३</sup>३रा<sup>१२४</sup>२३४अ<sup>१२५</sup>५हो<sup>१२६</sup>५वा<sup>१२७</sup>५ । ए२३ । भू२ष२त२रु श्रि३ये२ऽऽ ॥ १४ ॥
५. स५खा<sup>१२८</sup>५ । य३आ<sup>१२९</sup>रुओं<sup>१३०</sup>३२३४वा<sup>१३१</sup>५नि२षायि । दाता<sup>१३२</sup>रुओं<sup>१३३</sup>३२३४वा<sup>१३४</sup>५ । पु२ना<sup>१३५</sup>२ना<sup>१३६</sup>यप्रगा<sup>१३७</sup>२य२त२ । शायि<sup>१३८</sup>शा<sup>१३९</sup>रुओं<sup>१४०</sup>३२३४वा<sup>१४१</sup>५ । नय<sup>१४२</sup>जै<sup>१४३</sup>ष्परि<sup>१४४</sup>भू२३ । षाता<sup>१४५</sup>रुओं<sup>१४६</sup>३२३४वा<sup>१४७</sup>५ । श्रि२ये२ऽऽ ॥ १५ ॥

ऋषिः — मनुराप्सवः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — उष्णिक् ॥ स्वरः — ऋषभः ॥

५६९. तं<sup>१</sup> वः<sup>२</sup> सखा<sup>३</sup>यो<sup>४</sup> मदा<sup>५</sup>य पुना<sup>६</sup>नमभि<sup>७</sup> गायत ।

शि<sup>१</sup>शुं<sup>२</sup> न हव्यैः<sup>३</sup> स्वदयन्त<sup>४</sup> गूर्ति<sup>५</sup>भिः<sup>६</sup> ॥

१. ता<sup>१</sup>३२३४म्ब<sup>२</sup>५ । सा<sup>३</sup>३२३४खा<sup>४</sup>५ । यो२मदा<sup>५</sup>ऽ२३या<sup>६</sup>२ । पूना<sup>७</sup>न२म२ । भि२गा<sup>८</sup>या<sup>९</sup>ऽ२३ता<sup>१०</sup>२ । शायि<sup>११</sup>शु२न्नह२ । व्यै३स्व३द२



याऽ२३ । तरगू३र्त्ति३भार३४ऽ३यि३ः । ओंऽ२३४५यि५ ।  
डा५ ॥ १६ ॥

२. ओं२यि२तं३व४स्स५खा५ । यो२म । दाया२ओ३२३४वा५ ।  
पुरना२नमभिर्गा३ । आ२ । ओं३२३४वा५य३ ता२ओं३२३४  
वा५ शिशु२न्नह२व्यैस्स्वर२द२या२३ । आ२ । ओं३२३४ वा५ ।  
त३गा२ओं३२३४वा५ । ती३२३४भि५ः ॥ १७ ॥

३. तं५व५स्स५खा५यो५म५दा५दया५ । पुरना२नमभिगा२य२  
तर । शायिशु२न्नहा२३ । व्यै४स्व५ । द३या२३ । ताऽ२३गू४ऽ३ ।  
ता२३४५ यि५भो५दहा५यि५ ॥ १८ ॥

ऋषिः—अग्निश्चाक्षुषः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

५७०. प्राणा शिशुर्महीनां हिन्वन्नृतस्य दीधितिम् ।  
विश्वा परि प्रिया भुवदध द्विता ॥

१. प्रा४णा५ । शा३२३४यि४शू५ः । म२हा३२३४यि४ना५म् ।  
हिन्वाऽ२ना३२३४र्त्ता५ । स्या२३दायिधी२३ती२म् ।  
वायिश्चा२परि । प्रि२या३भु२वाऽ२३त् । अ२ध३द्वि३ता२३४ऽ  
३ । ओऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ १९ ॥

२. प्रा४णा५प्रा४णा५ । शायिशू४२शायिशूऽ२ः । म२हा२३ऽ  
उवाये२३ । ना३२३४५म् । हि२न्वंनार्त्तस्य२दा२३ऽउवाये२३ ।  
धी३२३४ती५म् । विश्वा॒पारिप्रि२या२३ऽउवा२३ । भू३२३४  
वा५त् । अ२धौ४२ । हौ४२ । हुवाये२३ । द्वाऽ२यि२ ता३२३४  
अ॒प॒हो५वा५ । ऊ२३ऽ२३४पा ॥ २० ॥

३. प्रा॒रणा५शि५शू४ः । म२हाऽ२यि२ना॒२म् । अ॒रहो२३वा२ ।  
हि२न्वंन्नृतस्यदी॒धि२ति२म् । वायिश्चा२उ॒वा२ । पारा२उ॒२

वार । प्रिरया४रुभुवत् । अ३धारउ२वार३ । ए२३ । द्विर  
तारऽऽ ॥ २१ ॥

४. प्रा५णा५हो२३यि३ । इ४या४हा५यि५ । शायिशु२र्म२हायि ।  
नाऽ२३म्३ । आ२उ३हारउ३ । हो३ँवार । हिरन्वंनृतस्यदीधि-  
तायिम् । आ२उ३हारउ३ । हो३ँवार । विश्वापा । या२उ३  
हारउ३ । हो३ँवार । प्रिरयाऽ२३४ । भूऽरुवा३२३४अ५हो५  
वा५ । अध२ुद्वि३तारऽऽ ॥ २२ ॥

५. प्रा५णा५ । ह३हो२ुयि२ु । शा३२३४यि४शू५ः । ह३हो२३यि३ ।  
म२हीनाऽ२३म्३ । होवार३होये२३४ । हि५न्व५नू५ । ह३हो२ु  
यि२ु । आ३२३४त्ता५ । र३हो२३ । स्य२दीधिताऽ२३यि३म्३ ।  
होवार३ होये२३४ । वि५श्वा५ । ह३हो२ुयि२ु । पा३२३४री५ ।  
ह३हो२३यि३ । प्रिरया॒भुवाऽ२३त्३ । होवार३होये२३ ।  
आऽ२३वा४ऽ३ । द्वार३४५यि५तो५६हा५यि५ ॥ २३ ॥

ऋषिः—द्वित आप्त्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

५७१. <sup>१ २</sup>पवस्व <sup>३ १ २</sup>देववीतय <sup>३ २ ३</sup>इन्द्रो <sup>१ २</sup>धाराभिरोजसा ।

<sup>२ ३ २ ३</sup>आ कलशं <sup>३ १ २</sup>मधुमान्तसोम नः सदः ॥

१. पवस्वदाऽ२यि२ु । व३वीरुता३२३४या५यि५ । आयिंदोधा  
राऽ२ु । भि३रोरुजा३२३४सा५ । आ॒कालशाम् । माधू२ुमा३२  
३४न्तसो५ । मनए२मानाऽ२३ः । स४दा४ऽ५ए५ । हो४ऽ५यि५ ।  
डा५ ॥ २४ ॥

२. प५व५स्व५दा५ । व२वी॒तयायि । इन्द्रो॒धार३रा२३४ । भि४  
रो॒ज४सा५६ए५ । आकार३हार । लाशा४रुम्२ । माधू२३

हारयि२ । मान्तसोऽ२३ । म२नोऽ२३४वा५ । सा४ऽ५दो५६  
हा५यि५ ॥ २५ ॥

ऋषिः — पर्वतनारदौ ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — उष्णिक् ॥

स्वरः — ऋषभः ॥

५७२. सोमः<sup>१ २</sup> पुनान<sup>३ २ ३ २३</sup> ऊर्मिणाव्यं<sup>३ २ ३ १ २</sup> वारं<sup>१ २</sup> वि धावति ।

अग्रे<sup>१ २ ३ १ २२ ३ १ २</sup> वाचः पवमानः कनिक्रदत् ॥

१. सो५म<sup>१ २</sup> ष्पु५ना५ । न२ऊ२र्मिणा । अ२व्यं२वारा४२ुम् । वि२  
धा२वतायि । अ२ग्रे२वाचा४२ुः । प२व । माऽ२ुना३२३४  
अ५हो५वा५ । कनिक्र२द२दे२उपा३२३४५ ॥ २६ ॥

२. सो५म५ष्पु५ना५ । न२ऊ२र्मिणोवा२३ । ओऽ२ुवा३२३४ ।  
अ५हो५वा५ । अव्यंवारंविधा२वरति२ु । अ३ग्रे२३ । होवा२३ ।  
होऽ२ु । वा३२३४ । अ५४हो५वा५ । वा२चष्यवमा२न२ुः । क३  
ना२३ । होवा२३ । होऽ२ु । वा३२३४ । अ५हो५वा५ । क्रा३२३४  
दा५त् ॥ २७ ॥

३. सो४म५ष्पु५ना५न४ऊ४ । मिणा । अव्यम्वारंवि२धावाऽ२३  
ती२ । अग्रेवा॒चाः । प२वमा॒नाः । का२३नि४क्र५ । दा३२३४५  
त् ॥ २८ ॥

४. सो२म२ष्पु२ना२न२ऊ२र्मि२णा३२३४ऐ५ही५ । अ२व्यं२वा२  
रं२वि२धा२व२ता३२३४ऐ५ही५ । अ२ग्रे२वा२च२ष्य२व२  
मा२ना३२३४ । ऐ५ही५ । का४नी५ । क्र२द२दे३२३४ ।  
हि५या५६हा५ । हो४ऽ५यि५ । डा५ ॥ २९ ॥

५. सो३म४ष्पु५ना५ । न३ऊ२३ऽ२ुर्मी३२३४णा५ । अव्यम्वा२-  
र२म् । वि२धावति२ । अग्रा३ऽ२ुयि२ु । वा३२३४चा५ः ।

पवा३ऽ२ । मा३२३४ना५ः । क३ना२३यि३क्रा४ऽ५दा५६५६  
त्प६ ॥ ३० ॥

६. सो३म४ष्पु५ना५ । हो२ । न३ऊ४र्मि४णा५६ए५ । अव्यम्वा-  
रम्विधा२ऽवा२३ती२ । अ२ग्रे२वा३२३४५ । चा३२३४५ः ।  
प२वमाऽ२३ना२३ः । काऽ२ना३२३४अ५हो५वा५ । क्र२द२  
दे३२३४ ॥ ३१ ॥

ऋषिः — पर्वतनारदौ ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — उष्णिक् ॥ स्वरः — ऋषभः ॥

५७३. प्र पुनानाय वेधसे सोमाय वच उच्यते । भृतिं न भरा मतिभिर्जुजोषते ॥

१. प्र२पुनाऽ२३ना४य४वे५ध५सा५यि५ । होयि । २ । सो॒मा॒यवचा  
उ॒च्याता४रुयि२ । भृ॒रतिन्नभरा॒मतिभा४रुयि२ः । जु॒रजो॒षाऽ२३  
ता२३४ऽ३यि३ । ओं॒ऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ ३२ ॥
२. प्र४पु४ना॒४नौ४हो४ऽ५य५वे५ध४सा४यि४ । सो॒रमाअ२३  
हो२३४ । य४व४च५उ५च्य५ता४यि४ । भृ॒रताअ२३हो२३४ ।  
न४भ५रा॒५म५ति४भा४यि४ः । जु॒रजा२३ऽउवाऽ२३ । षा३२  
३४ते५ ॥ ३३ ॥

ऋषिः — अग्निश्चाक्षुषः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — उष्णिक् ॥ स्वरः — ऋषभः ॥

५७४. गोमन्न इन्दो अश्ववत् सुतः सुदक्ष धनिव ।

शुचिं च वर्णमधि गोषु धारय ॥

१. गो३ऽ४म५न्न५ः । हो२यि२ । इ३न्दो४अ४श्व५वा५६दे५ ।  
सूतस्सुदक्षधा२ऽनी२३वा२ । शु॒रचिं२च२वा३२३४५ । ण२  
म२धि२गो३२३४अ५हो५वा५ । षू३२३४धा५ । र२या । अ२३  
हो४वा५ । हो४ऽ५यि५ । डा५ ॥ ३४ ॥

ऋषिः—द्वित आप्त्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

५७५. अस्मभ्यं त्वा वसुविदमभि वाणीरनूषत ।

गोभिष्टे वर्णमभि वासयामरिः ॥

१. हा४वा४स्मा५ । भ्या३२३४न्त्वा५ । वा२सू२वी३२३४दा५म्५ ।  
अभाऽरुयिरुवा३२३४णी५ः । अ३नारुओं३२३४वा५ । षा३२  
३४ता५ । गोभि२ष्टे२व । ण२म३भि२वाऽ२३ । स२या२म२सि२  
हो३२३४५ यि५ । डा५ ॥ ३५ ॥

ऋषिः—गौरिवीतिः शाक्त्यः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—ककुबुष्णिक् ॥  
स्वरः—ऋषभः ॥

५७६. पवते हर्यतो हरिरति ह्वरांसि रंह्या । अभ्यर्ष स्तोतृभ्यो वीरवद्यशः ॥

१. प५व५ते५हा५ । र्य२तो२हरिः । अ२३हो२३५यि । अऽरुहो३२३४  
वा५ । आति२ह्वराँ२सि२रंहि२या२रु । अ३हो२३५यि । अऽरु  
हो३२३४वा५ । अ२भ्यऋष२स्तो२रतृभ्यो२वी । अ२३हो२३५  
यि । अऽरुहो३२३४वा५ । राऽरुवा३२३४अ५हो५वा५ ।  
य२शो२ यशा३२३४५ः ॥ ३६ ॥

२. प३वा२३ । प४व४ते५हा५ । र्य२तो२हरिः । अ२होयि । अ३हो२रु  
यि२रु । अ३हो२यि२ । आति२ह्वराँ२सि२रंहि२या२रु । अ२  
होयि । अ३हो२रुयि२रु । उ५हो२यि२ । अ२भ्यऋष२स्तो२रतृभ्यो२  
वी । अ२होयि । अ३हो२रुयि२रु । अ३हो२३ । राऽरुवा३२३४अ५  
हो५वा५ । य२शो२ यशा३२३४५ः ॥ ३७ ॥

३. प३व४ते५ह५र्य५त५ः । ह३री२३ः । आऽ२३४ । ति४ह्व४रा५ँ५  
सि५र४ । हि४या५ । अ२भ्यऋषाऽ२३४ । स्तो४तृ५ । भ्यो३ वा२३  
यि३ । राऽरुवा३२३४अ५हो५वा५ । या३२३४शा५ः ॥ ३८ ॥

ऋषिः — ऊर्ध्वसद्या आङ्गिरसः ॥ देवता — पवमानः सोमः ॥

छन्दः — ककुबुष्णिक् ॥ स्वरः — ऋषभः ॥

५७७. परि<sup>२ ३</sup> कोशं<sup>१ २</sup> मधुश्चुतं<sup>३ २ ३</sup> सोमः<sup>१ २</sup> पुनानो<sup>३ १ २</sup> अर्षति ।

अभि<sup>३ २ ३</sup> वाणी<sup>३ १ २</sup> ऋषीणां सप्ता नूषत ॥

१. पररिको२३श४म्म४धु५श्चु५ता५म् ५ । सोमष्पु२ना२नो  
अऋष२ति२ । होये२३ । अ२भि२वा३२३४५ । णी२ऋषी२  
णा२२२स२ । साना२ओ३२३४वा५ । षा३२३४ता५ ॥ ३९ ॥

[ इति ] अर्द्धप्रपाठकः ॥

ऋषिः — ऋजिश्वा भरद्वाजः ॥ देवता — पवमानः सोमः ॥ छन्दः — ककुबुष्णिक् ॥

स्वरः — ऋषभः ॥

५७८. पवस्व<sup>१ २ ३ १ २</sup> मधुमत्तमं<sup>३ १ २</sup> इन्द्राय<sup>३ १ २ ३ १ २</sup> सोम क्रतुवित्तमो मदः ।

महि<sup>१ २ ३ १ २ ३ १ २</sup> द्युक्षतमो मदः ॥

१. पा४वा५ । स्वमाधुमा । तामा२ओं३२३४वा५ । ई३२३४द्रा५ ।  
य२सो२म२क्र२तु२वित्तमो२मदा२३ः । ओंयि । माहा२  
ओं३२३४वा५ । द्यु२क्षतमो२मदा३२३४५ः ॥ १ ॥
२. पा२३४ । व४स्व५म४ । धु५म५त्ता५द५मा५ः । आयिन्द्रा४२ु । य२  
सोमा४२ु । क्र२तुवायित्ता२३मो४ऽ३ । मा२३दा२ः । महिद्युक्षा-  
ता२३मो४ऽ३ । मा२३४५दो५द५हा५यि५ ॥ २ ॥
३. प४व५स्व५म४धु५मा५ । इ४हा४ । तमः । इंद्रायसोमक्रतुवित्त२  
मोमाऽ२३दा२ः । इहा२ । म२हायिद्यूऽ२३क्षा२ । इहा२ ।  
त२मोमाऽ२३दा२३४ऽ३ । ओऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ ३ ॥
४. प४व५स्व५मा४ । ए४ऽ५ । धु४मा४ । तमाः । इं२द्रा२य२सो२३ ।  
हा । अ२३हो२ । माक्रातूवीऽ२३दा२३ । हा । अ२३हो२३४ ।

त३मो२३४म३दा२ः । महाये२३ । द्यूऽरुक्षा३२३४अ५हो५  
वा५ । त२मो२मदा३२३४५ः ॥ ४ ॥

५. प२वस्वार३म४धु५ । म२त्ता३२३४मा५ः । इ२द्राय२सोमा४रु ।  
क्र२तुवायित्ता२३मो४ऽ३ । मा२३ऽ२३४दा५ः । म२हायि ।  
द्युक्षाता२३मो४ऽ३ । मा२३४५दो५६हा५यि५ ॥ ५ ॥

ऋषिः—कृतयशा आङ्गिरसः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—ककुबुष्णिक् ॥  
स्वरः—ऋषभः ॥

५७९. अभि<sup>३ २ ३ २ ३ २ ३</sup> द्युम्नं<sup>३ १ २</sup> बृहद्यश<sup>३ १ २</sup> इषस्पते<sup>३ २</sup> दिदीहि<sup>३ २</sup> देव<sup>३ २</sup> देवयुम् ।  
वि<sup>१</sup> कोशं<sup>२ २</sup> मध्यमं<sup>३ १ २</sup> युव ॥

१. अ२भायि । द्यु२म्रा२३म्३बृ४ऽ३ह२द्य३श५ः । इ२षाः । प२ते२  
दि२दी२रहि२दे२३वा४ऽ३दे२व३यु५म् । वि२को । श२म्म२  
ध्य३मां२३यू४५वा५६५६ ॥ ६ ॥

२. अ५ । भ्ये४द्यू४म्रा५म् । बृ२हाद्या२ऽशा४रुः । इषास्पतायि ।  
दीदी२ुहा३२३४यि४दे५ । व३दा२ुयि२ुवा३२३४यू५म् ।  
वि२कौ२वा२ुओ३२३४वा५ । शम्मध्य२मा२३ऽउवाऽ२३ ।  
यू३२३४वा५ ॥ ७ ॥

३. अ५भि४द्यु५म्रं४बृ५ह४त् । इ४हा४ । यशः । इषस्पतेदिदी-  
हिदे२व२दे२वाऽ२३यूरम् । वि२कौ२हो२वा२३हारयि२ । शम्मा२  
ध्य२मंयुव२ । इडाऽ२३भा२३४ऽ३ । ओंऽ२३४५यि५ । डा५ ॥ ८ ॥

४. अ५भि५द्यु५म्रं५बृ५ह५द्य५शा५ः । इ२ष२स्पतायि । दि२दी२  
हिदायि । वा२दे२वयूम् । वि२कोशम्मध्यमाऽ२३३होयि । यूऽ२३४  
वा४ । ए५ । हि५या५६हा५ । हो४ऽ५यि५ । डा५ ॥ ९ ॥

ऋषिः — ऋणञ्चयः ॥ देवता — पवमानः सोमः ॥ छन्दः — यवमध्या गायत्री ॥

स्वरः — षड्जः ॥

५८०. आ सोता परि षिञ्चताश्वं न स्तोममसुरं रजस्तुरम् । वनप्रक्षमुदप्रुतम् ॥

१. आ॒प॒सो॒प॒ता॒प॒पा॒प । रा॒ऽरु॒यि॒रु॒षा॒३२३४अ॒प॒हो॒प॒वा॒प । चा॒३२  
३४ता॒प । अ॒र॒श्च॒र॒न्न॒स्तो॒मम॒र॒सुरा॒२२२र॒ज॒स्तुर॒म् । ओ॒ये॒२३ ।  
व॒३ना॒२३ । ओ॒ये॒२३ । प्र॒३क्षा॒२३४ । अ॒प॒हो॒प॒वा॒प । उ॒२द॒२  
प्रु॒ता॒३२३४प॒म् ॥ १० ॥

२. आ॒प॒सो॒प॒ता॒प॒पा॒प । रि॒२षि॒२ । च॒ता॒४२ु । ऊ॒४२ु । हा॒४२ुयि॒२ ।  
ऊ॒४२ु । अ॒श्च॒र॒न्न॒स्तो॒मम॒२ । सु॒रा॒४२ुम॒२ । ऊ॒४२ु । हा॒४२ुयि॒२ ।  
ऊ॒४२ु । र॒२ज॒२ । स्तु॒रा॒४२ुम॒२ । ऊ॒४२ु । हा॒४२ुयि॒२ । ऊ॒४२ु ।  
व॒२न॒२ । प्र॒क्षा॒४२ुम॒२ । ऊ॒४२ु । हा॒४२ुयि॒२ । ऊ॒ऽ२ु । उ॒३द॒२ ।  
प्रू॒ऽरु॒ता॒३२३४ अ॒प॒हो॒प॒वा॒प । ऊ॒२३ऽ२३४पा॒प ॥ ११ ॥

३. आ॒प॒सो॒प॒ता॒प॒पा॒प । रि॒ । षा॒यि॒ । च॒ता । १अ॒श्वी॒न्न॒स्तो । मा॒म॒२  
प्तु॒३२३४रा॒प॒म् । र॒३जा॒रु॒स्तू॒३२३४रा॒प॒म् । व॒प॒नो॒४हा॒४  
यि॒४ । प्रा॒क्षामू॒२३दा॒२ । हु॒म्मा॒ये॒२३ । प्रू॒३२३४ता॒प॒म् ॥ १२ ॥

४. आ॒प॒सो॒प॒ता॒प॒पा॒प॒री॒प॒६षि॒प॒च॒प॒ता॒प । आ॒श्वा॒रु॒ओ॒३२३४वा॒प ।  
न॒स्तो॒मम॒२सुरा॒२२२र॒ज॒स्तुरा॒ऽ२३म् ३ । हो॒यि॒ । वा॒ना॒रु॒  
ओं॒३२३४वा॒प । प्र॒२क्ष॒मुद॒२प्रु॒ता॒३२३४प॒म् ॥ १३ ॥

५. आ॒३सो॒२३४अ॒३हो॒४वा॒प । ता॒प॒रा॒यि॒षि॒ञ्चा॒ता॒ऽ४२ु । आ॒श्च॒न्न॒२  
स्तो॒२ । मा॒मँसू॒रा॒ऽ२ुम॒२ु । र॒३जा॒रु॒स्तू॒३२३४रा॒प॒म् । व॒प॒नो॒४हा॒४ ।  
यि॒४ । प्रा॒क्षमु॒२दा॒२३ऽउ॒वा॒ऽ२३ । प्रू॒३२३४ता॒प॒म् ॥ १४ ॥



६. आ३सो४ता५पा५ । हो२ । रि३षिं४च४ता५६ए५ । आश्वन्न२  
स्तो२ । मर्म॑मूरा४२मु२ । राजस्तु२र२मु२ । वार्न॑प्राक्षाऽ२३मु३ ।  
ऊऽ२३दा४ऽ३ । प्रू२३४५तो५६हा५यि५ ॥ १५ ॥

ऋषिः — शक्तिर्वासिष्ठः ॥ देवता — पवमानः सोमः ॥ छन्दः — ककुबुष्णिक् ॥

स्वरः — ऋषभः ॥

५८१. ए३तमु३ त्यं॑ म॒दच्यु॑तं सह॒स्त्रधा॑रं वृष॒भं दि॒वोदु॑हम् ।

वि॒श्वा व॒सूनि बि॒भ्रत॑म् ॥ ४ ॥

१. ए४ता५म्५ । ऊ॒त्याम् । म॑दाऽ२च्यू३२३४ता५म्५ । स२  
हा॒स्त्रधा॑र । रा॒म्वृष॑भा२३मु३ । दि॒वोऽ२दू३२३४हा५म्५ ।  
वि॒श्वाऽ२हु॑र॒ऽयि । हो॒यि । वाऽ२३सू२३ । नाऽ२यि॒रुबी॑३२३४  
अ॒प॒हो॒प॒वा । भ्रा३२३४ता५म्५ ॥ १६ ॥

२. ए४ता५मू४त्यं५म्५ । म॒रदा॑२३ उ॒वा॒२३ । च्यू३२३४ता५म् ।  
स॒रह॑स्त्रधा॒र२२म्वृ॑ष॒भन्दि॒वो॒रदु॑हा३२३४म३ । वा॒यि॒ऽश्व॑पा  
वा॒सू॒प । नि॒रबा॑२३ उ॒वाये॑२३ । भ्रा३२३४ता५म्५ ॥ १७ ॥

३. ए५त४मु५त्य४म्४ । ए४ऽ५ । म४दा४ । च्युताम् । सह॒स्त्रधा॑रं  
वृष॒भन्दि॒रवो॑दू२३हा॒रमु॑२ । वा॒यिश्वा॑ऽ२वा॒सूऽ२३ । नि॒रबो॑ऽ२  
३४वा५ । भ्रा४ऽ५तो५६हा५यि५ ॥ १८ ॥

४. ए५त४मु५त्य४म्४ । ओं४हा४यि४ । म५द५च्यु४त५म्५ ।  
ओ४हा४यि४ । सा॒रह॑र॒स्त्रा३२३४धा५ । र॒म्व्वा॒रु॒ऋ॒रुषा॑३२३४  
भा५म्५ । दि॒रवो॑रदु॒रह॑र॒मो३२३४हा५यि५ । वि॒श्वाऽ२हु॑र॒ऽयि ।  
वाऽ२३सू२३ । नाऽ२यि॒रबा॑३२३४अ॒प॒हो॒प॒वा॒प । भ्रा३२३४  
ता५म्५ ॥ १९ ॥

५. ए॒प॒ता॒प॒मु॒३त्य॒मु॒३म॒३दा॒३च्यु॒प॒ता॒प॒म् । स॒ह॒स्र॒धा॒२ । रा॒म्वृ॒षा-  
भा॒३मु॒३ । दि॒२वो॒३ । दु॒ह॒मो॒यि । वि॒श्वा॒व॒सू॒नि॒बा॒ऽ२३हो॒यि ।  
भ्रा॒त॒२मा॒३३उ॒वा॒ऽ२३ । ऊ॒२३३३३३३पा॒ ॥ २० ॥
६. ए॒३ता॒३३३म् । उ॒३त्य॒३म्प॒३दा॒३ । च्यु॒३ता॒३म् । ५ । स॒२ह॒स्र  
धा॒३म्बृ॒२ । ष॒२भ॒म् । दि॒वो॒ऽ२३३३३३ । दू॒ऽ२३३३हा॒३म्प॒३ ।  
वि॒श्वा॒व॒सू॒नि॒बी॒३ओ॒ये॒३ । भ्रा॒ऽ२३३३ता॒३म् । ए॒३हि॒३या॒३३  
हा॒३ । हो॒३३३यि॒३ । डा॒३ ॥ २१ ॥

ऋषिः—उरुराङ्गिरसः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—काकुभः प्रगाथः  
( ककुबुष्णिक् ) ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

५८२. स<sup>१</sup> सु<sup>२</sup>न्वे<sup>३</sup> यो<sup>१</sup> वसूनां<sup>२२</sup> यो<sup>३</sup> रायामानेता<sup>२</sup> य<sup>३</sup> इडानाम्<sup>१</sup> ।  
सोमो<sup>२</sup> यः<sup>३</sup> सुक्षितीनाम्<sup>२</sup> ॥

१. सा॒३सू॒३ । न्वे॒यो॒व॒सू॒ऽ२३ना॒२म् । यो॒रा॒३यामा॒३३ । ने॒२ता॒३  
य॒३इ॒डा॒ऽ२३ना॒२म् । सो॒ऽ२३मा॒३ । यस्सु॒क्षि॒२ ता॒ऽ२३३३  
यि॒३नो॒३३हा॒३यि॒३ ॥ २२ ॥
२. स॒३सू॒३हा॒३३ । न्वे॒यो॒व॒सू॒ना॒ऽ२३३हा॒३ । यो॒रा॒३यामा॒३३ ।  
ने॒२ता॒३य॒३ । इ॒डा॒ना॒ऽ२३३हा॒३ । सो॒मो॒यस्सू॒३हा॒३३ ।  
क्षि॒३ती॒३नाम् । ओ॒ऽ२३हो॒३वा॒३ । हो॒३३३यि॒३ । डा॒३ ॥ २३ ॥
३. स॒३ः । <sup>१</sup>स्वे॒३सा[ ३सू ]३ । न्वे॒यो॒व॒सा॒३३उ॒वा॒ऽ२३ ।  
ना॒३३३३३म् । यो॒रा॒३यामा॒३ने॒२ता॒३य॒३इ॒डा॒३ना॒३३३ ।  
सो॒३मो॒३व...<sup>२</sup>ओं॒३३३३ वा॒३ । यस्सु॒क्षि॒२ता॒३३उ॒वा॒ये॒३ ।  
ना॒३३३३३म् ॥ २४ ॥

१. अत्र 'खे३' इत्यपि पठितुं शक्यतेऽस्पष्टत्वात् ।

२. अत्र नष्टपत्रत्वात् न पठितुं शक्यते का संख्या किमक्षरं वेति । — सम्पादकः

४. सरसुन्वेऽर३यो४व४सूपना५मू५यो२रायाऽरमाऽर३ने२ । ता२  
य२इडाऽर३४५ना५६५६मू६ । सोमो२यस्सुक्षि२ती२नाम् ।  
सोमाऽर३४५ ॥ २५ ॥

५. स४सु५न्वे५या५ः । ए४वा४सूप । नां२योरा२ऽयाऽर३मा२ ।  
ने२ता२य२इडाऽर३ना२३४मू४ । सो३मा२३ः । यस्सुक्षि२ ।  
ताऽर३४५ यि५ । ना३२३४५मू५ ॥ २६ ॥

ऋषिः — उरुराङ्गिरसः ॥ देवता — पवमानः सोमः ॥ छन्दः — काकुभः प्रगाथः  
( सतोबृहती ) ॥ स्वरः — मध्यमः ॥

५८३. त्वं<sup>२</sup> ह्या<sup>१ २</sup> ३<sup>१ २</sup> दैव्यं<sup>३ १ २</sup> पवमानं<sup>३ १ २</sup> जनिमानि<sup>३</sup> द्युमत्तमः<sup>१ २ ३ १ २</sup> । अमृतत्वाय<sup>३</sup> घोषयन्<sup>१ २ ३ १ २</sup> ॥

१. त्व५५हि५या५ । गा२दा२यि२वि२य२प२व२मा२न२ज२नि२मा२  
नी२३द्यूमा४रु । तामा४रुः । आमा४रुर्त्तात्वाऽर३ । य२घोऽर३४  
वा५ । षा४ऽ५यो५६हा५यि५ ॥ २७ ॥

२. त्व५५हि५या५ । ग२दायि२वि२य२ । पवमा२न२ । होवा२३हा२  
यि२ । ज२निमाऽर३नी२३४ । द्यु४म५ । ता२३मा२ः । अमाऽर३ ।  
ताऽरुत्वा३२३४अ५हो५वा५ । य२घो२३ षयाऽर३४५न् ॥ २८ ॥

३. त्वं४ह्या५ङ्ग५दा४ । वि२य२ । पवमा२नजनिमा२निद्यु२मत्ता२३मा२ः ।  
अ२मा२र्त्ताऽर३त्वा२३ । य२घोऽर३४वा५ । षा४ऽ५यो५६हा५  
यि५ ॥ २९ ॥

४. त्व५५हो२३अ४ङ्ग५दै४वि४या५ । प२वमा४रुना । ज२नि  
मा४रुनाये२३४ । द्यु४म५ । ता२३मा२ः । अमा२र्त्ता२३त्वा२३ ।  
य२घोऽर३४वा५ । षा४ऽ५यो५६हा५यि५ ॥ ३० ॥

ऋषिः — भरद्वाजः ॥ देवता — इन्द्रः ॥ छन्दः — बृहती ॥ स्वरः — मध्यमः ॥

५८४. एष<sup>३ १</sup> स्य<sup>२२</sup> धारया<sup>३ २</sup> सुतो<sup>३ १ २</sup> ऽव्या<sup>३ १ २</sup> वारेभिः<sup>३ १ २</sup> पवते मदिन्तमः ।  
क्रीडन्नूर्मिरपामिव ॥

१. ए४षा५ः । स्याधा॒र२या२३ऽ३वा५२३ । सू३२३४ता५ः ।  
अव्या॒रँवा॒रेभि२ष्य२व२ते२म२दिन्तम२ः । क्री२डानू२ऽ  
म्मा५२ुः । अ३पा२३म्३ । हुं५२३ । वा४५३ । आ॒यिवा५२३  
४५ ॥ ३१ ॥
२. ए४षा४हा५उ५ । स्याधा॒र२या२३ऽउवा५२३ । सू३२३४ता५ः ।  
अव्या॒रँवा॒रेभि२ष्य२व२ते२म२दितमा३२३ः । क्री४५४ [ डा ]  
न्हा५उ५ ऊ॒र्मिर२पा२३ऽउवा५२३ । ई३२३४वा५ ॥ [ ३२ ] ॥
३. एषस्यधा । राया२ऽसूताऽऊः । अ३व्या॒३वा॒ररायि । भायि  
ष्यवते२ु । म३दि३त२माः । क्री२डन्नू५२३म्मी२३ः । आ५२३  
पा४५३म्३ । आ२३४५यि५वो५६हा५यि५ । ३३ । [ ३४ ] ॥
४. ए२षस्या२३धा॒४र४या॒५सु५ता५ः । अव्या४रुयि२ । वा॒रेभिष्य-  
वते॒मादि॑न्तामा४रुः । क्रीडा४रुन्२हो२ऽयि । ऊ५२३म्मी२ुः ।  
अ३पा॒३मि२वा । अ२३हो४वा५ । हो४५५यि५ ।  
डा५ । ३४ । [ ३५ ] ॥
५. ए४ष४स्य४धा॒४ऽ५र५या॒५सु४ता४ः । अ२व्या॒वा॒ररायि । भि२  
ष्य३व२ता५२३यि३ । म२दि॑न्त३मा२ः । क्रीडन्नूर्मिरपोवा२३  
ओं५२३४वा५ । आ४५५यि५वो५६हा५यि५ । ३५ । [ ३६ ] ॥

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

५८५. य उस्त्रिया अपि या अन्तरश्मनि निर्गा अकृन्तदोजसा ।

अभि व्रजं तत्तिषे गव्यमश्व्यं वर्माव धृष्णावा रुज ॥

१. यउस्त्रियाऽरँअपियाअंतरश्मनी३२३ । नि४र्गा४हा५उ५ ।  
आकृन्त२दा२३ऽउवाऽ२३ । जा३२३४सा५ । अ२भि व्रजन्तत्ति२  
षे२गव्यमश्विया३२३म्३ । व४र्म्मी४ हा५उ५ । वाधृष्णा२  
वा२३ऽउवाऽ२३ । रू३२३४जा५ ॥ ३३ ॥ [ ३७ ]\* ॥

सामसंख्या ११९७

सप्तदशः प्रपाठकः समाप्तः ॥

[ ॥ इति पवमानकाण्डम् ॥ ]

शुभमस्तु । समाप्तमिति ॥

संवत् १५३१ समये पौष बदि ५ ।

१६६८ वर्षे भाद्रपदवदि षष्ठी भौमे लिखितं यत्पुस्तकगान.... । सत्र १७

संग्रामकायस्थेन रूप्यमुद्रया १ अंके एकमा..... केशवहरे [ ण ]

विक्रीता ॥ एतदर्थे साक्षी भटभीम जोशीराम साक्षी भलापुरा [ भ ]

जबाप संग्राम...चतुर्थे ॥



\* मन्त्रोऽयमस्थाने लिखितो हस्तलेखे । एकत्रिंशत्—द्वात्रिंशत्संख्यावन्तौ मन्त्रौ मेलयित्वा लिखितौ स्तः । अतोऽग्रे पुनः पूर्वस्यैव “एषस्य धारया” इति मन्त्रस्य गानं पठितम् । —सम्पादकः

## परिशिष्ट - १

### मन्त्रों में पाठाधिक्य

इस सामगान में अनेक ऐसे स्थल हैं जिनमें कुछ अंश मूलमन्त्रों में नहीं हैं, वे बाहर से जोड़े गए हैं। जैसे—

मूलमन्त्र	सामगानसंख्या	अधिकपाठ
४० अग्ने विव०	३५	विदा वसु
९० जातः परेण०	३१	योनिमिन्द्रश्च गच्छथः
९२ इत एत०	२	आरोहन्
११० मा नो हृणी०	३४	य होता स्वध्वरः (गानरहित पाठ)
१२० त्वमिन्द्र०	१४	वावृधे
१२२ यदिन्द्राह०	१८	अग्निराहुतिः
१२२ यदिन्द्राह०	१९	अग्ने शुक्र आहुतः
१२७ य आनयत्०	२९	इन्द्रो अग्ने
१३० इन्द्रं वयं०	३	इहि वाला
१३२ वयमिन्द्र त्वा०	७	अस्मभ्यं गातु वित्तमः
१४१ अद्या नो०	२४	इह श्रुधि, दक्षाय
१४३ उपद्वरे गिरी०	३०	गोष्पदे पृ२
१५१ इष्टा होत्रा०	१२	उदधिर्निधिः
१५४ सोमः पूषा०	१५	गावो अश्वाः
१५५ पान्तमा वो०	१८	ओकः
१५६ प्र व इन्द्राय०	२३	ददा
१६४ आ त्वेता०	१२	घृतश्चुतः
१७२ ये ते पन्था०	२९	अप्सु दक्षाः
१७५ ईखयन्ती०	३२	वावृधे
१९० क इमं नाहुषी०	१५	आ गहि ये हिता इमे
१९५ गर्वणः पाहि०	२१	हरी श्रीः
२०६ सुनीथो घा स०	३३	अति द्विषः
२३५ अभि प्र वः०	३१	सुभूतये
२३५ अभि प्र वः०	३२	वसु
२३६ तं वो दस्म०	३५	भगाय
२४१ न हि वश्चरमं०	१७	जनित्रम्

## परिशिष्ट - २

## सामगान के भेदों के नाम

( मूल गानग्रन्थ में मन्त्र संख्या ६९ से ३७१ तक के गान भेदों पर ही नाम मिलते हैं उन्हीं की सूची यहाँ दी जा रही है )

साम मन्त्र संख्या	गान का नाम नाम	गान के भेद	साम मन्त्र संख्या	गान का नाम नाम	गान के भेद
६९	वामदेव्यम्	१	९६	दैर्घतमानि	३
७०	वैश्वज्योतिष	२	९९	प्रजापतेः श्रुधीयम्	२
७१	याम	२	१००	प्रजतेः सदो हविर्धानानि	३
७२	इन्द्रस्य वैराजम्	२	१०२	अर्कजभम्	१
७३	श्यैतम्	१	१०५	अगस्त्यस्य राक्षोघ्नम्	१
७४	शुक्रम्	१	१०७	इन्द्रस्य प्र मां हि ष्ठीयानि	४
७६	कौत्सम्	१	१०८	भरद्वाजस्य	१
७७	काश्यपम्	२	१०९	सौभराणि	३
७८	घृताचैरांगिरस्य	१	११०	सौभरस्य	२
७९	भरद्वाजस्य प्रासहम्	१	१११	दैवानीकम्	१
८०	राक्षोघ्नम्	१	११२	गौतामम्	१
८२	आग्नेयम्	१	११३	जमदग्नेः सांवर्गम्	१
८३	वामम्	१	११५	रौद्रम्	२
८४	आग्नेयं बृहत्	१	११५	मार्गीयवम्	२
८५	कौमुदस्य साम	१	११७	मैटतम्	२
८६	यद्वाहिष्ठीयम्	२	११८	श्रौतकक्षम्	२
८७	विशोविशीयम्	१	११९	तन्वस्य पार्थस्य	२
८८	प्रजापतेश्च कनिनीकम्	२	११९	वासिष्ठम्	१
८९	श्रौतवर्णम्	१	११९	इडानां संक्षारः	१
९१	बार्हस्पत्यम्	१	१२०	सार्यायानि	३
९२	यामम्	१	१२१	इन्द्राण्याः	१
९४	त्वाष्ट्री	१	१२२	गौसूक्तम्	१
९५	अगस्त्यम्	१	१२२	आश्वसूक्तम्	१
९६	मानवम्	१	१२३	गौवितम्	१
९७	तौदम्	२	१२४	गराणि	३

साम मन्त्र संख्या	गान का नाम नाम	गान के भेद
१२५	सौपर्णानि	३
१२५	विलम्बसौपर्णम्	१
१२६	साकालम्	१
१२७	भारद्वसवम्	२
१२८	तान्वम्	२
१२९	रोहितकुलीम्	२
१३२	मारुतम्	२
१३२	दिवोदासम्	३
१३३	एध्मवाहानि	३
१३६	पौषम्	१
१३७	सिन्धु	१
१३८	हाविष्मतम्	२
१३८	हाविष्कृतम्	२
१३९	काक्षीवतम्	१
१४०	औषसम्	१
१४१	भारद्वाजस्य मोक्षम्	२
१४२	भारद्वाजानि	३
१४३	शाक्त्यम्	२
१४४	प्रस्तोकः	२
१४५	औपगवम्	२
१४६	त्वाष्ट्री	१
१४७	त्वाष्टुरातिथ्यम्	२
१४९	श्यावाश्वम्	२
१५०	प्रजापतेः सुतं रयिष्ठीयम्	२
१५१	इष्टाहोत्रीयम्	१
१५२	निधनकामम्	१
१५३	वाजदावर्यम्	१
१५४	सोमाः पौषम्	१
१५५	वैतहव्यानि	३
१५५	ओको निधनम्	१
१५६	शाक्त्यानि	६
१५७	काण्वम्	२
१५८	गौरीवीतम्	२

साम मन्त्र संख्या	गान का नाम नाम	गान के भेद
१५८	श्रौतकक्षम्	१
१५९	सौमित्रम्	२
१५९	(इहवद्) दैवोदासम्	१
१६०	रैणवम्	२
१६२	कौत्सम्	२
१६३	सौमेधानि	३
१६५	अंगिरसानि	३
१६५	राधुछन्दसं क्रोचम्	१
१६६	वाम्नानि	३
१६७	गौरीवीतम्	२
१६७	औपालवेणवम्	२
१६८	महागौरिवीतम्	१
१६९	वाचः	२
१७०	सत्रासाहीयम्	२
१७३	सोमम्	१
१७५	त्वाष्ट्री	१
१७६	गोधा	१
१७८	एषः	१
१८४	प्रतीचीनकाक्षितम्	१
१८७	शैखण्डिनम्	१
१९१	सौमेरम्	१
१९३	धरासाका माइवम्	१
१९४	यामम्	१
१९५	हरिश्रीनिधनम्	१
१९६	वैतहव्यम्	१
१९७	आसितम्	१
२००	अभयंकरः	१
२०१	त्वाष्ट्री	१
२०५	वैरूपम्	१
२०७	तौभम्	१
२०८	श्रौतम्	१
२०९	आभीश्यवम्	१
२११	क्षुरपविम्	१



२४१ न हि वश्चरमं०	१८	जनित्रम्
२४८ त्वमिन्द्र यशा०	३४	सुवर्म्महा
२५७ (क) स त्वा हिन्वति०	२१	यह मन्त्र सामवेद में नहीं मिलता ।
२६१ वयं घ त्वा०	३०	अभि
२६१ वयं घ त्वा०	३१	दिशः
२७१ क्वेयथ०	११	सुशःसः
२७१ क्वेयथ०	१२	सुशःसः
२७१ क्वेयथ०	१३	[वा ५]प्सु [अप्सु]
२८३ इत ऊती वो०	३३	स्तुषे
२८३ इत ऊती वो०	३४	स्तुषे
२९१ महे च न०	१२	महो विशे
३२० नाके सुपर्ण०	१४	अपमियम्
३२१ ब्रह्मा जज्ञान प्रथमं०	१६	ऋतममृतम्
३३० उदु ब्रह्मण्यैरत०	३३	दिवया (२ वार)
३३९ इन्द्राय गिरो०	११	असौ, कुवा, अयम्, अविदत्
३७२ समेत विश्वा०	९	वावृधे
३७२ समेत विश्वा०	११	धर्म्मणे
३७६ अभि त्यं मेषं	१८	दुरति नावा
३७८ घृतवती०	२०	इंदुः समुद्रमुर्व्विया विभाति
३८२ तमु अभि प्र०	२७	दिवि
३८२ तमु अभि प्र०	२९	कः
३८२ तमु अभि प्र०	३०	दाम्
३८७ एतो न्विन्द्रं०	८	(नरम्) आ (कृष्टी)
३९१ गृणे ते इन्द्र०	१८	द्युभिः
४२७ परि प्र धन्वे०	१३	सुवर्च्च ते
४२९ पवस्व सोम०	२०	धर्म्म
४३९ ब्रह्माण इन्द्रं०	१	स्वरत । श्लोकयत
४३९ ब्रह्माण इन्द्रं०	२	अभिस्वरत । श्लोकः
४४० अनवस्ते०	३	स्वरत (१० वार)
४४७ अचेत्यग्नि०	१०	वाण (पाठभेद)
४४७ अचेत्यग्नि०	११	वाण (पाठभेद)
४५० विश्वस्य प्र०	१८	धनम्
४५० विश्वस्य प्र०	१९	धर्म्म

४५२ इमा नु कं०	२१	विशः
४६५ अग्निं होतारं०	४०	अग्निष्टपति प्रतिदहति (आद्यन्त में)
४६५ अग्निं होतारं०	४०	विश्वं समात्रिणं दह (अन्त में २ वार)
४६५ अग्निं होतारं०	४१	ते अग्नये । प्रति दहति (आरम्भ में)
४६५ अग्निं होतारं०	४१	ते अग्नये । प्रति दहति, विश्वं समात्रिणं दह (३ वार)
४६७ उच्चा ते जात०	६	ग्वाभिः
४६७ उच्चा ते जात०	१२	ययुः
४६९ वृषा पवस्व०	२६	अस्मे राय उत श्रवः, ज्वर आ ?
४७० यस्ते मदो०	३	सहो रयिष्ठाः
४७१ तिस्रो वाच०	९	अस्मत्प—तुविन्तमायम्
४७१ तिस्रो वाच०	११	ईशः (दिशः ?)
४८२ असृक्षत प्र०	१०	ग्वाभिः
५११ पुनानः सोम०	३१	पदो विसः
५११ पुनानः सोम०	३४	अति विश्वानि दुरिता तरेम
५१२ परीतो पिञ्चता०	१४	श्रवो बृहत् (मन्त्र के मध्य में)
५१७ मृज्यमानः सुहस्त्या०	१३	वाजी जिगीवान्
५२७ सोमः पवते जनिता०	८	जनत् जनद्धा
५४१ अया पवा पवस्वैना०	१	दीदिहि
५४१ अया पवा पवस्वैना०	२	दीदयात्
५४५ पुरोजिती वो०	१०	सुवृक्तिभिर्नृमादनं भरेषु वा
५५४ अभि प्रियाणि०	४	वाजी जिगीवान्
५५४ अभि प्रियाणि०	५	वाजी जिगीवान् विश्वा धनानि
५६२ असावि सोमो०	२८	दिवि
५६५ पवित्रं ते विततं०	३४	अक्को देवानां परमे व्योमन्

मन्त्रों से अतिरिक्त इन पदों को मूलमन्त्र के गान में जोड़ने से क्या अभिप्राय है, यह सामग्री के लिए विचारणीय है।

साम मन्त्र संख्या	गान का नाम नाम	गान के भेद
२१४	कौत्सम्	२
२१६	औषसम्	१
२१७	भारद्वाजम्	१
२१८	कौत्सम्	१
२१९	औषसम्	१
२२१	मरुत्	१
२२२	विष्णुः	१
२२३	कौत्सप्रम्	१
२२४	काश्यपम्	१
२२५	बार्हदुक्थम्	२
२२७	कौत्सानि	३
२२९	और्ध्वसद्मनम्	२
२३४	भारद्वाजम्	२
२३५	सान्नतम्	२
२३५	श्यैतम्	१
२३६	नविकम्	१
२३६	अभीवर्तः	१
२३६	आभीवर्तम्	१
२३६	नौधसम्	१
२३७	लौशम्	२
२३७	क्षुल्लकालेयम्	१
२३७	कालेयम्	२(१)
२३७	कालेयम्	२
२३७	महाकालेयम्	१
२३८	एषिरम्	२
२३८	गौरीवितम्	२
२३९	पृष्ठम्	१
२३९	शौल्कम्	१
२३९	जमदग्नेरभीवर्तम्	२
२४०	कौल्मालाबर्हिषम्	२
२४१	जनित्रम्	२
२४२	मैधातिथम्	१
२४३	वैखानसम्	१

साम मन्त्र संख्या	गान का नाम नाम	गान के भेद
२४३	पौरूहन्मनम्	१
२४४	प्राकर्षम्	१
२४५	भारद्वाजानि	४
२४६	वाम्राणि	३
२४७	गौङ्गवम्	१
२४८	यशः	१
२४८	साधम्	१
२४८	वैरूपम्	१
२४८	समीचीनः	१
२४९	यौत्कश्रूचम्	१
२५०	आन्त्राणि	३
२५१	वासिष्ठानि	३
२५३	हारायणानि	३
२५४	वाम्राणि	३
२५५	वरुणानि	३
२५६	वषट्कारणिधनम्	१
२५७	मारुतम्	१
२५७ (क)	सांश्रवसः	१
२५८	श्रवसः	१
२६०	आंगिरसम्	२
२६१	आष्कारणिधनकाण्वम्	१
२६१	वैष्टम्भम्	१
२६१	आभीनिधनकाण्वम्	१
२६१	महावैष्टम्भम्	१
२६२	शनौष्टीगवम्	१
२६३	वृषकम्	१
२६४	घातम्	२
२६५	कार्तयशम्	१
२६७	श्रायन्तीम्	१
२६८	वामम्	१
२६९	वासिष्ठानि	३
२६९	वैयश्वम्	१
२७०	निधनकामम्	१

साम मन्त्र संख्या	गान का नाम नाम	गान के भेद	साम मन्त्र संख्या	गान का नाम नाम	गान के भेद
२७१	इन्द्रप्रियाणि	३	३०७	सोम	१
२७२	वासिष्ठसामासितम्	१	३०८	अजमायवम्	१
२७३	प्राकर्षणम्	१	३०९	प्रैषयमेधः	१
२७४	अभयंकरम्	१	३१०	वैरूपम्	२
२७५	कवषम्	२	३१०	शाम	१
२७६	सूर्यः	१	३११	वैश्वदेवम्	१
२७७	आश्वम्	२	३१२	पुरीषम्	१
२७८	वैरूपम्	१	३१३	प्राकर्षम्	१
२८०	कौसुदम्	२	३१३	निहवः	१
२८१	वाचः	१	३१४	योनिनी	२
२८३	प्रहितः	२	३१५	औरुक्षयम्	२
२८४	आत्रम्	२	३१६	पाथम्	२
२८५	गौरीवीतम्	२	३१७	सौपर्णम्	२
२८७	साम	१	३१७	वात्सप्राणि	३
२८८	पज्राणि	३	३१८	गौरीवितम्	१
२८९	सौभरम्	२	३१९	वैदन्वतम्	१
२९०	वैयश्वम्	१	३२०	महायामम्	१
२९१	सुस्नातीयम्	२	३२१	त्रइतम्(त्रैतम्)	२
२९२	इन्द्राण्याः	१	३२२	वारवन्तीयम्	१
२९३	सौभवम्	१	३२३	क्षुरपविणी	२
२९४	गात्सर्मदम्	१	३२४	द्यौतम्	२
२९५	वाच्यः	१	३२५	सोम	२
२९६	बार्हदुक्थम्	१	३२६	इन्द्रवज्रम्	२
२९७	वाशम्	१	३२७	ऋषिप्रमाणपदगणित	
२९८	तौरश्रवसम्	१		अर्द्धवेयः सूर्यवर्चसः	२
२९९	त्वाष्ट्री	१	३२८	अहूशः	२
३००	अदिदम्	१	३२९	भारद्वाजम्	१
३०१	अजीगर्तम्	१	३३०	वैश्वदेवं मौरसः	१
३०२	माधुछन्दसम्	१	३३१	पुरीषम्	१
३०३	अषमः	१	३३२	तार्क्ष्यम्	१
३०४	अश्वि	१	३३३	आत्रम्	१
३०५	संयोजनम्	१	३३६	आत्रम्	१
३०६	आस्वि	१	३३७	गात्सर्मदः	२

साम मन्त्र संख्या	गान का नाम नाम	गान के भेद	साम मन्त्र संख्या	गान का नाम नाम	गान के भेद
३३८	वैश्वामित्रम्	१	३५२	कौल्मलबर्हिषम्	१
३३९	सावित्रम्	१	३५२	तोनदम्	१
३४०	वैरूपम्	१	३५३	शाकपूतम्	१
३४१	आमाहीयावम्	१	३५४	काल्मलबर्हिषम्	२
३४२	शैखण्डिनम्	२	३५५	मधुश्चुनिधनम्	१
३४३	शैखण्डिनानि	३	३५६	औषसः	१
३४३	महावैश्वामित्रम्	२	३५९	मारुतम्	१
३४४	इन्द्रप्रियाणि	४	३६०	वामदेव्यम्	१
३४४	गौतमम्	१	३६१	काश्यपम्	१
३४४	वासिष्ठप्रियम्	१	३६२	प्रैयमेधम्	१
३४५	वीकानि	४	३६३	बार्हदुक्थम्	१
३४५	आकूपारम्	१	३६४	काण्वम्	१
३४६	तैरश्चम्	२	३६९	ऋक्साम	२
३४७	वैश्वामित्रम्	१	३७०	त्रैशोकम्	१
३४८	काण्वम्	२	३७१	शैखण्डिनम्	१
३५०	शुद्धाशुद्धीयम्	२	३७१	अविवर्तः	२
३५१	रयिष्ठम्	१	— ० —		

मन्त्र संख्या ३७२ से ५८५ तक के गानभेदों पर नामों का निर्देश मूलगान ग्रन्थ में नहीं मिलता।

## परिशिष्ट-३

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा संस्कारविधि के सामान्य प्रकरण में  
प्रदर्शित सामवेद का महावामदेव्य गान ।

ॐ भूर्भुवः स्वः । कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा । कया शचिष्ठया वृता ॥ १ ॥  
ॐ भूर्भुवः स्वः । कस्त्वा सत्यो मदानां मंहिष्ठो मत्सदन्धसः । दृढा चिदारुजे वसु ॥ २ ॥  
ॐ भूर्भुवः स्वः । अभी षु णः सखीनामविता जरितृणाम् । शतं भवास्यूतये ॥ ३ ॥

काऽपया । नश्चा३ यित्रा३ आभुवात् । ऊ१ । ती सदावृधः स१ । खा । औ३ होहायि ।  
कया२३ शचायि१ । ष्ठयौहो३ । हुमा२ । वाऽ२र्तो३ऽपहायि ॥ ( १ ) ॥  
काऽपस्त्वा । सत्यो३मा३दानाम् । मा१ । हिष्ठोमात्सादन्ध । सा । औ३होहायि । दृढा२३  
चिदा१ । रुजौहो३ । हुमा२ । वाऽ२सो३ऽपहायि ॥ ( २ ) ॥  
आऽपभी । षुणा३ः सा३खीनाम् । आ१ । विता जरायि तृ१ । णाम् । औ२३ हो हायि ।  
शता२३म्भवा । सियोहो३ हुमा२ । ताऽ२ यो३ऽपहायि ॥ ( ३ ) ॥

—साम० उत्तरार्चिके । अध्याये १ । खं० ४ । मं० १, २, ३ ॥

(प्रस्तुत पुस्तक में मन्त्र संख्या १६९ में प्रथम मन्त्र का गान देखें ।)

## परिशिष्ट-४

श्री रा० नारायणस्वामीदीक्षित द्वारा संशोधित, परिष्कृत और सम्पादित  
तथा पंडित व० श्री सातवलेकर द्वारा १९४२ ईसवी में मुद्रित और  
प्रकाशित 'ग्रामेगेय [ वेय, प्रकृति ] गानात्मक' प्रथम भाग के कुछ पृष्ठ  
तुलनार्थ दिए जा रहे हैं—

(१) पर्यः ॥ ( गोतमो, गायत्री, अग्निः । )

(१।१) ओ३ । ओ५ऽग्राइ ॥ आयाहि३ऽवोइतोया३ऽइ । तोया३ऽइ । गृणानोह३ ।  
व्यदातोया३ऽइ । तोया३ऽइ ॥ नाइहोतासा३ऽइ ॥  
त्सा३ऽइवा३ऽइ३४ओहोवा ॥ ही३ऽइ३४पी ॥

(झा।१)

( दी० ३ । प० ९ । मा० ९ )

(२) × वर्हिष्यम् । ( कश्यपो, गायत्री, अग्निः । )

(१।२) अग्रआयाहि३वीऽ ॥ तयाइ । गृणानोहव्यदाता३ऽइयाइ ॥  
निहोतासत्सिर्वा३ऽइ३पी ॥ वर्हा३ऽइ३वा३ऽइ३४ओहोवा ॥  
वर्हा३ऽइ३पी३ऽइ३४५ ॥+

(तू।२)

( दी० ९ । प० ६ । मा० ६ )

(३) पर्यः ॥ ( गोतमो, गायत्री, अग्निः । )

(१।३) अग्रआयाहि । वा३ऽइतयाइ ॥ गृणानोहव्यदा३ऽइता३ऽइये ॥  
निहोता३ऽइ३४सा ॥ त्सा३ऽइ३वा३ऽइ । हा३ऽइ३४पो३ऽइहाइ ।

(तू।३)

( दी० ४ । प० ६ । मा० ६ )

॥ सौपर्णे सुपर्णे; ( वैश्वमनसम् । विश्वमना, गायत्री, अग्निः । ) ॥

(२) त्वमग्रयज्ञानाम् । त्वमग्राइ ॥ यज्ञानां होता ।  
विश्वेषा हा३ऽइ३ताः ॥ देवमा३ऽइ३मा ॥ नुपजना ।  
ओ३ऽइहोवा । हो३ऽइ ॥ डा ॥

(झू।४)

( दी० १२ । प० ९ । मा० ६ )

(११०१)

॥ पक्थस्य सौभरस्य सामनी द्वे । द्वयोः पक्थः ककुवग्निः ॥

मा। नाः॥ हणीऽ३थाअतिथीऽ३म् । वासूराऽ२३४ग्नीः॥ पुरोहोवाऽ३हाइ । प्रशोहोवाऽ३हाऽ३॥  
स्तओऽ२३४वा । आऽ५इपोऽ३हाइ॥ ( वै । १७५ )

(११०२)

( दी० ५ । प० ८ । मा० ८ ) ३४

मानोहाउ॥ हाऽ२३४ । गीथाअतिथिम् । वासूराऽ२३४ग्नाइः॥ पुरोहोइ । प्रशोहो ॥  
स्ताऽ२३४एपाः । एहियाऽ३हा । होऽ५इ ॥ डा॥ ( जो । १७६ )

( दी० ७ । प० १० । मा० ९ ) ३५

(११११)

॥ देवानीकं सफम् । देवानीकः ककुवग्निः ॥

भद्रोऽ४नः । होइ । अग्निराहुताऽ३ए ॥ भद्राराताइः । सुभगभाऽ३ । द्रोऽ२ध्वाऽ२३४राः ॥  
भद्राऊऽ२३ताऽ३॥ प्राऽ२३शाऽ३ । स्ताऽ३४५योऽ३हाइ ॥ ( घै । १७७ )

( दी० ४ । प० ९ । मा० ८ ) ३६

(११२१)

॥ गौतमं साध्यं वा । साधिः ककुवग्निः ॥

याऽ५जि । षंत्वाऽ३वाऽ३वृमहाइ॥ देवदेवत्राहोताऽ२३राम् । आमर्तियम् ॥ आस्ययाज्ञाऽ२३ ।  
स्याऽ२३सूऽ३ । काऽ३४५तोऽ३हाइ ॥ ( थी । १७८ )

( दी० ४ । प० ७ । मा० ४ ) ३७

(११३१)

(१) ॥ संवर्गः । जमदग्न्युष्णिगग्निः ॥

तदग्नेदूऽ५म्नम् । आमरोवा ॥ यत्सासाऽ२३हा । सदाऽ२३नाइ । कंचिदत्राऽ२३इणाम् ॥  
मान्युंजनस्यदूऽ२३हो ॥ दाऽ२३४याम् । एहियाऽ३हा । होऽ५इ ॥ डा ॥ ( नू । १७९ )

( दी० ४ । प० १० । मा० ६ ) ३८

(११४१)

(१) ॥ राक्षोघ्नम् । अगस्त्योष्णिगग्निः ॥

यद्वाऊऽ२३विश्वपतिः शिताः ॥ सुप्रीतामनुषाविश ॥ विश्वाइदाऽ२३ग्नीः ॥ प्रतिरक्षा ।  
सिसेधता । औऽ३होवा । होऽ५इ ॥ डा ॥ ( दी० ७ । प० ८ । मा० ५ ) ३९ ( जु । १८० )

चतुर्दशद्वादशः, द्वादशः खण्डः १२ ॥ वदन्तिः ॥

अथेन्द्रं पर्व ॥

(११५१)

(१) ॥ मार्गीयवम् । सृगयुर्गीयत्रीन्द्रः ॥

तद्वाहोवा ॥ गायाऽ२ । सुताइसाऽ२३४चा । पुरुहूता । यासत्वाऽ१नाऽ२इ ॥ शंयत् । हा ।  
औऽ३होइ । गाऽ२३४वाइ ॥ नाऽ२शाऽ२३४ओहोवा ॥ एऽ३ । किनेऽ२३४५ ॥ ( फ़ । १८१ )

( दी० ५ । प० १२ । मा० ६ ) ४०

(११५२)

(२) ॥ रौद्रे द्वे । द्वयोरुद्रो गायत्रीन्द्रः ॥

तद्वागाया ॥ सुताइसचाऽ३ । पूरुऽ२३हूताऽ३४ । हाहोऽ३ । यासत्वाऽ२३४नाइ ॥  
शंयद्वाऽ२३वे ॥ नशौऽ२ । होऽ२ । हुवोऽ२३४ । वा । काऽ५इनोऽ३हाइ ॥ ( नी । १८२ )

( दी० ४ । प० ११ । मा० ६ ) ४१



(४६६।१)

॥ ऐयम् । इपोऽष्टिरिन्द्रः ॥

ताऽ२३४वत्यन्नाऽ५रियन्ताउ ॥ अपइन्द्राऽ२ । प्रथमंपूऽ२ । वियंदिवि ।  
 प्रवा । वियंकृतम् । योदेवास्याऽ२ । शत्रसाप्राऽ२ । रिणाअसु । रिणन्नपः ।  
 भुवाविश्वाऽ२म् । अभ्यदाऽ२इ । वमोजसा । विदेदूजम् ॥ शताक्राऽ२३४तूः ॥  
 विदाऽ५इदिषाउ ॥ वा ॥

( दी० ९ । प० १७ । मा० ११ ) ४२ ( थ । ८१३ )

षोडश नवमः, द्वादशः खण्डः ॥ १२ ॥ दर्शतिः ॥ ८ ॥

॥ इति प्रामे गेय-गाने द्वादशस्वार्दः प्रपाठकः ॥

॥ इत्येन्द्राण्यतृतीये गाने इन्द्रपुच्छाख्यं सप्तमं तन्त्रं समाप्तम् ॥

॥ इति ऐन्द्रं काण्डम् ॥

अथ पावमानं काण्डम् ।

(४६७।१)

॥ अजिगम् । अजिगो प्रजापतिर्वा गायत्री सोमः ॥

उच्चा । तजाऽ३तामन्धासाऽ२ः । दिविसङ्गम्याददाइ ॥ उग्रंशाऽ२३माऽ३ ॥  
 माऽ२हाऽ२३४आहोवा ॥ उप् । श्राऽ२३४वाः ॥

( दी० ६ । प० ७ । मा० ५ ) १ ( खु । ८१४ )

(४६७।२)

॥ आभीकम् । अभिरसो गायत्री सोमः ॥

उच्चातेऽ२३४जा । तमन्धाऽ२३४साः । दिवाइसाऽ२३४इ ॥ मियाददाइ ॥  
 उग्रंशाऽ२३मा ॥ महायेऽ३ । श्राऽ२वाऽ२३४आहोवा ॥ वाऽ२३४इ ॥

( दी० ४ । प० ८ । मा० ५ ) २ ( दु । ८१५ )

(४६७।३)

॥ ऋषभः पावमानम् । ऋषभो गायत्री सोमः ॥

हाहाउच्चातेजा ॥ हाऽ३ । हाऽ३इ । तामाऽ२०धाऽ२३४साः ।  
 दिविसङ्गमियाऽ१दाऽ३दे ॥ उग्रंशाऽ२३४मा ॥ ओमाऽ३ । महोवा । आऽ५वोऽ३हाइ ॥

( दी० ५ । प० ९ । मा० ४ ) ३ ( भी । ८१६ )

(४६७।४)

॥ आभीकम् । अंगिरसो गायत्री सोमः ॥

ऊऽ२३४च्चातेजाऽ५ । तमाहो०धासाः ॥ दिविसङ्गमियाऽ१दाऽ३दे ॥  
 उग्रंशाऽ२३४मा ॥ माहाऽ३उवाऽ३४३ । श्राऽ२४५वोऽ३हाइ ॥

( दी० ४ । प० ६ । मा० ३ ) ४ ( ति । ८१७ )

(५८३।४)

त्व॒होऽ॒ङ्गदै॒विया॑ ॥ प॒वमाऽ॒रना॑ । ज॒निमाऽ॒रना॑येऽ॒ङ्ग ॥ द्यु॒म ।  
ताऽ॒रमाः ॥ अ॒मा॒र्त्ताऽ॒र॒त्वाऽ॒र ॥ य॒धोऽ॒र॒३४वा॑ । पाऽ॒र॒योऽ॒द्हाइ ॥

( दी० १ । प० ८ । मा० ३ ) ३० ( गि । ११९२ )

(५८४।१)

॥ गायत्रपार्श्वम् । देवाः ककुप् सोमः ॥

ए॒षाः ॥ स्या॒धा॒रयाऽ॒र॒३४वाऽ॒र ॥ सू॒ऽर॒३४ताः॑ । अ॒व्याऽ॒र॒वा॒र॒भिः प॒वते॑मदि॒न्तमः॑ ॥  
क्री॒डा॒न्नुऽ॒मीऽ॒र ॥ अ॒पाऽ॒रम् । हि॒म्ऽ॒र॒३४स्थि॒वाऽ॒र ॥ आ॒इ॒वाऽ॒र॒३४ ॥

( दी० ६ । प० ८ । मा० ८ ) ३१ ( गै । ११९३ )

(५८४-५८५।२)

॥ सन्तनि । देवाः ककुप्युस्त्रिया अभिब्रजन्तेति विष्टारपंक्तिः सोमः ॥

ए॒षाहा॒उ ॥ स्या॒धा॒रयाऽ॒र॒३४वाऽ॒र ॥ सू॒ऽर॒३४ताः॑ । अ॒व्याऽ॒र॒वा॒र॒भिः प॒वते॑मदि॒न्तमाऽ॒र ॥  
क्री॒डा॒न्नुहा॒उ ॥ ऊ॒र्मि॒रपाऽ॒र॒३४वाऽ॒र ॥ इ॒ऽर॒३४वा॑ ॥ हू ॥ १ ॥  
य॒उ॒स्त्रियाऽ॒र॒अ॒पिया॑अ॒न्तर॑श्म॒नीऽ॒र ॥ नि॒र्गा॒हा॒उ ॥ आ॒कृ॒न्त॒दाऽ॒र॒३४वाऽ॒र ॥ जा॒ऽर॒३४सा॑ ॥ २ ॥  
अ॒भि॒ब्रज॑न्त॒त्ति॒पे॒गव्य॑म॒श्वियाऽ॒र ॥ व॒र्मी॒हा॒उ ॥ वा॒धृ॒ष्ण॒वाऽ॒र॒३४वाऽ॒र ॥ रू॒ऽर॒३४जा॑ ॥ ३ ॥  
( दी० १० । प० १५ । मा० १४ ) ३२ ( मी । ११९४-११९५ )

(५८४।३)

॥ सोम सामानि त्रीणि । सोमः ककुप् सोमः ॥

ए॒प॒स्य॒धा । रा॒याऽ॒सु॒ताऽ॒र ॥ अ॒व्या॒रा॒इ । भा॒इः प॒वते॑ । म॒दि॒न्त॒माः ॥  
क्री॒डा॒न्नुऽ॒मीऽ॒र ॥ आऽ॒र॒३४पाऽ॒रम् । आऽ॒र॒३४५॒इ॒वोऽ॒द्हाइ ॥

( दी० ६ । प० ८ । मा० ८ ) ३३ ( गै । ११९६ )

(५८४।४)

ए॒प॒स्याऽ॒र॒धा॒रया॑सु॒ताः ॥ अ॒व्या॒होऽ॒र॒इ । वा॒र॒भिः प॒वते॑मदि॒न्ता॒माऽ॒र ॥  
क्री॒डाऽ॒र॒न्होऽ॒र॒इ । ऊ॒ऽर॒३४मीः॑ ॥ अ॒पा॒मि॒वा । आऽ॒र॒हो॒वा । होऽ॒र॒इ ॥ डा ॥

( दी० ८ । प० ९ । मा० ६ ) ३४ ( हू । ११९७ )

(५८४।५)

ए॒प॒स्य॒धाऽ॒र॒या॑सु॒ताः ॥ अ॒व्या॒वा॒रा॒इ । भिः प॒वता॑ऽ॒र॒इ । म॒दि॒न्त॒माः ॥

क्री॒डा॒न्नु॒र्मि॒रपो॒वाऽ॒र॒ओऽ॒र॒३४वा॑ ॥ आऽ॒र॒३४५॒इ॒वोऽ॒द्हाइ ॥ ( दी० ६ । प० ६ । मा० ७ ) ३५ ( के । ११९८ )

पञ्चत्रिंशत्, एकादशः खण्डः ॥ ११ ॥ दशतिः ॥ इति ग्रामे गेय-गाने सप्तदशः प्रपाठकः ॥ १७ ॥

॥ इति ग्राम-गेयगानं समाप्तम् ॥

## सामगानपठित-मन्त्रानुक्रमणिका

अ					
अक्रान्तसमुद्रः प्रथमे	५२९	अतश्चिदिन्द्र न उपा	२१५	अभि प्र वः सुराधसम्	२३५
अक्षत्रमीमदन्त	४१५	अतीहि मन्युषाविणं	२२३	अभि प्रियाणि पवते	५५४
अगन्म वृत्रहन्तम्	८९	अत्राह गोरमन्वत	१४७	अभि वो वीरमन्धसो	२६५
अग्न आ याहि	१	अदर्दरुत्समसृजः	३१५	अभि सोमास आयवः	५१८
अग्र ओजिष्ठमा भर	८१	अदर्शि गातुवित्तमः	४७	अभी नवन्ते अद्गुहः	५५०
अग्निं तं मन्ये यो	४२५	अद्य नो देव सवितः	१४१	अभी नो वाजसातमं	५४९
अग्निं दूतं वृणीमहे	३	अध ज्मो अध वा	५२	अभी षतस्तदा भरेन्द्र	३०९
अग्निं नरो दीधितिभिः	७२	अधा हीन्द्र गिर्वण	४०६	अभ्रातृव्यो अना	३९९
अग्निं वो वृधन्तम्	२१	अधि यदस्मिन्	५३९	अमी ये देवा स्थन	३६८
अग्निं होतारं मन्ये	४६५	अध्वर्यो अद्रिभिः	४९९	अयं त इन्द्र सोमो	१५९
अग्रिमिन्धानो मनसा	१९	अध्वर्यो द्रावया त्वं	३०८	अयं पूषा रयिर्भगः	५४६
अग्रिमीडिष्वावसे	४९	अनवस्ते रथमश्वाय	४४०	अयं वां मधुमत्तमः	३०६
अग्रिरुक्थे पुरोहितो	४८	अनु प्रत्नास आयवः	५०२	अयं विचर्षणिर्हितः	५०८
अग्रिमूर्द्धा दिवः	२७	अनु हि त्वा सुतं	४३२	अयं सहस्रमानवो दृशः	४५८
अग्रिवृत्राणि जंघनद्	४	अपघ्नन्पवते मृधो	५१०	अयमग्निः सुवीर्यस्य	६०
अग्रिस्तिग्मेन शोचिषा	२२	अपघ्नन्पवसे मृधः	४९२	अयमु ते समतसि	१८३
अग्रे जरितर्विशपतिः	३९	अप त्यं वृजिनं रिपुं	१०५	अया धिया च गव्यया	१८८
अग्रे तमद्याश्वं न	४३४	अपां फेनेन नमुचेः	२११	अया पवस्व धारया	४९३
अग्रे त्वं नो अन्तमः	४४८	अपादु शिघ्रन्धसः	१४५	अया पवा पवस्वैना	५४१
अग्रे मृड महौ असि	२३	अपामिवेदूर्मयस्त	५४४	अया रुचा हरिण्या	४६३
अग्रे यजिष्ठो अध्वरे	१००	अपामीवामप स्त्रिधमप	३९७	अया वाजं देवहितम्	४५४
अग्रे युङ्क्ष्वा हि ये	२५	अपिबत्कद्रुवः सुत	१३१	अया वीती परि स्रव	४९५
अग्रे रक्षा णो अंहसः	२४	अपूर्व्या पुरुतमान्यस्मै	३२२	अया सोम सुकृत्यया	५०७
अग्रे वाजस्य गोमतः	९९	अबोध्यग्निः समिधा	७३	अरं त इन्द्र श्रवसे	२०९
अग्रे विवस्वदा भरा	१०	अभि त्यं देवं सविता	४६४	अरण्योर्निहितो जातवेदा	७९
अग्रे विवस्वदुषसश्चित्रं	४०	अभि त्यं मेघं पुरु	३७६	अरमश्वाय गायत	११८
अचिक्रदद् वृषा हरिः	४९७	अभि त्रिपृष्ठं वृषणं	५२८	अर्चत प्रार्चता नरः	३६२
अचेत्यग्निश्चिकिति	४४७	अभि त्वा पूर्वपीतये	२५६	अर्चन्त्यर्कं मरुतः	४४५
अचोदसो नो धन्वन्	५५५	अभि त्वा वृषभा सुते	१६१	अर्षा सोम द्युमत्तमो	५०३
अच्छा व इन्द्रं मतयः	३७५	अभि त्वा शूर नोनुमः	२३३	अव द्रप्सो अंशुमती	३२३
अञ्जते व्यञ्जते समञ्जते	५६४	अभि द्युम्नं बृहद्यशः	५७९	अश्वं न त्वा वारवन्तं	१७
		अभि प्र गोपतिं	१६८	अश्वी रथी सुरूप	२७७

असर्जि रथ्या यथा	४९०	आ बुन्दं वृत्रहा ददे	२१६	इन्द्रं सुतेषु सोमेषु	३८१
असर्जि वक्वा रथ्ये	५४३	आ मन्द्रैरिन्द्र हरिभिः	२४६	इन्द्राग्री अपादियं	२८१
असावि देवं गो	३१३	आ याहि वनसा सह	४४३	इन्द्रा नु पूषणा वयं	२०२
असावि सोम इन्द्र	३४७	आ याहि सुषुमा हि	१९१	इन्द्रा पर्वता बृहता	३३८
असावि सोमो अरुषो	५६२	आ याह्यमिन्दवे	४०२	इन्द्राय गिरो अनिशितसर्गा	३३९
असाव्यंशुर्मदाय	४७३	आ याह्युप नः सुतं	२२७	इन्द्राय पवते मदः	५२०
असृक्षत प्र वाजिनो	४८२	आ व इन्द्रं कृवि	२१४	इन्द्राय मद्रने सुतं	१५८
असृग्रमिन्द्र ते गिरः	२०५	आविर्मर्या आ वाजं	४३५	इन्द्राय साम गायत	३८८
अस्ति सोमो अयं	१७४	आविशन्कलशं सुतो	४८९	इन्द्राय सोम सुषुतः	५६१
अस्तु श्रौषट् पुरो	४६१	आ वो राजानमध्वरस्य	६९	इन्द्रायेन्दो मरुत्वते	४७२
अस्मभ्यं त्वा वसु	५७५	आ सोता परि पिञ्च	५८०	इन्द्रेहि मत्स्यन्धसो	१८०
अस्य प्रेषा हेमना	५२६	आ सोम स्वानो अद्रि	५१३	इन्द्रो अंग महद् भयमभि	२००
अहमिद्धि पितुष्परि	१५२	आ हर्यताय धृष्णवे	५५१	इन्द्रो दधीचो अस्थभि	१७९
<b>आ</b>		<b>इ</b>		इन्द्रो मदाय वावृधे	४११
आ गन्ता मा रिषण्यत	४०१	इडामग्रे पुरुदंसं सनिं	७६	इन्द्रो विश्वस्य राजति	४५६
आग्निं न स्ववृक्तिभिः	४२०	इत ऊती वो अजरं	२८३	इन्धे राजा समयो	७०
आ घा ये अग्निं	१३३	इत एत उदारुहन्	९२	इमं स्तोममर्हते जात	६६
आ जुहोता हविषा	६३	इत्था हि सोम इन्मदो	४१०	इम इन्द्र मदाय ते	२९४
आ तू न इन्द्र क्षुमन्तं	१६७	इदं त एकं पर	६५	इम इन्द्राय सुन्विरे	२९३
आ तू न इन्द्र वृत्रहन्	१८१	इदं वसो सुतमन्धः	१२४	इम उ त्वा वि चक्षते	१३६
आ ते अग्र इधीमहि	४१९	इदं विष्णुर्वि चक्रमे	२२२	इममिन्द्र सुतं पिब	३४४
आ ते दक्षं मयोभुवं	४९८	इदं ह्यन्वोजसा सुतं	१६५	इममू षु त्वमस्माकं	२८
आ ते वत्सो मनो	८	इन्दुः पविष्ट चारुर्मदाय	४३१	इमा उ त्वा पुरुवसो गिरो	२५०
आ त्वा गिरो रथी	३४९	इन्दुः पविष्ट चेतनः	४८१	इमा उ त्वा पुरुवसोभिः	१४६
आ त्वाद्य सबर्दुधां	२९५	इन्दुर्वाजी पवते	५४०	इमा उ त्वा सुतेसुते	२०१
आ त्वा रथं यथोतये	३५४	इन्द्रं नरो नेमधिता	३१८	इमा उ वां दिविष्टय	३०४
आ त्वा विशन्तिन्दवः	१९७	इन्द्रं वयं महाधन	१३०	इमा नु कं भुवना	४५२
आ त्वा सखायः सख्या	३४०	इन्द्रं विश्वा अवीवृधं	३४३	इमास्त इन्द्र पृश्नयो	१८७
आ त्वा सहस्रमा शतं	२४५	इन्द्र इषे ददातु नः	१९९	इमे त इन्द्र ते वयं	३७३
आ त्वा सोमस्य गल्दया	३०७	इन्द्र उक्थेभिर्मन्दिष्ठः	२२६	इमे त इन्द्र सोमाः	२१२
आ त्वेता नि पीदतेन्द्र	१६४	इन्द्र क्रतुं न आ भर	२५९	इषे पवस्व धारया	५०५
आदित्प्रत्नस्य रेतसो	२०	इन्द्र तुभ्यमिदद्रिवो	४१२	इष्टा होत्रा असृक्षतेन्द्रं	१५१
आ नो अग्रे वयोवृधं	४३	इन्द्र त्रिधातु शरणं	२६६	इहेव शृण्व एषां	१३५
आ नो मित्रावरुणा	२२०	इन्द्र नेदीय एदिहि	२८२	<b>ई</b>	
आ नो वयोवयः शयं	३५३	इन्द्रमच्छ सुता इमे	५६६	ईह्यन्तीरपस्युवः	१७५
आ नो विश्वासु हव्य	२६९	इन्द्रमिद् गाथिनो	१९८	ईडिष्वा हि प्रतीव्यां	१०३
आ पवस्व सहस्रिणं	५०१	इन्द्रमिदेवतातय इन्द्रं	२४९		

<b>उ</b>					
उक्थं च न शस्यमानं	२२५	एन्द्र सानसिं रयिं	१२९	गृणे तदिन्द्र ते शव	३९१
उक्थमिन्द्राय शंस्यं	३६३	एवा ह्यसि वीरयु	२३२	गोमन्त्र इन्दो अश्ववत्	५७४
उच्चा ते जातमन्धसो	४६७	एष प्र कोशे मधुमाँ	५५६	गौर्धयति मरुताम्	१४९
उत स्या नो दिवा	१०२	एष ब्रह्मा य ऋत्विष	४३८	<b>घ</b>	
उत्त्वा मन्दन्तु सोमाः	१९४	एष स्य ते मधुमाँ	५३१	घृतवती भुवनानामभि	३७८
उदु त्यं जातवेदसं	३१	एष स्य धारया सुतः	५८४	<b>च</b>	
उदु त्ये मधुमत्तमा	२५१	एषो उषा अपूर्व्या	१७८	चक्रं यदस्याप्स्वा	३३१
उदु त्ये सूनवो गिरः	२२१	एह्यषु ब्रवाणि ते	७	चन्द्रमा अप्स्वान्तरा	४१७
उदु ब्रह्माण्यैरत	३३०	<b>ओ</b>		चर्षणीधृतं मघवानमु	३७४
उद्वेदभि श्रुतामघं	१२५	ओजस्तदस्य तित्विष	१८२	चित्र इच्छिशोस्तरुणस्य	६४
उप त्वाग्रे दिवेदिवे	१४	<b>औ</b>		<b>ज</b>	
उप त्वा जामयो	१३	और्वभृगुवच्छुचिम्	१८	जगृह्मा ते दक्षिणमिन्द्र	३१७
उप नो हरिभिः	१५०	<b>क</b>		जज्ञानः सप्त मातृभिः	१०१
उप प्रक्षे मधुमति	४४४	क इमं नाहुषीष्वा	१९०	जराबोध तद्विविडि	१५
उपहरे गिरीणां	१४३	क ई वेद सुते सचा	२९७	जातः परेण धर्मणा	९०
उपो षु जातमप्तरं	४८७	क ई व्यक्ता नरः	४३३	<b>त</b>	
उपो षु शृणुहि गिरो	४१६	कदा चन स्तरीरसि	३००	तं गूर्धया स्वर्णरं	१०९
उभयं शृणवच्च	२९०	कदा वसो स्तोत्रं	२२८	तं ते मदं गृणीमसि	३८३
उभे यदिन्द्र रोदसी	३७९	कदु प्रचेतसे महे	२२४	तं त्वा गोपवनो गिरा	२९
उषा अप स्वसुष्टमः	४५१	कनिक्रान्ति हरिरा	५३०	तं वः सखायो मदाय	५६९
<b>ऊ</b>		कया नश्चित्र आ	१६९	तं वो दस्ममृतीषहं	२३६
ऊर्जा मित्रो वरुणः	४५५	कविमग्निमुप स्तुहि	३२	तक्षद्यदी मनसो वेनतो	५३७
ऊर्ध्व ऊ षु ण ऊतये	५७	कश्यपस्य स्वर्विदो	३६१	तदग्रे द्युम्नमा भर	११३
<b>ऋ</b>		कस्तमिन्द्र त्वा	२८०	तद्वो गाय सुते सचा	११५
ऋचं साम यजामहे	३६९	कस्य नूनं परीणसि	३४	तमिन्द्रं जोहवीमि	४६०
ऋजुनीती नो वरुणो	२१८	कायमानो वना त्वं	५३	तमिन्द्रं वाजयामसि	११९
<b>ए</b>		कुष्ठः को वामशिवना	३०५	तमु अभि प्र गायत	३८२
एतमु त्यं मदच्युतं	५८१	को अद्य युंक्ते धुरि	३४१	तरणिं वो जनानां	२०४
एतोन्विन्द्रं स्तवाम शुद्धं	३५०	क्रत्वा महौ अनुष्वधम्	४२३	तरणिरित्सिषासति	२३८
एतोन्विन्द्रं स्तवाम सखायः	३८७	क्वास्य वृषभः	१४२	तरत्स मन्दी धावति	५००
एदु मधोर्मदिन्तरं	३८५	क्वेयथ क्वेदसि	२७१	तरोभिर्वो विदद्वसु	२३७
एना वो अग्निं नमसः	४५	<b>ग</b>		तव त्यन्नर्थं नृतोप	४६६
एन्दुमिन्द्राय सिञ्चत	३८६	गव्यो षु णो यथा	१८६	तवाहं सोम रारण	५१६
एन्द्र नो गधि प्रिय	३९३	गायन्ति त्वा गायत्रिणो	३४२	तवेदिन्द्रावमं वसु त्वं	२७०
एन्द्र पृक्षु कासु	२३१	गाव उप वदावटे मही	११७	तिस्रो वाच ईरयति	५२५
एन्द्र याहि हरिभिरुप	३४८	गावश्चिद्धा समन्यवः	४०४	तिस्रो वाच उदीरते	४७१
एन्द्र याह्युप नः परा	४५९	गिर्वणः पाहि नः	१९५	तुचे तुनाय तत्सु	३९५

तुभ्यं सुतासः सोमाः	२१३	देवो वो द्रविणोदाः	५५	पवस्व मधुमत्तमः	५७८
त्वं सु मेषं महया	३७७	दोषो आ गाद् बृहद्	१७७	पवस्व वाजसातमो	५२१
त्यमु वः सत्रासाहं	१७०	ध		पवस्व सोम द्युम्नी	४३६
त्यमु वो अप्रहणं	३५७	धर्ता दिवः पवते	५५८	पवस्व सोम मधुमाँ	५३२
त्यमु षु वाजिनं देव	३३२	धानावन्तं करम्भिणम्	२१०	पवस्व सोम महान्तसमुद्रः	४२९
त्रातारमिन्द्रमवितारम्	३३३	न		पवस्व सोम महे दक्षा	४३०
त्रिकद्रुकेषु महिषो	४५७	न कि इन्द्र त्वदुत्तरं	२०३	पवस्वेन्दो वृषा सुतः	४७९
त्रिरस्मै सप्त धेनवो	५६०	न कि देवा इनीमसि	१७६	पवित्रं ते विततं ब्रह्म	५६५
त्वं न इन्द्रा भर ओजो	४०५	न किष्टं कर्मणा	२४३	पान्तमा वो अन्धसः	१५५
त्वं नश्चित्र ऊत्या वसो	४१	न तमंहो न दुरितम्	४२६	पावका नः सरस्वती	१८९
त्वं नो अग्ने महोभिः	६	न तस्य मायया	१०४	पाहि गा अन्धसो	२८९
त्वं ह त्यत्सप्तभ्यः	३२६	न त्वा बृहन्तो अद्रयो	२९६	पाहि नो अग्र एकया	३६
त्वं हि क्षैतवद्यशः	८४	नमस्ते अग्र ओजसे	११	पिबा सुतस्य रसिनो	२३९
त्वं ह्याङ्ग दैव्य पवमान	५८३	न सीमदेव आप	२६८	पिबा सोममिन्द्र मदन्तु	३९८
त्वं ह्येहि चेरवे	२४०	न हि वश्चरमं च	२४१	पुनानः सोम जागृवि	५१९
त्वमग्रे गृहपतिस्त्वं	६१	नाके सुपर्णमुप यत्	३२०	पुनानः सोम धारयापः	५११
त्वमग्रे यज्ञानां होता	२	नि त्वा नक्ष्य विश्पते	२६	पुनानो अक्रमीदधि	४८८
त्वमग्रे वसूरिह	९६	नि त्वामग्रे मनुर्दधे	५४	पुरां भिन्दुर्युवा कविः	३५९
त्वमंग प्र शंसिषो	२४७	प		पुरु त्वा दाशिवान्	९७
त्वमित्सप्रथा अस्यग्ने	४२	पन्यंपन्यमित्सोतार	१२३	पुरोजिती वो अन्धसः	५४५
त्वमिन्द्र प्रतूर्तिष्वभि	३११	परि कोशं मधुश्चुतम्	५७७	प्र काव्यमुशनेव	५२४
त्वमिन्द्र बलादधि	१२०	परि त्वं हर्यतं हरिम्	५५२	प्र केतुना बृहता	७१
त्वमिन्द्र यशा असृजीषी	२४८	परि द्युक्षं सनद्रयिम्	४९६	प्र गायताभ्यर्चाम देवान्	५३५
त्वया ह स्विद्युजा वयम्	४०३	परि प्र धन्वेन्द्राय	४२७	प्रति त्वं चारुमध्वरं	१६
त्वष्टा नो दैव्यं वचः	२९९	परि प्रासिष्यदत्कविः	४८६	प्रति प्रियतमं रथं	४१८
त्वामग्रे पुष्करा	९	परि प्रिया दिवः कविः	४७६	प्र तु द्रव परि कोशं	५२३
त्वामिदा ह्यो नरो	३०२	परि वाजपतिः कविः	३०	प्र ते धारा मधुमती	५३४
त्वामिद्धि हवामहे	२३४	परि स्वानास इन्दवो	४८५	प्रत्यग्रे हरसा हरः	९५
त्वावतः पुरुवसो	१९३	परि स्वानो गिरिष्ठाः	४७५	प्रत्यस्मै पिपीषते	३५२
त्वे अग्ने स्वाहुत	३८	परीतो षिञ्चता सुतं	५१२	प्रत्यु अदर्श्याय	३०३
त्वेषस्ते धूम ऋण्वति	८३	पर्यु षु प्र धन्व वाज	४२८	प्र देवमच्छा मधुमन्तः	५६३
द		पवते हर्यतो हरिरति	५७६	प्र दैवोदासो अग्रिर्देव	५१
दधन्वे वा यदीमनु	९४	पवमाना असृक्षत पवित्रम्	५२२	प्र धन्वा सोम जागृवि	५६७
दधिक्राव्यो अकारिषं	३५८	पवमानो अजीजनद्	४८४	प्र न इन्दो महे तु	५०९
दूतं वो विश्ववेदसम्	१२	पवस्व दक्षसाधनो	४७४	प्र पुनानाय वेधसे	५७३
दूरादिहेव यत्सतो	२१९	पवस्व देव आयुषगिन्द्रं	४८३	प्रप्र वस्त्रिष्टुभिमिषं	३६०
देवानामिदवो	१३८	पवस्व देववीतय इन्द्रा	५७१	प्र भूर्जयन्तं महौ	७४



प्र मंहिष्ठाय गायत	१०७	ब्रह्माण इन्द्रं महयन्तो	४३९	यज्ञायज्ञा वो अग्रये	३५
प्र मन्दिने पितुमदर्चता	३८०	ब्राह्मणादिन्द्र राधसः	२२९	यत इन्द्र भयामहे	२७४
प्र मित्राय प्रार्यम्णे	२५५	<b>भ</b>		यत्सोममिन्द्र विष्णवि	३८४
प्र यद् गावो न भूर्णय	४९१	भगो न चित्रो अग्निः	४४९	यथा गौरो अपा कृतं	२५२
प्र यो राये निनीषति	५८	भद्रं नो अपि वातय	४२२	यदद्य कच्च वृत्रहन्	१२६
प्र यो रिरिक्ष ओजसा	३१२	भद्रंभद्रं न आ भरेष	१७३	यदा कदा च मीढुषे	२८८
प्र व इन्द्राय बृहते	२५७	भद्रो नो अग्रिराहुतः	१११	यदिन्द्र चित्र म इह	३४५
प्र व इन्द्राय मादनम्	१५६	भिन्धि विश्वा अप	१३४	यदिन्द्र नाहुषीष्वा	२६२
प्र व इन्द्राय वृत्रहन्	४४६	<b>म</b>		यदिन्द्र प्रागपागुदक्	२७९
प्र वो महे मतयो यन्तु	४६२	मन्द्रया सोम धारया	५०६	यदिन्द्र यावतस्त्वमेता	३१०
प्र वो महे महेवृधे	३२८	महत्तत्सोमो महिष	५४२	यदिन्द्र शासो अत्रतं	२९८
प्र वो यद्धं पुरूणाम्	५९	महाँ इन्द्रः पुरश्च नो	१६६	यदिन्द्राहं यथा त्वमीशीय	१२२
प्र सम्राजं चर्षणीनाम्	१४४	महि त्रीणामवरस्तु	१९२	यदिन्द्रो अन्यद्रितो	१४८
प्र सम्राजमसुरस्य	७८	महे च न त्वाद्विवः परा	२९१	यदि वीरो अनु ष्याद्	८२
प्र सुन्वानायान्धसः	५५३	महे नो अद्य बोधयो	४२१	यदी वहन्त्याशवो	३५६
प्र सेनानीः शूरो अग्रे	५३३	मा चिदन्यद्विशंसत	२४२	यदुदीरत आजयः	४१४
प्र सो अग्रे तवोतिभिः	१०८	मा न इन्द्र परा	२६०	यद् द्याव इन्द्र ते शतं	२७८
प्र सोम देववीतये	५१४	मा न इन्द्राभ्या दिशः	१२८	यद्वा उ विशपतिः शितः	११४
प्र सोमासो मदच्युतः	४७७	मा नो हणीथा अतिथिम्	११०	यद्वाहिष्ठं तदग्रये	८६
प्र सोमासो विपश्चितो	४७८	मूर्धानं दिवो अरतिं	६७	यद्वीडाविन्द्र यत्स्थिरे	२०७
प्र हिन्वानो जनिता	५३६	मृज्यमानः सुहस्त्या	५१७	यस्ते नूनं शतक्रतविन्द्र	११६
प्र होता जातो महान्	७७	मेडिं न त्वा वज्रिणं	३२७	यस्ते मदो वरेण्यस्तेना	४७०
प्र होत्रे पूर्व्य वचो	९८	मो षु त्वा वाघतश्च	२८४	यस्य त्यच्छमवरं मदे	३९२
प्राणा शिशुर्महीनां	५७०	<b>य</b>		या इन्द्र भुज आभरः	२५४
प्रातरग्निः पुरुप्रियो	८५	यं रक्षन्ति प्रचेतसो	१८५	युंश्वा हि वृत्रहन्	३०१
प्रेष्ठं वो अतिथिं	५	यं वज्रेषु क्षितय	३३७	ये ते पन्था अधो दिवो	१७२
प्रेह्यभीहि धृष्णुहि	४१३	यः सत्राहा विचर्षणि	२८६	योगेयोगे तवस्तरं	१६३
प्रेतु ब्रह्मणस्पतिः प्र	५६	य आनयत्परावतः	१२७	यो न इदमिदं पुरा	४००
गो अयासीदिन्दुरिन्द्रस्य	५५७	य इन्द्र चमसेष्वा	१६२	योनिष्ट इन्द्र सदने	३१४
<b>व</b>		य इन्द्र सोमपातमो	३९४	यो नो वनुष्यान्	३३६
रम्महाँ असि सूर्य	२७६	य उस्त्रिया अपि या	५८५	यो रयिं वो रयिन्तमो	३५१
बुदुक्थं हवामहे	२१७	य ऋते चिदभिष्रिषः	२४४	यो राजा चर्षणीनां	२७३
इदिन्द्राय गायत	२५८	य एक इद्विदयते	३८९	यो विश्वा दयते वसु	४४
इन्द्रिग्रे अर्चिभिः	३७	यच्छक्रासि परावति	२६४	<b>र</b>	
इद्वयो हि भानवे	८८	यजामह इन्द्रं वज्रदक्षिणं	३३४	राये अग्रे महे त्वा	९३
धन्मना इदस्तु	१४०	यजिष्ठं त्वा ववृमहे	११२	रेवतीर्नः सधमाद इन्द्रे	१५३
ह्य जज्ञानं प्रथमं	३२१	यज्ञ इन्द्रमवर्धयद्	१२१		

<b>व</b>		वृषा ह्यसि भानुना	४८०	सदसस्पतिमद्भुतम्	१७१
वयं घ त्वा सुतावन्त	२६१	वेत्था हि निर्ऋतीनां	३९६	सदा गावः शुचयोः	४४२
वयं घा ते अपि स्मसि	२३०	<b>श</b>		सदा व इन्द्रश्चर्कृषदा	१९६
वयः सुपर्णा उप सेदु	३१९	शं नो देवीरभिष्टये	३३	सनादग्रे मृणसि यातु	८०
वयमिन्द्र त्वायवो	१३२	शं पदं मघं रयीषिणे	४४१	स पवस्व य आविथेन्द्रम्	४९४
वयमु त्वा तदिदार्था	१५७	शग्ध्यू षु शचीपत	२५३	स पूर्व्यो महोनां वेनः	३५५
वयमु त्वामपूर्व्य	४०८	शचीभिर्नः शचीवसू	२८७	समस्य मन्यवे विशो	१३७
वयमेनमिदा ह्योपीपेमेह	२७२	शुक्रं ते अन्यद्यजतम्	७५	समेत विश्वा ओजसा	३७२
वयश्चित्ते पतत्रिणः	३६७	शुनं हुवेम मघवान	३२९	स सुन्वे यो वसूनां	५८२
वस्याँ इन्द्रासि मे पितुरुत	२९२	शेषे वनेषु मातृषु	४६	साकमुक्षो मर्जयन्त स्वसा	५३८
वात आ वातु भेषजम्	१८४	श्रत्ते दधामि प्रथमाय	३७१	सीदन्तस्ते	४०७
वास्तोष्पते ध्रुवा	२७५	श्रायन्तइव सूर्य	२६७	सुतासो मधुमत्तमाः	५४७
वि त्वदापो न पर्वतस्य	६८	श्रुतं वो वृत्रहन्तमं	२०८	सुनीथो घा स मर्त्यो	२०६
विधुं दद्राणं समने	३२५	श्रुधि श्रुतकर्ण वह्निभिः	५०	सुनोत सोमपात्रे सोम	२८५
विभोष्ट इन्द्र राधसो	३६६	श्रुधी हवं तिरश्च्या	३४६	सुरूपकृलुमूतये सुदुघा	१६०
विशोविशो वो अतिथिम्	८७	श्रुष्ट्यग्रे नवस्य मे	१०६	सुष्वाणास इन्द्र स्तुमसि	३१६
विश्वतोदावन्विश्वतः	४३७	<b>स</b>		सोमं राजानं वरुणमग्निम्	९१
विश्वस्य प्र स्तोभ	४५०	सखाय आ नि षीदत	५६८	सोमः पवते जनिता	५२७
विश्वाः पृतना अभिभूतरम्	३७०	सखाय आ शिषामहे	३९०	सोमः पुनान ऊर्मिणाव्यम्	५७२
विश्वानरस्य वस्पति	३६४	सखायस्त्वा ववृमहे	६२	सोमः पूषा च चेततु	१५४
वि स्तुतयो यथा पथा	४५३	स घा तं वृषणं रथ	४२४	सोम उ ष्वाणः सोतृभिः	५१५
वृत्रस्य त्वा श्वसथादीष	३२४	स घा यस्ते दिवो	३६५	सोमानं स्वरणं	१३९
वृषा पवस्व धारया	४६९	सत्यमित्था वृषेदसि	२६३	सोमाः पवन्त इन्द्रवः	५४८
वृषा मतीनां पवते	५५९	स त्वा हिन्वति	२५७ (क)	स्वादिष्ठया मदिष्ठया	४६८
वृषा सोम द्युमान्	५०४	सत्राहणं दाधृषिम्	३३५	स्वादोरित्था विषूवतः	४०९